

खरतर गच्छीय-विधिपूर्वक

श्री पञ्चप्रतिक्रमण-सूत्राणि

संशोधिका:—
विदुषी साध्वी श्रीमती विनयश्रीजी महाराज.

प्रसिद्ध कर्त्ता:—
मंत्री—'जैनार्या श्रीमती पुण्यश्रीजी स्मारक ग्रन्थमाला'
जयपुर सिटी—(राजपूताना)

विक्रम सं० १९८८ वीर निर्वाण सं० २४५७ ई० सन् १९३१

मूल्य सवा रुपया.

पुस्तक मिलने का ठिकाना —
मंत्री—
जैनार्या श्रीमती पुण्यश्रीजी स्मारक ग्रंथमाला
कुन्दीगर भैरवजी का रास्ता,
जैन धर्मशाला,
जयपुर सिटी —(राजपूताना)



मुद्रक—
ज्योतीप्रसाद गुप्त,
महावीर प्रेस, किनारीबाजार
आगरा.

जैनार्या प्रवर्त्तिनी श्रीपुण्यश्रीजी महाराज



जन्म—	दीक्षा—	स्वर्गवास—
सं० १६१५	सं० १६३०	सं० १६७६
।ख शुदि ६	वैशाख शुदि ११	फाल्गुन शुदि १०

प्रवर्त्तिनी श्रीपुण्यश्रीस्तुत्यष्टकम् ।



सुपुण्या पुण्यश्रीः प्रकृतिमधुरा याकृतिमती,
सुवृत्ताङ्कैः सम्यक् चरणकरणैरुत्तमगतिः ।
सुपुण्यानां जाता सततबहुमान्या मतिमतां,
सदा पुण्यश्रीः सा भविनयहितात्मा विजयताम् ॥ १ ॥

शुभां मन्दारालीमभिलषितदां यां जनयतो-
स्तथा कल्याणैकस्थितिमथ जगत्यां घटयतोः ।
गुणैः साम्यं रम्यं सपदि मरुमेर्वोः समभवत्,
सदा पुण्यश्रीः सा सविनयहितात्मा विजयताम् ॥२॥

उपादेयं हेयं किमितिपदमस्ति त्रिभुवने,
विवेकोत्सेकेन स्फुटमतिहितं तत्प्रगदितम् ।
यया भारत्येव प्रियमपि च सत्यं लघु सतां,
सदा पुण्यश्रीः सा सविनयहितात्मा विजयताम् ॥३॥

सदङ्गं यं गङ्गायायित्र भवजतापं शमयितुं,
परं पापापोहं जनयितुमहो सज्जनगणः ।
ममग्रार्याग्रेगे प्रकटमिह यस्यै स्पृहयति,
सदा पुण्यश्रीः सा सविनयहितात्मा विजयताम् ॥४॥

अहो स्फूर्जद्दर्पो हरिहरविधीनामपि मनो-
विजेता कन्दर्पश्चकित इव नश्यत्यनुदिनम् ।
सुदूरं यस्याः सुव्रतजनधुरायाः शुभमतेः,
सदा पुण्यश्रीः सा सविनयहितात्मा विजयताम् ॥५॥

गरीयांसं यस्याः प्रसृमरयशोराशिममितः,
श्रितं श्रीगिरीशैः कविभिरिति दृष्ट्वा हिमगिरिः ।
जलस्रोतो दम्भाद्गलति जडरूपोऽप्यजनि च,
सदा पुण्यश्रीः सा सविनयहितात्मा विजयताम् ॥६॥

गुणा यस्यां कान्ताः सुखदसुमनःसङ्गनिरता,
अगम्या दुश्छिद्रैरपि परिणताश्चापरिमिताः ।
रमन्ते मालायामिव खलु मिथः प्रेमनिहिताः,
सदा पुण्यश्रीः सा सविनयहितात्मा विजयताम् ॥७॥

यदीये सत्पट्टे विमलकपपट्टे स्थिरतरा,
सुवर्णश्रीर्मान्या विलसति वदान्या गुरुतया ।
हरन्ती दौर्गत्यं धनमसुमतां साम्प्रतमिह,
सदा पुण्यश्रीः सा सविनयहितात्मा विजयताम् ॥८॥

शार्दूलविक्रीडितम्—

इत्थं सत्सुखसागरात्मभगवच्छ्रीमद्गणाधीशितुः,
पूज्या श्रीहरिसागरैकसुगुरो--राज्ञानुयायिन्यसौ ।
पुण्यश्रीः परमप्रभावप्रथिता भव्यात्मभिः संस्तुता,
कुर्यात् सर्वगुणप्रधानविनयश्रीशोभनं जीवनम् ॥९॥

॥ समाप्तम् ॥

श्रीमती गुरुणीजी महाराज श्री हुल्लासश्री जी महाराज

जन्म संवत् १९२० — दीक्षा संवत् १९५६

कार्त्तिक वदी १३ — वैशाख सुदी ६



समर्पण

श्रीमती परमपूज्यवर्या परमोपकारिणी ज्येष्ठा गुरुभगिनी
श्री हुलासश्रीजी
महाराज सा० की पवित्र सेवा में :—

आपकी असद्द कृपा से मुझे जो सन्मार्ग प्राप्त हुआ है, इसी से आपकी ऋणी हूँ। इस ऋण से यत्किंचित् रूप से मुक्त होने के लिये यह श्रावकों का प्रतिक्रमण सूत्र विधिपूर्वक संकलित करके आपके कर कमल में समर्पित करती हूँ।

आपकी बाल भगिनी:—

विनयश्री.



४-प्रतिक्रमण—अशुभयोगों को छोड़कर उत्तरोत्तर शुभयोग में वर्त्तना उसका नाम प्रतिक्रमण है। सामान्य प्रकार से प्रतिक्रमण दो प्रकार के हैं-१ द्रव्य, २ भाव। द्रव्य प्रतिक्रमण वह है जो दूसरे को दिखाने के लिये किया जाय, या जिस दोष का प्रतिक्रमण करने बाद भी फिर से उसी दोष को बारंबार सेवन करना यह द्रव्य प्रतिक्रमण है, इसी से आत्मशुद्धि न होकर और भी दोषों की पुष्टि होती है। इसलिये भाव प्रतिक्रमण ही सर्वदा ग्रहण करने योग्य है, इसी से ही आत्मस्वरूप प्रकट होता है। प्रतिक्रमण के पांच भेद हैं—(१) देवसिक—दिवस संबंधी लगे हुए पापोंका प्रायश्चित्त करना, (२) रात्रिक—रात्रि संबंधी लगे हुए पापोंका प्रायश्चित्त करना, (३) पाक्षिक—एक पक्ष अर्थात् पंद्रह दिनों में लगे हुए पापोंका प्रायश्चित्त करना, (४) चातुर्मासिक—चार मास में लगे हुए पापोंका प्रायश्चित्त करना, (५) सांवत्सरिक—एक साल भर में लगे हुए पापोंका प्रायश्चित्त करना। इसी प्रतिक्रमण के द्वारा पापोंकी आलोचना न करके चित्तशुद्धि न की जाय, तब तक धर्मध्यान या शुक्लध्यान के लिये एकाग्रता प्राप्त करने का जो कायोत्सर्ग का उद्देश्य है वह किसी तरह सिद्ध नहीं हो सकता। आलोचना के द्वारा चित्त-शुद्धि किये बिना जो कायोत्सर्ग करता है, वह मुखसे चाहे किसी शब्द-विशेष का जप किया करे परन्तु उसके चित्त में उच्चध्येय का विचार कभी नहीं आता। इसलिये कायोत्सर्ग की योग्यता प्रतिक्रमण करने बाद ही होती है।

५-कायोत्सर्ग—धर्मध्यान या शुक्लध्यान के लिये एकाग्र होकर शरीर की ममता को छोड़ना उसका नाम कायोत्सर्ग है।

इसीसे शरीर की वात पित्त आदि धातुओं की विषमता और बुद्धि की मंदता का नाश होकर विचार शक्तिका प्रकाश होता है। सुख और दुःख में अर्थात् अनुकूल और प्रतिकूल संयोगों में समभाव से रहने की शक्ति कायोत्सर्ग से प्रकट होती है। भावना और ध्यान का अभ्यास भी इसीसे पुष्ट होता है। अतिचार का चिंतन भी यथार्थ हो सकता है। यह कायोत्सर्ग एक अपूर्व क्रिया है। इसीसे जब चित्त की शुद्धि, एकाग्रता और आत्मशक्ति प्राप्त होती है तब वह प्रत्याख्यान करने का सच्चा अधिकारी हो सकता है।

६–प्रत्याख्यान—अन्न आदि बाह्य वस्तुएं द्रव्यरूप हैं और अज्ञान आदि वैभाविक परिणाम भावरूप हैं। इन दोनों का जो त्याग किया जाय वह प्रत्याख्यान है। इसके करने से आस्रव का निरोध होकर संवर प्राप्त होता है। संवर से तृष्णा का नाश, तृष्णा के नाश से निरुपम समभाव और ऐसे समभाव से क्रमशः मोक्ष का लाभ होता है।

इस पुस्तक में विधि पूर्वक पंच प्रतिक्रमण के अलावा सविस्तर पौषधविधि, दिन और रात्रि के पूरे पूरे प्रत्याख्यान, सप्तस्मरण, भक्तामर, कल्याणमंदिर, ग्रहशांति, मंत्राधिराज, जिनपंजर, ऋषि-मंडल, तिजयपहुत्त आदि कई एक प्रभाविक स्तोत्र; तथा पंचति-थियों के प्राचीन स्तवन, स्तुति, गौतमरास, शत्रुंजयरास, गौड़ी पार्श्व-नाथ भगवान का वृद्ध स्तवन, आलोयण-पद्मावती, चौदह नियम आदि कई एक आवश्यकीय विषय स्मरण करने के लिये दिये गये हैं।

इसकी पूर्ण प्रेस कॉपी श्रीमान् परमपूज्य विद्वद्वर्य खरतरगच्छ गणाधिपति श्रीश्रीश्री १००८ श्रीश्री हरिसागरजी गणी महाराजसा० ने परिश्रम करके देखी है, इसलिये मैं उनका पूर्ण आभार मानती हूँ।

इसका प्रूफ संशोधन ध्यान पूर्वक किया गया है तो भी कहीं दृष्टि-दोष एवं प्रेसकी भूल से जो कुछ भी भूल रह गई है वे शुद्धि पत्र में लिख दी हैं। इसको पढ़ने वाले सज्जन प्रथम शुद्धि पत्र के मुआफिक भूल सुधार कर पीछे पढ़ें। इति शुभमस्तु।

झूंझनू (शेखावाटी)
सं १९८८ चैत्रशुक्ला १३
श्रीमहावीर जिन जयंती

साध्वी विनयश्री.



शुद्धि-पत्र ।



पृष्ठ	पंक्ति	अशुद्ध	शुद्ध
२	३	धारूँ	धारे
२	५	पालूं, पलावूं	पाले, पलावे
२	६	अनुमोदूँ	अनुमोदे
२	७	आदरूँ	आदरे
१२	१६	संन्ति	संति
१५	६	राइया	राइओ
२२	१३	मणुं	भणुं
३२	१७	वंदीय	वंदिय
३४	१५	सह्यद्रौ	सह्याद्रौ
४३	२	अट्ठि	अट्ठ
४३	३	निट्ठ	निट्ठि
४३	१८	गुणागण	गुणगण
४४	५	देसियाणं	देसयाणं
४६	१६	वानतडी	वीनतडी
५६	१६	वंदीय	वंदिय
६१	२०	खाइअं	खाइमं
६४	१७	अट्ठिविह	अट्ठविह
६४	१६	मंतं	मंत
८०	५	कुडमाण	कुडमाणे

पृष्ठ	पंक्ति	अशुद्ध	शुद्ध
६३	१५	ज्याय:कम	ज्याय:क्रम
१००	४	स्फुर्जत्	स्फूर्जत्
१०१	११	कम्मघणा	कम्मवण
१११	१५	थुलभद्द	थूलभद्द
१११	१७	फासुअट्ठाणे	फासुअदाणे
११२	१	दुकड	दुकडं
११४	३	करोमि	करेमि
११५	३	सुहुभेहिं	सुहुमेहिं
१२७	४	जंमाइएणं	जंभाइएणं
१४१	७	असइयोसं	असइपोसं
१६०	१८	जस्सग्गो	वस्सुग्गहो
१६५	१२	अजाते	अजानते
२०१	१	सूखंद	सूरखंद
२०३	११	प्पगारेएहिं	प्पगारएहिं
२१६	१४	रार्हतां	रार्हता
२१६	११	भूमण्डले	भूमण्डले
२३४	१३	अणूजाणह जस्सगो	अणुजाणह जस्सुग्गहो
२३८	१	पंडिलो	थंडिलो
२५४	२	पोरिसं	पोरिसिं
२५६	१६	१०–११	११–१२
२५६	१०	वदा	वंदा
२७६	२	सिवि	सिव

पृष्ठ	पंक्ति	अशुद्ध	शुद्ध
२७६	११	धारंति	धारेंति
२८३	५	भुमि	भूमि
२९०	७	शरणस्य: शरण्य:	शरणस्य शरण्य:
२९१	१६	वुध:	वुध
२९२	१८	ईशान्यां	ऐशान्यां
२९७	१३	योगादमुत	योगादमृत
२९७	१३	त्वमा	त्वामा
२९८	४	पापं	पाप
२९८	८	सर्वं, फल	सर्वं, फलं
२९८	१९	देवयो	देव्यो
३०३	८,९,११,१३, १४,१६,१८	हिनस्तु	हिंसन्तु
३०४	११	गोप्प	गोप्य:
३०४	१२	सुदुष्प्राप्य	सुदुष्प्राप्य:
३०४	१४	विपीने	विपिने
३२१	६	अढ	अठ
३२७	३	भावड	भावठ
३३१	१८	अवटी	अटवी
३३३	१७	रे	दूरे
३३६	२०	विवुघ	विवुध
३४२	७	नहां	नहीं
३४२	२१	जयेज	जपेज

विषयानुक्रमणिका

सप्त स्मरण



श्रीवीतरागाय नमः ।

खरतरगच्छीय-विधिपूर्वक—

श्रीपञ्च प्रतिक्रमणसूत्राणि ।



अथ प्रातःकाल सामायिक लेने की विधि ।



(श्रावक श्राविका सामायिक लेने के पहले अगले दिन पडि-लेहन किये हुए शुद्ध वस्त्र पहन कर, चौकी (वाजोठ) आदि उच्च स्थान पर पुस्तक या नवकारवाली आदि रख कर, जमीन पूंजकर, आसन, चरवला और मुहपत्ति लेकर बैठे। बैठ कर बांये हाथ में मुहपत्ति मुख के आगे रखकर दाहिने हाथ को स्थापन किये हुए पुस्तक आदि की स्थापना के सम्मुख करके तीन बार नवकार मन्त्र पढ़े)—

णमो अरिहंताणं। णमो सिद्धाणं। णमो आयरियाणं। णमो उवज्झायाणं। णमो लोए सव्वसाहूणं। एसो पञ्च णमुक्कारो। सव्वपावप्पणासणो। मंगलाणं च सव्वेसिं। पढमं हवइ मंगलं॥ १॥

(इस प्रकार तीन बार नवकार मन्त्र पढ़कर स्थापनाजी की स्थापना करके तेरह बोल से स्थापनाजी की पडिलेहना करे)

शुद्ध स्वरूप धारूँ (१) ज्ञान (२) दर्शन (३) चारित्र (४) सहित सद्दहणा-शुद्धि (५) प्ररूपणा-शुद्धि (६) दर्शन-शुद्धि (७) सहित पाँच आचार पालूं (८) पलावूं (९) अनुमोदूं (१०), मनोगुप्ति (११), वचनगुप्ति (१२), कायगुप्ति आदरूँ (१३)।

(पीछे गुरु जी के सामने या स्थापनाचार्य जी के सामने खड़े होकर गुरु वन्दन करे)

इच्छामि खमासमणो ! वंदिउं जावणिज्जाए निसीहिआए मत्थएण वंदामि।

(इस प्रकार बोलते हुए तीन खमासमण देना। पीछे)

इच्छकारी भगवन् ! सुहराई, सुहदेवसी, सुखतप शरीरनिराबाध सुखसंजमयात्रा निर्वहते हो जी ? स्वामी शाता है जी ?

(ऐसा कहकर, नीचे बैठ कर दाहिने हाथ को चरवले पर या नीचे रख कर, मस्तक नमा कर नीचे का सूत्र बोले)—

इच्छाकारेण संदिसह भगवन् ! अब्भुट्ठिओमि (अब्भुट्ठिओऽहं) अब्भिंतरराइअं खामेउं ? इच्छं, खामेमि राइअं। जं किंचि अपत्तिअं, परपत्तिअं, भत्ते पाणे विणए वेयावच्चे

आलावे संलावे उच्चासणे समासणे अंतरभासाए उवरिभासाए, जं किंचि मज्झ विणयपरिहीणं, सुहुमं वा बायरं वा, तुब्भे जाणह, अहं न जाणामि, तस्स मिच्छा मि दुक्कडं।

(इस प्रकार गुरुवंदन करके पीछे नीचे लिखे अनुसार बोलना)

इच्छामि खमासमणो वंदिउं जावणिज्जाए निसीहिआए मत्थएण वंदामि। इच्छाकारेण संदिसह भगवन्! सामायिक मुहपत्ति पडिलेहुं? 'इच्छं'। इच्छामि खमासमणो वंदिउं जावणिज्जाए निसीहिआए मत्थएण वंदामि।

(ऐसा बोलकर मुहपत्ति की पडिलेहना नीचे लिखे पचीस बोल मनमें बोलते हुए करे)।

१ सूत्र अर्थ सचा सद्दहूं, २ सम्यक्त्व-मोहनीय, ३ मिथ्यात्व-मोहनीय, ४ मिश्रमोहनीय परिहरूं। ५ कामराग, ६ स्नेहराग, ७ दृष्टिराग परिहरूं।

(ये सात बोल मुहपत्ति खोलते समय कहने चाहियें)

१ ज्ञान विराधना, २ दर्शन विराधना, ३ चारित्र-विराधना परिहरूं। ४ मनोगुप्ति, ५ वचनगुप्ति, ६ कायगुप्ति आदरूं। ७ मनोदंड, ८ वचनदंड, ९ कायदंड परिहरूं।

(ये नव बोल दाहिने हाथ के पडिलेहन के समय कहने चाहियें)

१ सुगुरु, २ सुदेव, ३ सुधर्म आदरूं। ४ कुगुरु, ५ कुदेव, ६ कुधर्म परिहरूं। ७ ज्ञान, ८ दर्शन, ९ चारित्र आदरूं।

(ये नवबोल बाँये हाथ के पडिलेहन के समय कहने चाहिये। अब नीचे लिखे पच्चीस बोलों से अंगकी पडिलेहना करे अर्थात् जिस अंग का नाम आवे उसी अंग को मुहपत्ति से स्पर्श करें)—

१ कृष्णलेश्या, २ नीललेश्या, ३ कापोतलेश्या, ये तीन मस्तके परिहरूं। १ ऋद्धिगारव, २ रसगारव, ३ सातागारव ये तीन मुखे परिहरूं। १ मायाशल्य, २ नियाणशल्य, ३ मिथ्यादर्शनशल्य ये तीन हृदये परिहरूं। १ क्रोध, २ मान, ये दोनों दाहिने कंधे परिहरूं। १ माया, २ लोभ ये दोनों बांये कंधे परिहरूं। १ हास्य, २ रति, ३ अरति, ये तीन बांये हाथे परिहरूं। १ भय, २ शोक, ३ दुगंछा ये तीन दांहिने हाथे परिहरूं। १ पृथ्वीकाय, २ अप्काय, ३ तेऊकाय ये तीन बांये पादे परिहरूं। १ वायुकाय, २ वनस्पतिकाय, ३ त्रस-काय ये तीन दाहिने पादे परिहरूं।

(इस प्रकार मुहपत्ति की पडिलेहना करे। पीछे खड़े होकर)—

इच्छामि खमासमणो वंदिउं जावणिज्जाए निसीहि-आए मत्थएण वंदामि। इच्छाकारेण संदिसह भगवन्! सामायिक संदिसाहुं? 'इच्छं'॥ इच्छामि खमासमणो वंदिउं जावणिज्जाए निसीहिआए मत्थएण वंदामि।

इच्छाकारेण संदिसह भगवन्! सामायिक ठाउं? 'इच्छं'॥
इच्छामि खमासमणो वंदिउं जावणिज्जाए निसीहिआए मत्थएण वंदामि।

(अब यहां आधा अंग नमा कर और हाथ जोड़ कर)

णमो अरिहंताणं। णमो सिद्धाणं। णमो आयरियाणं। णमो उवज्झायाणं। णमो लोए सव्वसाहूणं। एसो पंच णमुक्कारो सव्वपावप्पणासणो। मंगलाणं च सव्वेसिं। पढमं हवइ मंगलं।

इस प्रकार तीन वार नवकार मंत्र बोले। पीछे "इच्छकारि भगवन्! पसायकरी सामायिक दंडक उच्चरावो जी"। ऐसा कहकर 'करेमि भन्ते' स्वयं तीन वार उचरे। यदि गुरु महाराज या कोई बड़े हों तो वे तीन वार उचरावे।

करेमि भंते! सामाइयं, सावज्जं जोगं पच्चक्खामि। जाव नियमं पज्जुवासामि, दुविहं तिविहेणं, मणेणं वायाए काएणं न करेमि, न कारवेमि तस्स भंते! पडिक्कमामि निंदामि गरिहामि अप्पाणं वोसिरामि। (तीन वार कहना)

इच्छामि खमासमणो वंदिउं जावणिज्जाए निसीहिआए मत्थएण वंदामि। इच्छाकारेण संदिसह भगवन्! इरियावहियं पडिक्कमामि? इच्छं। इच्छामि पडिक्कमिउं, इरियावहियाए, विराहणाए, गमणागमणे, पाणक्कमणे,

वीयक्कमणे, हरियक्कमणे, ओसा-उत्तिंग-पणग-दग-मट्टी-मक्कडासंताणा-संकमणे, जे मे जीवा विराहिया, एगिंदिया, बेइंदिया, तेइंदिया, चउरिंदिया, पंचिंदिया, अभिहया, वत्तिया, लेसिया, संघाइया, संघट्टिया, परियाविया, किलामिया, उद्दविया, ठाणाओ ठाणं संकामिया, जीवियाओ ववरोविया तस्स मिच्छा मि दुक्कडं।

तस्स उत्तरीकरणेणं, पायच्छित्तकरणेणं, विसोहीकरणेणं, विसल्लीकरणेणं, पावाणं कम्माणं निग्घायणट्ठाए, ठामि काउस्सग्गं।

अन्नत्थ ऊससिएणं, नीससिएणं, खासिएणं, छीएणं, जंभाइएणं, उड्डुएणं वायनिसग्गेणं, भमलिए पित्तमुच्छाए, सुहुमेहिं अंगसंचालेहिं, सुहुमेहिं खेलसंचालेहिं, सुहुमेहिं दिट्ठिसंचालेहिं, एवमाइएहिं आगारेहिं अभग्गो अविराहिओ हुज्ज मे काउस्सग्गो। जाव अरिहंताणं भगवंताणं, नमुक्कारेणं न पारेमि ताव कायं ठाणेणं मोणेणं झाणेणं अप्पाणं वोसिरामि।

(यहाँ एक लोगस्स का या चार नवकार का काउस्सग्ग करना। पीछे नीचे लिखे अनुसार प्रगट लोगस्स कहना।)

लोगस्स उज्जोअगरे, धम्मतित्थयरे जिणे। अरिहंते कित्तइस्सं, चउवीसं पि केवली ॥ १ ॥ उसभमजिअं च

वंदे, संभवमभिणंदणं च सुमइं च। पउमप्पहं सुपासं, जिणं च चंदप्पहं वंदे ॥ २ ॥ सुविहिं च पुप्फदंतं, सीअल-सिज्जंस-वासुपुज्जं च। विमलमणंतं च जिणं, धम्मं संतिं च वंदामि ॥ ३ ॥ कुंथुं अरं च मल्लिं, वन्दे मुणिसुव्वयं नमिजिणं च। वंदामि रिट्ठनेमिं, पासं तह वद्धमाणं च ॥ ४ ॥ एवं मए अभिथुआ, विहुयरयमला पहीणजरमरणा। चउवीसंपि जिणवरा, तित्थयरा मे पसीयंतु ॥ ५ ॥ कित्तिय-वंदिय-महिया, जे ए लोगस्स उत्तमा सिद्धा। आरुग्गबोहिलाभं समाहिवरमुत्तमं दिंतु ॥ ६ ॥ चंदेसु निम्मलयरा, आइचेसु अहियं पयासयरा। सागरवरगंभीरा, सिद्धा सिद्धिं मम दिसंतु ॥ ७ ॥

इच्छामि खमासमणो! वंदिउं जावणिज्जाए निसीहिआए मत्थएण वंदामि। इच्छाकारेण संदिसह भगवन्! बैसणो संदिसाहुं? 'इच्छं'।

इच्छामि खमासमणो! वंदिउं जावणिज्जाए निसीहिआए मत्थएण वंदामि। इच्छाकारेण संदिसह भगवन्! बैसणो ठाउं? 'इच्छं'।

इच्छामि खमासमणो! वंदिउं जावणिज्जाए निसीहिआए मत्थएण वंदामि। इच्छाकारेण संदिसह भगवन्! सज्झाय संदिसाहुं? 'इच्छं'।

इच्छामि खमासमणो ! वंदिउं जावणिज्जाए निसीहिआए मत्थएण वंदामि। इच्छाकारेण संदिसह भगवन् ! सज्झाय करूं ? 'इच्छं'।

इच्छामि खमासमणो ! वंदिउं जावणिज्जाए निसीहिआए मत्थएण वंदामि।

(इस प्रकार खमासमण देकर आठ नवकार मन्त्र गिने। पीछे शीत आदि की ऋतु हो और ओढ़ने को कपड़ा की आवश्यकता हो तो)

इच्छामि खमासमणो ! वंदिउं जावणिज्जाए निसीहिआए मत्थएण वंदामि। इच्छाकारेण संदिसह भगवन् ! पंगुरण संदिसाहुं ? 'इच्छं'।

इच्छामि खमासमणो वंदिउं जावणिज्जाए निसीहिआए मत्थएण वंदामि। इच्छाकारेण संदिसह भगवन् ! पंगुरण पडिग्गाहुं ? 'इच्छं'।

(इस प्रकार खमासमण देकर वस्त्र ग्रहण करे। पीछे दो घड़ी (४८ मिनिट) स्वाध्याय ध्यान करे या प्रतिक्रमण करें। सामायिक में या पौषध में सामायिक और पौषध वाला व्रती श्रावक आपस में वन्दन करे तो 'वन्दामो' कहे और अव्रती वन्दन करे तो 'सज्झाय करेह' ऐसा कहे।)

※ इति सामायिक लेने की विधि ※

अथ राइप्रतिक्रमण विधि ।

(प्रथम पूर्वोक्त रीति से सामायिक लेकर पीछे* ।)

इच्छामि खमासमणो वंदिउं जावणिज्जाए निसीहि-आए मत्थएण वंदामि । इच्छाकारेण संदिसह भगवन् ! चैत्यवन्दन करुं ? 'इच्छं' ।

जयउ सामिय जयउ सामिय रिसह सत्तुंजि, उज्जित पहु नेमिजिण, जयउ वीर सचउरिमंडण । भरुअच्छहिं मुणिसुव्वय, मुहरिपास दुहदुरिअखंडण, अवरविदेहिं तित्थयरा, चिहुं दिसि विदिसि जिं के वि तीआणागयसंपइअ वंदुं जिण सव्वेवि ॥ १ ॥ कम्मभूमिहिं कम्मभूमिहिं पढमसंघयणि, उक्कोसय सत्तरिसय जिणवराण विहरंत लब्भइ । नवकोडिहिं केवलीण, कोडिसहस्स नव साहु गम्मइ । संपइ जिणवर वीस मुणि बिहुं कोडिहिं वरनाण, समणह कोडिसहस्सदुअ थुणिज्जइ निच विहाणि ॥ २ ॥ सत्ताणवइ सहस्सा, लक्खा छप्पन्न अट्ठ कोडीओ ।

---

* कोई कुसुमिण दुसुमिण का काउस्सग्ग करके पीछे चैत्यवन्दन करते हैं ।

चउसय छायासीया, तिअलोए चेइए वंदे ॥ ३ ॥ वंदे नवकोडिसयं पणवीसं कोडि लक्ख तेवन्ना । अट्ठावीस सहस्सा, चउसय अट्ठासिया पडिमा ॥ ४ ॥

जं किंचि नामतित्थं, सग्गे पायालि माणुसे लोए। जाइं जिणबिंबाइं, ताइं सव्वाइं वंदामि ॥ १ ॥

नमोत्थुणं अरिहंताणं भगवंताणं ॥ १ ॥ आइगराणं तित्थयराणं सयंसंबुद्धाणं ॥ २ ॥ पुरिसुत्तमाणं, पुरिस-सीहाणं, पुरिसवरपुण्डरीआणं, पुरिसवर-गन्धहत्थीणं॥३॥ लोगुत्तमाणं लोगनाहाणं, लोगहिआणं लोगपईवाणं, लोग-पज्जोअगराणं ॥ ४ ॥ अभयदयाणं, चक्खुदयाणं, मग्गद-याणं, सरणदयाणं, बोहिदयाणं ॥ ५ ॥ धम्मदयाणं, धम्म-देसयाणं, धम्मनायगाणं, धम्मसारहीणं धम्मवर-चाउरंत-चक्कवट्टीणं॥ ६ ॥ अप्पडिहयवर-नाणदंसणधराणं विअट्ट-छउमाणं ॥ ७ ॥ जिणाणं जावयाणं, तिन्नाणं तारयाणं, बुद्धाणं बोहयाणं मुत्ताणं मोअगाणं ॥ ८ ॥ सव्वन्नूणं, सव्वदरिसीणं, सिवमयलमरुअमणंतमक्खय-मव्वाबाहमपुण-रावित्ति सिद्धिगइ-नामधेयं ठाणं संपत्ताणं, नमो जिणाणं, जिअभयाणं ॥ ९ ॥ जे अ अईआ सिद्धा, जे अ भवि-स्संति णागए काले । संपइ अ वट्टमाणा, सव्वे तिविहेण वंदामि ॥ १० ॥

जावंति चेइआइं, उड्ढे अ अहे अ तिरिअलोए अ। सव्वाइं ताइं वंदे, इह संतो तत्थ संताइं ॥ १ ॥

जावंत केवि साहू, भरहेरवयमहाविदेहे अ। सव्वेसिं तेसिं पणओ, तिविहेण तिदंड विरयाणं ॥ १ ॥

नमोऽर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधुभ्यः।

उवसग्गहरं पासं, पासं वंदामि कम्मघणमुक्कं। विसहर विसनिन्नासं, मंगल–कल्लाण–आवासं ॥ १ ॥ विसहर–फुलिंग–मंतं, कंठे धारेइ जो सया मणुओ। तस्स गह–रोग–मारी, दुट्ठजरा जंति उवसामं ॥ २ ॥ चिट्ठउ दूरे मंतो, तुज्झ पणामो वि बहुफलो होइ। नर-तिरिएसु वि जीवा, पावंति न दुक्ख-दोगच्चं ॥ ३ ॥ तुह सम्मत्ते लद्धे, चिन्तामणिकप्पपायवब्भहिए। पावंति अविग्घेणं, जीवा अयरामरं ठाणं ॥ ४ ॥ इअ संथुओ महायस! भत्तिब्भर-निब्भरेण हिअएण। ता देव! दिज्ज बोहिं, भवे भवे पासजिणचंद ॥ ५ ॥

जय वीयराय! जगगुरु!, होउ ममं तुह पभावओ भयवं!। भवनिव्वेओ मग्गा-णुसारिआ इट्ठफलसिद्धी ॥१॥ लोगविरुद्धच्चाओ, गुरुजणपूआ परत्थकरणं च। सुहगुरु-जोगो तव्वयण सेवणा आभवमखंडा ॥ २ ॥

इच्छामि खमासमणो वंदिउं जावणिज्जाए निसीहि-आए मत्थएण वंदामि ॥ इच्छाकारेण सन्दिसह भगवन् कुसुमिण-दुसुमिण-राइयपायच्छित्त-विसोहणत्थं काउस्सग्ग करूँ ? "इच्छं" कुसुमिण-दुसुमिण-राइयपायच्छित्त विसो-हणत्थं करेमि काउस्सग्गं ॥

अन्नत्थ ऊससिएणं, नीससिएणं, खासिएणं, छीएणं, जंभाइएणं, उड्डुएणं, वायनिसग्गेणं, भमलिए, पित्तमुच्छाए, सुहुमेहिं अंगसंचालेहिं, सुहुमेहिं खेलसंचालेहिं, सुहुमेहिं दिट्ठिसंचालेहिं, एवमाइएहिं आगारेहिं अभग्गो अविराहिओ हुज्ज मे काउस्सग्गो, जाव अरिहंताणं भगवंताणं, नमुक्का-रेणं न पारेमि, ताव कायं ठाणेणं मोणेणं झाणेणं अप्पाणं वोसिरामि ॥

(यहाँ चार लोगस्स या सोलह नवकार का काउस्सग्ग करना । काउस्सग्ग पार के नीचे मुजब प्रगट लोगस्स कहना ।

लोगस्स उज्जोअगरे, धम्मतित्थयरे जिणे । अरिहंते कित्तइस्सं, चउवीसं पि केवली ॥ १ ॥ उसभमजिअं च वंदे, सम्भवमभिणंदणं च सुमइं च । पउमप्पहं सुपासं, जिणं च चंदप्पहं वन्दे ॥ २ ॥ सुविहिं च पुप्फदंतं, सीअलसि-ज्जंस-वासुपुज्जं च विमलमणंतं च जिणं, धम्मं संन्ति च वंदामि ॥ ३ ॥ कुंथुं अरं च मल्लिं, वन्दे मुणिसुव्वयं

नमिजिणं च । वंदामि रिट्ठनेमिं, पासं तह वद्धमाणं च ॥४॥ एवं मए अभिथुआ, विहुयरयमला पहीणजरमरणा । चउवीसंपि जिणवरा, तित्थयरा मे पसीयंतु ॥ ५ ॥ कित्तिय वंदियमहिया, जे ए लोगस्स उत्तमा सिद्धा । आरुग्ग बोहिलाभं समाहिवरमुत्तमं दिंतु ॥ ६ ॥ चंदेसु निम्मलयरा, आइच्चेसु अहियं पयासयरा । सागरवरगम्भीरा, सिद्धा सिद्धिं मम दिसंतु ॥ ७ ॥

इच्छामि खमासमणो वंदिउं जावणिज्जाए निसीहिआए मत्थएण वंदामि 'श्रीआचार्यजीमिश्र' ।

इच्छामि खमासमणो वंदिउं जावणिज्जाए निसीहिआए मत्थएण वंदामि 'श्रीउपाध्यायजीमिश्र' ।

इच्छामि खमासमणो वंदिउं जावणिज्जाए निसीहिआए मत्थएण वंदामि 'जंगमयुगप्रधान भट्टारक वर्त्तमान गुरु········मिश्र' ।

इच्छामि खमासमणो वंदिउं जावणिज्जाए निसीहिआए मत्थएणं वंदामि 'सर्वसाधुजीमिश्र' । इच्छकारि समस्त श्रावकमिश्र ।

इच्छाकारेण संदिसह भगवन् राइयपडिक्कमणे ठाउं ? इच्छं ।

(कहकर दाहिने हाथ को चरवले या आसन पर रखकर, या गोडाली आसन से बैठकर मस्तक नमाकर दोनों हाथों से मुंहपत्ति मुख के आगे रखकर।)

सव्वस्सवि राइअ दुच्चिंतिअ दुब्भासिअ दुच्चिट्ठिअ तस्स मिच्छामि दुक्कडं।

नमोत्थुणं अरिहंताणं भगवंताणं ॥ १ ॥ आइगराणं तित्थयराणं सयंसंबुद्धाणं ॥ २ ॥ पुरिसुत्तमाणं पुरिससीहाणं, पुरसिवर, पुंडरीआणं, पुरसिवर-गन्धहत्थीणं ॥३॥ लोगुत्तमाणं लोगनाहाणं, लोगहिआणं लोगपईवाणं लोगपज्जोअगराणं ॥ ४ ॥ अभयदयाणं चक्खुदयाणं, मग्गदयाणं सरणदयाणं बोहिदयाणं ॥ ५ ॥ धम्मदयाणं धम्मदेसयाणं, धम्मनायगाणं धम्मसारहीणं, धम्मवरचाउरंत-चक्कवट्टीणं ॥ ६ ॥ अप्पडिहयवरनाण-दंसणधराणं, विअट्टछउमाणं ॥ ७ ॥ जिणाणं जावयाणं, तिन्नाणं तारयाणं बुद्धाणं बोहयाणं मुत्ताणं मोअगाणं ॥ ८ ॥ सव्वन्नूणं सव्वदरिसीणं, सिवमयलमरुअमणन्तमक्खयमव्वाबाहमपुणरावित्ति, सिद्धिगइ—नामधेयं, ठाणं संपत्ताणं, नमो जिणाणं जिअभयाणं ॥ ९ ॥ जेअ अईआ सिद्धा, जेअ भविस्संति णागए काले। संपइ अवट्टमाणा, सव्वे तिविहेण वंदामि ॥ १० ॥

(अब खड़े होकर बोलना ।)

करेमि भन्ते ! सामाइयं, सावज्जं जोगं पच्चक्खामि, जाव नियमं पज्जुवासामि, दुविहं तिविहेणं मणेणं वायाए काएणं न करेमि न कारवेमि तस्स भन्ते ! पडिक्कमामि निंदामि गरिहामि अप्पाणं वोसिरामि ॥

इच्छामि ठामि काउस्सग्गं । जो मे राइयो अइयारो कओ काइओ वाइयो माणसिओ उस्सुत्तो उम्मग्गो अकप्पो, अकरणिज्जो दुज्झाओ दुव्विचिंतिओ अणायारो अणिच्छिअव्वो असावगपाउग्गो नाणे दंसणे चरित्ताचरित्ते, सुए, सामाइए, तिण्हं गुत्तीणं, चउण्हं कसायाणं, पंचण्हमणुव्वयाणं, तिण्हं गुणव्वयाणं, चउण्हं सिक्खावयाणं, बारसविहस्स सावगधम्मस्स, जं खंडिअं, जं विराहिअं, तस्स मिच्छा मि दुक्कडं ।

तस्स उत्तरीकरणेणं, पायच्छित्तकरणेणं, विसोहीकरणेणं, विसल्लीकरणेणं, पावाणं कम्माणं निग्घायणट्ठाए ठामि काउस्सग्गं ॥

अन्नत्थ ऊससिएणं, नीससिएणं खासिएणं, छीएणं, जंभाइएणं, उड्डुएणं, वायनिसग्गेणं, भमलिए, पित्तमुच्छाए, सुहुमेहिं अंगसंचालेहिं, सुहुमेहिं खेलसंचालेहिं, सुहुमेहिं दिट्ठिसंचालेहिं, एवमाइएहिं आगारेहिं, अभग्गो अविराहियो

हुज्ज मे काउस्सग्गो । जाव अरिहंताणं भगवंताणं नमुक्कारेणं न पारेमि ताव कायं ठाणेणं मोणेणं झाणेणं अप्पाणं वोसिरामि ॥

(यहां एक लोगस्स या चार नवकार का काउस्सग्ग करना पीछे काउस्सग्ग पार करके प्रगट लोग्गस्स नीचे मुजब कहना-)

लोगस्स उज्जोअगरे, धम्मतित्थयरे जिणे । अरिहंते कित्तइस्सं, चउवीसं पि केवली । उसभमजिअं च वंदे, संभवमभिणंदणं च सुमइं च । पउमप्पहं सुपासं, जिणं च चंदप्पहं वंदे ॥ सुविहिं च पुप्फदंतं, सीअल-सिज्जंस-वासु-पुज्जं च । विमलमणंतं च जिणं, धम्मं संतिं च वंदामि ॥ कुंथुं अरं च मल्लिं, वंदे मुणिसुव्वयं नमिजिणं च । वंदामि रिट्ठनेमिं, पासंतह वद्धमाणं च ॥ एवं मए अभिथुआ, विहुय-रयमला पहीण जरमरणा । चउवीसं पि जिणवरा, तित्थयरा मे पसीयंतु ॥ कित्तियवंदियमहिया, जे ए लोगस्स उत्तमा सिद्धा । आरुग्गबोहिलाभं, समाहिवरमुत्तमं दिंतु ॥ चंदेसु निम्मलयरा, आइच्चेसु अहियं पयासयरा । सागरवरगंभीरा सिद्धा सिद्धिं मम दिसंतु ॥ ७ ॥

सव्वलोए अरिहंतचेइयाणं करेमि काउस्सग्गं । वंदण-वत्तिआए, पूअणवत्तिआए, सक्कारवत्तिआए, सम्माणव-त्तिआए, बोहिलाभवत्तिआए, निरुवसग्गवत्तिआए, सद्धाए,

पेहाए, धिईए, धारणाए, अणुप्पेहाए, वड्ढमाणीए ठामि काउस्सग्गं ॥

अन्नत्थ ऊससिएणं, नीससिएणं, खासिएणं, छीएणं, जंभाइएणं, उड्डुएणं, वायनिसग्गेणं, भमलिए, पित्तमुच्छाए, सुहुमेहिं अंगसंचालेहिं, सुहुमेहिं खेलसंचालेहिं, सुहुमेहिं दिट्ठिसंचालेहिं, एवमाइएहिं आगारेहिं अभग्गो अविराहिओ हुज्ज मे काउस्सग्गो ॥ जाव अरिहंताणं भगवंताणं नमुक्कारेणं न पारेमि, ताव कायं ठाणेणं मोणेणं झाणेणं अप्पाणं, वोसिरामि ॥

(एक 'लोगस्स' या चार नवकार का काउस्सग्ग करना । पीछे नीचे लिखे मुजब पुक्खरवरदीवड्ढे कहना)

पुक्खरवरदीवड्ढे, धायइसंडे अ जंबुदीवे अ । भरहेरवयविदेहे, धम्माइगरे नमंसामि ॥१॥ तम-तिमिर-पडल-विद्धंसणस्स सुरगणनरिंदमहियस्स । सीमाधरस्स वंदे, पप्फोडिअ मोहजालस्स ॥ २ ॥ जाईजरामरणसोगपणासणस्स, कल्लाण-पुक्खल-विसाल-सुहावहस्स । को देव-दाणवनरिंदगणच्चियस्स, धम्मस्स सारमुवलब्भ करे पमायं ॥३॥ सिद्धे भो ! पयओ णमो जिणमए नंदी सया संजमे, देवंनागसुवन्नकिन्नरगणस्सब्भूअभावच्चिए । लोगो जत्थ पइट्ठिओ जगमिणं तेलुक्कमच्चासुरं, धम्मो वड्ढउ

सासओ विजयओ धम्मुत्तरं वड्ढउ ॥४॥ सुअस्स भगवओ करेमि काउस्सग्गं । वंदणवत्तिआए, पूअणवत्तिआए, सक्कारवत्तिआए, सम्माणवत्तिआए, वोहिलाभवत्तिआए, निरुवसग्गवत्तिआए । सद्धाए मेहाए धिईए धारणाए अणुप्पेहाए वड्ढमाणीए ठामि काउस्सग्गं ।

अन्नत्थ ऊससिएणं, नीससिएणं, खासिएणं, छीएणं, जंभाइएणं, उड्डुएणं, वायनिसग्गेणं, भमलिए, पित्त-मुच्छाए, सुहुमेहिं अंगसंचालेहिं, सुहुमेहिं खेलसंचालेहिं, सुहुमेहिं दिट्ठिसंचालेहिं, एवमाइएहिं आगारेहिं अभग्गो अविराहिओ हुज्ज मे काउस्सग्गो । जाव अरिहंताणं भगवंताणं नमुक्कारेणं न पारेमि ताव कायं ठाणेणं मोणेणं झाणेणं अप्पाणं वोसिरामि ।

(यहाँ काउस्सग्ग में 'आजूणा चउपहरी रात्रिसंबंधी' इत्यादि आलोयणा का चिंतवन करें या आठ नवकार का काउस्सग्ग करें काउस्सग्ग पारकर नीचे मुजब सिद्धाणं बुद्धाणं कहना)

सिद्धाणं बुद्धाणं, पारगयाणं परंपरगयाणं । लोअग्ग-मुवगयाणं, नमो सया सव्वसिद्धाणं ॥१॥ जो देवाण वि देवो, जं देवा पंजली नमंसंति । तं देवदेवमहिअं, सिरसा वंदे महावीरं ॥२॥ इक्कोवि नमुक्कारो, जिणवरवसहस्स वद्धमाणस्स । संसारसागराओ, तारेइ नरं व नारिं वा ॥३॥

उज्जिंतसेलसिहरे, दिक्खा नाणं निसीहिआ जस्स। तं धम्मचक्कवट्टिं, अरिट्ठनेमिं नमंसामि ॥४॥ चत्तारि अट्ठ दस दो य, वंदिआ जिणवरा चउव्वीसं। परमट्ठ निट्ठि-अट्ठा, सिद्धा सिद्धिं मम दिसंतु ॥५॥

(यहां प्रमार्जन पूर्वक बैठ कर तीसरे आवश्यक की मुहपत्ति पडिलेहन करे पीछे नीचे लिखे मुजब द्वादशावर्त वंदना देवे)

सुगुरुवंदना सूत्र—

इच्छामि खमासमणो! वंदिउं जावणिज्जाए निसी-हिआए अणुजाणह मे मिउग्गहं निसीहि, अहोकायं काय-संफासं, खमणिज्जो भे किलामो अप्पकिलंताणं बहुसुभेण भे राइअवइक्कंता? जत्ता भे? जवणिज्जं च भे? खामेमि खमासमणो राइअं वइक्कम्मं, आवस्सिआए पडिक्कमामि, खमासमणाणं, राइआए आसायणाए, तित्तीसन्नयराए, जं किंचि मिच्छाए मणदुक्कडाए वयदुक्कडाए कायदुक्क-डाए; कोहाए माणाए मायाए; लोभाए, सव्वकालिआए सव्व मिच्छोवयाराए सव्व धम्माइक्कमणाए आसायणाए जो मे अइयारो कओ तस्स खमासमणो! पडिक्कमामि निंदामि गरिहामि अप्पाणं वोसिरामि ॥ (फिर)

इच्छामि खमासमणो ! वंदिउं जावणिज्जाए निसीहिआए । अणुजाणह मे मिउग्गहं निसीहि, अहोकायं कायसंफासं खमणिज्जो भे किलामो अप्पकिलंताणं बहुसुभेण भे, राइवइक्कंता ? जत्ता भे ? जवणिज्जं च भे ? खामेमि खमासमणो राइअं वइक्कम्मं पडिक्कमामि खमासमणाणं, राइआए आसायणाए तित्तीसन्नयराए, जं किंचि मिच्छाए मणदुक्कडाए वयदुक्कडाए कायदुक्कडाए कोहाए माणाए मायाए लोभाए सव्वकालिआए सव्व मिच्छोवयाराए सव्व धम्माइक्कमणाए आसायणाए जो मे अइयारो कओ तस्स खमासमणो ! पडिक्कमामि निंदामि गरिहामि अप्पाणं वोसिरामि ॥

इच्छाकारेण संदिसह भगवन राइअं आलोउं ? 'इच्छं' आलोएमि । जो मे राइओ अइआरो कओ, काइओ वाइओ माणसिओ उस्सुत्तो उम्मग्गो अकप्पो अकरणिज्जो दुज्झाओ दुव्विचिंतिओ अणायारो अणिच्छिअव्वो असावगपाउग्गो नाणे दंसणे चरित्ताचरित्ते सुए सामाइए । तिण्हं गुत्तीणं, चउण्हं कसायाणं पंचण्हमणुव्वयाणं, तिण्हं गुणव्वयाणं, चउण्हं सिक्खावयाणं बारसविहस्स सावगधम्मस्स जं खंडिअं जं विराहिअं तस्स मिच्छा मि दुक्कडं ॥

आजुणा चार प्रहर रात्रि में मैंने जिन २ जीवों की विराधना की होय, सात लाख पृथिवीकाय, सात लाख अप्काय, सात लाख तेउकाय, सात लाख वाउकाय, दश लाख प्रत्येक वनस्पतिकाय, चौदह लाख साधारण वनस्पतिकाय, दो लाख दो इन्द्रिय, दो लाख तेइन्द्रिय, दो लाख चौरिन्द्रिय, चार लाख देवता, चार लाख नारकी, चार लाख तिर्यंच पंचेंद्रिय, चौदह लाख मनुष्य। इसी प्रकार कुल चौरासी लाख जीवयोनियों में से मेरे जीवने किसी जीव को हनन किया हो, कराया हो, या करते हुए का अनुमोदन किया हो वे सब मन वचन काया से मिच्छा मि दुक्कडं।

पहला प्राणातिपात, दूसरा मृषावाद, तीसरा अदत्तादान, चौथा मैथुन, पाँचवाँ परिग्रह, छट्ठा क्रोध, सातवाँ मान, आठवाँ माया, नववाँ लोभ, दशवाँ राग, ग्यारहवाँ द्वेष, बारहवाँ कलह, तेरहवाँ अभ्याख्यान, चौदहवाँ पैशुन्य, पन्द्रहवाँ रति अरति, सोलहवाँ परपरिवाद, सत्रहवाँ मायामृषावाद, अठारहवाँ मिथ्यात्वशल्य। इन अठारह पापस्थानों में से मेरे जीव ने जो कोई पाप स्थानक सेवन किया हो, करांया हो या करते हुए का अनुमोदन किया हो, वे सब मन वचन काया से मिच्छा मि दुक्कडं॥

ज्ञान, दर्शन, चारित्र, पाटी, पोथी, ठवणी, कवली, नवकार वाली, देव-गुरु-धर्म की आशातना की हो। पन्नरह कर्मादानों की आसेवना की हो। राजकथा, देशकथा, स्त्री-कथा, भक्तकथा की हो। और जो कोई परनिंदादि पाप किया हो, कराया हो, करते हुए का अनुमोदन किया हो, वह सब मन वचन काया करके, रात्रि अतिचार आलोयण करके पडिक्कमण में आलोउं, तस्स मिच्छा मि दुक्कडं।

सव्वस्सवि राइअ दुच्चिंतिअ दुब्भासिअ दुच्चिट्ठिअ, इच्छाकारेण संदिसह भगवन्! 'इच्छं' तस्स मिच्छा मि दुक्कडं॥

(अब नीचे बैठकर दाहिना गोडा ऊँचा करके 'भगवन्! सूत्र-भणु ? इच्छं' कह कर तीन वार नवकार और तीन वार करेमि-भंते कहे)

णमो अरिहंताणं, णमो सिद्धाणं, णमो आयरियाणं, णमो उवज्झायाणं, णमो लोए सव्वसाहूणं, एसो पंच णमुक्कारो, सव्व पावप्पणासणो, मंगलाणं च सव्वेसिं, पढमं हवइ मंगलं॥

करेमि भंते! सामाइयं! सावज्जं जोगं पच्चक्खामि। जावनियमं पज्जुवासामि, दुविहं तिविहेणं मणेणं वायाए

काएणं न करेमि न कारवेमि तस्स भंते! पडिक्कमामि निंदामि गरिहामि अप्पाणं वोसिरामि ॥

इच्छामि पडिक्कमिउं जो मे राइओ अइआरो कओ काइओ वाइओ माणसिओ उस्सुत्तो उम्मग्गो अकप्पो अकरणिज्जो दुज्झाओ दुव्विचिंतिओ अणायारो अणिच्छिअव्वो असावग-पाउग्गो नाणे दंसणे चरित्ताचरित्ते सुए सामाइए, तिण्हं गुत्तीणं, चउण्हं कसायाणं, पंचण्हमणुव्वयाणं, तिण्हं गुणव्वयाणं, चउण्हं सिक्खावयाणं बारसविहस्स सावगधम्मस्स, जं खंडिअं, जं विराहिअं, तस्स मिच्छा मि दुक्कडं ॥

वंदित्तु (श्रावक प्रतिक्रमण) सूत्र—

वंदित्तु सव्वसिद्धे, धम्मायरिए अ सव्वसाहू अ। इच्छामि पडिक्कमिउं, सावगधम्माइआरस्स ॥१॥ जो मे वयाइआरो, नाणे तह दंसणे चरित्ते अ। सुहुमो अ बायरो वा, तं निंदे तं च गरिहामि ॥ २ ॥ दुविहे परिग्गहंमि, सावज्जे बहुविहे अ आरंभे। कारावणे अ करणे, पडिक्कमे राइअं सव्वं ॥३॥ जं बद्धमिंदिएहिं, चउहिं कसाएहिं अप्पसत्थेहिं। रागेण व दोसेण व, तं निंदे तं च गरिहामि ॥४॥ आगमणे निग्गमणे, ठाणे चंकमणे अणाभोगे। अभियोगे

अ नियोगे, पडिक्कमे राइअं सव्वं ॥५॥ संका कंख विगिच्छा, पसंस तह संथवो कुलिंगीसु । सम्मत्तस्सइआरे, पडिक्कमे राइअं सव्वं ॥६॥ छक्कायसमारंभे, पयणे अ पयावणे अ जे दोसा । अत्तट्ठा य परट्ठा, उभयट्ठा चेव तं निंदे ॥७॥ पंचण्हमणुव्वयाणं, गुणव्वयाणं च तिण्हमइयारे । सिक्खाणं च चउण्हं, पडिक्कमे राइअं सव्वं ॥८॥ पढमे अणुव्वयम्मि, थूलगपाणाइवाय-विरईओ । आयरिअमप्पसत्थे, इत्थ पमायप्पसंगेणं ॥९॥ वहबंध छविच्छेए, अइभारे भत्तपाणवुच्छेए । पढमवयस्सइआरे, पडिक्कमे राइअं सव्वं ॥ १० ॥ बीए अणुव्वयंमि, परिथूलगअलिअ-वयणविरईओ । आयरिअमप्पसत्थे, इत्थ पमायप्पसंगेणं ॥११॥ सहसा-रहस्स-दारे, मोसुवएसे अ कूडलेहे अ । बीअवयस्सइआरे, पडिक्कमे राइअं सव्वं ॥१२॥ तइए अणुव्वयम्मि, थूलग परदव्वहरण-विरईओ । आयरिअमप्पसत्थे, इत्थ पमायप्पसंगेणं ॥१३॥ तेनाहडप्पओगे, तप्पडिरूवे विरुद्धगमणे अ । कूडतुलकूडमाणे, पडिक्कमे राइअं सव्वं ॥ १४ ॥ चउत्थे अणुव्वयम्मि, निच्चं परदार-गमण विरईओ । आयरिअमप्पसत्थे, इत्थ पमायप्पसंगेणं ॥१५॥ अपरिग्गहिआ इत्तर, अणंगवीवाहतिव्वअणुरागे । चउत्थ वयस्सइआरे, पडिक्कमे राइअं सव्वं ॥१६॥ इत्तो अणुव्वए पंचमंमि, आयरिअम-

प्पसत्थंमि। परिमाणपरिच्छेए, इत्थ पमायप्पसंगेणं ॥१७॥ धण-धन्न-खित्त-वत्थू, रुप्प सुवन्ने अ कुविअपरिमाणे। दुपए चउप्पयम्मि, पडिक्कमे राइअं सव्वं ॥१८॥ गमणस्स उ परिमाणे, दिसासु उड्ढं अहे अ तिरिअं च। वुड्ढि सइ-अंतरद्धा, पढमंमि गुणव्वए निंदे ॥१९॥ मज्जंमिअ मंसं-मिअ, पुप्फे अ फले अ गंधमल्ले अ। उवभोग-परिभोगे, बीअंमि गुणव्वए निंदे ॥२०॥ सचित्ते पडिबद्धे, अप्पोल-दुप्पोलिअं च आहारे। तुच्छोसहिभक्खणया, पडिक्कमे राइअं सव्वं ॥२१॥ इंगालीवणसाडी, भाडी फोडी सुव-ज्जए कम्मं। वाणिज्जं चेव य दंत लक्खरसकेसविसवि-सयं ॥ २२ ॥ एवं खु जंतपिल्लण, कम्मं निल्लंछणं च दवदाणं। सरदहतलायसोसं, असईपोसं च वज्जिज्जा ॥ २३ ॥ सत्थग्गि मुसलजंतग तणकट्ठे मंतमूल भेसज्जे। दिन्ने दवाविए वा, पडिक्कमे राइअं सव्वं ॥२४॥ ण्हाणु-व्वट्टणवन्नग, विलेवणे सद्दरूवरसगंधे। वत्थासण आभ-रणे, पडिक्कमे राइअं सव्वं ॥ २५ ॥ कंदप्पे कुक्कुइए, मोहरि अहिगरण भोगअइरित्ते। दंडम्मि अणट्ठाए, तइ-अंमि गुणव्वए निंदे ॥ २६ ॥ तिविहे दुप्पणिहाणे, अण-वट्ठाणे तहा सइ विहूणे। सामाइअ वितह कए, पढमे सिक्खावए निंदे ॥ २७ ॥ आणवणे पेसवणे, सद्दे रूवे अ

पुग्गलक्खेवे । देसावगासिश्रंमि, बीए सिक्खावए निंदे ॥२८॥ संथारुच्चारविही, पमाय तह चेव भोअणाभोए । पोसहविहिविवरीए, तइए सिक्खावए निंदे ॥२९॥ सचित्ते निक्खिवणे, पिहिणे ववएसमच्छरे चेव । कालाइक्कमदाणे, चउत्थे सिक्खावए निंदे ॥ ३० ॥ सुहिएसु अ दुहिएसु अ, जा मे अस्संजएसु अणुकंपा । रागेण व दोसेण व, तं निंदे तं च गरिहामि ॥ ३१ ॥ साहूसु संविभागो, न कओ तव-चरणकरणजुत्तेसु । संते फासुअदाणे, तं निंदे तं च गरिहामि ॥३२॥ इहलोए परलोए, जीविअ मरणे अ आसंस-पओगे। पंचविहो अइयारो, मा मज्झं हुज्ज मरणंते ॥३३॥ काएण काइअस्स, पडिक्कमे वाइअस्स वायाए। मणसा माण-सिअस्स, सव्वस्स वयाइआरस्स ॥३४॥ वंदणवयसिक्खा गारवेसु सन्नाकसायदंडेसु । गुत्तीसु अ समिईसु अ, जो अइआरो अ तं निंदे ॥३५॥ सम्मदिट्ठी जीवो, जइ वि हु पावं समायरे किंचि । अप्पो सि होइ बंधो, जेण न निद्धंधसं कुणइ ॥३६॥ तं पि हु सपडिक्कमणं, सप्परि-आवं सउत्तरगुणं च । खिप्पं उवसामेई, वाहि व्व सुसिक्खिओ विज्जो ॥३७॥ जहा विसं कुट्ठगयं, मंतमूल-विसारया । विज्जा हणंति मंतेहिं, तो तं हवइ निव्विसं ॥३८॥ एवं अट्ठविहं कम्मं, रागदोस समज्जिअं ।

आलोअंतो अ निंदंतो, खिप्पं हणइ सुसावओ ॥३६॥
कयपावो वि मणुस्सो, आलोइय निंदिअ गुरुसगासे ।
होइ अइरेगलहुओ, ओहरिअभरुव्व भारवहो ॥४०॥
आवस्सएण एएण, सावओ जइ वि बहुरओ होइ ।
दुक्खाणमंतकिरिअं, काही अचिरेण कालेण ॥ ४१ ॥
आलोअणा बहुविहा, न य संभरिआ पडिक्कमणकाले ।
मूलगुण उत्तरगुणे, तं निंदे तं च गरिहामि ॥४२॥ तस्स
धम्मस्स केवलिपन्नत्तस्स । अब्भुट्ठिओमि आराहणाए,
विरओमि विराहणाए । तिविहेण पडिक्कंतो, वंदामि जिणे
चउव्वीसं ॥४३॥ जावंति चेइआइं, उड्ढे अ अहे अ तिरिअ
लोए अ । सव्वाइं ताइं वंदे, इह संतो तत्थ संताइं ॥४४॥
जावंत के वि साहू, भरहेरवयमहाविदेहे अ । सव्वेसिं
तेसिं पणओ, तिविहेण तिदंडविरयाणं ॥४५॥ चिरसंचिय-
पावपणासणीइ, भवसयसहस्समहणीए । चउवीसजिण-
विणिग्गय कहाइं, वोलंतु मे दिअहा ॥४६॥ मम मंगल-
मरिहंता, सिद्धा साहू सुअं च धम्मो अ । सम्मद्दिट्ठी
देवा, दिंतु समाहिं च बोहिं च ॥४७॥ पडिसिद्धाणं करणे,
किच्चाणमकरणे पडिक्कमणं । असद्दहणे अ तहा, विवरीय-
परूवणाए अ ॥४८॥ खामेमि सव्वजीवे, सव्वे जीवा
खमंतु मे । मित्ती मे सव्वभूएसु, वेरं मज्झ न केणइ ॥४६॥

एवमहं आलोइअ, निंदिअ गरहिअ दुगंछिअं सम्मं।
तिविहेण पडिक्कंतो, वंदामि जिणे चउव्वीसं ॥५०॥

इच्छामि खमासमणो! वंदिउं जावणिज्जाए निसीहिआए, अणुजाणह मे मिउग्गहं। निसीहि, अहोकायं कायसंफासं। खमणिज्जो भे किलामो। अप्पकिलंताणं बहुसुभेण भे राइअ वइक्कंता? जत्ता भे? जवणिज्जं च भे? खामेमि खमासमणो राइअं वइक्कम्मं आवस्सिआए पडिक्कमामि। खमासमणाणं राइआए आसायणाए, तित्तीसन्नयराए जं किंचि मिच्छाए मणदुक्कडाए वयदुक्कडाए कायदुक्कडाए कोहाए माणाए मायाए लोभाए सव्वकालिआए सव्वमिच्छोवयाराए सव्वधम्माइक्कमणाए आसायणाए जो मे अइयारो कओ तस्स खमासमणो पडिक्कमामि निंदामि गरिहामि अप्पाणं वोसिरामि।

इच्छामि खमासमणो! वंदिउं जावणिज्जाए निसीहिआए। अणुजाणह मे मिउग्गहं! निसीहि, अहोकायं कायसंफासं, खमणिज्जो भे किलामो, अप्पकिलंताणं बहुसुभेण भे राइअ वइक्कंता? जत्ता भे? जवणिज्जं च भे? खामेमि खमासमणो राइअं वइक्कमं पडिक्कमामि खमासमणाणं राइआए आसायणाए तित्तीसन्नयराए जं किंचि मिच्छाए मणदुक्कडाए वयदुक्कडाए कायदुक्कडाए

कोहाए माणाए मायाए लोभाए सव्वकालिआए सव्व-मिच्छोवयाराए सव्व धम्माइक्कमणाए आसायणाए जो मे अइयारो कओ तस्स खमासमणो पडिक्कमामि निंदामि गरिहामि अप्पाणं वोसिरामि।

(अब अब्भुट्ठिओहं सूत्र जमीन के साथ मस्तक लगाकर पढ़े)

अब्भुट्ठिओ (गुरुखामणा) सूत्र—

इच्छाकारेण संदिसह भगवन्! अब्भुट्ठिओ मि (अब्भुट्ठिओऽहं) अब्भिंतरराइअं खामेउं? 'इच्छं', खामेमि राइअं। जं किंचि अपत्तिअं, परपत्तिअं, भत्ते पाणे विणए वेयावच्चे आलावे संलावे उच्चासणे समासणे, अंतरभासाए, उवरिभासाए, जं किंचि मज्झ विणयपरिहीणं, सुहुमं वा बायरं वा तुब्भे जाणह, अहं न जाणामि तस्स मिच्छा मि दुक्कडं॥

(फिर दो वांदना देना)

इच्छामि खमासमणो! वंदिउं जावणिज्जाए निसीहि-आए अणुजाणह मे मिउग्गहं निसीहि, अहोकायं काय-संफासं, खमणिज्जो भे किलामो। अप्पकिलंताणं बहुसुभेण भे राइअं वइक्कंता? जत्ता भे? जवणिज्जं च भे? खामेमि खमासमणो। राइअं वइक्कम्मं, आवस्सिआए

सुहुमेहिं अंगसंचालेहिं, सुहुमेहिं खेलसंचालेहिं, सुहुमेहिं दिट्ठि संचालेहिं, एवमाइएहिं आगारेहिं, अभग्गो अविराहिओ हुज्ज मे काउस्सग्गो। जाव अरिहंताणं भगवंताणं नमुक्कारेणं न पारेमि ताव कायं ठाणेणं मोणेणं झाणेणं अप्पाणं वोसिरामि॥

(यहां पर श्री महावीर स्वामी कृत छहमासी तपचिंतवन का काउस्सग्ग करना। न आता हो तो छह लोगस्स का चौवीस नवकार गिनना)

लोगस्स उज्जोअगरे, धम्मतित्थयरे जिणे। अरिहंते कित्तइस्सं, चउवीसं पि केवली॥१॥ उसभमजिअं च वंदे, संभवमभिणंदणं च सुमइं च। पउमप्पहं सुपासं, जिणं च चंदप्पहं वंदे॥२॥ सुविहिं च पुप्फदंतं, सीअल-सिज्जंस-वासुपुज्जं च। विमलमणंतं च जिणं, धम्मं संतिं च वंदामि॥३॥ कुंथुं अरं च मल्लिं, वंदे मुणिसुव्वयं नमिजिणं च। वंदामि रिट्ठनेमिं, पासं तह वद्धमाणं च॥४॥ एवं मए अभिथुआ, विहुयरयमला पहीणजरमरणा। चउवीसं पि जिणवरा, तित्थयरा मे पसीयंतु॥५॥ कित्तिय वंदीय महिया, जे ए लोगस्स उत्तमा सिद्धा। आरुग्गबोहिलाभं, समाहिवरमुत्तमं दिंतु॥६॥ चंदेसु निम्मलयरा, आइच्चेसु अहियं पयासयरा। सागरवरगंभीरा, सिद्धा सिद्धिं मम दिसंतु॥७॥

(छट्ठा आवश्यक की मुंहपत्ति - पडिलेहनी, फिर नीचे मुजब दो खमासमण देना)

इच्छामि खमासमणो ! वंदिउं जावणिज्जाए निसीहिआए अणुजाणह मे मिउग्गहं । निस्सीहि, अहोकायं कायसंफासं खमणिज्जो भे किलामो । अप्पकिलंताणं बहुसुभेण भे, राइअवइक्कंता ? जत्ता मे ? जवणिज्जं च भे ? खामेमि खमासमणो राइअं वइक्कम्मं आवस्सिआए पडिक्कमामि खमासमणाणं, राइआए आसायणाए, तित्तीसन्नयराए, जं किंचि मिच्छाए मणदुक्कडाए वयदुक्कडाए कायदुक्कडाए कोहाए माणाए मायाए लोभाए सव्वकालिआए, सव्वमिच्छोवयाराए, सव्व धम्माइक्कमणाए, आसायणाए, जो मे अइयारो कओ तस्स खमासमणो पडिक्कमामि निंदामि गरिहामि अप्पाणं वोसिरामि ॥

इच्छामि खमासमणो ! वंदिउं जावणिज्जाए निसीहिआए । अणुजाणह मे मिउग्गहं । निस्सीहि, अहोकायं कायसंफासं, खमणिज्जो भे किलामो । अप्पकिलंताणं बहुसुभेण भे राइअवइक्कंता ? जत्ता भे ? जवणिज्जं च भे ? खामेमि खमासमणो राइअं वइक्कम्मं पडिक्कमामि खमासमणाणं, राइआए आसायणाए, तित्तीसन्नयराए, जं किंचि मिच्छाए, मणदुक्कडाए वयदुक्कडाए कायदुक्कडाए,

कोहाए माणाए मायाए लोभाए सव्वकालिआए सव्व-मिच्छोवयाराए, सव्वधम्माइक्कमणाए, आसायणाए, जो मे अइयारो कओ तस्स खमासमणो पडिक्कमामि निंदामि गरिहामि अप्पाणं वोसिरामि ॥

सकल-तीर्थ-नमस्कार।

सद्भक्त्या देवलोके रविशशिभवने व्यन्तराणां निकाये, नक्षत्राणां निवासे ग्रहगणपटले तारकाणां विमाने। पाताले पन्नगेन्द्रे स्फुटमणिकिरणै-र्ध्वस्तसान्द्रान्धकारे, श्रीमत्तीर्थङ्कराणां प्रतिदिवसमहं तत्र चैत्यानि वन्दे ॥१॥ वैताढ्ये मेरुशृङ्गे रुचकगिरिवरे कुण्डले हस्तिदन्ते, वक्खारे कूटनन्दी-श्वरकनकगिरौ नैषधे नीलवन्ते। चैत्रे शैले विचित्रे यमकगिरिवरे चक्रवाले हिमाद्रौ, श्रीमत्तीर्थङ्कराणां प्रतिदिवस-महं तत्र चैत्यानि वन्दे ॥२॥ श्रीशैले विन्ध्यशृङ्गे विपुल। गिरिवरे ह्यर्बुदे पावके वा, सम्मेते तारके वा कुलगिरि-शिखरेऽष्टापदे स्वर्णशैले। सह्याद्रौ वैजयन्ते विमलगिरिवरे गुर्जरे रोहणाद्रौ, श्रीमत्तीर्थङ्कराणां प्रतिदिवसमहं तत्र चैत्यानि वन्दे ॥३॥ आघाटे मेदपाटे क्षितितट मुकुटे चित्रकूटे त्रिकूटे, लाटे नाटे च घाटे विटपि घनतटे देवकूटे विराटे। कर्णाटे हेमकूटे विकटतरकटे चक्रकूटे च भोटे, श्रीमत्तीर्थङ्कराणां

प्रतिदिवसमहं तत्र चैत्यानि वन्दे ॥४॥ श्रीमाले मालवे वा मलयिनि निषधे मेखले पिच्छले वा, नेपाले नाहले वा कुवलयतिलके सिंहले केरले वा। डाहाले कोशले वा विगलितसलिले जङ्गले वा ढमाले, श्रीमत्तीर्थङ्कराणां प्रतिदिवसमहं तत्र चैत्यानि वन्दे॥५॥ अङ्गे वङ्गे कलिङ्गे सुगतजनपदे सत्प्रयागे तिलङ्गे, गौडे चौडे मुरण्डे वरतरद्रविडे उद्रियाणे च पौण्ड्रे। आर्द्रे माद्रे पुलिन्दे द्रविडकवलये कान्यकुब्जे सुराष्ट्रे, श्रीमत्तीर्थङ्कराणां प्रतिदिवसमहं तत्र चैत्यानि वन्दे ॥६॥ चम्पायां चन्द्रमुख्यां गजपुर मथुरापत्तने चोज्जयिन्यां, कोशाम्ब्यां कोशलायां कनकपुरवरे देवगिर्यां च काश्याम्। नासिक्ये राजगेहे दशपुरनगरे भद्दिले ताम्रलिप्त्यां, श्रीमत्तीर्थङ्कराणां प्रतिदिवसमहं तत्र चैत्यानि वन्दे॥७॥ स्वर्गे मर्त्येऽन्तरिक्षे गिरिशिखरहृदे स्वर्णदीनीरतीरे, शैलाग्रे नागलोके जलनिधि पुलिने भूरुहाणां निकुञ्जे। ग्रामेऽरण्ये वने वा स्थलजलविषमे दुर्गमध्ये त्रिसन्ध्यं, श्रीमत्तीर्थङ्कराणां प्रतिदिवसमहं तत्र चैत्यानि वन्दे ॥८॥ श्रीमन्मेरौ कुलाद्रौ रुचकनगवरे शाल्मलौ जम्बुवृक्षे, चौज्जन्ये चैत्यनन्दे रतिकररुचके कौण्डले मानुषाङ्के। इक्षुकारे जिनाद्रौ च दधिमुख गिरौ व्यन्तरे स्वर्गलोके, ज्योतिर्लोके भवन्ति त्रिभुवनवलये यानि चैत्यालयानि ॥९॥ इत्थं श्रीजैनचैत्यस्तवनमनुदिनं

ये पठन्ति प्रवीणाः, प्रोद्यत्कल्याणहेतुं कलिमलहरणं भक्ति-भाजस्त्रिसन्ध्यम् । तेषां श्री तीर्थयात्राफलमतुलमलं जायते मानवानां, कार्याणां सिद्धिरुच्चैः प्रमुदितमनसां चित्तमानन्दकारी ॥१०॥

पीछे "इच्छाकारेण संदिसह भगवन् पसायकरी पच्चक्खाण कराना जी"

(ऐसा कहकर गुरुमुख से या वृद्ध साधार्मिक के मुख से या स्वयं स्थापनाचार्य के सामने अपने इच्छित नवकारसहिअं आदि का पच्चक्खाण कर ले।)

जो चौदह नियम नहीं संभारते उसके लिये 'नमुक्कारसहिअ' का पच्चक्खाण—

उग्गए सूरे नमुक्कारसहिअं पच्चक्खाइ, चउव्विहंपि आहारं, असणं, पाणं, खाइमं, साइमं, अण्णत्थणाभोगेणं, सहसागारेणं वोसिरइ ।

जो चौदह नियम प्रतिदिन संभारते हैं उसके लिये 'नमुक्कार-सहिअ' का पच्चक्खाण—

उग्गए सूरे नमुक्कार सहिअं मुट्ठिसहिअं पच्चक्खाइ चउव्विहं पि आहारं—असणं, पाणं, खाइमं, साइमं, अण्णत्थणाभोगेणं, सहसागारेणं, महत्तरागारेणं, सव्व-समाहिवत्तियागारेणं, विगईओ पच्चक्खाइ, अण्णत्थणा

भोगेणं, सहसागारेणं, लेवालेवेणं, गिहत्थसंसिट्ठेणं, उक्खित्तविवेगेणं, पडुच्चमक्खिएणं, पारिट्ठावणियागारेणं, महत्तरागारेणं, देसावगासियं, भोगपरिभोगं पच्चक्खाइ, अण्णत्थणाभोगेणं, सहसागारेणं, महत्तरागारेणं सव्व-समाहिवत्तिआगारेणं, वोसिरइ।

(पोरसी का पच्चक्खाण करना हो तो 'नवकारसहिअं' के स्थान पर 'पोरिसिं' कहे। और उपवास एकासनादि पच्चक्खाण एक साथ पीछे लिखे हैं वहां से देखलें। पीछे)

इच्छामो अणुसट्ठिं नमो खमासमणाणं नमोऽर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्व्वसाधुभ्यः॥

(यहां स्त्रियां प्रतिक्रमण करती हों तो 'संसारदावानल' नीचे मुआफिक कहे)—

संसारदावानलदाहनीरं, संमोहधूलीहरणे समीरं। मायारसादारणसारसीरं, नमामि वीरं गिरिसारधीरं ॥ १॥ भावावनामसुरदानवमानवेन, चूलाविलोलकमलावलिमालितानि। संपूरिताभिनतलोकसमीहितानि, कामं नमामि जिनराजपदानि तानि ॥ २॥ बोधागाधं सुपदपदवीनीरपूराभिरामं, जीवाहिंसाविरललहरीसंगमागाहदेहं। चूलावेलं गुरुगममणिसंकुलं दूरपारं, सारं वीरागमजलनिधिं सादरं साधु सेवे ॥ ३॥

(और पुरुष प्रतिक्रमण करते हों तो 'परसमयतिमिरतरणिं' की तीन गाथा कहे)—

परसमयतिमिरतरणिं, भवसागरवारितरणवरतरणिम्। रागपरागसमीरं, वन्दे देवं महावीरम् ॥ १ ॥ निरुद्धसंसार-विहारकारि-दुरन्तभावारिगणा निकामम्। निरन्तरं केवलि-सत्तमा वो, भयावहं मोहभरं हरन्तु ॥ २ ॥ सन्देहकारि-कुनयागमरूढगूढ-संमोहपङ्कहरणामलवारिपूरम्। संसारसा-गरसमुत्तरणोरुनावं, वीरागमं परमसिद्धिकरं नमामि ॥३॥

नमोत्थुणं अरिहंताणं भगवंताणं आइगराणं तित्थयराणं सयंसंबुद्धाणं पुरिसुत्तमाणं पुरिससीहाणं, पुरसिवर, पुंडरीआणं, पुरसिवर-गन्धहत्थीणं लोगुत्तमाणं लोगनाहाणं, लोगहिआणं लोगपईवाणं लोगपज्जोअगराणं अभय-दयाणं चक्खुदयाणं, मग्गदयाणं सरणदयाणं बोहि-दयाणं धम्मदयाणं धम्मदेसयाणं, धम्मनायगाणं धम्म-सारहीणं, धम्मवर-चाउरंत-चक्कवट्टीणं अप्पडिहयवरनाण-दंसणधराणं, विअट्टछउमाणं जिणाणं जावयाणं, तिन्नाणं तारयाणं बुद्धाणं बोहयाणं मुत्ताणं मोअगाणं सव्वन्नूणं सव्वदरिसीणं, सिवमयलमरुअमणंत-मक्खयमव्वाबाहम-पुणरावित्ति, सिद्धिगइ—नामधेयं, ठाणं संपत्ताणं, नमो जिणाणं जिअभयाणं जेअ अईआ सिद्धा, जेअ

भविस्संति णागए काले । संपइ अ वट्टमाणा, सव्वे तिविहेण वंदामि ॥

(अब खड़े होकर बोलें)

अरिहंतचेइआणं करेमि काउस्सग्गं, वंदणवत्तिआए, पूअणवत्तिआए, सक्कारवत्तिआए, सम्माणवत्तिआए बोहिलाभवत्तिआए, निरुवसग्गवत्तिआए, सद्धाए, मेहाए, धिईए, धारणाए, अणुप्पेहाए, वड्ढमाणीए, ठामि काउस्सग्गं ॥

अन्नत्थ ऊससिएणं, नीससिएणं खासिएणं, छीएणं, जंभाइएणं, उड्डुएणं, वायनिसग्गेणं, भमलिए, पित्तमुच्छाए, सुहुमेहिं अंगसंचालेहिं, सुहुमेहिं खेलसंचालेहिं, सुहुमेहिं दिट्ठि संचालेहिं, एवमाइएहिं आगारेहिं, अभग्गो अविराहिओ हुज्ज मे काउस्सग्गो । जाव अरिहंताणं भगवंताणं नमुक्कारेणं न पारेमि ताव कायं ठाणेणं मोणेणं झाणेणं अप्पाणं वोसिरामि ॥

(एक नवकार का काउस्सग्ग पार करके "नमोऽर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधुभ्यः" कह कर प्रकट प्रथम थुइ कहे ।)

मूरति मन मोहन, कंचन कोमल काय । सिद्धारथ नंदन, त्रिशला देवी समाय ॥ मृगनायक लंछन, सात हाथ तनु मान । दिन दिन सुखदायक स्वामी श्रीवर्द्धमान ॥१॥

लोगस्स उज्जोअगरे, धम्मतित्थयरे जिणे। अरिहंते कित्तइस्सं, चउवीसं पि केवली ॥१॥ उसभमजिअं च वंदे, संभवमभिणंदणं च सुमइं च। पउमप्पहं सुपासं, जिणं च चंदप्पहं वंदे ॥२॥ सुविहिं च पुप्फदंतं, सीअल-सिज्जंस-वासुपुज्जं च। विमलमणंतं च जिणं, धम्मं संतिं च वंदामि ॥३॥ कुंथुं अरं च मल्लिं, वंदे मुणिसुव्वयं नमिजिणं च। वंदामि रिट्ठनेमिं, पासं तह वद्धमाणं च ॥४॥ एवं मए अभिथुआ, विहुयरयमला पहीणजरमरणा। चउवीसं पि जिणवरा, तित्थयरा मे पसीयंतु ॥५॥ कित्तिय वंदिय महिया, जे ए लोगस्स उत्तमा सिद्धा। आरुग्गबोहिलाभं, समाहिवरमुत्तमं दिंतु ॥६॥ चंदेसु निम्मलयरा, आइच्चेसु अहियं पयासयरा। सागरवरगंभीरा, सिद्धा सिद्धिं मम दिसंतु ॥ ७ ॥

सव्वलोए अरिहंतचेइयाणं करेमि काउस्सग्गं। वंदणवत्तिआए, पूअणवत्तिआए, सक्कारवत्तिआए, सम्माणवत्तिआए, बोहिलाभवत्तिआए, निरुवसग्गवत्तिआए, सद्धाए, मेहाए, धिईए, धारणाए, अणुप्पेहाए, वड्ढमाणीए ठामि काउस्सग्गं ॥

अन्नत्थ ऊससिएणं, नीससिएणं, खासिएणं, छीएणं, जंभाइएणं, उड्डुएणं, वायनिसग्गेणं, भमलिए, पित्तमुच्छाए, सुहुमेहिं अंगसंचालेहिं, सुहुमेहिं खेलसंचालेहिं, सुहुमेहिं

दिट्ठिसंचालेहिं, एवमाइएहिं आगारेहिं अभग्गो अविराहिओ हुज्ज मे काउस्सग्गो, जाव अरिहंताणं भगवंताणं, नमुक्कारेणं न पारेमि, ताव कायं ठाणेणं मोणेणं झाणेणं अप्पाणं वोसिरामि ॥

(एक नवकार का काउस्सग्ग करके प्रकट दूसरी थुइ कहना)

सुर नर किंनर, वंदित पद अरविंद । कामित भर पूरण, अभिनव सुरतरु कंद ॥ भवियण ने तारे, प्रवहण सम निशदिश । चोवीसे जिनवर, प्रणमुं विशवा वीस ॥२॥

पुक्खरवरदीवड्ढे, धायइसंडे अ जंबुदीवे अ । भरहेरवयविदेहे, धम्माइगरे नमंसामि ॥१॥ तम-तिमिर-पडल-विद्धंसणस्स सुरगणनरिंदमहियस्स । सीमाधरस्स वंदे, पप्फोडिअ मोहजालस्स ॥ २ ॥ जाईजरामरणसोगपणासणस्स, कल्लाण-पुक्खल-विसाल-सुहावहस्स । को देवदाणवनरिंदगणच्चियस्स, धम्मस्स सारमुवलब्भ करे पमायं ॥३॥ सिद्धे भो ! पयओ णमो जिणमए नंदी सया संजमे, देवंनागसुवन्नकिन्नरगणस्सब्भूअभावच्चिए । लोगो जत्थ पइट्ठिओ जगमिणं तेलुक्कमच्चासुरं, धम्मो वड्ढउ सासओ विजयओ धम्मुत्तरं वड्ढउ ॥४॥ सुअस्स भगवओ करेमि काउस्सग्गं । वंदणवत्तिआए, पूअणवत्तिआए, सक्कारवत्तिआए, सम्माणवत्तिआए, बोहिलाभवत्तिआए,

निरुवसग्गवत्तिआए। सद्धाए मेहाए धिईए धारणाए अणुप्पेहाए वड्ढमाणीए ठामि काउस्सग्गं।

अन्नत्थ ऊससिएणं, नीससिएणं, खासिएणं, छीएणं, जंभाइएणं, उड्डुएणं, वायनिसग्गेणं, भमलिए, पित्त-मुच्छाए, सुहुमेहिं अंगसंचालेहिं, सुहुमेहिं खेलसंचालेहिं, सुहुमेहिं दिट्ठिसंचालेहिं, एवमाइएहिं आगारेहिं अभग्गो अविराहिओ हुज्ज मे काउस्सग्गो। जाव अरिहंताणं भगवंताणं नमुक्कारेणं न पारेमि ताव कायं ठाणेणं मोणेणं झाणेणं अप्पाणं वोसिरामि।

(एक नवकार का काउस्सग्ग करके प्रकट तीसरी थुइ कहना)

अरथे करी आगम, भाख्या श्री भगवंत। गणधर ने गुंथ्या, गुणनिधि ज्ञान अनन्त॥ सुरगुरु पण महिमा, कही न शके एकन्त। समरूं सुखसायर मन सुद्ध सूत्र सिद्धान्त॥ ३॥

सिद्धाणं बुद्धाणं, पारगयाणं परंपरगयाणं। लोअग्ग-मुवगयाणं, नमो सया सव्वसिद्धाणं॥१॥ जो देवाण वि देवो, जं देवा पंजली नमंसंति। तं देवदेवमहिअं, सिरसा वंदे महावीरं॥२॥ इक्कोवि नमुक्कारो, जिणवरवसहस्स वद्धमाणस्स। संसारसागराओ; तारेइ नरं व नारिं वा॥३॥

उज्जिंतसेलसिहरे, दिक्खा नाणं निसीहिआ जस्स। तं धम्मचक्कवट्टिं, अरिट्ठनेमिं नमंसामि ॥४॥ चत्तारि अट्ठ दस दो य, वंदिआ जिणवरा चउव्वीसं। परमट्ठ निट्ठअट्ठा, सिद्धा सिद्धिं मम दिसंतु ॥५॥

वेयावच्चगराणं संतिगराणं सम्मदिट्ठिसमाहिगराणं करेमि काउस्सग्गं ॥

अन्नत्थ ऊससिएणं, नीससिएणं, खासिएणं, छीएणं, जंभाइएणं, उड्डुएणं, वायनिसग्गेणं, भमलिए, पित्तमुच्छाए, सुहुमेहिं अंगसंचालेहिं, सुहुमेहिं खेलसंचालेहिं, सुहुमेहिं दिट्ठिसंचालेहिं, एवमाइएहिं आगारेहिं अभग्गो अविराहिओ हुज्ज मे काउस्सग्गो॥ जाव अरिहंताणं भगवंताणं नमुक्कारेणं न पारेमि ताव कायं ठाणेणंमोणेणं झाणेणं अप्पाणं वोसिरामि।

(एक नवकार का काउस्सग्ग पारकर "नमोऽर्हत्सिद्धाचार्योपाध्याय सर्वसाधुभ्यः" कहकर चौथी थुइ कहना)

सिद्धायिका देवी, वारे विघन विशेष। सहु संकट चूरे, पूरे आश अशेष॥ अहोनिश कर जोडी, सेवे सुर नर इंद। जंपे गुणगण इम, श्री जिनलाभ सूरींद ॥४॥

नमोत्थुणं अरिहंताणं भगवंताणं॥ १॥ आइगराणं तित्थयराणं सयंसंबुद्धाणं॥ २॥ पुरिसुत्तमाणं, पुरिस-

सीहाणं, पुरिसवरपुण्डरीआणं, पुरिसवर-गन्धहत्थीणं ॥३॥ लोगुत्तमाणं लोगनाहाणं, लोगहिआणं लोगपईवाणं, लोग-पज्जोअगराणं ॥ ४ ॥ अभयदयाणं, चक्खुदयाणं, मग्गद-याणं, सरणदयाणं, बोहिदयाणं ॥ ५ ॥ धम्मदयाणं, धम्म-देसियाणं, धम्मनायगाणं, धम्मसारहीणं धम्मवर-चाउरंत-चक्कवट्टीणं ॥ ६ ॥ अप्पडिहयवर-नाणदंसणधराणं विअट्ट-छउमाणं ॥ ७ ॥ जिणाणं जावयाणं, तिन्नाणं तारयाणं, बुद्धाणं बोहयाणं मुत्ताणं मोअगाणं ॥ ८ ॥ सव्वन्नूणं, सव्वदरिसीणं, सिवमयलमरुअमणंतमक्खय-मव्वाबाहमपुण-रावित्ति सिद्धिगइ-नामधेयं ठाणं संपत्ताणं, नमो जिणाणं, जिअभयाणं ॥ ९ ॥ जे अ अईआ सिद्धा, जे अ भवि-स्संति णागए काले । संपइ अ वट्टमाणा, सव्वे तिविहेण वंदामि ॥ १० ॥

इच्छामि खमासमणो वंदिउं जावणिज्जाए निसीहि-आए मत्थएण वंदामि 'श्रीआचार्यजीमिश्र' ।

इच्छामि खमासमणो वंदिउं जावणिज्जाए निसीहि-आए मत्थएण वंदामि 'श्रीउपाध्यायजीमिश्र' ।

इच्छामि खमासमणो वंदिउं जावणिज्जाए निसीहि-आए मत्थएणं वंदामि 'सर्वसाधुजीमिश्र' ।

(ईशान कोण में मुख कर श्रीसीमंधर जिन का चैत्यवंदन करें)

इच्छामि खमासमणो ! वंदिउं जावणिज्जाए निसीहिआए मत्थएण वंदामि ।

(इस प्रकार तीन खमासमण देकर)

इच्छाकारेण संदिसह भगवन् ! श्री सीमंधरस्वामी आराधनार्थं चैत्यवंदन करुं ? 'इच्छं'

श्री सीमंधर जिन चैत्यवन्दन ।

जय जय त्रिभुवन आदिनाथ, पंचमगति गामी ।
जय जय करुणा शांत दांत, भविजन हितकामी ॥ १ ॥
जय जय इंद नरिंद वृंद, सेवित शिर नामी ।
जय जय अतिशयानंतवंत, अन्तर्गत यामी ॥ २ ॥
पूरव विदेह विराजता ए, श्री सीमंधर स्वाम ।
त्रिकरण शुद्ध त्रिहुंकाल में, नित प्रति करुं प्रणाम ॥ ३ ॥

जं किंचि नामतित्थं, सग्गे पायालि माणुसे लोए ।
जाइं जिणबिंबाइं, ताइं सव्वाइं वंदामि ॥ १ ॥

नमोत्थुणं अरिहंताणं भगवंताणं आइगराणं तित्थयराणं सयंसंबुद्धाणं पुरिसुत्तमाणं पुरिससीहाणं, पुरिसवरपुंडरीआणं, पुरिसवरगंधहत्थीणं लोगुत्तमाणं लोगनाहाणं लोगहिआणं लोगपईवाणं, लोगपज्जोअगराणं अभयदयाणं

नमुक्कारेणं न पारेमि ताव कायं ठाणेणं मोणेणं झाणेणं अप्पाणं वोसिरामि ।

(यहां एक नवकार का काउस्सग्ग कर "नमोऽर्हत्सिद्धाचार्योपाध्याय सर्वसाधुभ्यः" कह कर श्रीसीमंधरजिन की थुइ कहे—)

महीमंडणं पुण्णसोवन्नदेहं, जणाणंदणं केवलनाणगेहं महाणंदलच्छी बहुबुद्धिरायं, सुसेवाम सीमंधरं तित्थरायं ॥१॥

(पीछे नीचे लिखे तीन खमासमण पूर्वक सिद्धाचल जी के सामने मुख करके सिद्धाचल जी का चैत्यवंदन करें)

इच्छामि खमासमणो वंदिउं जावणिज्जाए निसीहिआए मत्थएण वंदामि । इच्छाकारेण संदिसह भगवन् श्री सिद्धगिरि आराधनार्थं चैत्यवंदन करूं ? 'इच्छं'

श्रीसिद्धाचल जी का चैत्यवंदन ।

जय जय नाभि नरिंद नंद, सिद्धाचल मंडण । जय जय प्रथम जिणंद चंद, भव-दुख-विहंडण ॥ १ ॥ जय जय साधु सुरिंद विंद, वंदिय परमेसर । जय जय जगदानंद कंद, श्री ऋषभ जिनेसर ॥ २ ॥ अमृतसम जिन-धर्म नो ए, दायक जग में जाण । तुझ पद-पंकज प्रीतिधर, निश दिन नमत कल्याण ॥ ३ ॥

जं किंचि नामतित्थं, सग्गे पायालि माणुसे लोए । जाइं जिणविंबाइं, ताइं सव्वाइं वंदामि ॥ १ ॥

णमोऽत्थुणं अरिहंताणं भगवंताणं, आइगराणं तित्थयराणं सयंसंबुद्धाणं, पुरिसुत्तमाणं पुरिससीहाणं पुरिसवर पुंडरीआणं पुरिसवर गंधहत्थीणं । लोगुत्तमाणं लोगनाहाणं लोगहिआणं लोगपईवाणं लोगपज्जोअगराणं । अभयदयाणं चक्खुदयाणं मग्गदयाणं सरणदयाणं वोहिदयाणं । धम्मदयाणं धम्मदेसयाणं धम्मनायगाणं धम्मसारहीणं धम्मवरचाउरंतचक्कवट्टीणं । अप्पडिहयवरनाणदंसण-धराणं, विअट्टछउमाणं, जिणाणं जावयाणं तिन्नाणं तारयाणं वुद्धाणं वोहयाणं मुत्ताणं मोअगाणं, सव्वन्नूणं सव्वदरिसीणं, सिवमयलमरुअमणंतमक्खयमव्वाबाहमपुणरावित्ति, सिद्धिगइनामधेयं ठाणं संपत्ताणं नमो जिणाणं जिअभयाणं, जे अ अईआ सिद्धा, जे अ भविस्संति णागए काले । संपइअवट्टमाणा सव्वे तिविहेण वंदामि ।

जावंति चेइआइं, उड्ढे अ अहे अ तिरिअ लोए अ । सव्वाइं ताइं वंदे, इह संतो तत्थ संताइं ॥

जावंत केवि साहू, भरहेरवयमहाविदेहे अ । सव्वेसिं तेसिं पणओ, तिविहेण तिदंडविरयाणं ॥

नमोऽर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधुभ्यः ।

श्री सिद्धाचल जी तीर्थ का स्तवन ।

सिद्धाचलगिरि भेटयारे, धन्य भाग्य हमारा ॥सिद्धा० (टेर) ए गिरिवरनी महिमा मोटी, कहतां नावै पारा । रायण रूंख समोसर्या स्वामी, पूरव नवाणु वारारे ॥धन्य ॥सि०॥१॥ मूलनायक श्री आदिजिनेश्वर, चौमुख प्रतिमा चारा । अष्टद्रव्य सुं पूजो भावे, समकित मूल आधारा रे ॥धन्य०॥सि०॥२॥ भाव भगति सुं प्रभुगुण गावे, अपना जनम सुधारा । यात्रा करी भविजन शुभ भावै, नरक तिर्यंच गति वारा रे ॥धन्य०॥सि०॥३॥ दूर देशांतरथी हुँ आयो, श्रवण सुणी गुण ताहरा । पतित उद्धारण विरुद तुमारो, ए तीरथ जग सारारे ॥धन्य०॥सि०॥४॥ संवत अठार वयांसी आषाढ़ै, वदि आठम भौमवारा । प्रभुजी के चरण प्रताप के संघ में, क्षमारतन प्रभु प्यारारे ॥ धन्य० ॥ सि० ॥ ५ ॥ इति ॥

जय वीअराय जगगुरु, होउ ममं तुह पभावओ भयवं। भवनिव्वेओ मग्गा-णुसारिआ इट्ठफलसिद्धि ॥ १ ॥ लोग-विरुद्धच्चाओ, गुरुजणपूआ परत्थकरणं च । सुहगुरुजोगो तव्वयणसेवणा आभवमखंडा ॥ २ ॥

अरिहंतचेइआणं, करेमि काउस्सग्गं, वंदणवत्तिआए, पूअणवत्तिआए, सक्कारवत्तिआए, सम्माणवत्तिआए,

वोहिलाभवत्तिआए, निरुवसग्गवत्तिआए, सद्धाए, मेहाए, धिईए, धारणाए, अणुप्पेहाए, वड्ढमाणीए, ठामि काउस्सग्गं।

अन्नत्थ ऊससिएणं, नीससिएणं, खासिएणं, छीएणं, जंभाइएणं, उड्डुएणं वायनिसग्गेणं, भमलीए, पित्तमुच्छाए, सुहुमेहिं अंगसंचालेहिं, सुहुमेहिं खेलसंचालेहिं, सुहुमेहिं दिट्ठिसंचालेहिं, एवमाइएहिं आगारेहिं अभग्गो अविराहिओ, हुज्ज मे काउस्सग्गो । जाव अरिहंताणं भगवंताणं नमुक्कारेणं न पारेमि ताव कायं ठाणेणं मोणेणं झाणेणं अप्पाणं वोसिरामि ।

(यहां एक नवकार का काउस्सग्ग कर "नमोऽर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधुभ्यः" कह कर श्रीसिद्धाचलजीकी थुइ कहना)-

पुंडरिकगिरि महिमा, आगममाँ परसिद्ध । विमलाचल भेटी, लहीये अविचल रिद्ध । पंचम गति पहोता, मुनिवर कोडाकोड । इणे तीरथें आवी, कर्म विपातक छोड।

॥ इति राइप्रतिक्रमण विधि संपूर्ण ॥



पडिलेहन विधि।

(अब स्थिरता हो तो नीचे लिखी विधि के अनुसार पडिलेहन करे। और स्थिरता न हो तो दृष्टि पडिलेहन तो अवश्य करें)—

इच्छामि खमासमणो वंदिउं जावणिज्जाए निसीहिआए मत्थएण वंदामि। इच्छाकारेण संदिसह भगवन् पडिलेहन संदिसाहुं ? 'इच्छं'

इच्छामि खमासमणो वंदिउं जावणिज्जाए निसीहिआए मत्थएण वंदामि। इच्छाकारेण संदिसह भगवन् पडिलेहन करूं ? 'इच्छं'

(यहां मुहपत्ति की पडिलेहन करना पीछे पूर्वोक्त दो खमासमण फिर देकर धोती, दुपट्टा आदि की पडिलेहन करे। पीछे)—

इच्छामि खमासमणो वंदिउं जावणिज्जाए निसीहिआए मत्थएण वंदामि। इच्छाकारेण संदिसह भगवन् पयास करी पडिलेहन पडिलेहाओजी।

(ऐसा बोल कर स्थापनाचार्य की पडिलेहन करे। पीछे)

इच्छामि खमासमणो वंदिउं जावणिज्जाए निसीहिआए मत्थएण वंदामि। इच्छाकारेण संदिसह भगवन् मुहपत्ति पडिलेहुं ? 'इच्छं'

(कहकर यहाँ मुहपत्ति पडिलेहना। पीछे)—

इच्छामि खमासमणो वंदिउं जावणिज्जाए निसीहिआए मत्थएण वंदामि। इच्छाकारेण संदिसह भगवन् उपधि पडिलेहन संदिसाहुं ? 'इच्छं'

इच्छामि खमासमणो वंदिउं जावणिज्जाए निसीहिआए मत्थएण वंदामि । इच्छाकारेण संदिसह भगवन् उपधि पडिलेहन करूं ? 'इच्छं'

(ऐसा कहकर कंबल वस्त्र आदि सब की पडिलेहन करे । पीछे पौषधशाला की प्रमार्जना करके काजा (कचरा) निर्वद्य भूमि पर परठव कर नीचे लिखे अनुसार इरियावहियं करे)—

इच्छामि खमासमणो ! वंदिउं जावणिज्जाए निसीहिआए मत्थएण वंदामि ।

इच्छाकारेण संदिसह भगवन् ! इरियावहियं पडिक्कमामि ? इच्छं । इच्छामि पडिक्कमिउं, इरियावहिआए, विराहणाए गमणागमणे पाणक्कमणे वीयक्कमणे हरियक्कमणे ओसा उत्तिंग पणग दग मट्टी मक्कडासंताणा संकमणे, जे मे जीवा विराहिया, एगिंदिया, बेइंदिया, तेइंदिया, चउरिंदिया, पंचिंदिया, अभिहया, वत्तिया, लेसिया, संघाइया, संघट्टिया, परियाविया, किलामिया, उद्दविया, ठाणाओ ठाणं संकामिया, जीवियाओ ववरोविया तस्स मिच्छामि दुक्कडं ।

तस्स उत्तरीकरणेणं, पायच्छित्तकरणेणं, विसोहीकरणेणं, विसल्लीकरणेणं, पावाणं कम्माणं निग्घायणट्ठाए, ठामि काउस्सग्गं ।

अन्नत्थ ऊससिएणं, नीससिएणं, खासिएणं, छीएणं,

जंभाइएणं, उड्डुएणं, वायनिसग्गेणं, भमलिए पित्त-मुच्छाए, सुहुमेहिं अंगसंचालेहिं, सुहुमेहिं खेलसंचालेहिं, सुहुमेहिं दिट्ठिसंचालेहिं, एवमाइएहिं आगारेहिं अभग्गो अविराहिओ हुज्ज मे काउस्सग्गो। जाव अरिहंताणं भगवंताणं, नमुक्कारेणं न पारेमि ताव कायं ठाणेणं मोणेणं झाणेणं अप्पाणं वोसिरामि।

(यहाँ एक लोगस्स का या चार नवकार का काउस्सग्ग करना पीछे प्रगट लोगस्स कहना, वह नीचे लिखे अनुसार)

लोगस्स उज्जोअगरे, धम्मतित्थयरे जिणे। अरिहंते कित्तइस्सं, चउवीसं पि केवली ॥ १ ॥ उसभमजिअं च वंदे, संभवमभिणंदणं च सुमइं च। पउमप्पहं सुपासं, जिणं च चंदप्पहं वंदे ॥ २ ॥ सुविहिं च पुप्फदंतं, सीअल-सिज्जंस-वासुपुज्जं च। विमलमणंतं च जिणं, धम्मं संतिं च वंदामि ॥ ३ ॥ कुंथुं अरं च मल्लिं, वन्दे मुणिसुव्वयं नमिजिणं च। वंदामि रिट्ठनेमिं, पासं तह वद्धमाणं च ॥ ४ ॥ एवं मए अभिथुआ, विहुयरयमला पहीणजरमरणा। चउवीसं पि जिणवरा, तित्थयरा मे पसीयंतु ॥ ५ ॥ कित्तिय—वंदिय—महिया, जे ए लोगस्स उत्तमा सिद्धा। आरुग्गबोहिलाभं, समाहिवरमुत्तमं दिंतु ॥ ६ ॥ चंदेसु निम्मलयरा, आइच्चेसु अहियं पयासयरा। सागरवरगंभीरा, सिद्धा सिद्धिं मम दिसंतु ॥ ७ ॥

सामायिक पारने की विधि ।

(अब सामायिक पारे)

इच्छामि खमासमणो वंदिउं जावणिज्जाए निसीहिआए मत्थएण वंदामि । इच्छाकारेण संदिसह भगवन् ! सामायिक पारवा मुहपत्ति पडिलेहुं ? 'इच्छं'

(यहां सामायिक पारने के लिये मुहपत्ति पडिलेहना । पीछे)—

इच्छामि खमासमणो वंदिउं जावणिज्जाए निसीहिआए मत्थएण वंदामि । इच्छाकारेण संदिसह भगवन् सामायिक पारुं ? 'यथाशक्ति' ।

इच्छामि खमासमणो वंदिउं जावणिज्जाए निसीहिआए मत्थएण वंदामि । इच्छाकारेण संदिसह भगवन् सामायिक पारेमि ? 'तहत्ति' ।

(कहकर आधा अंग नमा कर 'तीन नवकार' गिने । पीछे घुटने टेक कर, शिर नमा कर, दाहिना हाथ नीचे स्थापन करके नीचे मुआफिक 'भयवं दसन्न भद्दो' बोले)—

भयवं दसण्णभद्दो, सुदंसणो थुलभद्द वइरो य । सफलीकयगिहचाया, साहू एवंविहा हुंति ॥ १ ॥ साहूण वंदणेणं, नासइ पावं असंकिया भावा । फासुअदाणे निज्जर, अभिग्गहो नाणमाईणं ॥ २ ॥ छउमत्थो मूढमणो, कित्तिय-

मित्तंपि संभरइ जीवो। जं च न संभरामि अहं, मिच्छा मि दुक्कडं तस्स ॥ ३ ॥ जं जं मणेण चिंतिय—मसुहं वायाइ भासियं किंचि। असुहं काएण कयं, मिच्छामि दुक्कडं तस्स ॥ ४ ॥ सामाइय पोसहसं-ठियस्स जीवस्स जाइ जो कालो। सो सफलो बोद्धव्वो, सेसो संसारफलहेऊ ॥ ५ ॥

सामायिक विधि से लिया, विधि से किया, विधि से करते हुए अविधि आशातना लगी हो, दश मन का, दश वचन का, बारह काया का, इन बत्तीस दूषणों में जो कोई दूषण लगा हो, उन सबका सब मन वचन काया करके मिच्छामि दुक्कडं।

इति सामायिक पारने की विधि।

(कोई सामायिक पारने के बाद पडिलेहन करते हैं)



संध्याकालीन सामायिक विधि।

(दिन के अंतिम प्रहर में पौषधशाला आदि किसी एकान्त स्थानमें जाकर, उस स्थान का तथा वस्त्र का पडिलेहन करें। देरी होगई हो तो दृष्टि पडिलेहन करे। साधुजी न हो तो तीन नवकार गिन कर स्थापना जी स्थापन करे। पीछे स्थापनाचार्य के सामने बैठकर, भूमि प्रमार्जन करके, बाँयीं ओर आसन रखकर नीचे का पाठ कहे)—

इच्छामि खमासमणो वंदिउं जावणिज्जाए निसीहिआए मत्थएण वंदामि। इच्छाकारेण संदिसह भगवन् सामायिक लेवा मुहपत्ति पडिलेहुं ? 'इच्छं'।

(कहकर मुहपत्ति पडिलेहना, पीछे)—

इच्छामि खमासमणो वंदिउं जावणिज्जाए निसीहिआए मत्थएण वंदामि। इच्छाकारेण संदिसह भगवन् सामायिक संदिसाहुं ? 'इच्छं'।

इच्छामि खमासमणो वंदिउं जावणिज्जाए निसीहिआए मत्थएण वंदामि। इच्छाकारेण संदिसह भगवन् सामायिक ठाउं ? 'इच्छं'।

(कह कर तीन नवकार गिने पीछे इच्छाकारेण संदिसह भगवन् पसाय करी सामायिक दंडक उचरावो जी" ऐसा बोलकर तीन बार करेमि भंते उचरे)

करेमि भंते ! सामाइअं, सावज्जं जोगं पच्चक्खामि। जाव नियमं पज्जुवासामि, दुविहं तिविहेणं मणेणं वायाए काएणं न करेमि न कारवेमि तस्स भंते पडिक्कमामि निंदामि गरिहामि अप्पाणं वोसिरामि ॥

इच्छामि खमासमणो ! वंदिउं, जावणिज्जाए निसीहिआए मत्थएण वंदामि ॥

इच्छाकारेण संदिसह भगवन् ! इरियावहियं पडिक्कमामि । इच्छं । इच्छामि पडिक्कमिउं इरियावहियाए विराहणाए । गमणागमणे, पाणक्कमणे, बीयक्कमणे, हरियक्कमणे, ओसा-उत्तिंग-पणग-दग-मट्टी-मक्कडासंताणा-संकमणे । जे मे जीवा विराहिया, एगिंदिया, बेइंदिया, तेइंदिया, चउरिंदिया, पंचिंदिया, अभिहया, वत्तिया, लेसिया, संघाइया, संघट्टिया, परियाविया, किलामिया, उद्दविया, ठाणाओ ठाणं संकामिया, जीवियाओ ववरोविया तस्स मिच्छा मि दुक्कडं ।

तस्स उत्तरीकरणेणं, पायच्छित्तकरणेणं, विसोहीकरणेणं, विसल्लीकरणेणं, पावाणं कम्माणं निग्घायणट्ठाए ठामि काउस्सग्गं ।

अन्नत्थ ऊससिएणं, नीससिएणं, खासिएणं, छीएणं, जंभाइएणं, उड्डुएणं, वायनिसग्गेणं, भमलिए, पित्त-

मुच्छाए, सुहुमेहिं अंगसंचा[illegible] [illegible]णाणं बहुसुभेण
सुहुमेहिं दिट्ठिसंचालेहिं, [illegible] [illegible]णिज्जं च मे ?
अविराहिओ, हुज्ज मे का[illegible] , पडिक्कमामि,
वंताणं नमुक्कारेणं न पा[illegible] [illegible]नित्तीसन्नयराए,
झाणेणं अप्पाणं वोसिरा[illegible] [illegible]ाए कायदुक्क-
सव्वकालिआए

(एक लोगस्स का [illegible] [illegible]ए आसायणाए
पारके प्रगट लोगस्स [illegible] [illegible]॥ । पडिक्कमामि

लोगस्स उ[illegible]

किसइस्सं, च[illegible] [illegible]ायज्जाए निसीहि-
संभवमभिणं[illegible] [illegible]भगवन् पसाय करी
चंदप्पहं वंदे ॥ [illegible]
वासु-पुज्जं [illegible] [illegible]क्खाण करना)
॥ ३ ॥ [illegible] का पच्चक्खाण ।
वंदामि [illegible] [illegible] चउव्विहं पि आहारं असणं,
[illegible]न्नत्थणाभोगेणं सहसागारेणं,

इच्छामि खमासमणो वंदिउं जावणिज्जाए निसीहिआए मत्थएण वंदामि । इच्छाकारेण संदिसह भगवन् पच्चक्खाण लेवा मुहपत्ति पडिलेहुं ? 'इच्छं' ।

(अब नीचे बैठ कर मुहपत्ति का पडिलेहन करे और दो बार वांदणा दें । यदि चउवीहार उपवास हो तो मुहपत्ति नहीं पडिलेहना और वांदणा भी नहीं देना, परन्तु तीवीहार उपवास हो तो मुहपत्ति पडिलेहे और वांदणा नहीं दें)

इच्छामि खमासमणो ! वंदिउं जावणिज्जाए निसीहिआए । अणुजाणह मे मिउग्गहं। निसीहि, अहोकायं कायसंफासं, खमणिज्जो भे किलामो, अप्पकिलंताणं वहुसुभेण भे दिवसो वइक्कंतो ? जत्ता भे ? जवणिज्जं च भे ? खामेमि खमासमणो । देवसिअं वइक्कम्मं, आवस्सिआए पडिक्कमामि खमासमणाणं,देवसिआए आसायणाए,तित्तीसन्नयराए, जं किंचि मिच्छाए मणदुक्कडाए वयदुक्कडाए कायदुक्कडाए कोहाए माणाए मायाए लोभाए सव्वकालिआए सव्वमिच्छोवयाराए सव्वधम्माइक्कमणाए आसायणाए जो मे अइयारो कओ तस्स खमासमणो पडिक्कमामि निंदामि गरिहामि अप्पाणं वोसिरामि ।

इच्छामि खमासमणो ! वंदिउं जावणिज्जाए निसीहिआए अणुजाणह मे मिउग्गहं निसीहि, अहोकायं काय-

संफासं, खमणिज्जो भे किलामो अप्पकिलंताणं बहुसुभेण भे दिवसो वइक्कंतो ? जत्ता भे ? जवणिज्जं च भे ? खामेमि खमासमणो देवसिअं वइक्कम्मं, पडिक्कमामि, खमासमणाणं, देवसिआए आसायणाए, तित्तीसन्नयराए, जं किंचि मिच्छाए मणदुक्कडाए वयदुक्कडाए कायदुक्कडाए, कोहाए माणाए मायाए, लोभाए, सव्वकालिआए सव्व मिच्छोवयाराए सव्व धम्माइक्कमणाए आसायणाए जो मे अइयारो कओ तस्स खमासमणो ! पडिक्कमामि निंदामि गरिहामि अप्पाणं वोसिरामि ॥

इच्छामि खमासमणो वंदिउं जावणिज्जाए निसीहिआए मत्थएण वंदामि । इच्छकारि भगवन् पसाय करी पच्चक्खाण कराना जी ।

(अब यथाशक्ति पच्चक्खाण करना)

अथ चउविहार का पच्चक्खाण ।

दिवसचरिमं पच्चक्खाइ, चउव्विहं पि आहारं असणं, पाणं, खाइमं, साइमं; अन्नत्थणाभोगेणं सहसागारेणं, महत्तरागारेणं सव्वसमाहिवत्तिआगारेणं वोसिरइ ।

अथ दुविहार का पच्चक्खाण ।

दिवसचरिमं पच्चक्खाइ, दुविहं पि आहारं असणं, खाइमं, अन्नत्थणाभोगेणं, सहसागारेणं, महत्तरागारेणं, सव्वसमाहिवत्तिआगारेणं वोसिरइ ।

(एकासणा आयंबील तिविहार उपवास आदि व्रत किया हो तो पाणहार का पच्चक्खाण करना—)

अथ पाणहार का पच्चक्खाण।

पाणहार दिवसचरिमं पच्चक्खाइ, अन्नत्थणाभोगेणं सहसागारेणं, महत्तरागारेणं, सव्वसमाहिवत्तियागारेणं वोसिरइ।

इच्छामि खमासमणो वंदिउं जावणिज्जाए निसीहिआए मत्थएण वंदामि। इच्छाकारेण संदिसह भगवन् सज्झाय संदिसाहुं? 'इच्छं'

इच्छामि खमासमणो! वंदिउं जावणिज्जाए निसीहिआए मत्थएण वंदामि। इच्छाकारेण संदिसह भगवन्! सज्झाय करूं? 'इच्छं'।

इच्छामि खमासमणो! वंदिउं जावणिज्जाए निसीहिआए मत्थएण वंदामि।

(कह कर आठ नवकार गिने)।

इच्छामि खमासमणो वंदिउं जावणिज्जाए निसीहिआए मत्थएण वंदामि। इच्छाकारेण संदिसह भगवन् बेसणो संदिसाहुं? 'इच्छं'।

इच्छामि खमासमणो वंदिउं जावणिज्जाए, निसीहिआए, मत्थएण वंदामि। इच्छाकारेण संदिसह भगवन् बेसणो ठाउं ? 'इच्छं'।

(अब आसन बिछा कर बैठ जाय और वस्त्र की आवश्यकता हो तो नीचे का पाठ बोल कर वस्त्र ग्रहण करें)

इच्छामि खमासमणो वंदिउं जावणिज्जाए निसीहिआए मत्थएण वंदामि। इच्छाकारेण संदिसह भगवन् पंगुरण संदिसाहुं ? 'इच्छं'

इच्छामि खमासमणो वंदिउं जावणिज्जाए निसीहिआए मत्थएण वंदामि। इच्छाकारेण संदिसह भगवन् पंगुरण पडिग्गाहुं ? 'इच्छं'

(अब शुभ ध्यान में समय व्यतीत करे या प्रतिक्रमण करे)

इति संध्याकालीन सामायिक विधि।



अथ दैवसिक प्रतिक्रमण विधि ।

(पहले यथाविधि सामायिक लेकर तीन खमासमण देना)-

इच्छामि खमासमणो वंदिउं जावणिज्जाए निसीहिआए मत्थएण वंदामि । इच्छाकारेण संदिसह भगवन् चैत्यवंदन करूं ? 'इच्छं' ।

जय तिहुअण-वर-कप्परुक्ख जय जिण धन्नंतरि, जय तिहुअण-कल्लाण-कोस दुरिअक्करिकेसरि । तिहुअण-जण-अविलंघिआण भुवणत्तयसामिअ, कुणसु सुहाइ जिणेस पास थंभणयपुरट्ठिअ ॥ १ ॥ तइ समरंत लहंति झत्ति वरपुत्तकलत्तइ, धण्ण-सुवण्ण-हिरण्ण-पुण्ण जण भुंजइ रज्जइ । पिक्खइ मुक्खअसंखसुक्ख तुइ पास पसाइण, इअ तिहुअणवरकप्परुक्ख सुक्खइ कुण मह जिण ॥ २ ॥ जरजज्जर परिजुण्णकण्ण नट्ठुट्ठ सुकुट्ठिण, चक्खुक्खीण खएण खुण्ण नर सल्लिय सूलिण । तुह जिण सरणरसायणेण लहु हुंति पुणण्णव, जय धन्नंतरि पास मह वि तुह रोगहरो भव ॥ ३ ॥ विज्जा जोइसमंततंतसिद्धीउ अपयत्तिण, भुवणऽब्भुअ अट्ठिविह सिद्धि सिज्झहि तुह नामिण । तुह नामिण अपवित्तओवि जण होइ पवित्तउ, तं तिहुअण कल्लाणकोस तुह पास निरुत्तउ ॥ ४ ॥ खुद्द पउत्तइ मंतं-

तंत-जंताइं विसुसइ, चरथिरगरल-गहुग्ग-खग्ग-रिउवग्ग वि गंजइ । दुत्थिअसत्थ अणत्थघत्थ नित्थारइ दय करि, दुरियइ हरउ स पासदेउ दुरियकरिकेसरि ॥ ५ ॥

जय महायस जय महायस जय महाभाग जय चिंतिय सुहफलय, जय समत्थ-परमत्थ जाणय जय जय गुरुगरिम गुरु । जय दुहत्त-सत्ताण ताणय थंभणयट्ठिय पासजिण, भवियह भीम भवुत्थु भय अवणिंताणंतगुण, तुज्झ तिसंझ नमोऽत्थु ॥ १ ॥

णमोऽत्थुणं अरिहंताणं भगवंताणं, आइगराणं तित्थयराणं सयंसंबुद्धाणं, पुरिसुत्तमाणं पुरिससीहाणं पुरिसवर पुंडरीआणं पुरिसवर गंधहत्थीणं । लोगुत्तमाणं लोगनाहाणं लोगहिआणं लोगपईवाणं लोगपज्जोअगराणं । अभयदयाणं चक्खुदयाणं मग्गदयाणं सरणदयाणं बोहिदयाणं । धम्मदयाणं धम्मदेसयाणं धम्मनायगाणं धम्मसारहीणं धम्मवरचाउरंतचक्कवट्टीणं । अप्पडिहयवरनाणदंसण-धराणं, विअट्टछउमाणं, जिणाणं जावयाणं तिन्नाणं तारयाणं बुद्धाणं बोहयाणं मुत्ताणं मोअगाणं, सव्वन्नूणं सव्वदरिसीणं, सिवमयलमरुअमणंतमक्खयमव्वाबाहमपुणरावित्ति, सिद्धिगइनामधेयं ठाणं संपत्ताणं नमो जिणाणं जिअभयाणं, जे अ अईआ सिद्धा, जे अ

भविस्संति णागए काले। संपइअवट्टमाणा सव्वे तिविहेण वंदामि।

(अब खड़े होकर बोलना)

अरिहंतचेइआणं, करेमि काउस्सग्गं, वंदणवत्तिआए, पूअणवत्तिआए, सक्कारवत्तिआए, सम्माणवत्तिआए, बोहिलाभवत्तिआए, निरुवसग्गवत्तिआए, सद्धाए, मेहाए, धिईए, धारणाए, अणुप्पेहाए, वड्ढमाणीए, ठामि काउस्सग्गं।

अन्नत्थ ऊससिएणं, नीससिएणं, खासिएणं, छीएणं, जंभाइएणं, उड्डुएणं वायनिसग्गेणं, भमलीए, पित्तमुच्छाए, सुहुमेहिं अंगसंचालेहिं, सुहुमेहिं खेलसंचालेहिं, सुहुमेहिं दिट्ठिसंचालेहिं, एवमाइएहिं आगारेहिं अभग्गो अविराहिओ, हुज्ज मे काउस्सग्गो। जाव अरिहंताणं भगवंताणं नमुक्कारेणं न पारेमि ताव कायं ठाणेणं मोणेणं झाणेणं अप्पाणं वोसिरामि।

(एक नवकार का काउस्सग्ग कर "नमोऽर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधुभ्यः" कह कर प्रथम थुइ कहना)—

अश्वसेन नरेसर, वामादेवी नंद। नव कर तनु निरुपम, नील वरण सुखकंद॥ अहि लंछन सेवित, पउमावई धरणिंद। प्रह ऊठी [illegible], नित्य प्रति पास जिणंद॥ १॥

लोगस्स उज्जोअगरे, धम्मतित्थयरे जिणे । अरिहंते कित्तइस्सं, चउवीसं पि केवली ॥ १ ॥ उसभमजिअं च वंदे, संभवमभिणंदणं च सुमइं च । पउमप्पहं सुपासं, जिणं च चंदप्पहं वंदे ॥ २ ॥ सुविहिं च पुप्फदंतं, सीअल-सिज्जंस-वासुपुज्जं च । विमलमणंतं च जिणं, धम्मं संतिं च वंदामि ॥ ३ ॥ कुंथुं अरं च मल्लिं, वन्दे मुणिसुव्वयं नमिजिणं च । वंदामि रिट्ठनेमिं, पासं तह वद्धमाणं च ॥ ४ ॥ एवं मए अभिथुआ, विहुयरयमला पहीणजरमरणा । चउवीसं पि जिणवरा, तित्थयरा मे पसीयंतु ॥ ५ ॥ कित्तिय--वंदिय--महिया, जे ए लोगस्स उत्तमा सिद्धा । आरुग्गबोहिलाभं, समाहिवरमुत्तमं दिंतु ॥ ६ ॥ चंदेसु निम्मलयरा, आइचेसु अहियं पयासयरा । सागरवरगंभीरा, सिद्धा सिद्धिं मम दिसंतु ॥ ७ ॥

सव्वलोए अरिहंतचेइयाणं करेमि काउस्सग्गं । वंदण-वत्तिआए, पूअणवत्तिआए, सक्कारवत्तिआए, सम्माणव-त्तिआए, बोहिलाभवत्तिआए, निरुवसग्गवत्तिआए, सद्धाए, मेहाए, धिईए, धारणाए, अणुप्पेहाए, वड्ढमाणीए ठामि काउस्सग्गं ॥

अन्नत्थ ऊससिएणं, नीससिएणं, खासिएणं, छीएणं, जंभाइएणं, उड्डुएणं, वायनिसग्गेणं, भमलिए पित्त-

मुच्छाए, सुहुमेहिं अंगसंचालेहिं, सुहुमेहिं खेलसंचालेहिं, सुहुमेहिं दिट्ठिसंचालेहिं, एवमाइएहिं आगारेहिं अभग्गो अविराहिओ हुज्ज मे काउस्सग्गो। जाव अरिहंताणं भगवंताणं, नमुक्कारेणं न पारेमि ताव कायं ठाणेणं मोणेणं झाणेणं अप्पाणं वोसिरामि।

(एक नवकार का काउस्सग्ग करके दूसरी थुइ कहना)—

कुलगिरि वेयड्ढ, कणयाचल अभिराम। मानुषोत्तर नंदी, रुचक कुंडल सुखठाम॥ भुवणे सुर व्यंतर, जोइस विमाणी नाम। वर्त्ते ते जिनवर, पूरो मुझ मन काम॥२॥

पुक्खरवरदीवड्ढे, धायइसंडे अ जंबुदीवे अ। भरहेरवयविदेहे, धम्माइगरे नमंसामि॥१॥ तम-तिमिर-पडल-विद्धंसणस्स सुरगणनरिंदमहियस्स। सीमाधरस्स वंदे, पप्फोडिअ मोहजालस्स॥ २॥ जाईजरामरणसोगपणासणस्स, कल्लाण-पुक्खल-विसाल-सुहावहस्स। को देवदाणवनरिंदगणच्चियस्स, धम्मस्स सारमुवलब्भ करे पमायं॥३॥ सिद्धे भो! पयओ णमो जिणमए नंदी सया संजमे, देवंनागसुवन्नकिन्नरगणस्सब्भूअभावच्चिए। लोगो जत्थ पइट्ठिओ जगमिणं तेलुक्कमच्चासुरं, धम्मो वड्ढउ सासओ विजयओ धम्मुत्तरं वड्ढउ॥४॥ सुअस्स भगवओ करेमि काउस्सग्गं। वंदणवत्तिआए, पूअणवत्तिआए,

सक्कारवत्तिआए, सम्माणवत्तिआए, बोहिलाभवत्तिआए, निरुवसग्गवत्तिआए। सद्धाए मेहाए धिईए धारणाए अणुप्पेहाए वड्ढमाणीए ठामि काउस्सग्गं ॥१॥

अन्नत्थ ऊससिएणं, नीससिएणं, खासिएणं, छीएणं, जंभाइएणं, उड्डुएणं, वायनिसग्गेणं, भमलिए, पित्तमुच्छाए, सुहुमेहिं अंगसंचालेहिं, सुहुमेहिं खेलसंचालेहिं, सहुमेहिं दिट्ठिसंचालेहिं, एवमाइएहिं आगारेहिं अभग्गो अविराहिओ हुज्ज मे काउस्सग्गो, जाव अरिहंताणं भगवंताणं, नमुक्कारेणं न पारेमि, ताव कायं ठाणेणं मोणेणं झाणेणं अप्पाणं वोसिरामि ॥

(एक नवकार का काउस्सग्ग करके तीसरी थुइ कहना)

जिहाँ अंग इग्यारे, बार उपंग छ छेद। दस पयन्ना दाख्या, मूल सूत्र चव भेद ॥ जिन आगम षड्द्रव्य, सप्त पदारथ जुत्त। सांभली सर्दहतां, त्रूटे करम तुरंत ॥३॥

सिद्धाणं बुद्धाणं, पारगयाणं परंपरगयाणं। लोअग्गमुवगयाणं, नमो सया सव्वसिद्धाणं ॥१॥ जो देवाण वि देवो, जं देवा पंजली नमंसंति। तं देवदेवमहिअं, सिरसा वंदे महावीरं ॥२॥ इक्कोवि नमुक्कारो, जिणवरवसहस्स वद्धमाणस्स। संसारसागराओ; तारेइ नरं व नारिं वा ॥३॥

उज्जितसेलसिहरे, दिक्खा नाणं निसीहिआ जस्स। तं धम्मचक्कवट्टिं, अरिट्ठनेमिं नमंसामि ॥४॥ चत्तारि अट्ठ दस दो य, वंदिआ जिणवरा चउव्वीसं। परमट्ठ निट्ठि-अट्ठा, सिद्धा सिद्धिं मम दिसंतु ॥५॥

वेयावच्चगराणं संतिगराणं सम्मदिट्ठिसमाहिगराणं करेमि काउस्सग्गं ॥

अन्नत्थ ऊससिएणं, नीससिएणं, खासिएणं, छीएणं, जंभाइएणं, उड्डुएणं, वायनिसग्गेणं, भमलिए, पित्तमुच्छाए, सुहुमेहिं अंगसंचालेहिं, सुहुमेहिं खेलसंचालेहिं, सुहुमेहिं दिट्ठिसंचालेहिं, एवमाइएहिं आगारेहिं अभग्गो अविराहिओ हुज्ज मे काउस्सग्गो॥ जाव अरिहंताणं भगवंताणं नमुक्का-रेणं न पारेमि ताव कायं ठाणेणं मोणेणं झाणेणं अप्पाणं वोसिरामि।

(एक नवकार का काउस्सग्ग करं "नमोऽर्हत्सिद्धाचार्यो-पाध्यायसर्वसाधुभ्यः" कह कर चौथी थुइ कहना)—

पउमा वई देवी, पार्श्व यक्ष परतक्ष। सहु संघनां संकट, दूर करेवा दक्ष॥ समरो जिन भक्ति—सूरि कहे इक चित्त। सुख सुजस समापो, पुत्र कलत्र बहु वित्त ॥४॥

(अब नीचे बैठ के बोलना)

नमोत्थुणं अरिहंताणं भगवंताणं ॥ १ ॥ आइगराणं तित्थयराणं सयंसंबुद्धाणं ॥ २ ॥ पुरिसुत्तमाणं, पुरिससीहाणं, पुरिसवरपुण्डरीआणं, पुरिसवर-गन्धहत्थीणं ॥३॥ लोगुत्तमाणं लोगनाहाणं, लोगहिआणं लोगपईवाणं, लोगपज्जोअगराणं ॥ ४ ॥ अभयदयाणं, चक्खुदयाणं, मग्गदयाणं, सरणदयाणं, बोहिदयाणं ॥ ५ ॥ धम्मदयाणं, धम्मदेसियाणं, धम्मनायगाणं, धम्मसारहीणं धम्मवर-चाउरंतचक्कवट्टीणं ॥ ६ ॥ अप्पडिहयवर-नाणदंसणधराणं विअट्टछउमाणं ॥ ७ ॥ जिणाणं जावयाणं, तिन्नाणं तारयाणं, बुद्धाणं बोहयाणं मुत्ताणं मोअगाणं ॥ ८ ॥ सव्वन्नूणं, सव्वदरिसीणं, सिवमयलमरुअमणंतमक्खय-मव्वाबाहमपुणरावित्ति सिद्धिगइ-नामधेयं ठाणं संपत्ताणं, नमो जिणाणं, जिअभयाणं ॥ ६ ॥ जे अ अईआ सिद्धा; जे अ भविस्संति णागए काले। संपइ अ वट्टमाणा, सव्वे तिविहेण वंदामि ॥ १० ॥

(यहाँ चार वार एक एक 'खमासमण' देकर 'आचार्य जी मिश्र' आदि एक एक पद कहना जैसे)

इच्छामि खमासमणो वंदिउं जावणिज्जाए निसीहिआए मत्थएण वंदामि। 'श्रीआचार्यजीमिश्र'।

इच्छामि खमासमणो वंदिउं जावणिज्जाए निसीहिआए मत्थएण वंदामि। 'श्रीउपाध्यायजीमिश्र'।

इच्छामि खमासमणो वंदिउं जावणिज्जाए निसीहिआए मत्थएण वंदामि। जंगमयुगप्रधान वर्त्तमान धर्माचार्य जी ने वांदू।

इच्छामि खमासमणो वंदिउं जावणिज्जाए निसीहिआए मत्थएण वंदामि। 'सर्वसाधु जी ने वांदू'।

इच्छाकारेण संदिसह भगवन्! देवसिय पडिक्कमणे ठाउं? 'इच्छं'॥

(ऐसे कह कर दाहिने हाथ को चरवले या आसन पर रख कर बायां हाथ मुहपत्ति सहित मुख के आगे रख कर सिर झुका कर 'सव्वस्सवि' का पाठ बोलना)

सव्वस्सवि देवसिअ दुच्चिंतिअ दुब्भासिअ दुच्चिट्ठिअ इच्छं तस्स मिच्छामि दुक्कडं॥

(अब खड़ा होकर बोलना)

करेमि भंते! सामाइअं, सावज्जं जोगं पच्चक्खामि। जाव नियमं पज्जुवासामि, दुविहं तिविहेणं मणेणं वायाए काएणं न करेमि न कारवेमि तस्स भंते पडिक्कमामि निंदामि गरिहामि अप्पाणं वोसिरामि॥

इच्छामि ठामि काउस्सग्गं। जो मे देवसिओ अइयारो कओ, काइओ वाइओ माणसिओ उस्सुत्तो उम्मग्गो अकप्पो अकरणिज्जो दुज्झाओ दुव्विचिंतिओ अणायारो अणिच्छिअव्वो असावग-पाउग्गो नाणे दंसणे चरित्ताचरित्ते सुए सामाइए, तिण्हं गुत्तीणं, चउण्हं कसायाणं, पंचण्हमणुव्वयाणं, तिण्हं गुणव्वयाणं, चउण्हं सिक्खावयाणं, बारसविहस्स सावगधम्मस्स जं खंडिअं जं विराहिअं तस्स मिच्छा मि दुक्कडं॥

तस्स उत्तरीकरणेणं, पायच्छित्तकरणेणं, विसोहीकरणेणं, विसल्लीकरणेणं, पावाणं कम्माणं निग्घायणट्ठाए, ठामि काउस्सग्गं।

अन्नत्थ ऊससिएणं, नीससिएणं, खासिएणं, छीएणं, जंभाइएणं, उड्डुएणं, वायनिसग्गेणं, भमलिए, पित्तमुच्छाए॥१॥ सुहुमेहिं अंगसंचालेहिं, सुहुमेहिं खेलसंचालेहिं, सुहुमेहिं दिट्ठिसंचालेहिं॥२॥ एवमाइएहिं आगारेहिं अभग्गो अविराहिओ हुज्ज मे काउस्सग्गो॥३॥ जाव अरिहंताणं भगवंताणं नमुक्कारेणं न पारेमि॥४॥ ताव कायं ठाणेणं मोणेणं झाणेणं अप्पाणं वोसिरामि॥५॥

('जाउंगा चार प्रहर दिवस में' का पाठ मन में चिन्तन करे या आठ नवकार का काउस्सग्ग करे पीछे प्रगट लोगस्स कहे)

लोगस्स उज्जोअगरे, धम्मतित्थयरे जिणे। अरिहंते कित्तइस्सं, चउवीसं पि केवली ॥१॥ उसभमजिअं च वंदे, संभवमभिणंदणं च सुमइं च। पउमप्पहं सुपासं, जिणं च चंदप्पहं वंदे ॥ २ ॥ सुविहिं च पुप्फदंतं, सीअल-सिज्जंस-वासु-पुज्जं च। विमलमणंतं च जिणं, धम्मं संतिं च वंदामि ॥ ३ ॥ कुंथुं अरं च मल्लिं, वंदे मुणिसुव्वयं नमिजिणं च। वंदामि रिट्ठनेमिं, पासं तह वद्धमाणं च ॥ ४ ॥ एवं मए अभिथुआ, विहुयरयमला पहीणजरमरणा। चउवीसं पि जिणवरा, तित्थयरा मे पसीयंतु ॥ ५ ॥ कित्तिय वंदीय महिया, जे ए लोगस्स उत्तमा सिद्धा। आरुग्गवोहिलाभं, समाहिवरमुत्तमं दिंतु ॥ ६ ॥ चंदेसु निम्मलयरा, आइच्चेसु अहियं पयासयरा। सागरवरगंभीरा, सिद्धा सिद्धिं मम दिसंतु ॥ ७ ॥

(अब नीचे बैठ कर तीजा आवश्यक की मुहपत्ति पडिलेहना और दो वार वांदणा देना)—

इच्छामि खमासमणो! वंदिउं जावणिज्जाए निसीहिआए अणुजाणह मे मिउग्गहं। निसीहि, अहोकायं काय-संफासं, खमणिज्जो भे किलामो अप्पकिलंताणं वहुसुभेण भे दिवसो वइक्कंतो ? जत्ता भे ? जवणिज्जं च भे ? खामेमि खमासमणो! देवसिअं वइक्कम्मं आवस्सिआए पडिक्कमामि

खमासमणाणं, देवसिआए आसायणाए तित्तीसन्नयराए, जं किंचि मिच्छाए मणदुक्कडाए वयदुक्कडाए कायदुक्कडाए कोहाए माणाए मायाए लोभाए सव्वकालिआए सव्व-मिच्छोवयाराए सव्वधम्माइक्कमणाए आसायणाए जो मे अइआरो कओ तस्स खमासमणो पडिक्कमामि निंदामि गरिहामि अप्पाणं वोसिरामि ।

इच्छामि खमासमणो ! वंदिउं जावणिज्जाए निसीहि-आए । अणुजाणह मे मिउग्गहं । निसीहि, अहोकायं कायसंफासं । खमणिज्जो भे किलामो, अप्पकिलंताणं बहुसुभेण भे दिवसो वइक्कंतो ? जत्ता भे ? जवणिज्जं च भे ? खामेमि खमासमणो ! देवसिअं वइक्कम्मं, पडि-क्कमामि खमासमणाणं, देवसिआए, आसायणाए, तित्ती-सन्नयराए, जं किंचि मिच्छाए, मणदुक्कडाए, वयदुक्कडाए, कायदुक्कडाए, कोहाए, माणाए, मायाए, लोभाए, सव्व-कालिआए, सव्वमिच्छोवयाराए, सव्वधम्माइक्कमणाए, आसायणाए, जो मे अइआरो कओ, तस्स खमासमणो ! पडिक्कमामि निंदामि गरिहामि अप्पाणं वोसिरामि ॥१॥

(अब खड़ा होकर बोलना)

इच्छाकारेण संदिसह भगवन् देवसिअं आलोउं ? 'इच्छं' आलोएमि । जो मे देवसिओ अइआरो कओ

काइओ वाइओ माणसिओ उस्सुत्तो उम्मग्गो अकप्पो अक-रणिज्जो दुज्झाओ दुव्विचिंतिओ अणायारो अणिच्छि-अव्वो असावगपाउग्गो नाणे दंसणे चरित्ताचरित्ते सुए सामाइए । तिण्हं गुत्तीणं, चउण्हं कसायाणं पंचण्हमणु-व्वयाणं, तिण्हं गुणव्वयाणं, चउण्हं सिक्खावयाणं बारसविहस्स सावगधम्मस्स जं खंडिअं जं विराहिअं तस्स मिच्छा मि दुक्कडं ॥

आलोयणा पाठ ।

आजुणा चार पहर दिवसमें मैंने जिन २ जीवोंकी विरा-धना की हो । सात लाख पृथिवीकाय, सात लाख अप्काय, सात लाख तेउकाय, सात लाख वाउकाय, दश लाख प्रत्येक वनस्पतिकाय, चौदह लाख साधारण वनस्पतिकाय, दो लाख दोइंद्रिय, दो लाख तेइंद्रिय, दो लाख चौरिंद्रिय, चार लाख देवता, चार लाख नारकी, चार लाख तिर्यंच पंचें-द्रिय, चौदह लाख मनुष्य । एवं कुल चौरासी लाख जीव योनियों में से किसी जीव का मैंने हनन किया, कराया या करते हुए का अनुमोदन किया वह सब मन वचन काया करके मिच्छा मि दुक्कडं ।

पहला प्राणातिपात, दूसरा मृषावाद, तीसरा अदत्तादान, चौथा मैथुन, पाँचवाँ परिग्रह, छट्ठा क्रोध, सातवाँ मान, आठवाँ माया, नववाँ लोभ, दशवाँ राग, ग्यारहवाँ द्वेष, बारहवाँ कलह, तेरहवाँ अभ्याख्यान, चौदहवाँ पैशुन्य, पन्द्रहवाँ रति अरति, सोलहवाँ, परपरिवाद, सत्तरहवाँ मायामृषावाद, अठारहवाँ मिथ्यात्वशल्य । इन अठारह पापस्थानों में से किसी का मैंने सेवन किया, कराया या करते हुए का अनुमोदन किया, वह सब मन वचन काया करके मिच्छा मि दुक्कडं ।

ज्ञान, दर्शन, चारित्र, पाटी, पोथी, ठवणी, कवली, नवकारवाली, देव गुरु धर्म की आशातना की हो । पन्द्रह कर्मादानों की आसेवना की हो । राजकथा, देश कथा, स्त्रीकथा, भक्तकथा की हो और जो कोई परनिन्दादि पाप किया हो, कराया हो, करते हुए का अनुमोदन किया हो वह सब मन वचन काया करके दिवस अतिचार आलोयण करके पडिक्कमण में आलोउं, तस्स मिच्छा मि दुक्कडं ।

सव्वस्सवि देवसिअ दुच्चिंतिअ दुब्भासिअ दुच्चिट्ठिअ ! इच्छाकारेण संदिसह भगवन् ! इच्छं । तस्स मिच्छा मि दुक्कडं ।

(अब नीचे बैठ कर, दाहिना घुटना खड़ा करके भगवन् सूत्र भणु ? 'इच्छं' ऐसा कहे। पीछे तीन नवकार और तीन वार 'करेमि भंते' कहे)

णमो अरिहंताणं। णमो सिद्धाणं। णमो आयरियाणं। णमो उवज्झायाणं। णमो लोए सव्वसाहूणं। एसो पंच नमुक्कारो। सव्वपावप्पणासणो। मंगलाणं च सव्वेसिं। पढमं हवइ मंगलं।

करेमि भंते सामाइयं सावज्जं जोगं पच्चक्खामि। जाव नियमं पज्जुवासामि दुविहं तिविहेणं मणेणं वायाए काएणं न करेमि न कारवेमि। तस्स भंते पडिक्कमामि निंदामि गरिहामि अप्पाणं वोसिरामि॥

इच्छामि पडिक्कमिउं जो मे देवसिओ अइआरो कओ, काइओ वाइओ माणसिओ उस्सुत्तो उम्मग्गो अकप्पो अकरणिज्जो दुज्झाओ दुव्विचिंतिओ अणायारो अणिच्छिअव्वो-असावग-पाउग्गो नाणे दंसणे चरित्ताचरित्ते सुए सामाइए। तिण्हं गुत्तीणं, चउण्हं कासायाणं, पंचण्हमणुव्वयाणं, तिण्हं गुणव्वयाणं चउण्हं सिक्खावयाणं, बारसविहस्स सावगधम्मस्स, जं खंडिअं जं विराहिअं तस्स मिच्छामि दुक्कडं।

वंदित्तु-श्रावकप्रतिक्रमणसूत्र ।

वंदित्तु सव्वसिद्धे, धम्मायरिए अ सव्वसाहू अ । इच्छामि पडिक्कमिउं, सावगधम्माइआरस्स ॥ १ ॥ जो मे वयाइआरो, नाणे तह दंसणे चरित्ते अ । सुहुमो अ बायरो वा, तं निंदे तं च गरिहामि ॥२॥ दुविहे परिग्गहंमि, सावज्जे बहुविहे अ आरंभे । कारावणे अ करणे, पडिक्कमे देसिअं सव्वं ॥ ३ ॥ जं बद्धमिंदिएहिं, चउहिं कसाएहिं अप्पसत्थेहिं । रागेण व दोसेण व, तं निंदे तं च गरिहामि ॥४॥ आगमणे निग्गमणे, ठाणे चंकमणे अणाभोगे । अभिओगे अ निओगे, पडिक्कमे देसिअं सव्वं ॥ ५ ॥ संका कंख विगिच्छा, पसंस तह संथवो कुलिंगीसु । सम्मत्तस्सइआरे, पडिक्कमे देसिअं सव्वं ॥ ६ ॥ छक्कायसमारंभे, पयणे अ पयावणे अ जे दोसा । अत्तट्ठा य परट्ठा, उभयट्ठा चेव तं निंदे ॥७॥ पंचण्हमणुव्वयाणं, गुणव्वयाणं च तिण्हमइयारे । सिक्खाणं च चउण्हं, पडिक्कमे देसिअं सव्वं ॥ ८ ॥ पढमे अणुव्वयंमि, थुलगपाणाइवायविरईओ । आयरिअमप्पसत्थे, इत्थ पमायप्पसंगेणं ॥ ९ ॥ वह बंध छविच्छेए, अइभारे भत्तपाणवुच्छेए । पढमवयस्सइआरे, पडिक्कमे देसिअं सव्वं ॥ १० ॥ बीए अणुव्वयंमि, परिथूलगअलिअवयणविरईओ । आयरिअमप्पसत्थे, इत्थ पमायप्पसंगेणं ॥ ११ ॥

सहस्सारहस्सदारे, मोसुवएसे अ कूडलेहे अ। बीअवयस्स-इआरे, पडिक्कमे देसियं सव्वं ॥१२॥ तइए अणुव्वयंमि, थूलगपरदव्वहरणविरईओ। आयरिअमप्पसत्थे, इत्थ पमायप्पसंगेणं ॥ १३ ॥ तेनाहडप्पओगे, तप्पडिरूवे विरुद्धगमणे अ। कूडतुलकूडमाणे, पडिक्कमे देसियं सव्वं ॥१४॥ चउत्थे अणुव्वयम्मि, निच्चं परदारगमणविरईओ। आयरिअमप्पसत्थे, इत्थ पमायप्पसंगेणं ॥ १५ ॥ अपरिग्गहिआ इत्तर, अणंगवीवाहतिव्वअणुरागे। चउत्थवयस्सइआरे, पडिक्कमे देसिअं सव्वं ॥ १६ ॥ इत्तो अणुव्वए पंचमम्मि, आयरिअमप्पसत्थंमि। परिमाणपरिच्छेए, इत्थ पमायप्पसंगेणं ॥ १७ ॥ धण-धन खित्तवत्थू, रुप्प-सुवन्ने अ कुविअपरिमाणे। दुपये चउप्पयम्मि, पडिक्कमे देसिअं सव्वं ॥१८॥ गमणस्स उ परिमाणे, दिसासु उड्ढं अहे अ तिरिअं च। वुड्ढि सइअंतरद्धा, पढमम्मि गुणव्वए निंदे ॥ १९ ॥ मज्जम्मि अ मंसम्मि अ, पुप्फे अ फले अ गंधमल्ले अ। उवभोगपरिभोगे, वीअम्मि गुणव्वए निंदे ॥२०॥ सच्चित्ते पडिवद्धे, अपोलि दुप्पोलिअं च आहारे। तुच्छोसहिभक्खणया, पडिक्कमे देसिअं सव्वं ॥ २१ ॥ इंगालीवणसाडी, भाडीफोडी सुवज्जए कम्मं। वाणिज्जं चेव य दंत, लक्खरसकेसविसविसयं ॥ २२ ॥ एवं खु जंतपिल्लण, कम्मं

निल्लंछणं च दवदाणं । सरदहतलायसोसं, असईपोसं च वज्जिज्जा ॥ २३ ॥ सत्थग्गिमुसलजंतग-तणकट्ठे मंतमूल भेसज्जे । दिन्ने दवाविए वा, पडिक्कमे देसियं सव्वं ॥ २४ ॥ ण्हाणुव्वट्टणवन्नग-विलेवणे सद्दरूवर-सगंधे । वत्थासण आभरणे, पडिक्कमे देसिअं सव्वं ॥२५॥ कंदप्पे कुक्कुइए, मोहरिअहिगरण-भोगअइरित्ते । दंडम्मि अणट्ठाए, तइअम्मि गुणव्वए निंदे ॥ २६ ॥ तिविहे दुप्पणिहाणे, अणवट्ठाणे तहा सईविहूणे । सामाइअ वितह कए, पढमे सिक्खावए निंदे ॥ २७ ॥ आणवणे पेसवणे, सद्दे रूवे अ पुग्गलक्खेवे, देसावगासियम्मि, बीए सिक्खावए निंदे ॥ २८ ॥ संथारुच्चारविही-पमाय तह चेव भोअणाभोए, पोसहविहिविवरीए, तइए सिक्खावए निंदे ॥ २९ ॥ सचित्ते निक्खिवणे, पिहिणे ववएसमच्छरे चेव । कालाइक्कमदाणे, चउत्थे सिक्खावए निंदे ॥ ३० ॥ सुहिएसु अ दुहिएसु अ, जामे अस्संजएसु अणुकंपा । रागेण व दोसेण व, तं निंदे तं च गरिहामि ॥३१॥ साहूसु संविभागो, न कओ तवचरणकरणजुत्तेसु । संते फासुअदाणे, तं निंदे तं च गरिहामि ॥ ३२ ॥ इहलोए परलोए जीविअ मरणे अ आसंसपओगे । पंचविहो अइआरो, मा मज्झं हुज्ज मरणंते ॥ ३३ ॥ काएण काइअस्स, पडिक्कमे वाइअस्स

वायाए। मणसा माणसिअस्स, सव्वस्स वयाइआरस्स ॥ ३४ ॥ वंदणवयसिक्खागा-रवेसु सन्नाकसायदंडेसु। गुत्तीसु अ समिईसु अ, जो अइआरो अ तं निंदे ॥३५॥ सम्मद्दिट्ठी जीवो, जइ वि हु पावं समायरइ किंचि। अप्पो सि होइ बंधो, जेण न निद्धंधसं कुणइ ॥ ३६ ॥ तं पि हु सपडिक्कमणं, सप्परिआवं सउत्तरगुणं च। खिप्पं उवसामेई, वाहि व्व सुसिक्खिओ विज्जो ॥ ३७ ॥ जहा विसं कुट्ठगयं, मंतमूलविसारया। विज्जा हणंति मंतेहिं, तो तं हवइ निव्विसं ॥ ३८ ॥ एवं अट्ठविहं कम्मं, रागदोससमज्जिअं। आलोअंतो अ निंदंतो, खिप्पं हणइ सुसावओ ॥ ३९ ॥ कयपावो वि मणुस्सो, आलोइय निंदिअ य गुरुसगासे। होइ अइरेगलहुओ, ओहरिअभरु व्व भारवहो ॥ ४० ॥ आवस्सएण एएण, सावओ जइ वि बहुरओ होइ। दुक्खाणमंतकिरिअं, काही अचिरेण कालेण ॥४१॥ आलोअणा बहुविहा, न य संभरिआ पडिक्कमणकाले। मूलगुणउत्तरगुणे, तं निंदे तं च गरिहामि ॥ ४२ ॥ तस्स धम्मस्स केवलिपन्नत्तस्स, अब्भुट्ठिओमि आराहणाए, विरओमि विराहणाए। तिविहेण पडिक्कंतो, वंदामि जिणे चउव्वीसं ॥ ४३ ॥ जावंति चेइआई, उड्ढे अ अहे अ तिरिअलोए अ। सव्वाइं ताइं वंदे, इह संतो तत्थ संताइं ॥ ४४ ॥ जावंत केवि साहु, भरहेरवयमहाविदेहे अ।

सव्वेसिं तेसिं पणओ, तिविहेण तिदंडविरयाणं ॥ ४५ ॥ चिरसंचियपावपणासणीइ, भवसयसहस्समहणीए। चउव्वीसजिणविणिग्गय-कहाइ-वोलंतु मे दिअहा ॥ ४६ ॥ मम मंगलमरिहंता, सिद्धा साहू सुअं च धम्मो अ। सम्मदिट्ठी देवा, दिंतु समाहिं च बोहिं च ॥ ४७ ॥ पडिसिद्धाणं करणे, किच्चाणमकरणे पडिक्कमणं। असद्दहणे अ तहा, विवरीयपरूवणाए अ ॥ ४८ ॥ खामेमि सव्व-जीवे, सव्वे जीवा खमंतु मे। मित्ती मे सव्वभूएसु, वेरं मज्झ न केणई ॥ ४९ ॥ एवमहं आलोइअ, निंदिअ गरहिअ दुगंछिअं सम्मं। तिविहेण पडिक्कंतो, वंदामि जिणे चउव्वीसं ॥ ५० ॥

इच्छामि खमासमणो! वंदिउं जावणिज्जाए निसीहिआए अणुजाणह मे मिउग्गहं। निस्सीहि, अहोकायं काय-संफासं खमणिज्जो भे किलामो। अप्पकिलंताणं बहुसुभेण भे, दिवसो वइक्कंतो? जत्ता भे? जवणिज्जं च भे? खामेमि खमा-समणो देवसिअं वइक्कमं आवस्सिआए पडिक्कमामि खमासम-णाणं, देवसिआए आसायणाए, तित्तीसन्नयराए, जं किंचि मिच्छाए मणदुक्कडाए वयदुक्कडाए कायदुक्कडाए कोहाए माणाए मायाए लोभाए सव्वकालिआए, सव्वमिच्छोवयाराए, सव्वधम्माइक्कमणाए, आसायणाए, जो मे अइयारो कओ

तस्स खमासमणो पडिक्कमामि निंदामि गरिहामि अप्पाणं वोसिरामि ॥

इच्छामि खमासमणो! वंदिउं जावणिज्जाए निसीहिआए। अणुजाणह मे मिउग्गहं। निस्सीहि, अहोकायं कायसंफासं, खमणिज्जो भे किलामो। अप्पकिलंताणं वहुसुभेण भे दिवसो वइक्कंतो? जत्ता भे? जवणिज्जं च भे? खामेमि खमासमणो देवसिअं वइक्कम्मं पडिक्कमामि खमासमणाणं, देवसिआए आसायणाए, तित्तीसन्नयराए, जं किंचि मिच्छाए, मणदुक्कडाए वयदुक्कडाए कायदुक्कडाए, कोहाए माणाए मायाए लोभाए सव्वकालिआए सव्वमिच्छोवयाराए, सव्वधम्माइक्कमणाए, आसायणाए, जो मे अइयारो कओ तस्स खमासमणो पडिक्कमामि निंदामि गरिहामि अप्पाणं वोसिरामि ॥

अब्भुट्ठियो (गुरुखामणा) सूत्र।

इच्छाकारेण संदिसह भगवन्! अब्भुट्ठिओहं, अब्भितरदेवसिअं खामेउं। इच्छं, खामेमि देवसिअं। जं किंचि अपत्तिअं परपत्तिअं, भत्ते, पाणे, विणए, वेआवच्चे, आलावे, संलावे, उच्चासणे, समासणे, अंतरभासाए, उवरिभासाए, जं किंचि मज्झ विणयपरिहीणं सुहुमं

वा वायरं वा तुब्भे जाणह, अहं न जाणामि, तस्स मिच्छा मि दुक्कडं॥

इच्छामि खमासमणो! वंदिउं जावणिज्जाए निसीहिआए अणुजाणह मे मिउग्गहं। निसीहि, अहोकायं कायसंफासं, खमणिज्जो भे किलामो अप्पकिलंताणं बहुसुभेण भे दिवसो वइक्कंतो? जत्ता भे? जवणिज्जं च भे? खामेमि खमासमणो! देवसिअं वइक्कम्मं आवस्सिआए पडिक्कमामि खमासमणाणं, देवसिआए आसायणाए तित्तीसन्नयराए, जं किंचि मिच्छाए मणदुक्कडाए वयदुक्कडाए कायदुक्कडाए कोहाए माणाए मायाए लोभाए सव्वकालिआए सव्वमिच्छोवयाराए सव्वधम्माइक्कमणाए आसायणाए जो मे अइआरो कओ तस्स खमासमणो पडिक्कमामि निंदामि गरिहामि अप्पाणं वोसिरामि।

इच्छामि खमासमणो! वंदिउं जावणिज्जाए निसीहिआए। अणुजाणह मे मिउग्गहं। निसीहि, अहोकायं कायसंफासं। खमणिज्जो भे किलामो, अप्पकिलंताणं बहुसुभेण भे दिवसो वइक्कंतो? जत्ता भे? जवणिज्जं च भे? खामेमि खमासमणो! देवसिअं वइक्कम्मं, पडिक्कमामि खमासमणाणं, देवसिआए, आसायणाए, तित्तीसन्नयराए, जं किंचि मिच्छाए, मणदुक्कडाए, वयदुक्कडाए,

कायदुक्कडाए, कोहाए, माणाए, मायाए, लोभाए, सव्व-कालिआए, सव्वमिच्छोवयाराए, सव्वधम्माइक्कमणाए, आसायणाए, जो मे अइआरो कओ, तस्स खमासमणो! पडिक्कमामि निंदामि गरिहामि अप्पाणं वोसिरामि ॥१॥

(अत्र खड़ा होकर बोलना—)

आयरियउवज्झाए, सीसे साहम्मिए कुलगणे अ। जे मे केइ कसाया, सव्वे तिविहेण खामेमि ॥१॥ सव्वस्स समणसंघस्स, भगवओ अंजलिं करिअ सीसे। सव्वं खमावइत्ता, खमामि सव्वस्स अहयंपि ॥२॥ सव्वस्स जीवरासिस्स, भावओ धम्मनिहिअनिअचित्तो। सव्वं खमावइत्ता, खमामि सव्वस्स अहयं पि ॥३॥

करेमि भंते सामाइयं, सावज्जं जोगं पच्चक्खामि। जावनियमं पज्जुवासामि, दुविहं तिविहेणं मणेणं वायाए काएणं न करेमि, न कारवेमि, तस्स भंते! पडिक्कमामि निंदामि गरिहामि अप्पाणं वोसिरामि ॥

इच्छामि ठामि काउस्सग्गं। जो मे देवसिओ अइआरो कओ, काइओ वाइओ माणसिओ उस्सुत्तो उम्मग्गो अकप्पो। अकरणिज्जो दुज्झाओ दुव्विचिंतिओ अणा-यारो अणिच्छिअव्वो असावग पाउग्गो नाणे दंसणे चरित्ताचरित्ते सुए सामाइए। तिण्हं गुत्तीणं, चउण्हं कसा-

याणं, पंचण्हमणुव्वयाणं तिण्हं गुणव्वयाणं, चउण्हं सिक्खा-वयाणं, वारसविहस्स सावगधम्मस्स जं खंडिअं जं विराहिअं तस्स मिच्छा मि दुक्कडं ॥

तस्स उत्तरीकरणेणं, पायच्छित्तकरणेणं, विसोहीकर-णेणं, विसल्लीकरणेणं, पावाणं कम्माणं निग्घायणट्ठाए ठामि काउस्सग्गं।

अन्नत्थ ऊससिएणं, नीससिएणं खासिएणं, छीएणं, जंभाइएणं, उड्डुएणं, वायनिसग्गेणं, भमलिए, पित्तमुच्छाए, सुहुमेहिं अंगसंचालेहिं, सुहुमेहिं खेलसंचालेहिं, सुहुमेहिं दिट्ठिसंचालेहिं, एवमाइएहिं आगारेहिं, अभग्गो अविराहिओ हुज्ज मे काउस्सग्गो। जाव अरिहंताणं भगवंताणं नमुक्कारेणं न पारेमि ताव कायं ठाणेणं मोणेणं झाणेणं अप्पाणं वोसिरामि ॥

(दो लोगस्स का या आठ नवकार का काउस्सग्ग करना पीछे प्रकट लोगस्स कहना—)

लोगस्स उज्जोअगरे, धम्मतित्थयरे जिणे। अरिहंते कित्तइस्सं, चउवीसं पि केवली ॥१॥ उसभमजिअं च वंदे, संभवमभिणंदणं च सुमइं च। पउमप्पहं सुपासं, जिणं च चंदप्पहं वंदे ॥२॥ सुविहिं च पुप्फदंतं, सीअल-सिज्जंस-वासु-पुज्जं च। विमलमणंतं च जिणं, धम्मं संतिं च वंदामि ॥३॥

हुज्ज मे काउस्सग्गो, जाव अरिहंताणं भगवंताणं, नमुक्कारेणं न पारेमि, ताव कायं ठाणेणं मोणेणं झाणेणं अप्पाणं वोसिरामि ॥

(एक लोगस्स का या चार नवकार का काउस्सग्ग करना। पीछे 'सिद्धाणं बुद्धाणं' कहना)—

सिद्धाणं बुद्धाणं, पारगयाणं परंपरगयाणं। लोअग्गमुवगयाणं, नमो सया सव्वसिद्धाणं ॥ १ ॥ जो देवाण वि देवो, जं देवा पंजली नमंसंति। तं देवदेवमहिअं, सिरसा वंदे महावीरं ॥ २ ॥ इक्को वि नमुक्कारो, जिणवरवसहस्स वद्धमाणस्स। संसारसागराओ, तारेइ नरं व नारिं वा ॥ ३ ॥ उज्जिंतसेलसिहरे, दिक्खा नाणं निसीहिआ जस्स। तं धम्मचक्कवट्टिं, अरिट्ठनेमिं नमंसामि ॥ ४ ॥ चत्तारि अट्ठदस दो, अ वंदिया जिणवरा चउव्वीसं। परमट्ठनिट्ठिअट्ठा, सिद्धा सिद्धिं मम दिसंतु ॥ ५ ॥

सुअदेवयाए करेमि काउस्सग्गं। अन्नत्थ ऊससिएणं, नीससिएणं खासिएणं, छीएणं जंभाइएणं, उड्डुएणं, वायनिस्सग्गेणं, भमलिए, पित्तमुच्छाए, सुहुमेहिं, अंगसंचालेहिं, सुहुमेहिं खेलसंचालेहिं, सुहुमेहिं दिट्ठिसंचालेहिं, एवमाइएहिं, आगारेहिं, अभग्गो अविराहिओ हुज्ज मे काउस्सग्गो, जाव अरिहंताणं भगवंताणं नमुक्कारेणं न

ारेमि, ताव कायं ठाणेणं मोणेणं झाणेणं अप्पाणं वोसिरामि ॥ ५ ॥

(एक नवकार का काउस्सग्ग करना । पीछे-"नमोऽर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधुभ्यः" कहकर 'सुअदेवया' की थुई कहना-)

सुवर्णशालिनी देयाद्, द्वादशाङ्गी जिनोद्भवा । श्रुतदेवी सदा मह्य-मशेष श्रुतसम्पदम् ॥ १ ॥

खित्तदेवयाए करेमि काउस्सग्गं, अन्नत्थ ऊससिएणं, नीससिएणं, खासिएणं, छीएणं, जंभाइएणं, उड्डुएणं, वायनिसग्गेणं, भमलिए, पित्तमुच्छाए, सुहुमेहिं अंगसंचालेहिं, सुहुमेहिं खेलसंचालेहिं, सुहुमेहिं दिट्ठिसंचालेहिं, एवमाइएहिं आगारेहिं, अभग्गो अविराहिओ, हुज्ज मे काउस्सग्गो । जाव अरिहंताणं भगवंताणं नमुक्कारेणं न पारेमि, ताव कायं ठाणेणं मोणेणं झाणेणं अप्पाणं वोसिरामि ।

(एक नवकार का काउस्सग्ग करना पीछे "नमोऽर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधुभ्यः" कहकर-'खित्तदेवया' की थुई कहना)

यासां क्षेत्रगताःसन्ति, साधवः श्रावकादयः । जिनाज्ञां साधयन्तस्ता, रक्षन्तु क्षेत्रदेवताः ॥ १ ॥

णमो अरिहंताणं । णमो सिद्धाणं । णमो आयरियाणं । णमो उवज्झायाणं । णमो लोए सव्वसाहूणं ।

संसारदावानलदाहनीरं, संमोहधूलीहरणे समीरं । माया-रसादारणसारसीरं, नमामि वीरं गिरिसारधीरं ॥ १ ॥ भावावनामसुरदानवमानवेन, चूलाविलोलकमलावलिमालितानि । संपूरिताभिनतलोकसमीहितानि, कामं नमामि जिनराजपदानि तानि ॥ २ ॥ बोधागाधं सुपदपदवीनीर-पूराभिरामं, जीवाहिंसाविरललहरीसंगमागाहदेहं । चूलावेलं गुरुगममणिसंकुलं दूरपारं, सारं वीरागमजलनिधिं सादरं साधु सेवे ॥ ३ ॥

नमोऽत्थुणं अरिहंताणं भगवंताणं आइगराणं तित्थयराणं सयंसंबुद्धाणं पुरिसुत्तमाणं पुरिससीहाणं, पुरिसवर-पुंडरीआणं, पुरिसवर-गन्धहत्थीणं लोगुत्तमाणं लोगनाहाणं, लोगहिआणं लोगपईवाणं लोगपज्जोअगराणं अभय-दयाणं चक्खुदयाणं, मग्गदयाणं सरणदयाणं बोहि-दयाणं धम्मदयाणं धम्मदेसयाणं, धम्मनायगाणं धम्म-सारहीणं, धम्मवर-चाउरंत-चक्कवट्टीणं अप्पडिहयवरनाण-दंसणधराणं, विअट्टछउमाणं जिणाणं जावयाणं, तिन्नाणं तारयाणं बुद्धाणं बोहयाणं मुत्ताणं मोअगाणं सव्वन्नूणं सव्वदरिसीणं, सिवमयलमरुअमणंत-मक्खयमव्वाबाहम-पुणरावित्ति, सिद्धिगइ-नामधेयं, ठाणं संपत्ताणं, नमो जिणाणं जिअभयाणं जेअ अईआ सिद्धा, जेअ

भविस्संति णागए काले । संपइ अ वट्टमाणा, सव्वे तिविहेण वंदामि ॥

इच्छामि खमासमणो वंदिउं जावणिज्जाए निसीहिआए मत्थएण वंदामि। इच्छाकारेण संदिसह भगवन्! स्तवन भणुं ? इच्छं 'नमोऽर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधुभ्यः'

(यहाँ बड़ा स्तवन कहे और ग्यारह गाथा से कम हो तो स्तवन के बाद वरकनक कहे)

श्री चिन्तामणि पार्श्वजिन स्तवन।

भविका श्री जिनबिंब जुहारो, आतम परम आधारो रे ॥ भ० ॥ जिन प्रतिमा जिन सारिखी जाणो, न करो शंका कांई। आगम वाणीने अनुसारे, राखो प्रीति सवाई रे ॥ भ० ॥ १ ॥ जे जिनबिंब स्वरूप न जाणे, ते कहिये किम जाणे। भूला तेह अज्ञाने भरिया, नहीं तिहां तत्त्व पिछाणे रे ॥ भ० ॥ २ ॥ अम्बड श्रावक श्रेणिक राजा, रावण प्रमुख अनेक। विविध परे जिनभक्ति करंता, पाम्या धर्म विवेक रे ॥ भ० ॥ ३ ॥ जिन प्रतिमा बहु भगते जोतां, होय निश्चय उपगार। परमारथ गुण प्रगटे पूरण, जो जो आर्द्रकुमार रे ॥भ०॥४ जिन प्रतिमा आकारे जलचर, छे बहु जलधि मझार।

ते देखी वहुला मत्स्यादिक, पाम्या विरति प्रकार रे ॥ भ० ॥ ५ ॥ पाँचवाँ अङ्गे जिन प्रतिमानो, प्रगट पणे अधिकार । सूरियाभ सुर जिनवर पूज्या, रायपसेणी मझार रे ॥ भ० ॥ ६ ॥ दशमे अङ्गे अहिंसा दाखी, जिन पूज्या जिनराज । एहवा आगम अरथ मरोडी, करिये केम अकाज रे ॥ भ० ॥ ७ ॥ समकित धारी सतीय द्रौपदी, जिन पूज्या वहु रंगे । जो जो एहनो अरथ विचारी, छट्ठे ज्ञाता अङ्गे रे ॥ भ० ॥ ८ ॥ विजय सुरे जिम जिनवर पूजा, कीधी चित्त थिर राखी । द्रव्य भाव विहुं भेदे कीनी, जीवाभिगम ते साखी रे ॥भ०॥९॥ इत्यादिक वहु आगम साखे, कोई शंका मति करजो । जिन प्रतिमा देखी नित नवली । प्रेम घणो चित्त धरजो रे ॥ भ० ॥ १० ॥ चिन्तामणि प्रभु पास पसाये, सरधा होजो सवाई । श्री जिनलाभ सुगुरु उपदेशे, श्री जिनचंद्र सवाई रे ॥ भ० ॥ इति ।

ॐ वरकणग संख विद्दुम–मरगयघणसन्निहं विगय-मोहं । सत्तरिसयं जिणाणं सव्वामर पूइअं वंदे स्वाहाः ॥१॥

इच्छामि खमासमणो ! वंदिउं जावणिज्जाए निसीहि-आए मत्थएण वंदामि । श्री आचार्यजी मिश्र ।

इच्छामि खमासमणो वंदिउं जावणिज्जाए निसीहिआए मत्थएण वंदामि। उपाध्यायजीमिश्र।

इच्छामि खमासमणो वंदिउं जावणिज्जाए निसीहिआए मत्थएण वंदामि। सर्वसाधुजीमिश्र।

इच्छामि खमासमणो वंदिउं जावणिज्जाए निसीहिआए मत्थएण वंदामि। इच्छाकारेण संदिसह भगवन् देवसिअ पायच्छित्तविसोहणत्थं काउस्सग्ग करूं? इच्छं, देवसिअ पायच्छित्तविसोहणत्थं करेमि काउस्सग्गं॥

अन्नत्थ ऊससिएणं, नीससिएणं खासिएणं, छीएणं, जंभाइएणं, उड्डुएणं, वायनिसग्गेणं, भमलिए, पित्तमुच्छाए, सुहुमेहिं अंगसंचालेहिं, सुहुमेहिं खेलसंचालेहिं, सुहुमेहिं दिट्ठिसंचालेहिं, एवमाइएहिं आगारेहिं, अभग्गो अविराहिओ हुज्ज मे काउस्सग्गो। जाव अरिहंताणं भगवंताणं नमुक्कारेणं न पारेमि ताव कायं ठाणेणं मोणेणं झाणेणं अप्पाणं वोसिरामि॥

(चार लोगस्स का या सोलह नवकार का काउसग्ग करना काउसग्ग पारके प्रगट लोगस्स कहना)

लोगस्स उज्जोअगरे, धम्मतित्थयरे जिणे। अरिहंते कित्तइस्सं, चउवीसं पि केवली ॥१॥ उसभमजिअं च वंदे, संभवमभिणंदणं च सुमइं च। पउमप्पहं सुपासं, जिणं च चंदप्पहं वंदे ॥२॥ सुविहिं च पुप्फदंतं, सीअल-सिज्जंस-वासुपुज्जं च। विमलमणंतं च जिणं, धम्मं संतिं च वंदामि ॥३॥ कुंथुं अरं च मल्लिं, वंदे मुणिसुव्वयं नमिजिणं च। वंदामि रिट्ठनेमिं, पासं तह वद्धमाणं च ॥४॥ एवं मए अभिथुआ, विहुयरयमला पहीणजरमरणा। चउवीसं पि जिणवरा, तित्थयरा मे पसीयंतु ॥५॥ कित्तिय वंदिय महिया, जे ए लोगस्स उत्तमा सिद्धा। आरुग्गबोहिलाभं, समाहिवरमुत्तमं दिंतु ॥६॥ चंदेसु निम्मलयरा, आइच्चेसु अहियं पयासयरा। सागरवरगंभीरा, सिद्धा सिद्धिं मम दिसंतु ॥ ७ ॥

इच्छामि खमासमणो वंदिउं जावणिज्जाए निसीहिआए मत्थएण वंदामि। इच्छाकारेण संदिसह भगवन् खुद्दोपद्दव उड्डावण निमित्तं करेमि काउस्सग्गं।

अन्नत्थ ऊससिएणं, नीससिएणं, खासिएणं, छीएणं, जंभाइएणं, उड्डुएणं वायनिसग्गेणं, भमलीए, पित्तमुच्छाए, सुहुमेहिं अंगसंचालेहिं, सुहुमेहिं खेलसंचालेहिं, सुहुमेहिं दिट्ठिसंचालेहिं, एवमाइएहिं आगारेहिं

अभग्गो अविराहिओ, हुज्ज मे काउस्सग्गो। जाव अरिहंताणं भगवंताणं नमुक्कारेणं न पारेमि ताव कायं ठाणेणं मोणेणं झाणेणं अप्पाणं वोसिरामि।

(चार लोगस्स या सोलह नवकार का काउस्सग्ग करना)

लोगस्स उज्जोअगरे, धम्मतित्थयरे जिणे। अरिहंते कित्तइस्सं, चउवीसं पि केवली ॥ १ ॥ उसभमजिअं च वंदे, संभवमभिणंदणं च सुमइं च। पउमप्पहं सुपासं, जिणं च चंदप्पहं वंदे ॥ २ ॥ सुविहिं च पुप्फदंतं, सीअल-सिज्जंस-वासुपुज्जं च। विमलमणंतं च जिणं, धम्मं संतिं च वंदामि ॥ ३ ॥ कुंथुं अरं च मल्लिं, वंदे मुणिसुव्वयं नमिजिणं च। वंदामि रिट्ठनेमिं, पासं तह वद्धमाणं च ॥ ४ ॥ एवं मए अभिथुआ, विहुयरयमला पहीणजरमरणा। चउवीसं पि जिणवरा, तित्थयरा मे पसीयंतु ॥ ५ ॥ कित्तिय वंदीय महिया, जे ए लोगस्स उत्तमा सिद्धा। आरुग्गबोहिलाभं, समाहिवरमुत्तमं दिंतु ॥ ६ ॥ चंदेसु निम्मलयरा, आइच्चेसु अहियं पयासयरा। सागरवरगंभीरा, सिद्धा सिद्धिं मम दिसंतु ॥ ७ ॥

इच्छामि खमासमणो वंदिउं जावणिज्जाए निसीहिआए मत्थएण वंदामि। इच्छाकारेण संदिसह भगवन्! चैत्यवंदन करुं? 'इच्छं'।

श्रीथंभणापार्श्वजिन चैत्यवंदन—

श्रीसेढी-तटिनी-तटे पुरवरे श्रीस्तम्भने स्वर्गिरौ, श्रीपूज्याभयदेवसूरिविबुधा-धीशैः समारोपितः। संसिक्तः स्तुतिभिर्जलैः शिवफलैः स्फुर्जत्फणापल्लवः, पार्श्वः कल्प-तरुः स मे प्रथयतां नित्यं मनोवाञ्छितम् ॥ १ ॥ आधि-व्याधिहरो देवो, जीरावल्ली-शिरोमणिः। पार्श्वनाथो जगन्नाथो, नतनाथो नृणां श्रिये ॥ २ ॥

जं किंचि नामतित्थं, सग्गे पायालि माणुसे लोए। जाइं जिणबिंबाइं, ताइं सव्वाइं वंदामि ॥

नमोत्थुणं अरिहंताणं भगवंताणं ॥ १ ॥ आइगराणं तित्थयराणं सयंसंबुद्धाणं ॥ २ ॥ पुरिसुत्तमाणं, पुरिससी-हाणं, पुरिसवर-पुंडरीआणं, पुरिसवर-गंधहत्थीणं ॥ ३ ॥ लोगुत्तमाणं लोगनाहाणं लोगहिआणं लोगपईवाणं, लोगप-ज्जोअगराणं ॥४॥ अभयदयाणं चक्खुदयाणं, मग्गदयाणं, सरणदयाणं, बोहिदयाणं ॥ ५ ॥ धम्मदयाणं, धम्म-देसयाणं धम्मनायगाणं, धम्मसारहीणं, धम्मवर-चाउरंत-चक्कवट्टीणं अप्पडिहयवरनाणदंसणधराणं, विअट्टछउमाणं ॥ ७ ॥ जिणाणं जावयाणं, तिन्नाणं तारयाणं, बुद्धाणं बोहयाणं, मुत्ताणं, मोअगाणं ॥८॥ सव्वन्नूणं, सव्व-

दरिसीण, सिवमयलमरुअमणंतमक्खय-मव्वाबाहमपुणरा-
वित्ति सिद्धिगइ नामधेयं ठाणं संपत्ताणं, नमो जिणाणं,
जिअभयाणं ॥ ६ ॥ जे अ अईआ सिद्धा, जे अ भवि-
स्संति णागए काले। संपइ अ वट्टमाणा, सव्वे तिविहेण
वंदामि ॥ १० ॥

जावंति चेइआइं, उड्ढे अ अहे अ तिरि अ लोए
अ। सव्वाइं ताइं वंदे, इह संतो तत्थ संताइं ॥ १ ॥

जावंत केवि साहू भरहेरवय महाविदेहे अ। सव्वेसिं
तेसिं पणओ, तिविहेण तिदंड-विरयाणं ॥ १ ॥

नमोऽर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधुभ्यः।

उवसग्गहरं पासं, पासं वंदामि कम्मघण मुक्कं।
विसहरविसनिन्नासं, मंगल-कल्लाण-आवासं ॥ १ ॥
विसहरफुलिंगमंतं, कंठे धारेइ जो सया मणुओ। तस्स
गहरोगमारी, दुट्ठजरा जंति उवसामं ॥ २ ॥ चिट्ठउ दूरे
मंतो, तुज्झ पणामो वि बहुफलो होइ। नरतिरिएसु वि
जीवा, पावंति न दुक्ख-दोगच्चं ॥ ३ ॥ तुइ सम्मत्ते लद्धे,
चिंतामणि-कप्पपायवब्भहिए। पावंति अविग्घेणं, जीवा
अयरामरं ठाणं ॥ ४ ॥ इअ संथुओ महायस!, भत्तिब्भर-
निब्भरेण हिअएण। ता देव दिज्ज बोहिं, भवे भवे
पासजिणचंद ॥ ५ ॥

जय वीयराय ! जगगुरु !, होउ ममं तुह पभावओ भयवं ! भवनिव्वेओ मग्गाणुसारिआ इट्ठफल सिद्धी ॥१॥ लोगविरुद्धच्चाओ, गुरुजण-पूआ-परत्थकरणं च। सुहगुरु जोगो तव्वयण–सेवणा आभवमखंडा ॥२॥

इच्छामि खमासमणो वंदिउं जावणिज्जाए निसीहि-आए मत्थएण वंदामि।

सिरिथंभणयट्ठिय-पाससामिणो सेसतित्थसामीण। तित्थसमुन्नइ-कारण-सुरासुराणं च सव्वेसिं ॥१॥ एसिमहं सरणत्थं काउस्सग्गं करेमि सत्तीए। भत्तीए गुणसुट्ठियस्स संघस्स समुन्नइनिमित्तं ॥ २ ॥

श्रीथंभणा पार्श्वनाथजिन आराधवा निमित्तं करेमि काउस्सग्गं।

(अब खड़े होकर बोलना चाहिये)

वंदणवत्तिआए, पूअणवत्तिआए, सक्कारवत्तिआए, सम्माणवत्तिआए, बोहिलाभवत्तिआए, निरुवसग्गवत्ति-आए, सद्धाए, मेहाए, धिईए, धारणाए, अणुप्पेहाए, वड्ढमाणीए, ठामि काउस्सग्गं।

अन्नत्थ ऊससिएणं, नीससिएणं, खासिएणं, छीएणं, जंभाइएणं, उड्डुएणं, वायनिसग्गेणं, भमलिए पित्त-मुच्छाए, सुहुमेहिं अंगसंचालेहिं, सुहुमेहिं खेलसंचालेहिं,

सुहुमेहिं दिट्ठिसंचालेहिं, एवमाइएहिं आगारेहिं अभग्गो अविराहिओ हुज्ज मे काउस्सग्गो। जाव अरिहंताणं भगवंताणं, नमुक्कारेणं न पारेमि ताव कायं ठाणेणं मोणेणं झाणेणं अप्पाणं वोसिरामि।

(चार लोगस्स या सोलह नवकार का काउस्सग्ग करना)

लोगस्स उज्जोअगरे, धम्मतित्थयरे जिणे। अरिहंते कित्तइस्सं, चउवीसं पि केवली ॥ १ ॥ उसभमजिअं च वंदे, संभवमभिणंदणं च सुमइं च। पउमप्पहं सुपासं, जिणं च चंदप्पहं वंदे ॥ २ ॥ सुविहिं च पुप्फदंतं, सीअल-सिज्जंस-वासुपुज्जं च। विमलमणंतं च जिणं, धम्मं संतिं च वंदामि ॥ ३ ॥ कुंथुं अरं च मल्लिं, वन्दे मुणिसुव्वयं नमिजिणं च। वंदामि रिट्ठनेमिं, पासं तह वद्धमाणं च ॥ ४ ॥ एवं मए अभिथुआ, विहुयरयमला पहीणजरमरणा। चउवीसं पि जिणवरा, तित्थयरा मे पसीयंतु ॥ ५ ॥ कित्तिय-वंदिय-महिया, जे ए लोगस्स उत्तमा सिद्धा। आरुग्गबोहिलाभं, समाहिवरमुत्तमं दिंतु ॥ ६ ॥ चंदेसु निम्मलयरा, आइच्चेसु अहियं पयासयरा। सागरवरगंभीरा, सिद्धा सिद्धिं मम दिसंतु ॥ ७ ॥

इच्छामि खमासमणो वंदिउं जावणिज्जाए निसीहिआए मत्थएण वंदामि। इच्छाकारेण संदिसह भगवन्!

श्री चौरासीगच्छशृङ्गारहार जंगमयुगप्रधान भट्टारक दादा श्री जिनदत्तसूरि जी चारित्रचूडामणि आराधना निमित्तं करेमि काउस्सग्गं।

अन्नत्थ ऊससिएणं, नीससिएणं, खासिएणं, छीएणं, जंभाइएणं, उड्डुएणं, वायनिसग्गेणं, भमलिए, पित्त-मुच्छाए ॥१॥ सुहुमेहिं अंगसंचालेहिं, सुहुमेहिं खेलसंचालेहिं, सुहुमेहिं दिट्ठिसंचालेहिं ॥२॥ एवमाइएहिं आगारेहिं अभग्गो अविराहिओ हुज्ज मे काउस्सग्गो ॥३॥ जाव अरिहंताणं भगवंताणं नमुक्कारेणं न पारेमि ॥४॥ ताव कायं ठाणेणं मोणेणं झाणेणं अप्पाणं वोसिरामि ॥५॥

(एक लोगस्स या चार नवकार का काउस्सग्ग करना)

लोगस्स उज्जोअगरे, धम्मतित्थयरे जिणे। अरिहंते कित्तइस्सं, चउवीसं पि केवली ॥ उसभमजिअं च वंदे, संभवमभिणंदणं च सुमइं च। पउमप्पहं सुपासं, जिणं च चंदप्पहं वंदे ॥ सुविहिं च पुप्फदंतं, सीअलसिज्जंस वासुपुज्जं च। विमलमणंतं च जिणं, धम्मं संतिं च वंदामि ॥ कुंथुं अरं च मल्लिं, वंदे मुणिसुव्वयं नमिजिणं च। वंदामि रिट्ठनेमिं, पासं तह वद्धमाणं च ॥ एवं मए अभिथुआ, विहुअरयमला पहीणजरमरणा। चउवीसं पि जिणवरा, तित्थयरा मे पसीयंतु ॥ कित्तिय—वंदिय—

महिया, जे ए लोगस्स उत्तमा सिद्धा । आरुग्ग बोहिलाभं, समाहिवर मुत्तमं दिंतु ॥ चंदेसु निम्मलयरा, आइच्चेसु अहियं पयासयरा । सागरवर-गंभीरा, सिद्धा सिद्धिं मम दिसंतु ॥

इच्छामि खमासमणो वंदिउं जावणिज्जाए, निसीहिआए मत्थएण वंदामि । इच्छाकारेण संदिसह भगवन् ! श्री चौरासीगच्छशृङ्गारहार जंगमयुगप्रधान भट्टारक दादा श्री जिनकुशलसूरिजी चारित्रचूडामणि आराधवा निमित्तं करेमि, काउस्सग्गं ।

अन्नत्थ ऊससिएणं, नीससिएणं, खासिएणं, छीएणं, जंभाइएणं, उड्डुएणं, वायनिसग्गेणं, भमलिए, पित्तमुच्छाए, सुहुमेहिं अंगसंचालेहिं, सुहुमेहिं खेलसंचालेहिं, सुहुमेहिं दिट्ठिसंचालेहिं, एवमाइएहिं आगारेहिं अभग्गो अविराहिओ हुज्ज मे काउस्सग्गो ॥ जाव अरिहंताणं भगवंताणं नमुक्कारेणं न पारेमि ताव कायं ठाणेणंमोणेणं झाणेणं अप्पाणं वोसिरामि ।

(एक लोगस्स या चार नवकार का काउस्सग्ग करना)

लोगस्स उज्जोअगरे, धम्मतित्थयरे जिणे । अरिहंते कित्तइस्सं, चउवीसं पि केवली ॥ उसभमजिअं च वंदे, संभवमभिणंदणं च सुमइं च । पउमप्पहं सुपासं, जिणं

च चंदप्पहं वंदे ॥ सुविहिं च पुप्फदंतं, सीअलसिज्जंस वासुपुज्जं च । विमलमणंतं च जिणं, धम्मं संतिं च वंदामि ॥ कुंथुं अरं च मल्लिं, वंदे मुणिसुव्वयं नमिजिणं च । वंदामि रिट्ठनेमिं, पासं तह वद्धमाणं च ॥ एवं मए अभिथुआ, विहुअरयमला पहीणजरमरणा । चउवीसं पि जिणवरा, तित्थयरा मे पसीयंतु ॥ कित्तिय-वंदिय-महिया, जे ए लोगस्स उत्तमा सिद्धा । आरुग्ग बोहिलाभं, समाहिवरमुत्तमं दिंतु ॥ चंदेसु निम्मलयरा, आइच्चेसु अहियं पयासयरा । सागरवरगंभीरा, सिद्धा सिद्धिं मम दिसंतु ॥

(अब बायीं गोडा ऊँचा करके चैत्यवंदन करे)—

इच्छामि खमासमणो वंदिउं जावणिज्जाए निसीहिआए मत्थएण वंदामि । इच्छाकारेण संदिसह भगवन् चैत्यवंदन करूं ? 'इच्छं' ।

चउक्कसायपडिमल्लुल्लूरणु, दुज्जयमयणबाणमुसुमूरणू । सरसपिअंगुवन्नुगयगामिउ, जयउ पासु भुवणत्तयसामिउ ॥ १ ॥ जसु तणुकंतिकडप्पसिणिद्धउ, सोहइ फणिमणि-किरणालिद्धउ । नं नवजलहरतडिल्लयलंछिउं, सो जिणु पासु पयच्छउ वंछिउं ॥ २ ॥

अर्हन्तो भगवंत इन्द्रमहिताः सिद्धाश्च सिद्धिस्थिता, आचार्या जिनशासनोन्नतिकराः पूज्या उपाध्यायकाः। श्रीसिद्धान्तसुपाठका मुनिवरा रत्नत्रयाराधकाः, पञ्चैते परमेष्ठिनः प्रतिदिनं कुर्वन्तु वो मंगलम् ॥ १ ॥

णमोऽत्थुणं अरिहंताणं भगवंताणं, आइगराणं तित्थयराणं सयंसंबुद्धाणं, पुरिसुत्तमाणं पुरिससीहाणं पुरिसवर पुंडरीआणं पुरिसवर-गंधहत्थीणं। लोगुत्तमाणं लोगनाहाणं लोगहिआणं लोगपईवाणं लोगपज्जोअगराणं। अभयदयाणं चक्खुदयाणं मग्गदयाणं सरणदयाणं बोहिदयाणं। धम्मदयाणं धम्मदेसयाणं धम्मनायगाणं धम्मसारहीणं धम्मवरचाउरंतचक्कवट्टीणं। अप्पडिहयवरनाणदंसण-धराणं, विअट्टछउमाणं, जिणाणं जावयाणं तिन्नाणं तारयाणं बुद्धाणं बोहयाणं मुत्ताणं मोअगाणं, सव्वन्नूणं सव्वदरिसीणं, सिवमयलमरुअमणंतमक्खयमव्वाबाहमपुणरावित्ति, सिद्धिगइनामधेयं ठाणं संपत्ताणं नमो जिणाणं जिअभयाणं, जे अ अईआ सिद्धा, जे अ भविस्संति णागए काले। संपइअवट्टमाणा सव्वे तिविहेण वंदामि।

जावंति चेइआइं, उड्ढे अ अहे अ तिरि अ लोए अ।
सव्वाइं ताइं वंदे, इह संतो तत्थ संताइं ॥ १ ॥

जावंत केवि साहू, भरहेरवयमहाविदेहे अ । सव्वेसिं तेसिं पणओ, तिविहेण तिदंड—विरयाणं ॥ १ ॥

नमोऽर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधुभ्यः ।

उवसग्गहरं पासं, पासं वंदामि कम्मघणमुक्कं । विसहर-विसनिन्नासं, मंगलकल्लाणआवासं ॥१॥ विसहरफुलिंग-मंतं, कंठे धारेइ जो सयामणुओ । तस्स गहरोगमारी, दुट्ठजरा जंति उवसामं ॥ २ ॥ चिट्ठउ दूरे मंतो, तुज्झ पणामो वि बहुफलो होइ । नरतिरिएसुवि जीवा, पावंति न दुक्खदोगच्चं ॥ ३ ॥ तुह सम्मत्ते लद्धे, चिंतामणि-कप्पपायवब्भहिए । पावंति अविग्घेणं, जीवा अयरामरं ठाणं ॥ ४ ॥ इअ संथुओ महायस ! भत्तिब्भरनिब्भरेण हिअएण । ता देव दिज्ज बोहिं, भवे भवे पासजिणचंद ॥५॥

जय वीयराय ! जगगुरु ! होउ ममं तुह पभावओ भयवं ! भवनिव्वेओ मग्गाणुसारिआ इट्ठफलसिद्धी ॥१॥ लोगविरुद्धच्चाओ, गुरुजणपूआ परत्थकरणं च । सुहगुरु-जोगो तव्वयणसेवणा आभवमखंडा ॥ २ ॥

अथ लघुशान्ति ।

शान्तिं शान्तिनिशान्तं, शान्तं शान्ताशिवं नमस्कृत्य । स्तोतुः शान्तिनिमित्तं, मंत्रपदैः शान्तये स्तौमि ॥ १ ॥

श्रोमिति निश्चितवचसे, नमो नमो भगवतेऽर्हते पूजाम्। शान्तिजिनाय जयवते, यशस्विने स्वामिने दमिनाम् ॥ २ ॥ सकलातिशेषकमहा–सम्पत्तिसमन्विताय शस्याय। त्रैलोक्य-पूजिताय च, नमो नमः शान्तिदेवाय ॥ ३ ॥ सर्वामरसुस-मूह-स्वामिकसम्पूजिताय निजिताय। भुवनजनपालनोद्यत-तमाय सततं नमस्तस्मै ॥ ४ ॥ सर्वदुरितौघनाशन–कराय सर्वाऽशिवप्रशमनाय। दुष्टग्रहभूत-पिशाच-शाकिनीनां प्रमथ-नाय ॥ ५ ॥ यस्येति नाममंत्र–प्रधानवाक्योपयोगकृततोषा। विजया कुरुते जनहित-मिति च नुता नमत तं शान्तिम् भवतु नमस्ते भगवति !, विजये ! सुजये ! परापरैरजिते ! । अपराजिते ! जगत्यां, जयतीति जयावहे भवति ॥ ७ ॥ सर्वस्यापि च संघस्य, भद्रकल्याणमङ्गलप्रदटे। साधूनां च सदा शिव-सुतुष्टिपुष्टिप्रदे जीयाः ॥ ८ ॥ भव्यानां कृतसिद्धे, निर्वृत्तिनिर्वाणजननि ! सत्वानाम्। अभय-प्रदाननिरते !, नमोऽस्तु स्वस्तिप्रदे तुभ्यम् ॥ ९ ॥ भक्तानां जन्तूनां, शुभा-वहे नित्यमुद्यते ! देवि !। सम्यग्दृष्टीनां धृति–रतिर्मति-बुद्धिप्रदानाय ॥ १० ॥ जिनशासननिरतानां, शान्तिनतानां च जगति जनतानाम्। श्रीसम्पत्कीर्तियशो-वर्द्धनि ! जय देवि ! विजयस्व ॥ ११ ॥ सलिलानलविषविषधर-दुष्टग्रह-राजरोगरणभयतः । राक्षसरिपुगणमारी-चौरेतिश्वापदा-दिभ्यः ॥ १२ ॥ अथ रक्ष रक्ष सुशिवं, कुरु कुरु शान्तिं

च कुरु कुरु सदेति। तुष्टिं कुरु कुरु पुष्टिं, कुरु कुरु स्वस्ति च कुरु कुरु त्वम् ॥ १३ ॥ भगवति! गुणवति! शिव-शान्ति, तुष्टिपुष्टिस्वस्तीह कुरु कुरु जनानाम्। ओमिति नमो नमो ह्राँ, ह्रीँ ह्रूँ ह्रः यः क्षः ह्रीँ फुट् फुट् स्वाहा एवं यन्नामाक्षर-पुरस्सरं संस्तुता जयादेवी। कुरुते शान्ति नमतां, नमो नमः शान्तये तस्मै ॥ १५ ॥ इति पूर्वसूरि-दर्शित-मंत्रपद विदर्भितः स्तवः शान्तेः। सलिलादिभयवि-नाशी, शान्त्यादिकरश्च भक्तिमताम् ॥ १६ ॥ यश्चैनं पठति सदा, शृणोति भावयति वा यथायोग्यम्। स हि शान्तिपदं यायात्, सूरिः श्रीमानदेवश्च ॥ १७ ॥ उपसर्गाः क्षयं यान्ति, छिद्यन्ते विघ्नवल्लयः। मनः प्रसन्नतामेति, पूज्यमाने जिनेश्वरे ॥ १८ ॥ सर्वमङ्गलमाङ्गल्यं, सर्वकल्या-णकारणम्। प्रधानं सर्वधर्माणां जैनं जयति शासनम् ॥ १९ ॥ इति ॥

(प्रतिक्रमण में दीपक बीजली आदि अग्नि का प्रकाश अपने शरीर पर आगया हो, या वरसाद आदि के पानी की बूँद लग गई हो, इत्यादि कोई दोष लगा हो तो इरियावहियं तस्स उत्तरी अन्नत्थ कह कर एक लोगस्स का काउस्सग्ग करके, पीछे प्रकट लोगस्स कह कर सामायिक पारें)

अथ सामायिक पारने की विधि ।

इच्छामि खमासमणो वंदिउं जावणिज्जाए निसीहिआए मत्थएण वंदामि । इच्छाकारेण संदिसह भगवन् ! सामायिक पारवा मुहपत्ति पडिलेहुं ? 'इच्छं' ।

(सामायिक पारने के लिये मुहपत्ति की पडिलेहन करे । पीछे)

इच्छामि खमासमणो वंदिउं जावणिज्जाए निसीहिआए मत्थएण वंदामि । इच्छाकारेण संदिसह भगवन् ! सामायिक पारुं ? 'यथाशक्ति' ।

इच्छामि खमासमणो वंदिउं जावणिज्जाए निसीहिआए मत्थएण वंदामि । इच्छाकारेण संदिसह भगवन् ! सामायिक पारेमि 'तहत्ति' ।

(कह कर आधा अंग नमा कर 'तीन नवकार' गिने । पीछे शिर नमा कर दाहिना हाथ नीचे स्थापन करके 'भयवंदसन्नभद्दो' बोले)

भयवं दसण्णभद्दो, सुदंसणो थुलभद्द वइरो य । सफलीकयगिहचाया, साहू एवंविहा हुंति ॥१॥ साहूण वंदणेणं, नासइ पावंअसंकिया भावा । फासुअदाणे निज्जर अभिग्गहो नाणमाईणं ॥२॥ छउमत्थो मूढमणो, कित्तियमित्तं पि संभरइ जीवो । जं च न संभरामि अहं, मिच्छा मि दुक्कडं तस्स ॥३॥ जं जं मणेण चिंतिय-मसुहं वायाइ

भासियं किंचि । असुहं काएण कयं, मिच्छा मि दुक्कडं तस्स ॥४॥ सामाइय-पोसहसं-ठियस्स जीवस्स जाइ जो कालो । सो सफलो बोद्धव्वो, सेसो संसारफलहेऊ ॥५॥

सामायिक विधि से लिया, विधि से किया, विधि से करते हुए अविधि आशातना लगी हो, दश मन का, दश वचन का, बारह काया का, इन बत्तीस दूषणों में जो कोई दुषण लगा हो उन सबका मन वचन काया करके मिच्छा मि दुक्कडं ।

इति देवसिय प्रतिक्रमण विधि समाप्त ।

दासानुदासा इव सर्वदेवा, यदीय पादाब्जतले लुठन्ति ।
मरुस्थलीकल्पतरुः स जीयाद्, युगप्रधानो जिनदत्तसूरिः ॥१॥

श्री गुरुदेव जी का स्तवन ।

❋ राग प्रभाती ❋

श्रीजिनदत्त सूरिंदा, परम गुरु श्रीजिनदत्त सूरिंदा । परम दयाल दया कर दीजे दरिसन परम आनंदा ॥ प० श्री० ॥१॥ जंगम सुरतरु वंछित दायक, सेवक जन सुखकंदा । सद्गुरु ध्यान नाम नित समरण, दूर हरण दुःख दंदा ॥ प० श्री० ॥२॥ निज पद सेवक सांनिध्य-कारी, राखीयें गुरु राजिंदा । कर जोडी विनय युत विनवें, श्रीजिनहर्ष सूरिंदा ॥ प० श्री० ॥३॥ इति ॥

अथ पाक्षिक चातुर्मासिक और सांवत्सरिक प्रतिक्रमण विधि।

(दिन के अन्तिम प्रहर में पौषधशाला आदि किसी एकान्त स्थान में जाकर, उस स्थान का तथा वस्त्र का पडिलेहन करें। पीछे मुनिराज न हों तो उच्च स्थान पर पुस्तक या नवकार वाली आदि रख कर 'तीन नवकार' पढ़ कर स्थापना जी स्थापन करे। पीछे स्थापनाचार्य के सामने उकडु आसन (दोनों पैर पर) बैठ कर, भूमि प्रमार्जन कर के बायीं ओर आसन चरवला रख कर, मुहपत्ति बांये हाथ में लेकर प्रथम सामायिक ले)—

इच्छामि खमासमणो वंदिउं जावणिज्जाए निसीहिआए मत्थएण वंदामि। इच्छाकारेण संदिसह भगवन्! सामायिक लेने को मुहपत्ति पडिलेहुं? 'इच्छं'।

(मुहपत्ति पडिलेहना, पीछे)—

इच्छामि खमासमणो वंदिउं जावणिज्जाए निसीहिआए मत्थएण वंदामि। इच्छाकारेण संदिसह भगवन्! सामायिक संदिसाहुं? 'इच्छं'।

इच्छामि खमासमणो वंदिउं जावणिज्जाए निसीहिआए मत्थएण वंदामि। इच्छाकारेण संदिसह भगवन्! सामायिक ठाउं? 'इच्छं'।

(तीन नवकार गिन कर पाछे)—

"इच्छाकारेण संदिसह भगवन् पसायकरी सामायिक दंडक उच्चरावो जी" (ऐसा बोलकर तीन वार 'करोमिभंते' उच्चरे।)

करेमि भंते ! सामाइअं, सावज्जं जोगं पच्चक्खामि। जावनियमं पज्जुवासामि, दुविहं तिविहेणं मणेणं वायाए काएणं न करेमि न कारवेमि तस्स भंते ! पडिक्कमामि निंदामि गरिहामि अप्पाणं वोसिरामि।

इच्छामि खमासमणो ! वंदिउं जावणिज्जाए निसीहिआए मत्थएण वंदामि।

इच्छाकारेण संदिसह भगवन् ! इरियावहियं पडिक्कमामि ? इच्छं। इच्छामि पडिक्कमिउं, इरियावहियाए, विराहणाए गमणागमणे पाणक्कमणे बीयक्कमणे हरियक्कमणे ओसा उत्तिंग पणग दग-मट्टी-मक्कडासंताणा-संकमणे, जे मे जीवा विराहिया, एगिंदिया, बेइंदिया, तेइंदिया, चउरिंदिया, पंचिंदिया, अभिहया, वत्तिया, लेसिया, संघाइया, संघट्टिया, परियाविया, किलामिया, उद्दविया, ठाणाओ ठाणं संकामिया, जीवियाओ ववरोविया तस्स मिच्छा मि दुक्कडं।

तस्स उत्तरीकरणेणं, पायच्छित्तकरणेणं, विसोहीकरणेणं, विसल्लीकरणेणं पावाणं, कम्माणं निग्घायणट्ठाए, ठामि काउस्सग्गं।

अन्नत्थ ऊससिएणं, नीससिएणं, खासिएणं, छीएणं, जंभाइएणं, उड्डुएणं, वायनिसग्गेणं, भमलिए, पित्तमुच्छाए, सुहुमेहिं अंगसंचालेहिं, सुहुमेहिं खेलसंचालेहिं, सुहुमेहिं दिट्ठिसंचालेहिं, एवमाइएहिं आगारेहिं अभग्गो अविराहिओ हुज्ज मे काउस्सग्गो। जाव अरिहंताणं भगवंताणं नमुक्कारेणं न पारेमि ताव कायं ठाणेणं मोणेणं झाणेणं अप्पाणं वोसिरामि।

(यहां एक लोगस्स का या चार नवकार का काउस्सग्ग करना पीछे प्रगट लोगस्स कहना वह नीचे लिखे अनुसार)

लोगस्स उज्जोअगरे, धम्मतित्थयरे जिणे। अरिहंते कित्तइस्सं, चउवीसं पि केवली॥ १॥ उसभमजिअं च वंदे, संभवमभिणंदणं च सुमइं च। पउमप्पहं सुपासं, जिणं च चंदप्पहं वंदे॥ २॥ सुविहिं च पुप्फदंतं, सीअल-सिज्जंस-वासुपूज्जं च। विमलमणंतं च जिणं, धम्मं संतिं च वंदामि॥ ३॥ कुंथुं अरं च मल्लिं, वन्दे मुणिसुव्वयं नमि-जिणं च। वंदामि रिट्ठनेमिं, पासं तह वद्धमाणं च॥ ४॥ एवं मए अभिथुआ, विहुयरयमला पहीणजरमरणा। चउ-वीसं पि जिणवरा, तित्थयरा मे पसीयंतु॥ ५॥ कित्तिय-वंदिय-महिया, जे ए लोगस्स उत्तमा सिद्धा। आरुग्गबोहि-

लाभं, समाहिवरमुत्तमं दिंतु ॥ ६ ॥ चंदेसु निम्मलयरा, आइच्चेसु अहियं पयासयरा ! सागरवरगंभीरा, सिद्धा सिद्धिं मम दिसंतु ॥ ७ ॥

इच्छामि खमासमणो वंदिउं जावणिज्जाए निसीहिआए मत्थएण वंदामि । इच्छाकारेण संदिसह भगवन् ! पच्चक्खाण लेने को मुहपत्ति पडिलेहुं ? 'इच्छं' ।

(अब नीचे बैठ कर मुहपत्ति पडिलेहे और दो वार वांदणा दें। परन्तु चउवीहाहार उपवास हो तो मुहपत्ति नहीं पडिलेहे और वांदणा भी नहीं दे । तीवीहाहार उपवास हो तो मुहपत्ति पडिलेहे परन्तु वांदणा नहीं दें ।)

इच्छामि खमासमणो ! वंदिउं जावणिज्जाए निसीहिआए अणुजाणह मे मिउग्गहं । निसीहि, अहोकायं कायसंफासं, खमणिज्जो भे किलामो अप्पकिलंताणं बहुसुभेण भे दिवसोवइक्कंतो ? जत्ता भे ? जवणिज्जं च भे ? खामेमि खमासमणो ! देवसिअं वइक्कम्मं आवस्सिआए पडिक्कमामि खमासमणाणं, देवसिआए आसायणाए तित्तीसन्नयराए, जं किंचि मिच्छाए मणदुक्कडाए वयदुक्कडाए कायदुक्कडाए कोहाए माणाए मायाए लोभाए सव्वकालिआए सव्वमिच्छोवयाराए सव्वधम्माइक्कमणाए आसायणाए जो मे अइआरो कओ तस्स खमासमणो पडिक्कमामि निंदामि गरिहामि अप्पाणं वोसिरामि ।

इच्छामि खमासमणो ! वंदिउं जावणिज्जाए निसीहि-आए । अणुजाणह मे मिउग्गहं । निसीहि, अहोकायं कायसं-फासं । खमणिज्जो भे किलामो, अप्पकिलंताणं बहुसुभेण भे दिवसो वइक्कंतो ? जत्ता भे ? जवणिज्जं च भे ? खामेमि खमासमणो ! देवसिअं वइक्कम्मं, पडिक्कमामि खमासमणाणं, देवसिआए, आसायणाए तित्तीसन्नयराए, जं किंचि मिच्छाए, मणदुक्कडाए, वयदुक्कडाए, कायदुक्कडाए, कोहाए, माणाए, मायाए, लोभाए, सव्वकालिआए, सव्वमिच्छोवयाराए, सव्वधम्माइक्कमणाए, आसायणाए, जो मे अइआरो कओ, तस्स खमासमणो ! पडिक्कमामि निंदामि गरिहामि अप्पाणं वोसिरामि ॥१॥

(अब यथाशक्ति पच्चक्खाण करना। तिविहाहार उपवास, आयंबिल, एकासणा आदि व्रत किया हो तो पाणहार का पच्चक्खाण करना)

पाणहार दिवसचरिमं पच्चक्खाइ, अन्नत्थणाभोगेणं, सहसागारेणं, महत्तरागारेणं, सव्वसमाहिवत्तियागारेणं, वोसिरइ ।

(पाणी बिलकुल न पीना होवे तो चउव्विहाहार करना)

दिवसचरिमं पच्चक्खाइ, चउव्विहं पि आहारं—असणं, पाणं, खाइमं, साइमं, अन्नत्थणाभोगेणं, सहसागारेणं, महत्तरागारेणं सव्वसमाहिवत्तिआगारेणं वोसिरइ ।

(फक्त पानी पीना होवे तो दुविहाहार करना)

दिवसचरिमं पच्चक्खाइ, दुविहं पि आहारं— असणं, खाइमं, अन्नत्थणाभोगेणं, सहसागारेणं, महत्तरागारेणं, सव्वसमाहिवत्तिआगारेणं वोसिरइ ।

इच्छामि खमासमणो वंदिउं जावणिज्जाए निसीहिआए मत्थएण वंदामि । इच्छाकारेण संदिसह भगवन् ! सज्झाय संदिसाहुं ? 'इच्छं' ।

इच्छामि खमासमणो वंदिउं जावणिज्जाए निसीहिआए मत्थएण वंदामि । इच्छाकारेण संदिसह भगवन् ! सज्झाय करूं ? 'इच्छं' ।

इच्छामि खमासमणो वंदिउं जावणिज्जाए निसीहिआए मत्थएण वंदामि ।

(कह कर आठ नवकार गिनना)

इच्छामि खमासमणो वंदिउं जावणिज्जाए निसीहिआए मत्थएण वंदामि । इच्छाकारेण संदिसह भगवन् ! बेसणो संदिसाहुं ? 'इच्छं' ।

इच्छामि खमासमणो वंदिउं जावणिज्जाए निसीहिआए मत्थएण वंदामि । इच्छाकारेण संदिसह भगवन् ! बेसणो ठाउं ? 'इच्छं' ।

(अब आसन बिछा कर बैठ जाय और वस्त्र की आवश्यकता हो तो नीचे का पाठ बोल कर वस्त्र ग्रहण करें)—

इच्छामि खमासमणो वंदिउं जावणिज्जाए निसीहिआए मत्थएण वंदामि। इच्छाकारेण संदिसह भगवन्! पंगुरण संदिसाहुं? 'इच्छं'।

इच्छामि खमासमणो वंदिउं जावणिज्जाए निसीहिआए मत्थएण वंदामि। इच्छाकारेण संदिसह भगवन्। पंगुरण पडिग्गाहुं? 'इच्छं'।

(अब प्रतिक्रमण करें। प्रथम तीन खमासमण देकर चैत्यवंदन करें)

इच्छामि खमासमणो वंदिउं जावणिज्जाए निसीहिआए मत्थएण वंदामि। इच्छाकारेण संदिसह भगवन् चैत्यवंदन करूं! 'इच्छं'।

जयतिहुअणस्तोत्र।

जय तिहुअणवरकप्परुक्ख जय जिण धन्नंतरि,
जय तिहुअणकल्लाणकोस दुरिअक्करिकेसरि।
तिहुअणजणअविलंघिआण भुवणत्तयसामिअ,
कुणसु सुहाइं जिणेस पास थंभणयपुरट्ठिअ॥ १॥

तइ समरंत लहंति झत्ति वरपुत्तकलत्तइ,
धण्ण-सुवण्ण-हिरण्ण-पुण्ण जण भुंजइ रज्जइ ।
पिक्खइ मुक्ख असंखसुक्ख तुह पास पसाइण,
इअ तिहुअणवरकप्परुक्ख सुक्खइ कुण मह जिण ॥ २ ॥

जरजज्जर परिजुण्णकण्ण नट्ठुट्ठ सुकुट्ठिण,
चक्खुक्खीण खएण खुण्ण नर सल्लिय सूलिण ।
तुह जिण सरणरसायणेण लहु हुंति पुणण्णव,
जय-धन्नंतरि पास मह वि तुह रोगहरो भव ॥ ३ ॥

विज्जाजोइसमंततंतसिद्धीउ अपयत्तिण,
भुवणऽब्भुअ अट्ठविह सिद्धि सिज्झहि तुह नामिण ।
तुह नामिण अपवित्तओ वि जण होइ पवित्तउ,
तं तिहुअण कल्लाणकोस तुह पास निरुत्तउ ॥ ४ ॥

खुद्द पउत्तइ मंततंतजंताइ विसुत्तइ,
चरथिरगरलगहुग्गखग्गरिउवग्ग विगंजइ ।
दुत्थिअसत्थ अणत्थवत्थ नित्थारइ दय करि,
दुरियइ हरउ स पासदेउ दुरियक्करिकेसरि ॥ ५ ॥

तुह आणा थंभेइ भीमदप्पुद्धुरसुरवर,
रक्खसजक्खफणिंदविंदचोरानलजलहर ।
जलथरचारि रउदखुदपसुजोइणि जोइय,
इअ तिहुअणअविलंघिआण जय पास सुसामिय ॥ ६ ॥

पत्थिअ अत्थ अणत्थ तत्थ भत्तिब्भरनिब्भर,
रोमं-चंचिय-चारुकाय किन्नरनरसुरवर ।
जसु सेवहिं कमकमलजुयल पक्खालियकलिमलु,
सो भुवणत्तयसामि पास मह मद्दउ रिउबलु ॥७॥

जय जोइयमणकमलभसल भयपंजर कुंजर,
तिहुअणजणआणंदचंद भुवणत्तयदिणयर ।
जय मइमेइणिवारिवाह जयजंतुपियामह,
थंभणयट्ठिय पासनाह नाहत्तण कुण मह ॥८॥

बहुविहुवन्नु अवन्नु सुन्नु वन्निउ छप्पन्निहिं,
मुक्खधम्मकामत्थकाम नर नियनियसत्थिहिं ।
जं ज्झायहि बहुदरिसणत्थ बहुनामपसिद्धउ,
सो जोइयमणकमलभसल सुहु पास पवद्धउ॥९॥

भयविब्भल रणझणिरदसण थरहरिय सरीरय,
तरलियनयण विसुन्न सुन्न गग्गरगिर करुणय।
तइ सहसत्ति सरंत हुंति नर नासियगुरुदर,
मह विज्झवि सज्झसइ पास भयपंजर कुंजर॥१०॥

पइं पासि वियसंतनित्तपत्तंतपवित्तिय—
बाहपवाहपवूढरूढदुहदाह सुपुलइय ।
मन्नइ मन्नु सउन्नु पुन्नु अप्पाणं सुरनर,
इय तिहुअण आणंदचंद जय पास जिणेसर॥११॥

तुह कल्लाण-महेसु घंटटंकारऽवपिल्लिय,
वल्लिरमल्ल महल्लभत्ति सुरवर गंजुल्लिय।
हल्लुप्फलिय पवत्तयंति भुवणे वि महूसव,
इय तिहुअणआणंदचंद जय पास सुहुब्भव ॥१२॥

निम्मलकेवल किरणनियरविहुरियतमपहयर,
दंसियसयलपयत्थसत्थ वित्थरियपहाभर।
कलिकलुसियजणघूयलोयलोयणह अगोयर,
तिमिरइ निरु हर पासनाह भुवणत्तय दिणयर ॥१३॥

तुह समरणजलवरिससित्त माणवमइमेइणि,
अवरावरसुहुमत्थबोहकंदलदलरेहिणि।
जाइय फलभरभरिय हरियदुहदाह अणोवम,
इय मइमेइणि वारिवाह दिस पास मईं मम ॥१४॥

कय अविकलकल्लाणवल्लि उल्लूरिय दुहवणु,
दाविय सग्गपवग्गमग्ग दुग्गइगमवारणु।
जयजंतुह जणएण तुल्ल जं जणिय हियावहु,
रम्मु धम्मु सो जयउ पासु जयजंतु पियामहु ॥१५॥

भुवणारण्णनिवास-दरिय-परदरिसणदेवय,
जोइणिपूयणखित्तवालखुद्दासुरपसुवय।
तुह उत्तट्ठ सुनट्ठ सुट्ठु अविसंठुल चिट्ठहि,
इय तिहुअणवणसीह पास पावाइं पणासहि ॥१६॥

फणिफणफारफुरंतरयणकररंजियनहयल–
फलिणीकंदलतमालनीलुप्पलसामल।
कमठासुरउवसग्गवग्गसंसग्गअगंजिय,
जय पच्चक्खजिणेस पास थंभणयपुरट्ठिय ॥१७॥
मह मणु तरलु पमाणु नेय वायावि विसंठुलु,
नेय तणुरवि अविणयसहावु आलसविहलंथुलु।
तुह माहप्पु पमाणु देव कारुण्णपवित्तउ,
इय मइ मा अवहीरि पास पालिहि विलवंतउ ॥१८॥
किं कि कप्पिउ न य कलुणु किं किं व न जंपिउ,
किं व न चिट्ठिउ किट्ठु देव दीणयमवलंबिउ।
कासु न किय निप्फल्ल लल्लि अम्हेहि दुहत्तिहि,
तहवि न पत्तउ ताणु किं वि पइ पहु परिचत्तिहि ॥१९॥
तुहु सामिउ तुहु मायबप्पु तुहु मित्त पियंकरु,
तुहु गइ तुहु मइ तुहुजि ताणु तुहु गुरु खेमंकरु।
हउं दुहभरभारिउ वराउ राउ निब्भग्गह,
लीणउ तुह कमकमलसरणु जिण पालहि चंगह ॥२०॥
पइ कि वि कय नीरोय लोय कि वि पाविय सुहसय,
कि वि मइमंत महंत के वि कि वि साहियसिवपय।
कि वि गंजियरिउवग्ग के वि जसधवलियभूयल,
मइ अवहीरहि केण पास सरणागयवच्छल ॥२१॥

पच्चुवयारनिरीह नाह निप्पन्नपओयण,
तुह जिणपास परोवयारकरणिक्कपरायण ।
सत्तुमित्तसमचित्तवित्ति नयनिंदयसममण,
मा अवहीरि अजुग्गओ वि मइ पास निरंजण ॥२२॥

हउँ बहुविहदुहतत्तगत्तु तुहु दुहनासणपरु,
हउँ सुयणह करुणिक्कठाणु तुहु निरु करुणायरु ।
हउँ जिण पास असामिसालु तुहु तिहुअणसामिअ,
जं अवहीरहि मइ झखंत इय पास न सोहिय ॥२३॥

जुग्गाऽजुग्गविभाग नाह न हु जोयहि तुह सम,
भुवणुवयारसहाव भावकरुणारससत्तम ।
समविसमइं किं घणु नियइ भुवि दाह समंतउ,
इय दुहिबंधव पासनाह मइ पाल थुणंतउ ॥२४॥

न य दीणह दीणयं मुयवि अन्नु वि कि वि जुग्गय,
जं जोइ वि उवयारु करहि उवयारसमुज्जय ।
दीणह दीणु निहीणु जेण तइ नाहिण चत्तउ,
तो जुग्गउ अहमेव पास पालहि मइ चंगउ ॥२५॥

अह अन्नु वि जुग्गय विसेसु कि वि मन्नहि दीणह,
जं पासि वि उवयारु करइ तुहु नाह समग्गह ।
सुच्चिय किल कल्लाणु जेण जिण तुम्ह पसीयह,
किं अन्निण तं चेव देव मा मइ अवहीरह ॥२६॥

तुह पत्थण न हु होइ विहलु जिण जाणउ किं पुण,
हउँ दुक्खिय निरु सत्तचत्त दुक्कहु उस्सुयमण ।
तं मन्नउ निमिसेण एउ एउ वि जइ लब्भइ,
सच्चं जं भुक्खियवसेण किं उंबरु पचइ ॥२७॥

तिहुअणसामिय पासनाह मइ अप्पु पयासिउ,
किज्जउ जं नियरूव सरिसु न मुणउ बहु जंपिउ ।
अन्नु न जिण जगि तुह समो वि दक्खिन्नु दयासउ,
जइ अवगन्नसि तुह जि अहह कह होसु हयासउ ॥२८॥

जइ तुह रूविण किण वि पेयपाइण वेलवियउ,
तु वि जाणउ जिणपास तुम्हि हउँ अंगीकरिअउ ।
इय मह इच्छिउ जं न होइ सा तुह ओहावणु,
रक्खंतह नियकित्ति णेय जुज्जइ अवहीरणु ॥२९॥

एह महारिय जत्त देव इहु ण्हवणमहूसउ,
जं अणलियगुणगहण तुम्ह मुणिजणअणिसिद्धउ ।
एम पसीहसु पासनाह थंभणयपुरट्ठिय,
इय मुणिवरु सिरिअभयदेउ विन्नवइ अणिंदिय ॥३०॥

जय महायस जय महायस जय महाभाग जय चिंतिय सुहफलय, जय समत्थ-परमत्थ जाणय जय जय गुरुगरिम गुरु । जय दुहत्त-सत्ताण ताणय थंभणयट्ठिय पासजिण,

भवियह भीमभवुत्थु भय अवणिंताणंतगुण, तुज्झ तिसंझ नमोऽत्थु ॥ १ ॥

नमोत्थुणं अरिहंताणं भगवंताणं ॥ १ ॥ आइगराणं तित्थयराणं सयंसंबुद्धाणं ॥ २ ॥ पुरिसुत्तमाणं, पुरिससीहाणं, पुरिसवर-पुंडरीआणं, पुरिसवर-गंधहत्थीणं ॥ ३ ॥ लोगुत्तमाणं लोगनाहाणं लोगहिआणं लोगपईवाणं, लोगपज्जोअगराणं ॥ ४ ॥ अभयदयाणं चक्खुदयाणं, मग्गदयाणं, सरणदयाणं, बोहिदयाणं ॥ ५ ॥ धम्मदयाणं, धम्मदेसयाणं धम्मनायगाणं, धम्मसारहीणं, धम्मवर-चाउरंत-चक्कवट्टीणं अप्पडिहयवरनाणदंसणधराणं, विअट्टछउमाणं ॥ ७ ॥ जिणाणं जावयाणं, तिन्नाणं तारयाणं, बुद्धाणं बोहयाणं, मुत्ताणं मोअगाणं ॥ ८ ॥ सव्वन्नूणं सव्वदरिसीणं, सिवमयलमरुअमणंतमक्खय—मव्वाबाहमपुणरावित्ति सिद्धिगइ नामधेयं ठाणं संपत्ताणं, नमो जिणाणं, जिअभयाणं ॥ ९ ॥ जे अ अईआ सिद्धा, जे अ भविस्संति णागए काले । संपइ अ वट्टमाणा, सव्वे तिविहेण वंदामि ॥ १० ॥

(अब चरवला लेकर खड़े हो कर बोलना चाहिये ।)

अरिहंतचेइआणं, करेमि काउस्सग्गं, वंदणवत्तिआए, पूअणवत्तिआए, सक्कारवत्तिआए, सम्माणवत्तिआए,

बोहिलाभवत्तिआए, निरुवसग्गवत्तिआए, सद्धाए, मेहाए धिईए, धारणाए, अणुप्पेहाए, वड्ढमाणीए, ठामि काउस्सग्गं।

अन्नत्थ ऊससिएणं, नीससिएणं, खासिएणं, छीएणं, जंभाइएणं, उड्डुएणं वायनिसग्गेणं, भमलिए पित्तमुच्छाए, सुहुमेहिं अंगसंचालेहिं, सुहुमेहिं खेलसंचालेहिं, सुहुमेहिं दिट्ठिसंचालेहिं, एवमाइएहिं आगारेहिं अभग्गो अविराहिओ हुज्ज मे काउस्सग्गो। जाव अरिहंताणं भगवंताणं, नमुक्कारेणं न पारेमि ताव कायं ठाणेणं मोणेणं झाणेणं अपाणं वोसिरामि।

(एक नवकार का काउस्सग्ग करके "नमोऽर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधुभ्यः" कह कर पहली थुइ कहना।)

द्रेंद्रेंकि धपमप, धुधुमि धों धों, ध्रसकिधर धपधोरवं। दोंदोंकि दों दों, दाग्डिदि दाग्डिदिकि, द्रमकि द्रण रण द्रेणवं॥ झिझिंझिंकि झिं झिं, झणण रण रण, निजकि निजजन रञ्जनं। सुरशैल शिखरे, भवतु सुखदं, पार्श्वजिनपतिमज्जनं॥ १॥

लोगस्स उज्जोअगरे, धम्मतित्थयरे जिणे। अरिहंते कित्तइस्सं, चउवीसं पि केवली॥ उसभमजिअं च वंदे, संभवमभिणंदणं च सुमइं च। पउमप्पहं सुपासं, जिणं च चंदप्पहं वंदे॥ सुविहिं च पुप्फदंतं, सीअलसिज्जंस वासुपुज्जं च। विमलमणंतं च जिणं, धम्मं संतिं च वंदामि॥

कुंथुं अरं च मल्लिं, वंदे मुणिमुव्वयं नमिजिणं च। वंदामि रिट्ठनेमिं, पासं तह वद्धमाणं च॥ एवं मए अभिथुआ, विहुअरयमला पहीणजरमरणा। चउवीसं पि जिणवरा, तित्थयरा मे पसीयंतु॥ कित्तिय-वंदिय-महिया, जे ए लोगस्स उत्तमा सिद्धा। आरुग्ग बोहिलाभं, समाहिवर मुत्तमं दिंतु॥ चंदेसु निम्मलयरा, आइच्चेसु अहियं पयासयरा। सागरवर-गम्भीरा, सिद्धा सिद्धिं मम दिसंतु॥

सव्वलोए अरिहंतचेइयाणं करेमि काउस्सग्गं। वंदण-वत्तिआए, पूअणवत्तिआए, सक्कारवत्तिआए, सम्माणव-त्तिआए, बोहिलाभवत्तिआए, निरुवसग्गवत्तिआए, सद्धाए, मेहाए, धिईए, धारणाए, अणुप्पेहाए, वड्ढमाणीए ठामि काउस्सग्गं॥

अन्नत्थ ऊससिएणं, नीससिएणं, खासिएणं, छीएणं, जंभाइएणं, उड्डुएणं, वायनिसग्गेणं, भमलिए पित्त-मुच्छाए, सुहुमेहिं अंगसंचालेहिं, सुहुमेहिं खेलसंचालेहिं, सुहुमेहिं दिट्ठिसंचालेहिं, एवमाइएहिं आगारेहिं अभग्गो अविराहिओ हुज्ज मे काउस्सग्गो। जाव अरिहंताणं भगवंताणं, नमुक्कारेणं न पारेमि ताव कायं ठाणेणं, मोणेणं, झाणेणं अप्पाणं वोसिरामि।

कटरेंगिनि थोंगिनि, किटति गिग्डदां, धुधुकि धुटनट पाटवं। गुणगुणण गुणगण, रणकि णें णें, गुणणगुणगण गौरवं॥ झझि झेंकि झें झें, झणणरणरण, निजकि निजजन सज्जना। कलयंति कमला, कलितकलमल, मुकलमीश महेज्जिनाः॥ २॥

पुक्खरवरदीवड्ढे, धायइसंडे अ जंबुदीवे अ। भरहेरवयविदेहे, धम्माइगरे नमंसामि॥ १॥ तमतिमिरपडलविद्धंसणस्स सुरगणनरिंदमहिअस्स। सीमाधरस्स वंदे, पप्फोडिअमोहजालस्स॥ २॥ जाई-जरामरण-सोग पणासणस्स, कल्लाण पुक्खल-विसाल सुहावहस्स। को देवदाणवनरिंदगणच्चिअस्स धम्मस्स सारमुवलब्भ करे पमायं॥ ३॥ सिद्धे भो पयओ णमो जिणमए नंदी सया संजमे, देवंनागसुवन्नकिन्नरगणस्सब्भूअभावच्चिए। लोगो जत्थ पइट्ठिओ जगमिणं तेलुक्कमच्चासुरं, धम्मो वड्ढउ सासओ विजयओ धम्मुत्तरं वड्ढउ॥ ४॥ सुअस्स भगवओ करेमि काउस्सग्गं, वंदणवत्तिआए, पूअणवत्तिआए, सक्कारवत्तिआए, सम्माणवत्तिआए, बोहिलाभवत्तिआए, निरुवसग्गवत्तिआए, सद्धाए, मेहाए, धिईए, धारणाए, अणुप्पेहाए, वड्ढमाणीए, ठामि काउस्सग्गं।

अन्नत्थ ऊससिएणं, नीससिएणं, खासिएणं, छीएणं, जंभाइएणं उड्डुएणं, वायनिसग्गेणं, भमलिए, पित्तमुच्छाए, सुहुमेहिं, अंगसंचालेहिं, सुहुमेहिं खेलसंचालेहिं, सुहुमेहिं

दिट्ठि संचालेहिं, एवमाइएहिं आगारेहिं अभग्गो अविराहिओ हुज्ज मे काउस्सग्गो। जाव अरिहंताणं भगवंताणं नमुक्कारेणं न पारेमि ताव कायं ठाणेणं मोणेणं झाणेणं अप्पाणं वोसिरामि।

(एक नवकारका काउस्सग्ग करके तीसरी थुइ कहना)

ठकि ठूंकि ठूं ठूं, ठहिंक ठहिंक, ठहिं पट्टा ताड्यते। तललोंकि लोंलों त्रंपि त्रंपिनि, डंपि डंपिनि वाद्यते। ॐ ॐ कि ॐ ॐ, थुंगि थुंगिनि, धोंगि धोंगिनि कलरवे। जिनमतमनंतं, महिम तनुतां, नमति सुरनर मुच्छवे ॥ ३ ॥

सिद्धाणं बुद्धाणं, पारगयाणं परंपरगयाणं। लोअग्गमुवगयाणं, नमो सया सव्वसिद्धाणं ॥ १ ॥ जो देवाण वि देवो, जं देवा पंजली नमंसंति। तं देवदेवमहिअं, सिरसा वंदे महावीरं ॥ २ ॥ इक्को वि नमुक्कारो, जिणवरवसहस्स वद्धमाणस्स। संसारसागराओ, तारेइ नरं व नारिं वा ॥३॥ उज्जिंतसेलसिहरे, दिक्खानाणं निसीहिआ जस्स। तं धम्मचक्कवट्टिं, अरिट्ठनेमिं नमंसामि ॥ ४ ॥ चत्तारि अट्ठ दस दो, य वंदिया जिणवरा चउव्वीसं। परमट्ठ निट्ठिअट्ठा सिद्धा सिद्धिं मम दिसंतु ॥ ५ ॥

वेयावच्चगराणं संतिगराणं सम्मदिट्ठिसमाहिगराणं करेमि काउस्सग्गं।

अन्नत्थ ऊससिएणं, नीससिएणं, खासिएणं, छीएणं, जंभाइएणं, उड्डुएणं, वायनिसग्गेणं, भमलिए, पित्तमुच्छाए, सुहुमेहिं अंगसंचालेहिं, सुहुमेहिं खेलसंचालेहिं, सुहुमेहिं दिट्ठिसंचालेहिं, एवमाइएहिं आगारेहिं अभग्गो अविराहिओ हुज्ज मे काउस्सग्गो। जाव अरिहंताणं भगवंताणं नमुक्कारेणं न पारेमि ताव कायं ठाणेणं मोणेणं झाणेणं अप्पाणं वोसिरामि।

(एक नवकार का काउस्सग्ग कर "नमोऽर्हत्सिद्धाचार्योपाध्याय सर्वसाधुभ्यः" कह कर चौथी थुइ कहना—)

पुंदांकि पुंदां, पुपुङ्दि पुंदां, पुपुङ्दि दों दों अंबरे। चाचपट चचपट, रणकि णें णें, डणण डें डें डंबरे॥ तिहां सरगमपधुनि, निधपमगरस, सस ससस सुर सेवता। जिननाट्यरंगे, कुशलमुनि शं, दिशतु शासनदेवता ॥४॥

(अब नीचे बैठकर नमोऽत्थुणं बोलना)

नमोऽत्थुणं अरिहंताणं भगवंताणं ॥ १ ॥ आइगराणं तित्थयराणं सयंसंबुद्धाणं ॥ २ ॥ पुरिसुत्तमाणं, पुरिससीहाणं, पुरिसवर-पुंडरीआणं, पुरिसवर-गंधहत्थीणं ॥ ३ ॥ लोगुत्तमाणं लोगनाहाणं लोगहिआणं लोगपईवाणं, लोगपज्जोअगराणं॥ ४ ॥अभयदयाणं चक्खुदयाणं, मग्गदयाणं, सरणदयाणं, बोहिदयाणं ॥५॥ धम्मदयाणं, धम्म-

देसयाणं धम्मनायगाणं, धम्मसारहीणं, धम्मवरचाउरंत-चक्कवट्टीणं अप्पडिहयवरनाणदंसणधराणं, विअट्टछउमाणं ॥ ७ ॥ जिणाणं जावयाणं, तिन्नाणं तारयाणं, बुद्धाणं बोहयाणं, मुत्ताणं मोअगाणं ॥ ८ ॥ सव्वन्नूणं सव्व-दरिसीणं, सिवमयलमरुअमणंतमक्खय-मव्वाबाहमपुणरा-वित्ति सिद्धिगइ नामधेयं, ठाणं संपत्ताणं नमो जिणाणं। जिअभयाणं ॥ ९ ॥ जे अ अईआ सिद्धा, जे अ भवि-स्संति णागए काले। संपइअवट्टमाणा, सव्वे तिविहेण वंदामि ॥ १० ॥

(यहां चार वार एक एक 'खमासमण' देकर 'श्री आचार्य जी मिश्र' आदि एक एक पद कहना जैसे)

इच्छामि खमासमणो वंदिउं जावणिज्जाए निसीहि-आए मत्थएण वंदामि। श्री आचार्य जी मिश्र।

इच्छामि खमासमणो वंदिउं जावणिज्जाए निसीहि-आए मत्थएणं वंदामि। श्री उपाध्याय जी मिश्र।

इच्छामि खमासमणो वंदिउं जावणिज्जाए निसीहि-आए मत्थएण वंदामि। जंगम युगप्रधान वर्त्तमान आचार्य जी मिश्र।

इच्छामि खमासमणो वंदिउं जावणिज्जाए निसीहिआए मत्थएण वंदामि। सर्वसाधु जी मिश्र।

इच्छाकारेण संदिसह भगवन्! देवसिय पडिक्कमणे ठाउं? 'इच्छं'।

(ऐसे कह कर दाहिने हाथको चरवले या आसन पर रख कर बायां हाथ मुहपत्ति सहित मुखके आगे रख कर सिर झुका कर 'सव्वस्सवि' का पाठ बोलना)

सव्वस्सवि देवसिअ दुच्चिंतिअ दुब्भासिअ दुच्चिट्ठिअ इच्छं तस्स मिच्छा मि दुक्कडं।

(अब खड़ा होकर बोलना)

करेमि भंते सामाइयं, सावज्जं जोगं पच्चक्खामि। जाव-नियमं पज्जुवासामि, दुविहं तिविहेणं मणेणं वायाए काएणं न करेमि न कारवेमि। तस्स भंते! पडिक्कमामि निंदामि गरिहामि अप्पाणं वोसिरामि।

इच्छामि ठामि काउस्सग्गं। जो मे देवसिओ अइयारो कओ, काइओ वाइओ माणसिओ उस्सुत्तो उम्मग्गो अकप्पो अकरणिज्जो दुज्झाओ दुव्विचिंतिओ अणायारो अणिच्छि-अव्वो असावग-पाउग्गो नाणे दंसणे चरित्ताचरित्ते सुए सामाइए, तिण्हं गुत्तीणं, चउण्हं कसायाणं, पंचण्हमणुव्वयाणं, तिण्हं गुणव्वयाणं, चउण्हं सिक्खावयाणं, बारसविहस्स साव-गधम्मस्स जं खंडिअं जं विराहिअं तस्स मिच्छा मि दुक्कडं।

तस्स उत्तरीकरणेणं, पायच्छितकरणेणं, विसोहीकरणेणं विसल्लीकरणेणं, पावाणं कम्माणं निग्घायणट्ठाए ठामि काउस्सग्गं।

अन्नत्थ ऊससिएणं, नीससिएणं, खासिएणं, छीएणं, जंभाइएणं, उड्डुएणं, वायनिसग्गेणं, भमलिए पित्त-मुच्छाए, सुहुमेहिं अंगसंचालेहिं, सुहुमेहिं खेलसंचालेहिं, सुहुमेहिं दिट्ठिसंचालेहिं, एवमाइएहिं आगारेहिं, अभग्गो अविराहिओ हुज्ज मे काउस्सग्गो, जाव अरिहंताणं भगवंताणं नमुक्कारेणं न पारेमि, ताव कायं ठाणेणं मोणेणं झाणेणं अप्पाणं वोसिरामि।

('आजुणा चार प्रहर दिवसमें' का पाठ मन में चिन्तन करे या आठ नवकार का काउस्सग्ग करे पीछे प्रगट लोगस्स कहे)

लोगस्स उज्जोअगरे, धम्मतित्थयरे जिणे। अरिहंते कित्तइस्सं, चउवीसं पि केवली ॥ १ ॥ उसभ-मजिअं च वंदे, संभवमभिणंदणं च सुमइं च। पउमप्पहं सुपासं, जिणं च चंदप्पहं वंदे ॥ २ ॥ सुविहिं च पुप्फदंतं, सीअल-सिज्जंस वासुपूज्जं च। विमलमणंतं च जिणं, धम्मं संतिं च वंदामि ॥ ३ ॥ कुंथुं अरं च मल्लिं, वन्दे मुणिसुव्वयं नमि-जिणं च। वंदामि रिट्ठनेमिं, पासं तह वद्धमाणं च ॥ ४ ॥ एवं मए अभिथुआ, विहुयरयमला पहीणजरमरणा। चउ-वीसं पि जिणवरा, तित्थयरा मे पसीयंतु ॥ ५ ॥ कित्तिय-

वंदिय-महिया, जे ए लोगस्स उत्तमा सिद्धा । आरुग्गबोहि-लाभं, समाहिवरमुत्तमं दिंतु ॥ ६ ॥ चंदेसु निम्मलयरा, आइच्चेसु अहियं पयासयरा । सागरवरगंभीरा, सिद्धा सिद्धिं मम दिसंतु ॥ ७ ॥

(अब नीचे बैठ कर तीजा आवश्यक की मुहपत्ति पडिलेहना और दो बार वांदणा देना—)

इच्छामि खमासमणो ! वंदिउं जावणिज्जाए निसीहि-आए अणुजाणह मे मिउग्गहं । निसीहि, अहोकायं कायसं-फासं, खमणिज्जो मे किलामो अप्पकिलंताणं बहुसुभेण मे दिवसो वइक्कंतो ? जत्ता मे जवणिज्जं च भे ? खामेमि खमासमणो ! देवसिअं वइक्कम्मं आवस्सिआए पडिक्कमामि खमासमणाणं, देवसिआए आसायणाए तित्तीसन्नयराए, जं किंचि मिच्छाए मणदुक्कडाए वयदुक्कडाए कायदुक्कडाए कोहाए माणाए मायाए लोभाए सव्वकालिआए सव्वमि-च्छोवयाराए सव्वधम्माइक्कमणाए आसायणाए जो मे अइ-आरो कओ तस्स खमासमणो पडिक्कमामि निंदामि गरिहामि अप्पाणं वोसिरामि ।

इच्छामि खमासमणो ! वंदिउं जावणिज्जाए निसीहि-आए । अणुजाणह मे मिउग्गहं निसीहि, अहोकायं कायसं-फासं, खमणिज्जो भे किलामो अप्पकिलंताणं बहुसुभेण भे दिवसो वइक्कंतो ? जत्ता भे ? जवणिज्जं च भे ? खामेमि

खमासमणो देवसिअं वइक्कम्मं। पडिक्कमामि, खमासमणाणं, देवसिआए आसायणाए, तित्तीसन्नयराए, जं किंचि मिच्छाए मणदुक्कडाए वयदुक्कडाए कायदुक्कडाए, कोहाए माणाए मायाए, लोभाए, सव्वकालिआए सव्व मिच्छोवयाराए सव्व धम्माइक्कमणाए आसायणाए जो मे अइआरो कओ तस्स खमासमणो! पडिक्कमामि निंदामि गरिहामि अप्पाणं वोसिरामि।

(अब खड़ा होकर बोलना—)

इच्छाकारेण संदिसह भगवन् देवसिअं आलोउं? 'इच्छं' आलोएमि। जो मे देवसिओ अइआरो कओ, काइओ वाइओ माणसिओ उस्सुत्तो उम्मग्गो अकप्पो अकरणिज्जो दुज्झाओ दुव्विचिंतिओ अणायारो अणिच्छिअव्वो असावगपाउग्गो नाणे दंसणे चरित्ताचरित्ते सुए सामाइए। तिण्हं गुत्तीणं, चउण्हं कसायाणं पंचण्हमणुव्वयाणं; तिण्हं गुणव्वयाणं, चउण्हं सिक्खावयाणं वारसविहस्स सावगधम्मस्स जं खंडिअं जं विराहिअं तस्स मिच्छा मि दुक्कडं।

इच्छाकारेण संदिसह भगवन्! गमणागमणे आलोउं? 'इच्छं'—

आजुणा चार प्रहर दिवस में मैंने जिन २ जीवों की विराधना की हो। सात लाख पृथिवीकाय, सात लाख अप्काय, सात लाख तेउकाय, सात लाख वाउकाय, दश लाख

प्रत्येक वनस्पतिकाय, चौदह लाख साधारण वनस्पतिकाय, दो लाख दोइंद्रिय, दो लाख तेइंद्रिय, दो लाख चौरिंद्रिय, चार लाख देवता, चार लाख नारकी, चार लाख तिर्यंच पंचेंद्रिय, चौदह लाख मनुष्य। एवं कुल चौरासी लाख जीवयोनियोंमेंसे किसी जीवका मैंने हनन किया, कराया या करते हुए का अनुमोदन किया वह सब मन वचन काया करके मिच्छा मि दुक्कडं।

पहला प्राणातिपात, दूसरा मृषावाद, तीसरा अदत्तादान, चौथा मैथुन, पांचवाँ परिग्रह, छट्ठा क्रोध, सातवाँ मान, आठवाँ माया, नववाँ लोभ, दशवाँ राग, ग्यारहवाँ द्वेष, बारहवाँ कलह, तेरहवाँ अभ्याख्यान, चौदहवाँ पैशुन्य, पन्द्रहवाँ रति अरति, सोलहवाँ परपरिवाद, सत्तरहवाँ, मायामृषावाद, अठारहवाँ मिथ्यात्वशल्य। इन अठारह पापस्थानोंमेंसे किसीका मैंने सेवन किया, कराया या करते हुए का अनुमोदन किया, वह सब मन वचन काया करके मिच्छा मि दुक्कडं।

ज्ञान, दर्शन, चारित्र, पाटी, पोथी, ठवणी, कवली, नवकारवाली, देवगुरुधर्म की आशातना की हो। पन्नरह कर्मादानों की आसेवना की हो। राज कथा, देश कथा, स्त्री कथा, भक्त कथा की हो। और जो कोई परनिन्दादि पाप किया हो, कराया हो, करते हुए का अनुमोदन किया

हो, वह सब मन वचन काया करके दिवस अतिचार आलो-चण करके पडिक्कमणमें आलोउं, तस्स मिच्छा मि दुक्कडं।

सव्वस्सवि देवसिअ दुच्चिंतिअ दुब्भासिअ दुच्चिट्ठिअ। इच्छाकारेण संदिसह भगवन्! इच्छं। तस्स मिच्छा मि दुक्कडं।

(अब नीचे बैठकर, दाहिना घुटना खड़ा करके 'भगवन सूत्र भणं? इच्छं,' ऐसा कहे। पीछे तीन नवकार और तीन वार 'करेमि भंते' कहे)

णमो अरिहंताणं। णमो सिद्धाणं। णमो आयरियाणं। णमो उवज्झायाणं। णमो लोए सव्वसाहूणं। एसो पंच नमुक्कारो। सव्वपावप्पणासणो। मंगलाणं च सव्वेसिं। पढमं हवइ मंगलं।

करेमि भंते सामाइयं सावज्जं जोगं पच्चक्खामि। जाव नियमं पज्जुवासामि। दुविहं तिविहेणं मणेणं वायाए काएणं न करेमि न कारवेमि। तस्स भंते पडिक्कमामि निंदामि गरिहामि अप्पाणं वोसिरामि।

इच्छामि पडिक्कमिउं जो मे देवसिओ अइआरो कओ, काइओ वाइओ माणसिओ उस्सुत्तो उम्मग्गो अकप्पो अकर-णिज्जो दुज्झाओ दुव्विचिंतिओ अणायारो अणिच्छिअव्वो,

असावग-पाउग्गो नाणे दंसणे चरित्ताचरित्ते सुए सामाइए। तिण्हं गुत्तीणं, चउण्हं कसायाणं, पंचण्हमणुव्वयाणं, तिण्हं गुणव्वयाणं, चउण्हं सिक्खावयाणं, बारसविहस्स सावगधम्मस्स, जं खंडिअं जं विराहिअं तस्स मिच्छा मि दुक्कडं।

वंदित्तु—श्रावक प्रतिक्रमणसूत्र।

वंदित्तु सव्वसिद्धे, धम्मायरिए अ सव्वसाहू अ। इच्छामि पडिकमिउं, सावगधम्माइआरस्स ॥ १ ॥ जो मे वयाइआरो, नाणे तह दंसणे चरित्ते अ। सुहुमो अ बायरो वा, तं निंदे तं च गरिहामि ॥ २ ॥ दुविहे परिग्गहंमि, सावज्जे बहुविहे अ आरंभे। कारावणे अ करणे, पडिकमे देसिअं सव्वं ॥ ३ ॥ जं बद्धमिंदिएहिं, चउहिं कसाएहिं अप्पसत्थेहिं। रागेण व दोसेण व, तं निंदे तं च गरिहामि ॥ ४ ॥ आगमणे निग्गमणे, ठाणे चंकमणे अणाभोगे। अभिओगे अ निओगे, पडिक्कमे देसिअं सव्वं ॥ ५ ॥ संका कंख विगिच्छा, पसंस तह संथवो कुलिंगीसु। सम्मत्तस्सइआरे, पडिक्कमे देसिअं सव्वं ॥ ६ ॥ छक्कायसमारंभे, पयणे अ पयावणे अ जे दोसा। अत्तट्ठा य परट्ठा उभयट्ठा चेव तं निंदे ॥ ७ ॥ पंचण्हमणुव्वयाणं, गुणव्वयाणं च तिण्हमइयारे। सिक्खाणं च चउण्हं, पडिक्कमे देसिअं सव्वं

॥ ८ ॥ पढमे अणुव्वयंमि, थुलगपाणाइवायविरईओ। आयरिअमप्पसत्थे, इत्थ पमायप्पसंगेणं ॥ ९ ॥ वह बंध छविच्छेए, अइभारे भत्तपाणवुच्छेए। पढमवयस्सइआरे, पडिक्कमेदेसिअं सव्वं ॥ १० ॥ वीए अणुव्वयम्मि, परिथूलगअलिअवयणविरईओ। आयरिअमप्पसत्थे, इत्थ पमायप्पसंगेणं ॥ ११ ॥ सहस्सारहस्सदारे, मोसुवएसे अ कूडलेहे अ। वीअवयस्सइआरे, पडिक्कमे देसिअं सव्वं ॥ १२ ॥ तइए अणुव्वयंमि, थूलगपरदव्वहरणविरईओ। आयरिअमप्पसत्थे, इत्थ पमायप्पसंगेणं ॥ १३ ॥ तेनाहडप्पओगे, तप्पडिरूवे विरुद्धगमणे अ। कूडतुलकूडमाणे, पडिक्कमे देसिअं सव्वं ॥ १४ ॥ चउत्थे अणुव्वयम्मि, निच्चं परदारगमणविरईओ। आयरिअमप्पसत्थे, इत्थ पमायप्पसंगेणं ॥ १५ ॥ अपरिग्गहिआ इत्तर, अणंगवीवाहतिव्वअणुरागे। चउत्थवयस्सइआरे, पडिक्कमे देसिअं सव्वं ॥ १६ ॥ इत्तो अणुव्वए पंचमम्मि, आयरिअमप्पत्थंमि। परिमाणपरिच्छेए, इत्थ पमायप्पसंगेणं ॥ १७ ॥ धण-धन्न खित्तवत्थू, रुप्प-सुवन्ने अ कुविअपरिमाणे। दुपए चउप्पयम्मि, पडिक्कमे देसिअं सव्वं ॥ १८ ॥ गमणस्स उ परिमाणे, दिसासु उड्ढं अहे अ तिरिअं च। वुड्ढि सइअंतरद्धा, पढमम्मि गुणव्वए निंदे ॥ १९ ॥

मज्जम्मि अ मंसम्मि अ, पुप्फे अ फले अ गंधमल्ले अ।
उवभोगपरिभोगे, वीअम्मि गुणव्वए निंदे॥ २० ॥ सच्चित्ते
पडिबद्धे, अपोलि दुप्पोलिअं च आहारे। तुच्छोसहिभक्ख-
णया, पडिक्कमे देसिअं सव्वं ॥ २१ ॥ इंगालीवणसाडी,
भाडीफोडी सुवज्जए कम्मं। वाणिज्जं चेव य दंत-लक्खरस-
केसविसविसयं॥ २२ ॥ एवं खु जंतपिल्लण-कम्मं निल्लंछणं
च दवदाणं। सरदहतलायसोसं, असईपोसं च वज्जिज्जा॥२३॥
सत्थग्गिमुसलजंतग-तणकट्ठे मंतमूल भेसज्जे। दिन्ने दवाविए
वा, पडिक्कमे देसिअं सव्वं॥२४॥ ण्हाणुव्वट्टण वन्नग, विलेवणे
सद्दरूवरसगंधे। वत्थासण आभरणे, पडिक्कमे देसिअं सव्वं
॥२५॥ कंदप्पे कुक्कुइए, मोहरिअहिगरण भोगअइरित्ते।
दंडम्मि अणट्ठाए, तइअम्मि गुणव्वए निंदे ॥२६॥ तिविहे
दुप्पणिहाणे, अणवट्ठाणे तहा सइविहूणे। सामाइअ वितह
कए, पढमे सिक्खावए निंदे ॥२७॥ आणवणे पेसवणे, सद्दे
रूवे अ पुग्गलक्खेवे, देसावगासियम्मि, वीए सिक्खावए निंदे
॥२८॥ संथारुच्चारविही, पमाय तह चेव भोअणाभोए, पोस-
हविहिविवरीए, तइए सिक्खावए निंदे ॥२९॥ सचित्ते
निक्खिवणे, पिहिणे ववएसमच्छरे चेव। कालाइक्कमदाणे,
चउत्थे सिक्खावए निंदे ॥३०॥ सुहिएसु अ दुहिएसु अ,

जा मे अस्संजएसु अणुकंपा। रागेण व दोसेण व, तं निंदे तं च गरिहामि ॥३१॥ साहूसु संविभागो, न कओ तवचरण-करणजुत्तेसु। संते फासुअदाणे, तं निंदे तं च गरिहामि ॥३२॥ इहलोए परलोए जीविअ मरणे अ आसंसपओगे। पंचविहो अइआरो, मा मज्झं हुज्ज मरणंते ॥३३॥ काएण काइअस्स, पडिक्कमे वाइअस्स वायाए। मणसा माणसिअस्स, सव्वस्स वयाइआरस्स ॥३४॥ वंदणवयसिक्खागा-रवेसु सन्ना-कसायदंडेसु। गुत्तीसु अ समिईसु अ, जो अइआरो अ तं निंदे ॥३५॥ सम्मद्दिट्ठी जीवो, जइ वि हु पावं समायरइ किंचि। अप्पो सि होइ बंधो, जेण न निद्धंधसं कुणइ ॥३६॥ तं पि हु सपडिक्कमणं, सप्परिआवं सउत्तरगुणं च। खिप्पं उवसामेई, वाहि व्व सुसिक्खिओ विज्जो ॥३७॥ जहा विसं कुट्ठगयं, मंतमूलविसारया। विज्जा हणंति मंतेहिं, तो तं हवइ निव्विसं ॥३८॥ एवं अट्ठविहं कम्मं, रागदोससमज्जिअं। आलोअंतो अ निंदंतो, खिप्पं हणइ सुसावओ ॥३९॥ कय-पावो वि मणुस्सो, आलोइय निंदिअ य गुरुसगासे। होइ अइरेगलहुओ, ओहरिअभरु व्व भारवहो ॥४०॥ आवस्सएण एएण, सावओ जइ वि बहुरओ होइ। दुक्खाणमंतकिरिअं, काही अचिरेण कालेण ॥४१॥ आलोअणा बहुविहा, न य

संभरिआ पडिक्कमणकाले। मूलगुणउत्तरगुणे, तं निंदे तं च गरिहामि ॥४२॥ तस्स धम्मस्स केवलिपन्नत्तस्स, अब्भुट्ठिओमि आराहणाए, विरओमि विराहणाए। तिविहेण पडिक्कंतो, वंदामि जिणे चउव्वीसं ॥४३॥ जावंति चेइआइं, उड्ढे अ अहे अ तिरिअलोए अ। सव्वाइं ताइं वंदे, इह संतो तत्थ संताइं ॥४४॥ जावंत केवि साहु, भरहेरवयमहाविदेहे अ। सव्वेसिं तेसिं पणओ, तिविहेण तिदंडविरयाणं ॥४५॥ चिरसंचियपावपणासणीइ, भवसयसहस्समहणीए। चउव्वीसजिणविणिग्गय-कहाइ वोलंतु मे दिअहा ॥४६॥ मम मंगलमरिहंता, सिद्धा साहू सुअं च धम्मो अ। सम्मद्दिट्ठी देवा, दिंतु समाहिं च बोहिं च ॥४७॥ पडिसिद्धाणं करणे, किच्चाणमकरणे पडिक्कमणं। असद्दहणे अ तहा, विवरीयपरूवणाए अ ॥४८॥ खामेमि सव्वजीवे, सव्वे जीवा खमंतु मे। मित्ती मे सव्वभूएसु, वेरं मज्झ न केणई ॥४९॥ एवमहं आलोइअ, निंदिअ गरहिअ दुगंछिअं सम्मं। तिविहेण पडिक्कंतो, वंदामि जिणे चउव्वीसं ॥५०॥

इच्छामि खमासमणो वंदिउं जावणिज्जाए निसीहिआए मत्थएण वंदामि। देवसिय आलोइअ पडिक्कंता इच्छाकारेण संदिसह भगवन् *पक्खिय मुहपत्ति पडिलेहुं? 'इच्छं'।

---

* चउमासिक प्रतिक्रमण में 'चउमासिय' और सांवत्सरिक प्रतिक्रमण में 'संवच्छरिय' बोलना चाहिये।

इच्छामि खमासमणो वंदिउं जावणिज्जाए निसीहिआए मत्थएण वंदामि।

(यहां पाक्षिक मुहपत्ति पडिलेहना। बाद वांदणा दो देना।)

इच्छामि खमासमणो वंदिउं जावणिज्जाए निसीहिआए अणुजाणह मे मिउग्गहं। निसीहि अहोकायं कायसंफासं। खमणिज्जो भे किलामो। अप्पकिलंताणं बहुसुभेण भे पक्खो वइक्कंतो? जत्ता भे जवणिज्जं च भे? खामेमि खमासमणो पक्खिअं वइक्कम्मं, आवस्सिआए, पडिक्कमामि खमासमणाणं, पक्खिए आसायणाए तित्तीसन्नयराए, जं किंचि मिच्छाए, मणदुक्कडाए, वयदुक्कडाए, कायदुक्कडाए, कोहाए, माणाए, मायाए, लोभाए, सव्वकालिआए, सव्वमिच्छोवयाराए, सव्वधम्माइक्कमणाए, आसायणाए, जो मे अइआरो कओ, तस्स खमासमणो पडिक्कमामि निंदामि गरिहामि, अप्पाणं वोसिरामि।

इच्छामि खमासमणो वंदिउं जावणिज्जाए निसीहिआए अणुजाणह मे मिउग्गहं। निसीहि अहोकायं कायसंफासं। खमणिज्जो भे किलामो अप्पकिलंताणं बहुसुभेण भे पक्खो वइक्कंतो? जत्ता भे? जवणिज्जं च भे? खामेमि खमासमणो! पक्खिअं वइक्कम्मं, पडिक्कमामि खमासमणाणं, पक्खिए आसायणाए, तित्तीसन्नयराए, जं किंचि मिच्छाए, मणदुक्कडाए, वयदुक्कडाए, कायदुक्कडाए, कोहाए, माणाए, मायाए,

लोभाए सव्वकालिआए, सव्वमिच्छोवयाराए, सव्वधम्माइक्कमणाए आसायणाए जो मे अइआरो कओ तस्स खमासमणो पडिक्कमामि निंदामि गरिहामि अप्पाणं वोसिरामि।

(अब गुरु कहे कि—"पुण्णवंतो देवसिय की जगह पक्खिय चउमासिय या संवच्छरिय पढ़ना, छींक की जयणा करना, मधुर-स्वर से प्रतिक्रमण करना, खाँसना हो तो विवर शुद्ध खाँसना और मंडल में सावधान रहना।" इस प्रकार गुरु के कहने बाद सब 'तहत्ति' कहे और खड़े होकर 'अब्भुट्ठिओमि' खामे)

इच्छाकारेण संदिसह भगवन्! संबुद्धा खामणेणं अब्भुट्ठिओहं, अब्भिंतर पक्खिअं खामेउं? इच्छं, खामेमि पक्खिअं, एगपक्खस्स, पन्नरसण्हं दिवसाणं, पन्नरसण्हं राईणं, जं किंचि अपत्तिअं परपत्तिअं भत्ते, पाणे विणए, वेयावच्चे, आलावे, संलावे, उच्चासणे, समासणे अंतरभासाए, उवरिभासाए, जं किंचि मज्झ विणयपरिहीणं सुहुमं वा बायरं वा तुब्भे जाणह अहं न जाणामि तस्स मिच्छा मि दुक्कडं।

---

१. चउमासी प्रतिक्रमणमें "चउमासिअं खामेउं? इच्छं खामेमि चउमासिअं, चउण्हं मासाणं, अट्ठण्हं पक्खाणं, वीसोत्तरसयं राइदिवसाणं" इस प्रकार बोलना और संवच्छरी प्रतिक्रमण में "संवच्छरिअं खामेउं? इच्छं, खामेमि संवच्छरिअं, दुवालसण्हं मासाणं, चउवीसण्हं पक्खाणं तिन्निसयसट्ठि राइदिवसाणं" इसी तरह बोलना चाहिये।

(अब खड़े होकर बोले)

इच्छाकारेण संदिसह भगवन् पक्खिअं आलोउं ? 'इच्छं' आलोएमि। जो मे पक्खिओ अइयारो कओ, काइओ वाइओ माणसिओ उस्सुत्तो उम्मग्गो अकप्पो अकरणिज्जो दुज्झाओ दुव्विचिंतिओ अणायारो अणिच्छिअव्वो असावगपाउग्गो नाणे दंसणे चरित्ताचरित्ते सुए सामाइए। तिण्हं गुत्तिणं, चउण्हं कसायाणं पंचण्हमणुव्वयाणं; तिण्हं गुणव्वयाणं, चउण्हं सिक्खावयाणं बारसविहस्स सावगधम्मस्स, जं खंडिअं जं विराहिअं तस्स मिच्छा मि दुक्कडं।

इच्छाकारेण संदिसह भगवन् ! पक्खिय अतिचार आलोउं ? 'इच्छं'।

(ऐसे कहकर पक्खिय अतिचार कहे)

अथ पाक्षिक अतिचार।

नाणंमि दंसणंमि अ, चरणंमि तवंमि तह य विरियंमि। आयरणं आयारो, इअ एसो पंचहा भणिओ ॥१॥ ज्ञानाचार, दर्शनाचार, चारित्राचार, तपाचार, वीर्याचार, इन पांचों आचारों में जो कोई अतिचार पक्ष दिवस में सूक्ष्म या बादर जानते अजानते लगा हो वह सब मन वचन काया कर मिच्छा मि दुक्कडं।

तत्र ज्ञानाचार के आठ अतिचार—"काले विणए बहु-माणे, उवहाणे तह य निण्हवणे। वंजण अत्थतदुभए, अट्ठ-विहो नाणमायारो" ॥२॥ ज्ञान नियमित वक्त में पढ़ा नहीं। अकाल वक्तमें पढ़ा। विनय रहित, बहुमान रहित, योगोप-धान रहित पढ़ा। ज्ञान जिससे पढ़ा उससे अतिरिक्तको गुरु माना या कहा। देववंदन, गुरुवंदन करते हुए तथा प्रतिक्रमण, सज्झाय पढ़ते या गुणते अशुद्ध अक्षर कहा। कानामात्रा न्यूनाधिक कही, सूत्र असत्य कहा, अर्थ अशुद्ध किया, अथवा सूत्र और अर्थ दोनों असत्य (जूठे) कहे। पढ़कर भूला, असज्झाय के समयमें थविरावली, प्रतिक्रमण उपदेशमाला आदि सिद्धांत पढ़ा। अपवित्र स्थानमें पढ़ा, या विना साफ किये घृणित (खराब) भूमि पर रखा। ज्ञान के उपकरण पाटी, तखती, पोथी, ठवणी, कवली, माला, पुस्तक रखने की रील, कागज़, कलम, दवात, आदि के पैर लगा, थूक लगा, अथवा थूक से अक्षर मिटाया, ज्ञानके उपकरण को मस्तक के नीचे रखा, या पासमें लिए हुए आहार निहार किया, ज्ञानद्रव्य भक्षण करनेवाले की उपेक्षा की, ज्ञानद्रव्य की सारसंभाल न की, उलटा नुक-सान किया, ज्ञानवंतके ऊपर द्वेष किया, ईर्षा की, तथा

अवज्ञा आशातना की, किसी को पढ़ने गुणने में विघ्न डाला, अपने ज्ञानपने का मान किया। मतिज्ञान, श्रुतज्ञान, अवधिज्ञान, मनःपर्यायज्ञान और केवलज्ञान, इन पांचो ज्ञानों में श्रद्धा न की। गूंगे तोतले की हँसी की, ज्ञानमें कुतर्क की, ज्ञान की विपरीत प्ररूपणा की। इत्यादि ज्ञानाचार संबंधि जो कोई अतिचार पक्ष दिवसमें सूक्ष्म या बादर जानते अजानते लगा हो वह सब मन वचन काया कर मिच्छा मि दुक्कडं।

दर्शनाचार के आठ अतिचार—"निस्संकिय निक्कंखिय, निव्वितिगिच्छा अमूढ़दिट्ठी अ। उववूह थिरीकरणे, वच्छल्ल पभावणे अट्ठ ॥३॥ देवगुरुधर्ममें निःशंक न हुआ, एकांत निश्चय न किया। धर्मसंबंधी फलमें संदेह किया। चारित्र-वान् साधु साध्वी की जुगुप्सा निंदा की। मिथ्यात्वियोंकी पूजा प्रभावना देखकर मूढ़ दृष्टिपना किया। कुचारित्रीको देखकर चारित्रवाले पर भी अभाव हुआ। संघमें गुणवान् की प्रशंसा न की। धर्म से पतित होते हुए जीव को स्थिर न किया। साधर्मी का हित न चाहा। भक्ति न की, अप-मान किया, देवद्रव्य, ज्ञानद्रव्य, साधारणद्रव्य की हानि होते हुए उपेक्षा की। शक्ति होने पर भले प्रकार सारसंभाल

न की। साधर्मी से कलह क्लेश करके कर्मबंधन किया। मुखकोश बांधे बिना वीतराग देव की पूजा की। धूपदानी, खसकूची, कलश आदिक से प्रतिमाजी को ठपका लगाया, जिनबिंब हाथ से गिरा। श्वासोच्छ्वास लेते आशातना हुई। जिनमंदिर तथा पौषधशालामें थूका, तथा मलश्लेश्म किया, हांसी मश्करी की, कुतूहल किया। जिनमंदिर संबंधी चौरासी आशातनाओं में से और गुरु महाराज संबंधी तेतीस आशातनाओमें से कोई आशातना हुई हो। स्थापनाचार्य हाथसे गिरे हों या उनकी पडिलेहन न की हो। गुरुके वचनको मान न दिया हो, इत्यादि दर्शनाचार संबंधि जो कोई अतिचार पक्ष दिवसमें सूक्ष्म या बादर जानते अजानते लगा हो वह सब मन वचन काया कर मिच्छा मि दुक्कडं।

चारित्राचार के आठ अतिचार—"पणिहाण जोगजुत्तो पंचहिं समईहिं तीहिं गुत्तीहिं। एस चरित्तायारो, अट्ठविहो होइ नायव्वो" ॥४॥ ईर्यासमिति, भाषासमिति, एषणासमिति, आयाण-भंडमत्त-निक्षेपणा-समिति और पारिष्ठापनिकासमिति, मनोगुप्ति, वचनगुप्ति और कायगुप्ति ये आठ प्रवचन माता रूप पांच समिति और तीन गुप्ति सामायिक पौषधादिकमें अच्छी तरह पाली नहीं। चारित्राचार संबंधी जो कोई अतिचार

पक्ष दिवस में सूक्ष्म या बादर जानते अजानते लगा हो वह सब मन वचन काया कर मिच्छा मि दुक्कडं।

विशेषतः श्रावक धर्मसंबंधी श्रीसम्यक्त्व मूल बारह व्रत, सम्यक्त्व के पांच अतिचार—'संका कंख विगिच्छा०' शंका श्री अरिहंत प्रभुके बल अतिशय ज्ञानलक्ष्मी गांभीर्यादिगुण शाश्वती प्रतिमा चरित्रवान् के चारित्रमें तथा जिनेश्वरदेव के वचन में संदेह किया। आकांक्षा—ब्रह्मा, विष्णु, महेश, क्षेत्रपाल, गरुड़, गूगा, दिक्पाल, गोत्रदेवता, नवग्रहपूजा, गणेश, हनुमान, सुग्रीव, बाली, मातामसानी, आदिक; तथा देश, नगर, ग्राम, गोत्रके जुदे जुदे देवादिकों का प्रभाव देखकर, शरीरमें रोगांतक कष्ट आने पर इहलोक परलोक के लिये पूजा मानता की। बौद्ध, सांख्यादिक सन्यासी, भगत लिंगिये, जोगी, फकीर, पीर इत्यादि अन्य दर्शनियों के मंत्र यंत्र के चमत्कार देखकर परमार्थ जाने बिना मोहित हुआ। कुशास्त्र पढ़ा, सुना, श्राद्ध, संवत्सरी, होली, राखड़ीपूनम (राखी), अजा एकम, प्रेतदूज, गौरी तीज, गणेशचौथ, नागपंचमी, स्कंदषष्ठी, झीलणा छठ, शीलसप्तमी, दुर्गाष्टमी, रामनौमी, विजयादशमी, व्रत एकादशी, वामनद्वादशी, वत्सद्वादशी, धनतेरस, अनंत

चौदश, शिवरात्री, कालीचउदश, अमावास्या, आदित्यवार, उत्तरायण याग भोगादि किये कराये करते को भला माना। पीपल में पानी डाला डलवाया, कुवा, तलाव, नदी, द्रह, वावड़ी, समुद्र कुंड ऊपर पुण्य निमित्त स्नान तथा दान किया, कराया, अनुमोदन किया। ग्रहण, शनिश्चर, माघमास, नवरात्रिका स्नान किया। नवरात्रि व्रत किया। अज्ञानियों के माने हुए व्रतादि किये कराये। वितिगिच्छा—धर्मसंबंधी फलमें संदेह किया। जिन-वीतराग अरिहंत भगवान् धर्मके आगर, विश्वोपकार सागर, मोक्षमार्गदातार इत्यादि गुणयुक्त जानकर पूजा न की। इहलोक परलोक संबंधी भोगवांछा के लिये पूजा की। रोग आतंक कष्टके आने पर क्षीण वचन बोला। मानता मानी। महात्मा महासती के आहार पानी आदिकी निन्दा की। मिथ्यादृष्टिकी पूजा प्रभावना देखकर प्रशंसा की। प्रीति की। दाक्षिण्यता से उसका धर्म माना। मिथ्यात्व को धर्म कहा। इत्यादि श्रीसम्यक्त्व व्रत संबन्धी जो कोई अतिचार पक्ष दिवस में सूक्ष्म या बादर जानते अजानते लगा हो, वह सब मन वचन काया कर मिच्छा मि दुक्कडं।

पहले स्थूल प्राणातिपात—विरमणव्रत के पांच अति-

चार—'वह बंध छविच्छेए०' द्विपद चतुष्पद आदि जीवको क्रोधवश ताड़न किया, घाव लगाया, जकड़ कर बांधा, अधिक बोझ लादा। निर्लांछन कर्म—नासिका छिदवाई, कर्णछेदन करवाया, खस्सी किया। दाना, घास, पानी की समय पर सार संभाल न की, लेन देनमें किसीके बदले किसीको भूखा रखा, पास खड़ा होकर मरवाया, कैद करवाया। सड़े हुए धान को बिना शोधे काममें लिया, पिसवाया, धूपमें सुकाया। पानी जयणासे न छाना। ईंधन, लकड़ी, उपले गोहे आदि बिना देखे बाले। उसमें सर्प, बिच्छू, कानखजूरा, कीड़ी, मकोड़ी, सरोला, मांकड़, जुआ, गिंगाड़ा आदि जीवों का नाश हुआ। किसी जीवको दबाया। दुःखी जीवको अच्छी जगह पर न रखा। चूंटी (कीड़ी) मकोड़ी के अंडे नाश किये, लीख फोड़ा, दीमक, कीड़ी, मकोड़ी, घीमेल, कातरा, चूड़ेल, पतंगिया, देडका, अलसीया, ईअल, कूंदा, डांस, मसा, मगतरां, माखी, टीड्डी, प्रमुख जीवका नाश किया। चील्ह, काग, कबूतर, आदिके रहने की जगह का नाश किया। घौंसले तोड़े। चलते फिरते या अन्य कुछ काम काज करते निर्दयपना किया। भली प्रकार जीवरक्षा न की। बिना छाने पानीसे स्नानादि

कामकाज किया। चारपाई, खटोला, पीढ़ा, पीढ़ी आदि धूपमें रखे। डंडे आदिसे झड़काये। जीवाकुल—जीवयुक्त जमीनको लीपी। दलते, कूडते, लीपते या अन्य कुछ काम काज करते जयणा न की। अष्टमी, चौदश आदि तिथिका नियम तोड़ा। धूनी करवाई, इत्यादि पहले स्थूल प्राणाविपात विरमणव्रत संबंधी जो कोई अतिचार पक्ष दिवस में सूक्ष्म या बादर जानते अजानते लगा हो वह सब मन वचन काया कर मिच्छा मि दुक्कडं।

दूसरे स्थूल मृषावाद विरमणव्रतके पांच अतिचार—'सहसा-रहस्सदारे०' सहसात्कार—विना विचारे एकदम किसीको अयोग्य आलकलंक दिया। स्वस्त्री संबंधी गुप्त बात प्रकट की, अथवा अन्य किसीका मंत्र भेद मर्म प्रकट किया। किसीको दुःखी करने के लिये झूठी सलाह दी। झूठा लेख लिखा, झूठी गवाही दी। अमानत में खयानत की। किसीकी धरोहर रखी हुई वस्तु वापिस न दी। कन्या गौ भूमि संबंधी लेने देनेमें लड़ने झगड़ते वादविवाद में मोटा झूठ बोला। हाथ पैर आदिकी गाली दी। मर्म वचन बोला, इत्यादि दूसरे स्थूल मृषावाद विरमणव्रत संबंधी जो कोई अतिचार पक्ष दिवसमें सूक्ष्म या बादर

जानते अजानते लगा हो वह सब मन वचन काया कर मिच्छा मि दुक्कडं ।

तृतीय स्थूल अदत्तादान विरमणव्रत के पांच अतिचार—'तेनाहडप्पओगे०' घर बाहिर खेत खलामें विना मालिक के भेजे वस्तु ग्रहण की, अथवा आज्ञा विना अपने काममें ली, चोरीकी वस्तु ली, चोरको सहायता दी । राज्यविरुद्ध कर्म किया । अच्छी बूरी, सजीव निर्जीव, नई पुरानी वस्तुका भेल संभेल किया । जकातकी चोरीकी । लेते देते तराजू की डंडी चढ़ाई । अथवा देते हुए कमती दिया, लेते हुए अधिक लिया, रिशवत खाई । विश्वासघात किया, ठगाई की । हिसाब किताब में किसीको धोखा दिया । माता पिता पुत्र मित्र स्त्री आदिकों के साथ ठगाई कर किसी को दिया, अथवा पूंजी अलाहदा रखी, अमानत रखी हुई वस्तु से इन्कार किया । पड़ी हुई चीज उठाई । इत्यादि तीजे स्थूल अदत्तादान विरमणव्रत संबंधी जो कोई अतिचार पक्ष दिवसमें सूक्ष्म या बादर जानते अजानते लगा हो वह सब मन वचन काया कर मिच्छा मि दुक्कडं ।

चौथे स्वदारा संतोष परस्त्रीगमन-विरमणव्रत के पांच अतिचार—'अप्परिगहिया इत्तर०' परस्त्रीगमन किया ।

अविवाहिता कुमारी विधवा वेश्यादिक से गमन किया। अनंगक्रीड़ा की। काम आदिकी विशेष जाग्रति की, अभिलाषा से सराग वचन कहा। अष्टमी, चौदश आदि पर्वतिथिका नियम तोड़ा। स्त्रीके अंगोपांग देखे, तीव्र अभिलाषा की। कुविकल्प चिंतवन किया। पराये नाते जोड़े। अतिक्रम व्यतिक्रम अतिचार अनाचार स्वप्नस्वप्नांतर हुआ। कुस्वप्न आया। स्त्री, नट, विट, भांड, वेश्यादिकसे हास्य किया। स्वस्त्रीमें संतोष न किया। इत्यादि चौथे स्वदारा संतोष परस्त्री गमनविरमणव्रत संबंधी जो कोई अतिचार पक्ष दिवसमें सूक्ष्म या बादर जानते अजानते लगा हो वह सब मन वचन कायाकर मिच्छा मि दुक्कडं।

पांचवें स्थूल परिग्रहपरिमाणव्रतके पांच अतिचार—'धण धन्न खित्त वत्थू०' धन धान्य क्षेत्र वास्तु सोना चांदी बर्त्तन आदि। द्विपद—दास दासी, चतुष्पद—गौ बैल घोड़ादि नव प्रकार के परिग्रहका नियम न लिया। लेकर बढ़ाया। अथवा [illegible] देखकर मूर्च्छावश माता [illegible] स्त्रीके नाम किए [illegible] का प्रमाण नहीं किए [illegible] भूलाया याद [illegible] पांचवें स्थूल प[illegible] माणव्रत संबंधी [illegible] र पक्ष दिवस[illegible]

बादर जानते अजानते लगा हो वह सब मन वचन काया कर मिच्छा मि दुक्कडं।

छट्टे दिक्परिमाणव्रत के पांच अतिचार—"गमणस्सउ परिमाणे०' ऊर्ध्वदिशि अधोदिशि तिर्यग्दिशि जाने आने के नियमित प्रमाण उपरांत भूल से गया। नियम तोड़ा प्रमाण उपरांत सांसारिक कार्यके लिये अन्य देशसे वस्तु मंगवाई अपने पास से वहां भेजी। नौका जहाज आदि द्वारा व्यापार किया। वर्षाकाल में एक ग्रामसे दूसरे ग्राममें गया। एक दिशा के प्रमाण को कम करके दूसरी दिशामें अधिक गया। इत्यादि छट्ठे दिक्परिमाण व्रतसंबंधी जो कोई अतिचार पक्ष दिवसमें सूक्ष्म या बादर जानते अजानते लगा हो वह सब मन वचन काया कर मिच्छा मि दुक्कडं।

सातवें भोगोपभोगव्रतके भोजन आश्रित पांच अतिचार और कर्म आश्रित पंद्रह अतिचार—'सच्चित्ते पडिबद्धे०' सचित्त—खान पान की वस्तु नियमसे अधिक स्वीकार की। सचित्तसे मिली हुई वस्तु खाई। तुच्छ औषधिका भक्षण किया। अपक्क आहार, दुपक्क आहार किया। कोमल इमली, बूट, भुट्टे, फलियाँ आदि वस्तु खाई। "सचित्त[1] दव्व[2] विगई[3] वाणह[4] तंबोल[5] वत्थ[6] कुसुमेसु[7]। वाहण[8] सयण[9] विलेवण[10] बंभ[11]

दिसि[12] न्हाणे[13] भत्तेसु ॥१॥ ये चौदह नियम लिये नहीं। लेकर भूलाये। बड़, पीपल, पिलंखण, कठुंबर, गूलर ये पांच फल। मदिरा मांस, शहद, मक्खन ये चार महा विगई। वरफ ओले कच्ची मिट्टी, रात्रीभोजन, बहुबीजाफल, अचार, घोलवडे, द्विदल, बैंगण, तुच्छफल, अजानाफल, चलितरस, अनंतकाय ये बाईस अभक्ष्य। सूरन-जिमीकन्द, कच्ची हलदी, सतावरी, कचानरकचूर, अदरक, कुवाँरपाठा, थोर, गिलोय, लसून, गाजर, गठा-प्याज, गोंगलु, कोमलफलफूल, पत्र, थेगी, हरा मोथा, अमृतवेल, मूली, पदबहेड़ा, आलू, कचालू, रतालू, पिंडालू आदि अनंतकाय का भक्षण किया। दिवस अस्त होने पर भोजन किया। सूर्योदय से पहले भोजन किया। तथा कर्मतः पंद्रह कर्मादान—इंगालकम्मे, वणकम्मे, साड़ीकम्मे, भाडीकम्मे, फोडीकम्मे ये पांच कर्म। दंतवाणिज्ज, लक्खवाणिज्ज, रसवाणिज्ज, केसवाणिज्ज, विसवाणिज्ज ये पांच वाणिज्ज। जंतपिल्लणकम्मे, निल्लंछनकम्मे, दवग्गिदावणिया, सरदहतलावसोसणया, असइपोसणया, ये पांच सामान्य, एवं कुल पंद्रह कर्मादान महा आरंभ किये कराये करते को अच्छा समझा। श्वान, बिल्ली आदि पोपे पाले। महा सावद्य, पापकारी, कठोर काम किया। इत्यादि सात

में भोगोपभोग विरमणव्रत संबंधी जो कोई अतिचार पक्ष दिवस में सूक्ष्म या बादर जानते अजानते लगा हो वह सब मन वचन काया कर मिच्छा मि दुक्कडं।

आठवें अनर्थदंड के पांच अतिचार—'कंदप्पे कुक्कुइए०' कंदर्प—कामाधीन होकर नट विट वेश्या आदिक से हास्य खेल, क्रीड़ा कुतूहल किया। स्त्री पुरुष के हावभाव रूप शृंगार संबंधी वार्त्ता की। विषयरस पोषक कथा की। स्त्री कथा, देश कथा, भक्त कथा, राज कथा ये चार विकथा की, पराई भांजगढ़ की, किसी की चुगलखोरी की, आर्त्त-ध्यान रौद्रध्यान ध्याया। खांडा, कटार, कशि, कुल्हाड़ी, रथ, ऊखल, मूसल, अग्नि, चक्की आदिक वस्तु दाक्षिण्यता-वश किसी को मांगी दी। पापोपदेश दिया। अष्टमी चतुर्दशी के दिन दलने पीसने का नियम तोड़ा। मूर्खता से, असंबंध वाक्य बोला। प्रमादाचरण सेवन किया। घी, तैल, दूध, दही, गुड़, छाछ आदिका भाजन खुला रखा, उसमें जीवा-दिकका नाश हुआ। वासी मक्खन रखा और तपाया। न्हाते धोते, दाँतन करते, जीव आकुलित मोरी में पानी डाला। झूले में झूला। जुआ खेला। नाटक आदि देखा। ढोर डंगर खरीदवाये। कर्कश वचन कहा, किचकिची ली। ताड़ना

तर्जना की। मत्सरता धारण की। श्राप दिया। भैंसा साँड़ मेंढ़ा, मुरगा, कुत्ते आदिक लड़वाये, या इनकी लड़ाई देखी। ऋद्धिमान् की ऋद्धि देख ईर्षा की। मिट्टी, नमक, धान, चिनोले विना कारण मसले। हरी वनस्पति खूंदी। शस्त्रादिक बनवाये। रागद्वेष के वश से एकका भला चाहा। एकका बुरा चाहा। मृत्यु की वांछा की। मैना, तोते, कबूतर, बटेर, चकोर आदि पक्षियों को पींजरे में डाला। इत्यादिक आठवे अनर्थदंड विरमणव्रत संबंधी जो कोई अतिचार पक्ष दिवस में सूक्ष्म या बादर जानते अजानते लगा हो वह सब मन वचन काया कर मिच्छा मि दुक्कडं।

नवमें सामायिकव्रतके पांच अतिचार—'तिविहे दुप्पणिहाणे०' सामायिक में संकल्प विकल्प किया। चित्त स्थिर न रखा। सावद्य वचन बोला। प्रमार्जन किये विना शरीर हलाया, इधर उधर किया। शक्ति होने पर भी सामायिक न किया। सामायिक में खुले मुंह बोला। नींद ली। विकथा की। घर संबंधी विचार किया। दीपक या बिजली का प्रकाश शरीर पर पड़ा। सचित्त वस्तु का संघटन हुआ। स्त्री तिर्यंच आदि का निरंतर परस्पर संघट्टन हुआ। मुहपत्ति संघट्टी। सामायिक अधुरा पारा, विना पारे उठा। इत्यादि नवमें

सामायिकव्रत संबंधी जो कोई अतिचार पक्ष दिवस में सूक्ष्म या बादर जानते अजानते लगा हो वह सब मन वचन काया कर मिच्छा मि दुक्कडं।

दश में देशावगासिकव्रत के पांच अतिचार—"आणवणे पेसवणे०" आणवणप्पओगे पेसवणप्पओगे सद्दाणुवाई रूवाणुवाई बहियापुग्गलपक्खेवे। नियमित भूमि में बाहर से वस्तु मंगवाई। अपने पाससे अन्यत्र भिजवाई। खुंखारा आदि शब्द करके, रूप दिखाके या कंकर आदि फेंककर अपना होना मालूम किया। इत्यादि दशमें देशावकाशिक व्रत संबंधी जो कोई अतिचार पक्ष दिवसमें सूक्ष्म या बादर जानते अजानते लगा हो वह सब मन वचन काया कर मिच्छा मि दुक्कडं।

ग्यारहवें पौषधोपवासव्रतके पांच अतिचार—"संथारुच्चार विहि०" अप्पडिलेहिअ, दुप्पडिलेहिअ सिज्जासंथारए। अप्पडिलेहिय दुप्पडिलेहिय उच्चार पासवण भूमि। पौषध लेकर सोनेकी जगह विना पूंजे प्रमार्जे सोया। स्थंडिल आदिकी भूमि भले प्रकार शोधी नहीं। लघुनीति बडीनीति करने या परठने समय "अणुजाणह जस्सग्गो" न कहा। परठे बाद तीन बार 'वोसिरे' न कहा। जिनमंदिर और उपा-

श्रयमें प्रवेश करते हुए 'निसीहि' और वाहिर नीकलते 'आवस्सही' तीन वार न कही। वस्त्र आदि उपधिकी पडिलेहणा न की। पृथ्वीकाय, अप्काय, तेउकाय, वायुकाय, वनस्पतिकाय, त्रसकायका संघट्टन हुआ। संथारा पोरिसी पढनी भूलाई। विना संथारे जमीन पर सोया। पोरिसीमें नींद ली, पारना आदिकी चिंता की। समयसर देववंदन न किया। प्रतिक्रमण न किया। पौपध देरीसे लिया और जल्दी पारा, पर्वतिथीको पोसह न लिया। इत्यादि ग्यारवें पौपध-व्रतसंबंधी जो कोई अतिचार पक्ष दिवसमें सूक्ष्म या वादर जानते अजानते लगा हो वह सव मन वचन काया कर मिच्छा मि दुक्कडं।

वारहवें अतिथि संविभाग व्रतके पांच अतिचार-"सचित्ते निक्खिवणे०" सचित्त वस्तुके संघट्टेवाला अकल्पनीय आहार पानी साधु साध्वीको दिया। देनेकी इच्छासे सदोष वस्तुको निर्दोष कही। देनेकी इच्छासे पराई वस्तुको अपनी कही। न देनेकी इच्छासे निर्दोष वस्तुको सदोष कही। न देनेकी इच्छासे अपनी वस्तुको पराई कही। गोचरीके वक्त इधर उधर हो गया। गौचरीका समय टाला। वेवक्त साधुमहाराजको प्रार्थना की। आये हुए गुणवान्‌की भक्ति न की।

शक्तिके होते हुए स्वामीवात्सल्य न किया। अन्य किसी धर्मक्षेत्रको पड़ता देख मदद न की। दीन दुःखीकी अनुकंपा न की। इत्यादि बारहवें अतिथिसंविभाग व्रतसंबंधी जो कोई अतिचार पक्ष दिवसमें सूक्ष्म या बादर जानते अजानते लगा हो वह सब मन वचन काया कर मिच्छा मि दुक्कडं।

संलेषणा के पांच अतिचार—"इहलोए परलोए०" इहलोगासंसप्पओगे। परलोगासंसप्पओगे। जीविआसंसप्पओगे। मरणासंसप्पओगे। कामभोगासंसप्पओगे। धर्मके प्रभावसे इह लोकसंबंधी राजऋद्धिभोगादिकी वांछा की। परलोकमें देवदेवेन्द्र चक्रवर्ती आदि पदवी की इच्छा की। सुखी अवस्थामें जीनेकी इच्छा की। दुःख आनेपर मरनेकी वांछा की। इत्यादि संलेषणा व्रतसंबंधी जो कोई अतिचार पक्ष दिवसमें सूक्ष्म या बादर जानते अजानते लगा हो वह सब मन वचन काया कर मिच्छा मि दुक्कडं।

तपाचार के बारह भेद—छ बाह्य छ अभ्यंतर। "अणसणमुणो अरिया०" अनशन—शक्तिके होते हुए पर्वतिथि को उपवास आदि तप न किया। ऊनोदरी—दो चार ग्रास कम न खाये। वृत्तिसंक्षेप—द्रव्य—खाने की वस्तुओं का संक्षेप न किया। रस—विगय त्याग न किया। कायक्लेश—

लोच आदि कष्ट न किया। संलिनता-अंगोपांग का संकोच न किया। पच्चक्खाण तोड़ा। भोजन करते समय एकासणा आयंबिलप्रमुखमें चौकी, पटडा, अखला आदि हिलता ठीक न किया। पच्चक्खाण पारना भूलाया, बैठते नवकार न पढ़ा। उठते पच्चक्खाण न किया। निवि, आयंबिल उपवास आदि तपमें कच्चा पानी पिया। वमन हुआ। इत्यादि बाह्य तपसंबंधी जो कोई अतिचार पक्ष दिवसमें सूक्ष्म या बादर जानते अजानते लगा हो वह सब मन वचन काया कर मिच्छा मि दुक्कडं।

अभ्यंतर तप—"पायछित्तं विणओ०" शुद्ध अंतःकरण पूर्वक गुरुमहाराजसे आलोचना न ली। गुरुकी दी हुई आलोचना संपूर्ण न की। देव गुरु संघ साधर्मिका विनय न किया। बाल वृद्ध ग्लान तपस्वी आदिकी वेयावच्च न की। वाचना, पृच्छना, परावर्त्तना, अनुप्रेक्षा, धर्मकथा लक्षण पांच प्रकारका स्वाध्याय न किया। धर्मध्यान, शुक्ल-ध्यान ध्याया नहीं। आर्त्तध्यान, रौद्रध्यान ध्याया। दुःख क्षय कर्मक्षय निमित्त दश वीस लोगस्सका काउस्सग्ग न किया। इत्यादि अभ्यंतरतप संबंधी जो कोई अतिचार पक्ष

दिवसमें सूक्ष्म या बादर जानते अजानते लगा हो वह सब मन वचन काया कर मिच्छा मि दुक्कडं।

वीर्याचारके तीन अतिचार—'अणिगूहिय बलविरिओ०' पढ़ते, गुणते, विनय, वेयावच्च, देवपूजा, सामायिक, पौषध, दान, शील, तप, भावनादिक धर्मकृत्यमें मन वचन काया-का बल वीर्य पराक्रम फोरा नहीं। विधिपूर्वक पंचांग खमा-समण न दिया। द्वादशावर्त्त वंदनकी विधि भले प्रकार न की। अन्य चित्त निरादरसे बैठा। देववंदन प्रतिक्रमणमें जल्दी की इत्यादि वीर्याचार संबंधी जो कोई अतिचार पक्ष दिवसमें सूक्ष्म या बादर जानते अजानते लगा हो वह सब मन वचन काया कर मिच्छा मि दुक्कडं।

"नाणाई अट्ठ पइवय, समसंलेहण पण पन्नर कम्मेसु।
बारस तव विरिअ तिगं, चउव्वीसं सय अइयारा॥"

"पडिसिद्धाणं करणे०" प्रतिषेध—अभक्ष्य अनंतकाय बहुबीज भक्षण, महारंभ परिग्रहादि किया। देवपूजन आदि षट्कर्म सामायिकादि छ आवश्यक विनयादिक अरिहंतकी भक्ति प्रमुख करणीय कार्य किये नहीं। जीवाजीवादिक सूक्ष्म विचार की सद्दहणा न की। अपनी कुमतिसे उत्सूत्र प्ररूपणा की। तथा प्राणातिपात, मृषावाद, अदत्तादान,

मैथुन, परिग्रह, क्रोध, मान, माया, लोभ, राग, द्वेप, कलह, अभ्याख्यान, पैशुन्य, रति, अरति, परपरिवाद, माया; मृषावाद, मिथ्यात्वशल्य, ये अठारह पापस्थान किये कराये अनुमोदे। दिनकृत्य प्रतिक्रमण, विनय, वैयावृत्य न किया और भी जो कुछ वीतरागकी आज्ञासे विरुद्ध किया, कराया या अनुमोदन किया। इन चार प्रकारके अतिचारोंमें जो कोई अतिचार पक्ष दिवसमें सूक्ष्म या बादर जानते अजानते लगा हो वह सब मन वचन काया कर मिच्छा मि दुक्कडं।

एवंकारे श्रावकधर्म सम्यक्त्व मूल बारह व्रतसंबंधी एकसो चोवीस अतिचारोंमेंसे जो कोई अतिचार पक्ष दिवसमें सूक्ष्म या बादर जानते अजाते लगा हो वह सब मन वचन काया कर मिच्छा मि दुक्कडं ॥ इति ॥

सव्वस्स वि पक्खिअ दुच्चिंतिअ दुब्भासिअ दुच्चिट्ठिअ, इच्छाकारेण संदिसह भगवन्! इच्छं, तस्स मिच्छा मि दुक्कडं।

इच्छामि खमासमणो! वंदिउं जावणिज्जाए निसीहिआए अणुजाणह मे मिउग्गहं। निसीहि, अहोकायं कायसंफासं, खमणिज्जो भे किलामो अप्पकिलंताणं बहुसुभेण भे

पक्खो वइक्कंतो ? जत्ता भे, जवणिज्जं च भे ? खामेमि खमासमणो ! पक्खिअं वइक्कम्मं आवस्सिआए पडिक्कमामि खमासमणाणं, पक्खिए आसायणाए तित्तीसन्नयराए, जं किंचि मिच्छाए मणदुक्कडाए, वयदुक्कडाए, कायदुक्कडाए, कोहाए, माणाए, मायाए लोभाए सव्वकालिआए, सव्वमिच्छोवयाराए, सव्वधम्माइक्कमणाए आसायणाए जो मे अइआरो कओ तस्स खमासमणो पडिक्कमामि निंदामि गरिहामि अप्पाणं वोसिरामि।

इच्छामि खमासमणो ! वंदिउं जावणिज्जाए निसीहिआए। अणुजाणह मे मिउग्गहं। निसीहि, अहोकायं कायसंफासं। खमणिज्जो भे किलामो। अप्पकिलंताणं बहुसुभेण भे पक्खो वइक्कंतो ? जत्ता भे ? जवणिज्जं च भे ? खामेमि खमासमणो पक्खिअं वइक्कम्मं, पडिक्कमामि, खमासमणाणं, पक्खिए आसायणाए, तित्तीसन्नयराए, जं किंचि मिच्छाए मणदुक्कडाए, वयदुक्कडाए, कायदुक्कडाए, कोहाए, माणाए, मायाए, लोभाए, सव्वकालिआए, सव्वमिच्छोवयाराए सव्वधम्माइक्कमणाए, आसायणाए, जो मे अइआरो कओ तस्स खमासमणो ! पडिक्कमामि निंदामि गरिहामि अप्पाणं वोसिरामि।

इच्छाकारेण संदिसह भगवन्! देवसियं आलोइय पडिक्कंता पत्तेयखामणेणं अब्भुट्ठिओहं, अब्भितर* पक्खिअं खामेउं? इच्छं, खामेमि पक्खिअं, एगपक्खस्स पन्नरसण्हं दिवसाणं, पन्नरसण्हं राईणं, जं किंचि अपत्तिअं परपत्तिअं भत्ते, पाणे, विणए, वेआवच्चे, आलावे, संलावे, उच्चासणे समासणे, अंतरभासाए, उवरिभासाए, जं किंचि मज्झ विणयपरिहीणं सुहुमं वा बायरं वा तुब्भे जाणह, अहं न जाणामि, तस्स मिच्छा मि दुक्कडं।

(यहां प्रत्येक जनसे खमतखामणा करके पीछे दो वांदणा देना)

इच्छामि खमासमणो वंदिउं जावणिज्जाए निसीहिआए। अणुजाणह मे मिउग्गहं। निसीहि अहोकायं कायसंफासं। खमणिज्जो भे किलामो। अप्पकिलंताणं बहुसुभेण भे पक्खो वइक्कंतो? जत्ता भे। जवणिज्जं च भे? खामेमि खमासमणो

* चउमासि प्रतिक्रमणमें "चउमासिअं खामेउं? इच्छं, खामेमि। चउमासिअं, चउण्हं मासाणं, अट्ठण्हंपक्खाणं वीसोत्तरसयं राइदिवसाणं" इस तरह बोलना और संवच्छरी प्रतिक्रमणमें "संवच्छरीअं खामेउं? इच्छं, खामेमि संवच्छरिअं, दुवालसण्हं मासाणं चउवीसण्हंपक्खाणं, तिन्निसयसट्ठि राईदिवसाणं" इस तरह बोलना चाहिये।

पक्खिअं वइक्कम्मं, आवस्सिआए, पडिक्कमामि खमासमणाणं, पक्खिए, आसायणाए, तित्तीसन्नयराए, जं किंचि मिच्छाए, मणदुक्कडाए, वयदुक्कडाए, कायदुक्कडाए, कोहाए, माणाए, मायाए, लोभाए, सव्वकालिआए, सव्वमिच्छोवयाराए, सव्वधम्माइक्कमणाए, आसायणाए, जो मे अइआरो कओ, तस्स खमासमणो पडिक्कमामि निंदामि गरिहामि, अप्पाणं वोसिरामि।

इच्छामि खमासमणो वंदिउं जावणिज्जाए निसीहिआए अणुजाणह मे मिउग्गहं। निसीहि अहोकायं कायसंफासं। खमणिज्जो भे किलामो अप्पकिलंताणं बहुसुभेण भे पक्खो वइक्कंतो? जत्ता भे? जवणिज्जं च भे? खामेमि खमासमणो! पक्खिअं वइक्कम्मं, पडिक्कमामि खमासमणाणं, पक्खिए आसायणाए, तित्तीसन्नयराए, जं किंचि मिच्छाए, मणदुक्कडाए, वयदुक्कडाए, कायदुक्कडाए, कोहाए, माणाए, मायाए, लोभाए सव्वकालिआए, सव्वमिच्छोवयाराए, सव्वधम्माइक्कमणाए आसायणाए जो मे अइआरो कओ तस्स खमासमणो पडिक्कमामि निंदामि गरिहामि अप्पाणं वोसिरामि।

भगवन् देवसिअं अलोइअ पडिक्कंता पक्खिअं पडिक्कमावेह 'इच्छं'।

करेमि भंते सामाइअं सावज्जं जोगं पच्चक्खामि। जाव नियमं पज्जुवासामि। दुविहं तिविहेणं मणेणं वायाए काएणं न करेमि न कारवेमि। तस्स भंते पडिक्कमामि निंदामि गरिहामि अप्पाणं वोसिरामि।

इच्छामि पडिक्कमिउं जो मे पक्खिओ अइयारो कओ, काइओ वाइओ माणसिओ उस्सुत्तो उम्मग्गो अकप्पो अकरणिज्जो दुज्झाओ दुव्विचिंतिओ अणायारो अणिच्छिअव्वो, असावगपाउग्गो नाणे दंसणे चरित्ताचरित्ते सुए सामाइए। तिण्हं गुत्तीणं, चउण्हं कसायाणं, पंचण्हमणुव्वयाणं, तिण्हं गुणव्वयाणं, चउण्हं सिक्खावयाणं, बारसविहस्स सावगधम्मस्स, जं खंडिअं जं विराहिअं तस्स मिच्छा मि दुक्कडं।

तस्स उत्तरीकरणेणं, पायच्छित्तकरणेणं, विसोहीकरणेणं, विसल्लीकरणेणं, पावाणं, कम्माणं, निग्घायणट्ठाए, ठामि काउस्सग्गं।

अन्नत्थ ऊससिएणं, नीससिएणं, खासिएणं, छीएणं, जंभाइएणं, उड्डुएणं, वायनिसग्गेणं, भमलिए, पित्तमुच्छाए, सुहुमेहिं अंगसंचालेहिं, सुहुमेहिं खेलसंचालेहिं, सुहुमेहिं दिट्ठिसंचालेहिं, एवमाइएहिं आगारेहिं, अभग्गो, अविराहिओ हुज्ज मे काउस्सग्गो, जाव अरिहंताणं भगवंताणं

नमुक्कारेणं न पारेमि, ताव कायं ठाणेणं मोणेणं झाणेणं अप्पाणं वोसिरामि।

(यहां सब जन काउस्सग्ग में पक्खिसूत्र सुने और एक जन खमासमण पूर्वक आदेश मांग कर सूत्र प्रकट कहे)

इच्छामि खमासमणो वंदिउं जावणिज्जाए निसीहिआए मत्थएण वंदामि। इच्छाकारेण संदिसह भगवन् पक्खिसूत्र पढुं? 'इच्छं'

(ऐसे खमासमण पूर्वक आदेश मांग कर, खड़े होकर प्रगट तीन नवकार कह कर, साधु हो तो पक्खिसूत्र कहे और साधु न हो तो श्रावक वंदित्तुसूत्र कहे)

वंदित्तु—श्रावक प्रतिक्रमणसूत्र।

वंदित्तु सव्वसिद्धे, धम्मायरिए अ सव्वसाहू अ। इच्छामि पडिक्कमिउं, सावगधम्माइआरस्स ॥ १ ॥ जो मे वयाइआरो, नाणे तह दंसणे चरित्ते अ। सुहुमो अ बायरो वा, तं निंदे तं च गरिहामि ॥ २ ॥ दुविहे परिग्गहंमि,

---

१ चउमासी प्रतिक्रमणमें 'चउमासीसूत्र पढुं' और संवच्छरी प्रतिक्रमणमें 'संवत्सरीसूत्र पढुं' ऐसे बोलना चाहिये।

सावज्जे बहुविहे अ आरंभे। कारावणे अ करणे, पडिक्कमे पक्खिअं सव्वं ॥ ३ ॥ जं बद्धमिंदिएहिं, चउहिं कसाएहिं अप्पसत्थेहिं। रागेण व दोसेण व, तं निंदे तं च गरिहामि ॥ ४ ॥ आगमणे निग्गमणे, ठाणे चंकमणे अणाभोगे। अभिओगे अ निओगे, पडिक्कमे पक्खिअं सव्वं ॥५॥ संका कंख विगिच्छा, पसंस तह संथवो कुलिंगीसु। सम्मत्तस्सइआरे, पडिक्कमे पक्खिअं सव्वं ॥ ६ ॥ छक्कायसमारंभे, पयणे अ पयावणे अ जे दोसा। अत्तट्ठा य परट्ठा उभयट्ठा चेव तं निंदे ॥ ७ ॥ पंचण्हमणुव्वयाणं, गुणव्वयाणं च तिण्हमइयारे। सिक्खाणं च चउण्हं, पडिक्कमे पक्खिअं सव्वं ॥ ८ ॥ पढमे अणुव्वयंमि, थुलगपाणाइवायविरईओ। आयरिअमप्पसत्थे, इत्थ पमायप्पसंगेणं ॥ ९ ॥ वह बंध छविच्छेए, अइभारे भत्तपाणवुच्छेए। पढमवयस्सइआरे, पडिक्कमे पक्खिअं सव्वं ॥१०॥ बीए अणुव्वयम्मि, परिथूलगअलिअवयणविरईओ। आयरिअमप्पसत्थे, इत्थ पमायप्पसंगेणं ॥ ११ ॥ सहस्सारहस्सदारे, मोसुवएसे अ कूडलेहे अ। बीअवयस्सइआरे, पडिक्कमे पक्खिअं सव्वं ॥ १२ ॥ तइए अणुव्वयंमि, थूलगपरदव्वहरणविरईओ। आयरिअमप्पसत्थे, इत्थ पमायप्पसंगेणं ॥ १३ ॥ तेनाहडप्पओगे, तप्पडिरूवे

विरुद्धगमणे अ। कूडतुलकूडमाणे, पडिक्कमे पक्खिअं सव्वं ॥ १४ ॥ चउत्थे अणुव्वयम्मि, निच्चं परदारगमणविरईओ। आयरिअमप्पसत्थे, इत्थ पमायप्पसंगेणं ॥ १५ ॥ अपरिग्गहिआ इत्तर, अणंगवीवाहतिव्वअणुरागे। चउत्थवयस्सइआरे, पडिक्कमे पक्खिअं सव्वं ॥१६॥ इत्तो अणुव्वए पंचमम्मि, आयरिअमप्पसत्थंमि। परिमाणपरिच्छेए, इत्थ पमायप्पसंगेणं ॥ १७ ॥ धण-धन्न-खित्तवत्थू, रुप्प-सुवन्ने अ कुविअपरिमाणे। दुपए चउप्पयम्मि, पडिक्कमे पक्खिअं सव्वं ॥१८॥ गमणस्स उ परिमाणे, दिसासु उड्ढं अहे अ तिरिअं च। वुड्ढि सइअंतरद्धा, पढमम्मि गुणव्वए निंदे ॥ १९ ॥ मज्जम्मि अ मंसम्मि अ, पुप्फे अ फले अ गंधमल्ले अ। उवभोगपरिभोगे, बीअम्मि गुणव्वए निंदे॥ २० ॥ सच्चित्ते पडिबद्धे, अपोलि दुप्पोलिअं च आहारे। तुच्छोसहिभक्खणया, पडिक्कमे पक्खिअं सव्वं ॥ २१ ॥ इंगालीवणसाडी, भाडीफोडी सुवज्जए कम्मं। वाणिज्जं चेव य दंत–लक्खरस–केसविसविसयं॥ २२ ॥एवं खु जंतपिल्लण–कम्मं निल्लंछणं च दवदाणं। सरदहतलायसोसं, असईपोसं च वज्जिज्जा ॥२३॥ सत्थग्गिमुसलजंतग-तणकट्ठे मंतमूल भेसज्जे। दिन्ने दवाविए वा, पडिक्कमे पक्खिअं सव्वं॥२४॥ण्हाणुव्वट्टण वन्नग,विलेवणे

सद्दरूवरसगंधे। वत्थासण आभरणे, पडिक्कमे पक्खिअं सव्वं ॥२५॥ कंदप्पे कुक्कुइए, मोहरिअहिगरण भोगअइरित्ते। दंडम्मि अणट्ठाए, तइअम्मि गुणव्वए निंदे ॥२६॥ तिविहे दुप्पणिहाणे, अणवट्ठाणे तहा सइविहूणे। सामाइअ वितह कए, पढमे सिक्खावए निंदे ॥२७॥ आणवणे पेसवणे, सद्दे रूवे अ पुग्गलक्खेवे, देसावगासियम्मि, बीए सिक्खावए निंदे ॥२८॥ संथारुच्चारविही, पमाय तह चेव भोअणाभोए, पोसहविहिविवरीए, तइए सिक्खावए निंदे ॥२९॥ सचित्ते निक्खिवणे, पिहिणे ववएसमच्छरे चेव। कालाइक्कमदाणे, चउत्थे सिक्खावए निंदे ॥३०॥ सुहिएसु अ दुहिएसु अ, जा मे अस्संजएसु अणुकंपा। रागेण व दोसेण व, तं निंदे तं च गरिहामि ॥३१॥ साहूसु संविभागो, न कओ तवचरण-करणजुत्तेसु। संते फासुअदाणे, तं निंदे तं च गरिहामि ॥३२॥ इहलोए परलोए; जीविअ मरणे अ आसंसपओगे। पंचविहो अइआरो, मा मज्झं हुज्ज मरणंते ॥३३॥ काएण काइअस्स, पडिक्कमे वाइअस्स वायाए। मणसा माणसिअस्स, सव्वस्स वयाइआरस्स ॥३४॥ वंदणवयसिक्खागा-रवेसु सन्ना-कसायदंडेसु। गुत्तीसु अ समिईसु अ, जो अइआरो अ तं निंदे ॥३५॥ सम्मद्दिट्ठी जीवो, जइ वि हु पावं समायरइ

किंचि । अप्पो सि होइ बंधो, जेण न निद्धंधसं कुणइ ॥३६॥ तं पि हु सपडिक्कमणं, सप्परिआवं सउत्तरगुणं च । खिप्पं उवसामेई, वाहि व्व सुसिक्खिओ विज्जो ॥३७॥ जहा विसं कुट्ठगयं, मंतमूलविसारया । विज्जा हणंति मंतेहिं, तो तं हवइ निव्विसं ॥३८॥ एव अट्ठविहं कम्मं, रागदोससमज्जिअं । आलोअंतो अ निंदंतो, खिप्पं हणइ सुसावओ ॥३९॥ कय-पावो वि मणुस्सो, आलोइय निंदिअ गुरुसगासे । होइ अइरेगलहुओ, ओहरिअभरु व्व भारवहो ॥४०॥ आवस्सएण एएण, सावओ जइ वि बहुरओ होइ । दुक्खाणमंतकिरिअं, काही अचिरेण कालेण ॥४१॥ आलोअणा बहुविहा, न य संभरिआ पडिक्कमणकाले । मूलगुणउत्तरगुणे, तं निंदे तं च गरिहामि ॥४२॥ तस्स धम्मस्स केवलिपन्नत्तस्स, अब्भु-ट्ठिओमि आराहणाए, विरओमि विराहणाए । तिविहेण पडिक्कंतो, वंदामि जिणे चउव्वीसं ॥४३॥ जावंति चेइआइं, उड्ढे अ अहे अ तिरिअलोए अ । सव्वाइं ताइं वंदे, इह संतो तत्थ संताइं ॥४४॥ जावंत केवि साहु, भरहेरवयमहा-विदेहे अ । सव्वेसिं तेसिं पणओ, तिविहेण तिदंडविरयाणं ॥४५॥ चिरसंचियपावपणासणीइ, भवसयसहस्समहणीए । चउव्वीसजिणविणिग्गय-कहाइ वोलंतु मे दिअहा ॥४६॥ मम

मंगलमरिहंता, सिद्धा साहू सुअं च धम्मो अ। सम्मद्दिट्ठी देवा, दिंतु समाहिं च बोहिं च ॥४७॥ पडिसिद्धाणं करणे, किच्चाणमकरणे पडिक्कमणं। असद्दहणे अ तहा, विवरीयपरूवणाए अ ॥४८॥ खामेमि सव्वजीवे, सव्वे जीवा खमंतु मे। मित्ती मे सव्वभूएसु, वेरं मज्झ न केणई ॥४९॥ एवमहं आलोइअ, निंदिअ गरहिअ दुगंछिअं सम्मं। तिविहेण पडिक्कंतो, वंदामि जिणे चउव्वीसं ॥५०॥

(अब नमो अरिहंताणं प्रकट कह कर सब काउस्सग्ग पारे और खड़े होकर बोलने वाला तीन नवकार गिन कर बैठ जाय। पीछे दाहिना घुटना खड़ा करके तीन नवकार, तीन करेमि भंते और इच्छामि पडिक्कमिउं कहकर वंदित्तु। सूत्र कहे)

णमो अरिहंताणं। णमो सिद्धाणं। णमो आयरियाणं। णमो उवज्झायाणं। णमो लोए सव्वसाहूणं। एसो पंच णमुक्कारो। सव्वपावप्पणासणो। मंगलाणं च सव्वेसिं। पढमं हवइ मंगलं।

करेमि भंते सामाइअं, सावज्जं जोगं पच्चक्खामि। जाव-नियमं पज्जुवासामि, दुविहं तिविहेणं मणेणं वायाए काएणं न करेमि न कारवेमि। तस्स भंते! पडिक्कमामि निंदामि गरिहामि अप्पाणं वोसिरामि।

इच्छामि पडिक्कमिउं । जो मे पक्खिओ अइआरो कओ, काइओ वाइओ माणसिओ उस्सुत्तो उम्मग्गो अकप्पो अकरणिज्जो दुज्झाओ दुव्विचिंतिओ अणायारो अणिच्छिअव्वो असावग-पाउग्गो नाणे दंसणे चरित्ताचरित्ते सुए समाइए, तिण्हं गुत्तिणं, चउण्हं कसायाणं, पंचण्हमणुव्वयाणं, तिण्हं गुणव्वयाणं, चउण्हं सिक्खावयाणं, बारसविहस्स सावगधम्मस्स, जं खंडिअं जं विराहिअं तस्स मिच्छा मि दुक्कडं।

वंदित्तु सव्वसिद्धे, धम्मायरिए अ सव्वसाहू अ। इच्छामि पडिक्कमिउं सावग धम्माइआरस्स ॥१॥ जो मे वयाइआरो, नाणे तह दंसणे चरित्ते अ । सुहुमो अ बायरो वा, तं निंदे तं च गरिहामि ॥२॥ दुविहे परिग्गहंमि, सावज्जे बहुविहे अ आरंभे । कारावणे अ करणे, पडिक्कमे पक्खिअं सव्वं ॥३॥ जं बद्धमिंदिएहिं, चउहिं कसाएहिं अप्पसत्थेहिं । रागेण व दोसेण व, तं निंदे तं च गरिहामि ॥४॥ आगमणे निग्गमणे, ठाणे चंक्कमणे अणाभोगे । अभिओगे अ निओगे, पडिक्कमे पक्खिअं सव्वं ॥४॥ संका कंख विगिच्छा, पसंस तह संथवो कुलिंगीसु । सम्मत्तस्सइआरे, पडिक्कमे पक्खिअं सव्वं ॥६॥ छक्कायसमारंभे, पयणे अ पयावणे अ जे दोसा । अत्तट्ठा य परट्ठा, उभयट्ठा चेव तं निंदे ॥ ७ ॥ पंचण्हमणुव्वयाणं,

गुणव्वयाणं च तिण्हमइयारे। सिक्खाणं च चउण्हं, पडिक्कमे पक्खिअं सव्वं ॥ ८ ॥ पढमे अणुव्वयंमि, थूलगपाणाइवाय-विरईओ। आयरिअमप्पसत्थे, इत्थ पमायप्पसंगेणं॥९॥ वह बंध छविच्छेए, अइभारे भत्तपाणवुच्छेए। पढमवयस्सइआरे, पडिक्कमे पक्खिअं सव्वं ॥१०॥ बीए अणुव्वयम्मि, परिथूलग-अलिअवयणविरईओ। आयरिअमप्पसत्थे, इत्थ पमायप्पसंगेणं ॥ ११ ॥ सहस्सारहस्सदारे, मोसुवएसे अ कूडलेहे अ। बीअवयस्सइआरे, पडिक्कमे पक्खिअं सव्वं ॥ १२ ॥ तइए अणुव्वयंमि, थूलगपरदव्वहरणविरईओ । आयरिअमप्पसत्थे, इत्थ पमायप्पसंगेणं ॥ १३ ॥ तेनाहडप्पओगे, तप्पडिरूवे विरुद्धगमणे अ। कूडतुलकूडमाणे, पडिक्कमे पक्खिअं सव्वं ॥ १४ ॥ चउत्थे अणुव्वयम्मि, निच्चं परदारगमणविरईओ। आयरिअमप्पसत्थे, इत्थ पमायप्पसंगेणं ॥ १५ ॥ अपरिग्गहिआ इत्तर, अणंगवीवाहतिव्वअणुरागे। चउत्थवयस्सइआरे, पडिक्कमे पक्खिअं सव्वं ॥१६॥ इत्तो अणुव्वए पंचमम्मि, आयरिअमप्पसत्थंमि। परिमाणपरिच्छेए, इत्थ पमायप्पसंगेणं ॥ १७ ॥ धण-धन्न-खित्तवत्थू, रुप्प-सुवन्ने अ कुविअपरिमाणे। दुपए चउप्पयम्मि, पडिक्कमे पक्खिअं सव्वं ॥१८॥ गमणस्स उ परिमाणे, दिसासु उड्ढं अहे अ तिरिअं च।

वुड्ढि सइअंतरद्धा, पढमम्मि गुणव्वए निंदे ॥ १९ ॥ मज्जम्मि अ मंसम्मि अ, पुप्फे अ फले अ गंधमल्ले अ। उवभोगपरिभोगे, बीअम्मि गुणव्वए निंदे॥ २० ॥ सच्चित्ते पडिबद्धे, अपोलि दुप्पोलिअं च आहारे। तुच्छोसहिभक्खणया, पडिक्कमे पक्खिअं सव्वं ॥ २१ ॥ इंगालीवणसाडी, भाडीफोडी सुवज्जए कम्मं। वाणिज्जं चेव य दंत-लक्खरस-केसविसविसयं॥ २२ ॥ एवं खु जंतपिल्लण-कम्मं निल्लंछणं च दवदाणं। सरदहतलायसोसं, असईपोसं च वज्जिज्जा ॥२३॥ सत्थग्गिमुसलजंतग-तणकट्ठे मंतमूल भेसज्जे। दिन्ने दवाविए वा, पडिक्कमे पक्खिअं सव्वं॥२४॥ण्हाणुव्वट्टण वन्नग, विलेवणे सद्दरूवरसगंधे। वत्थासण आभरणे, पडिक्कमे पक्खिअं सव्वं ॥२५॥ कंदप्पे कुक्कुइए, मोहरिअहिगरण भोगअइरित्ते। दंडम्मि अणट्ठाए, तइअम्मि गुणव्वए निंदे ॥२६॥ तिविहे दुप्पणिहाणे, अणवट्ठाणे तहा सइविहूणे। सामाइअ वितह कए, पढमे सिक्खावए निंदे ॥२७॥ आणवणे पेसवणे, सद्दे रूवे अ पुग्गलक्खेवे, देसावगासियम्मि, बीए सिक्खावए निंदे ॥२८॥ संथारुच्चारविही, पमाय तह चेव भोअणाभोए, पोसहविहिविवरीए, तइए सिक्खावए निंदे ॥२९॥ सच्चित्ते निक्खिवणे, पिहिणे ववएसमच्छरे चेव। कालाइक्कमदाणे,

चउत्थे सिक्खावए निंदे ॥३०॥ सुहिएसु अ दुहिएसु अ, जा मे अस्संजएसु अणुकंपा। रागेण व दोसेण व, तं निंदे तं च गरिहामि ॥३१॥ साहूसु संविभागो, न कओ तवचरण-करणजुत्तेसु। संते फासुअदाणे, तं निंदे तं च गरिहामि ॥३२॥ इहलोए परलोए; जीविअ मरणे अ आसंसपओगे। पंचविहो अइआरो, मा मज्झं हुज्ज मरणंते ॥३३॥ काएण काइअस्स, पडिक्कमे वाइअस्स वायाए। मणसा माणसिअस्स, सव्वस्स वयाइआरस्स ॥३४॥ वंदणवयसिक्खागा-रवेसु सन्ना-कसायदंडेसु। गुत्तीसु अ समिईसु अ, जो अइआरो अ तं निंदे ॥३५॥ सम्मदिट्ठी जीवो, जइ वि हु पावं समायरइ किंचि। अप्पो सि होइ बंधो, जेण न निद्धंधसं कुणइ ॥३६॥ तं पि हु सपडिक्कमणं, सप्परिआवं सउत्तरगुणं च। खिप्पं उवसामेई, वाहि व्व सुसिक्खिओ विज्जो ॥३७॥ जहा विसं कुट्ठगयं, मंतमूलविसारया। विज्जा हणंति मंतेहिं, तो तं हवइ निव्विसं ॥३८॥ एवं अट्ठविहं कम्मं, रागदोसमज्जिअं। आलोअंतो अ निंदंतो, खिप्पं हणइ सुसावओ ॥३९॥ कय-पावो वि मणुस्सो, आलोइय निंदिअ गुरुसगासे। होइ अइरेगलहुओ, ओहरिअभरु व्व भारवहो ॥४०॥ आवस्सएण एएण, सावओ जइ वि बहुरओ होइ। दुक्खाणमंतकिरिअं,

काही अचिरेण कालेण ॥४१॥ आलोअणा बहुविहा, न य संभरिआ पडिक्कमणकाले। मूलगुणउत्तरगुणे, तं निंदे तं च गरिहामि ॥४२॥ तस्स धम्मस्स केवलिपन्नत्तस्स, अब्भुट्ठिओमि आराहणाए, विरओमि विराहणाए। तिविहेण पडिक्कंतो, वंदामि जिणे चउव्वीसं ॥४३॥ जावंति चेइआइं, उड्ढे अ अहे अ तिरिअलोए अ। सव्वाइं ताइं वंदे, इह संतो तत्थ संताइं ॥४४॥ जावंत केवि साहु, भरहेरवयमहाविदेहे अ। सव्वेसिं तेसिं पणओ, तिविहेण तिदंडविरयाणं ॥४५॥ चिरसंचियपावपणासणीइ, भवसयसहस्समहणीए। चउव्वीसजिणविणिग्गय-कहाइ वोलंतु मे दिअहा ॥४६॥ मम मंगलमरिहंता, सिद्धा साहू सुअं च धम्मो अ। सम्मद्दिट्ठी देवा, दिंतु समाहिं च बोहिं च ॥४७॥ पडिसिद्धाणं करणे, किच्चाणमकरणे पडिक्कमणं। असद्दहणे अ तहा, विवरीयपरूवणाए अ ॥४८॥ खामेमि सव्वजीवे, सव्वे जीवा खमंतु मे। मित्ती मे सव्वभूएसु, वेरं मज्झ न केणई ॥४९॥ एवमहं आलोइअ, निंदिअ गरहिअ दुगंछिअं सम्मं। तिविहेण पडिक्कंतो, वंदामि जिणे चउव्वीसं ॥५०॥

इच्छामि खमासमणो वंदिउं जावणिज्जाए निसीहिआए मत्थएण वंदामि। इच्छाकारेण संदिसह भगवन्।

मूलगुण-उत्तरगुण-विशुद्धि-निमित्तं काउस्सग्ग करूं ? इच्छं ।

(अब खड़े होकर बोले)

करेमि भंते सामाइअं सावज्जं जोगं पच्चक्खामि। जाव-नियमं पज्जुवासामि । दुविहं तिविहेणं मणेणं वायाए काएणं न करेमि न कारवेमि । तस्स भंते पडिक्कमामि निंदामि गरिहामि अप्पाणं वोसिरामि ।

इच्छामि ठामि काउस्सग्गं, जो मे पक्खिओ अइयारो कओ, काइओ वाइओ माणसिओ उस्सुत्तो उम्मग्गो अकप्पो अकरणिज्जो दुज्झाओ दुव्विचिंतिओ अणायारो अणिच्छिअव्वो, असावगपाउग्गो नाणे दंसणे चरित्ताचरित्ते सुए सामाइए । तिण्हं गुत्तीणं, चउण्हं कसायाणं, पंचण्हमणुव्वयाणं, तिण्हं गुणव्वयाणं, चउण्हं सिक्खावयाणं, बारसविहस्स सावगधम्मस्स, जं खंडिअं जं विराहिअं तस्स मिच्छा मि दुक्कडं ।

तस्स उत्तरीकरणेणं, पायच्छित्तकरणेणं, विसोहीकरणेणं, विसल्लीकरणेणं, पावणं, कम्माणं, निग्घायणट्ठाए, ठामि काउस्सग्गं ।

अन्नत्थ ऊससिएणं, नीससिएणं, खासिएणं, छीएणं, जंभाइएणं, उड्डुएणं, वायनिसग्गेणं, भमलिए, पित्त-

मुच्छाए, सुहुमेहिं अंगसंचालेहिं, सुहुमेहिं खेलसंचालेहिं, सुहुमेहिं दिट्ठिसंचालेहिं, एवमाइएहिं आगारेहिं, अभग्गो, अविराहिओ हुज्ज मे काउस्सग्गो, जाव अरिहंताणं भगवंताणं नमुक्कारेणं न पारेमि, तावकायं ठाणेणं मोणेणं झाणेणं अप्पाणं वोसिरामि।

(१२ बारह* लोगस्स का या ४८ अड़तालीस नवकार का काउस्सग्ग करना पारके प्रगट लोगस्स कहना।)

लोगस्स उज्जोअगरे, धम्मतित्थयरे जिणे। अरिहंते कित्तइस्सं, चउवीसं पि केवली ॥ १ ॥ उसभ-मजिअं च वंदे, संभवमभिणंदणं च सुमइं च। पउमप्पहं सुपासं, जिणं च चंदप्पहं वंदे ॥ २ ॥ सुविहिं च पुप्फदंतं, सीअल-सिज्जंस-वासुपूज्जं च। विमलमणंतं च जिणं, धम्मं संतिं च वंदामि ॥ ३ ॥ कुंथुं अरं च मल्लिं, वन्दे मुणिसुव्वयं नमि-जिणं च। वंदामि रिट्ठनेमिं, पासं तह वद्धमाणं च ॥ ४ ॥ एवं मए अभिथुआ, विहुयरयमला पहीणजरमरणा। चउ-वीसं पि जिणवरा, तित्थयरा मे पसीयंतु ॥ ५ ॥ कित्तिय-

* चउमासी प्रतिक्रमणमें वीस लोगस्स या अस्सी नवकार का काउस्सग्ग करना और संवत्सरी प्रतिक्रमणमें ४० लोगस्स और एक नवकार का काउस्सग्ग करना।

वंदिय-महिया, जे ए लोगस्स उत्तमा सिद्धा। आरुग्गबोहि-लाभं, समाहिवरमुत्तमं दिंतु॥ ६॥ चंदेसु निम्मलयरा, आइच्चेसु अहियं पयासयरा। सागरवरगंभीरा, सिद्धा सिद्धिं मम दिसंतु॥ ७॥

(अब बैठकर मुहपत्ति पडिलेहना और वंदना दो देना।)

इच्छामि खमासमणो वंदिउं जावणिज्जाए निसीहिआए। अणुजाणह मे मिउग्गहं। निसीहि, अहोकायं कायसंफासं। खमणिज्जो भे किलामो। अप्पकिलंताणं बहुसुभेण भे पक्खो वइक्कंतो? जत्ता भे। जवणिज्जं च भे? खामेमि खमासमणो पक्खिअं वइक्कम्मं, आवस्सिआए, पडिक्कमामि खमासमणाणं, पक्खिए, आसायणाए, तित्तीसन्नयराए, जं किंचि मिच्छाए, मणदुक्कडाए, वयदुक्कडाए, कायदुक्कडाए, कोहाए, माणाए, मायाए, लोभाए, सव्वकालिआए, सव्वमिच्छोवयाराए, सव्वधम्माइक्कमणाए, आसायणाए, जो मे अइआरो कओ, तस्स खमासमणो पडिक्कमामि निंदामि गरिहामि, अप्पाणं वोसिरामि।

इच्छामि खमासमणो वंदिउं जावणिज्जाए निसीहिआए अणुजाणह मे मिउग्गहं। निसीहि अहोकायं कायसंफासं। खमणिज्जो भे किलामो अप्पकिलंताणं बहुसुभेण भे पक्खो

वइक्कंतो? जत्ता भे? जवणिज्जं च भे? खामेमि खमासमणो! पक्खिअं वइक्कम्मं, पडिक्कमामि खमासमणाणं, पक्खिए आसायणाए, तित्तीसन्नयराए, जं किंचि मिच्छाए, मणदुक्कडाए, वयदुक्कडाए, कायदुक्कडाए, कोहाए, माणाए, मायाए, लोभाए सव्वकालिआए, सव्वमिच्छोवयाराए, सव्वधम्माइक्कमणाए आसायणाए जो मे अइआरो कओ तस्स खमासमणो पडिक्कमामि निंदामि गरिहामि अप्पाणं वोसिरामि।

इच्छाकारेण संदिसह भगवन्! समाप्त खामणेणं अब्भुट्ठिओहं, अब्भिंतर* पक्खिअं खामेउं? इच्छं, खामेमि पक्खिअं, एगपक्खस्स पन्नरसण्हं दिवसाणं, पन्नरसण्हं राईणं, जं किंचि अपत्तिअं परपत्तिअं भत्ते, पाणे, विणए, वेआवच्चे, आलावे, संलावे, उच्चासणे समासणे, अंतरभासाए उवरिभासाए, जं किंचि मज्झ विणयपरिहीणं सुहुमं

---

* चउमासि प्रतिक्रमणमें "चउमासिअं खामेउं? इच्छं, खामेमि। चउमासिअं, चउण्हं मासाणं, अट्ठण्हंपक्खाणं वीसोत्तरसयं राइदिवसाणं" इस तरह बोलना चाहिये और संवच्छरी प्रतिक्रमणमें "संवच्छरीअं खामेउं? इच्छं, खामेमि संवच्छरिअं, दुवालसण्हं मासाणं, चउवीसण्हं पक्खाणं, तिन्निसयसट्ठि राईदिवसाणं" इस तरह बोलना चाहिये।

वा बायरं वा तुब्भे जाणह, अहं न जाणामि, तस्स मिच्छा मि दुक्कडं।

इच्छामि खमासमणो वंदिउं जावणिज्जाए निसीहिआए मत्थएण वंदामि। इच्छाकारेण संदिसह भगवन् पक्खि खामणा खामुं? 'इच्छं'

(ऐसे कहकर नीचे मूजब चार खामणा देना)

इच्छामि खमासमणो वंदिउं जावणिज्जाए निसीहिआए मत्थएण वंदामि।

(कहकर दाहिना हाथ चरवला या आसन पर रखकर मस्तक झुका कर तीन नवकार बोले)

१—नमो अरिहंताणं, नमो सिद्धाणं, नमो आयरियाणं, नमो उवज्झायाणं, नमो लोए सव्वसाहूणं, एसो पंच नमुकारो, सव्वपावप्पणासणो, मंगलाणं च सव्वेसिं, पढमं हवइ मंगलं।

२—इच्छा खमासमणो वंदिउं जावणिज्जाए निसीहिआए मत्थएण वंदामि।

नमो अरिहंताणं, नमो सिद्धाणं, नमो आयरियाणं, नमो उवज्झायाणं, नमो लोए सव्वसाहूणं, एसो पंच नमुक्कारो, सव्वपावप्पणासणो, मंगलाणं च सव्वेसिं, पढमं हवइ मंगलं।

(तीन वार कहे)

३–इच्छामि खमासमणो वंदिउं जावणिज्जाए निसीहिआए मत्थएण वंदामि।

नमो अरिहंताणं, नमो सिद्धाणं, नमो आयरियाणं, नमो उवज्झायाणं, नमो लोए सव्वसाहूणं, एसो पंच नमुक्कारो, सव्वपावप्पणासणो, मंगलाणं च सव्वेसिं, पढमं हवइ मंगलं।

(तीन वार कहे)

४–इच्छामि खमासमणो वंदिउं जावणिज्जाए निसीहिआए मत्थएण वंदामि।

नमो अरिहंताणं, नमो सिद्धाणं, नमो आयरियाणं, नमो उवज्झायाणं, नमो लोए सव्वसाहूणं, एसो पंच नमुक्कारो, सव्वपावप्पणासणो, मंगलाणं च सव्वेसिं, पढमं हवइ मंगलं।

(तीन वार कहे)

'इच्छं' इच्छामो अणुसट्ठिं—पुण्यवंतो पांखी के निमित्त एक उपवास, दो आयंबिल, तीन निवि, चार एकासना, दो

१—चउमासिय में इससे दूना अर्थात्—दो उपवास, चार आयंबिल, छह निवि, आठ एकासना और चार हजार सज्झाय करी दो उपवास की पेठ पूरना। संवच्छरिय में तिगुना—तीन उपवास, छह आयंबिल, नौ निवि बारह एकासना और छह हजार सज्झाय करी तीन उपवास की पेठ पूरना। इस प्रकार कहना।

हजार सज्झाय करी एक उपवास की पेठ पूरना, और पक्खि के स्थानमें देवसिय कहना।

(यहां यथाशक्ति तप किया हो तो 'पइट्ठिय' कहना और जिन्होंने तप न किया वे 'वहत्ति' कहे। अब देवसिक प्रतिक्रमणमें वंदित्तासूत्र कहने बाद जो विधि है इस मूजब कहना चाहिये)

इच्छामि खमासमणो ! वंदिउं जावणिज्जाए निसीहिआए अणुजाणह मे मिउग्गहं। निसीहि, अहोकायं कायसंफासं, खमणिज्जो भे किलामो अप्पकिलंताणं बहुसुभेण भे दिवसो वइक्कंतो ? जत्ता भे, जवणिज्जं च भे ? खामेमि खमासमणो ! देवसिअं वइक्कम्मं आवस्सिआए पडिक्कमामि खमासमणाणं, देवसिआए आसायणाए तित्तीसन्नयराए, जं किंचि मिच्छाए मणदुक्कडाए, वयदुक्कडाए, कायदुक्कडाए, कोहाए, माणाए, मायाए लोभाए सव्वकालिआए, सव्वमिच्छोवयाराए, सव्वधम्माइक्कमणाए आसायणाए जो मे अइआरो कओ तस्स खमासमणो पडिक्कमामि निंदामि गरिहामि अप्पाणं वोसिरामि।

इच्छामि खमासमणो ! वंदिउं जावणिज्जाए निसीहिआए। अणुजाणह मे मिउग्गहं। निसीहि, अहोकायं कायसंफासं खमणिज्जो भे किलामो। अप्पकिलंताणं बहुसुभेण भे

दिवसो वइक्कंतो ? जत्ता भे ? जवणिज्जं च भे ? खामेमि खमासमणो देवसिअं वइक्कम्मं, पडिक्कमामि, खमासमणाणं, देवसिआए आसायणाए, तित्तीसन्नयराए, जं किंचि मिच्छाए मणदुक्कडाए, वयदुक्कडाए, कायदुक्कडाए, कोहाए, माणाए, मायाए, लोभाए, सव्वकालिआए, सव्वमिच्छोवयाराए सव्वधम्माइक्कमणाए, आसायणाए, जो मे अइआरो कओ तस्स खमासमणो! पडिक्कमामि निंदामि गरिहामि अप्पाणं वोसिरामि।

इच्छाकारेण संदिसह भगवन्! अब्भुट्ठिओमि, अब्भिंतर देवसिअं खामेउं ? इच्छं, खामेमि देवसिअं, जं किंचि अपत्तिअं परपत्तिअं भत्ते, पाणे विणए, वेयावच्चे, आलावे, संलावे, उच्चासणे, समासणे अंतरभासाए, उवरिभासाए, जं किंचि मज्झ विणयपरिहीणं सुहुमं वा बायरं वा तुब्भे जाणह अहं न जाणामि तस्स मिच्छा मि दुक्कडं।

इच्छामि खमासमणो वंदिउं जावणिज्जाए निसीहिआए अणुजाणह मे मिउग्गहं निसीहि, अहोकायं, कायसंफासं, खमणिज्जो मे किलामो, अप्पकिलंताणं, बहुसुभेण मे दिवसो वइक्कंतो, जत्ता भे, जवणिज्जं च भे, खामेमि खमासमणो, देवसिअं वइक्कम्मं, आवस्सिआए पडिक्कमामि खमासमणाणं

देवसिआए आसायणाए, तित्तीसन्नयराए जं किंचि मिच्छाए, मणदुक्कडाए, वयदुक्कडाए, कायदुक्कडाए, कोहाए, माणाए मायाए, लोभाए, सव्वकालिआए, सव्वमिच्छोवयाराए, सव्व-धम्माइक्कमणाए, आसायणाए, जो मे अइयारो कओ तस्स खमासमणो पडिक्कमामि निंदामि गरिहामि अप्पाणं वो-सिरामि।

इच्छामि खमासमणो वंदिउं जावणिज्जाए निसीहिआए अणुजाणह मे मिउग्गहं निसीहि, अहोकायं, कायसंफासं, खमणिज्जो मे किलामो अप्पकिलंताणं, बहुसुभेण मे दिवसो वइक्कंतो, जत्ता भे जवणिज्जं च भे, खामेमि खमासमणो, देवसिअं वइक्कम्मं, पडिक्कमामि खमासमणाणं देवसिआए आसायणाए, तित्तीसन्नयराए जं किंचि मिच्छाए, मणदुक्क-डाए, वयदुक्कडाए, कायदुक्कडाए कोहाए, माणाए, मायाए, लोभाए, सव्वकालिआए, सव्वमिच्छोवयाराए, सव्वधम्माइक्कमणाए, आसायणाए, जो मे अइयारो कओ तस्स खमासमणो पडिक्कमामि निंदामि गरिहामि अप्पाणं वोसिरामि।

(अब खड़े होकर कहना चाहिये)

आयरिअ-उवज्झाए, सीसे साहम्मिए कुलगणे अ।

बोहिलाभवत्तिआए, निरुवसग्गवत्तिआए, सद्धाए, मेहाए, धिईए, धारणाए, अणुप्पेहाए वड्ढमाणीए ठामि काउस्सग्गं।

अन्नत्थ ऊससिएणं, नीससिएणं, खासिएणं, छीएणं, जंभाइएणं, उड्डुएणं, वायनिसग्गेणं भमलिए, पित्तमुच्छाए, सुहुमेहिं अंगसंचालेहिं, सुहुमेहिं खेलसंचालेहिं, सुहुमेहिं दिट्ठिसंचालेहिं, एवमाइएहिं आगारेहिं अभग्गो अविराहिओ हुज्ज मे काउस्सग्गो। जाव अरिहंताणं भगवंताणं नमुक्कारेणं न पारेमि तावकायं ठाणेणं मोणेणं झाणेणं अप्पाणं वोसिरामि।

(एक लोगस्स का या चार नवकार का काउस्सग्ग करना)

पुक्खरवरदिवड्ढे, धायइसंडे अ जंबुदीवे अ। भरहेरवय विदेहे, धम्माइगरे नमंसामि ॥ १ ॥ तमतिमिरपडलविद्धंसणस्स सुरगणनरिंदमहियस्स। सीमाधरस्स वंदे, पप्फोडिअ-मोहजालस्स ॥२॥ जाई–जरामरणसोगपणासणस्स, कल्लाण-पुक्खलविसालसुहावहस्स। को देवदाणवनरिंदगणच्चिअस्स, धम्मस्स सारमुवलब्भ करे पमायं ॥ ३ ॥ सिद्धे भो पयओ णमो जिणमए नंदी सया संजमे, देवंनागसुवन्नकिन्नरगण-स्सब्भूअभावच्चिए। लोगो जत्थ पइट्ठिओ जगमिणं तेलुक्कम-चासुरं, धम्मो वड्ढउ सासओ विजयओ धम्मुत्तरं वड्ढउ ॥४॥ सुअस्स भगवओ करेमि काउस्सग्गं, वंदणवत्तिआए, पूअणवत्तिआए सक्कारवत्तिआए, सम्माणवत्तिआए, बोहि-लाभवत्तिआए निरुवसग्गवत्तिआए, सद्धाए मेहाए धिईए धारणाए अणुप्पेहाए, वड्ढमाणिए ठामि काउस्सग्गं।

अन्नत्थ ऊससिएणं, नीससिएणं, खासिएणं, छीएणं, जंभाइएणं, उड्डुएणं, वायनिसग्गेणं भमलिए, पित्तमुच्छाए, सुहुमेहिं अंगसंचालेहिं, सुहुमेहिं खेलसंचालेहिं, सुहुमेहिं दिट्ठिसंचालेहिं, एवमाइएहिं आगारेहिं अभग्गो अविराहिओ हुज्ज मे काउस्सग्गो। जाव अरिहंताणं भगवंताणं नमुक्कारेणं न पारेमि ताव कायं ठाणेणं मोणेणं झाणेणं अप्पाणं वोसिरामि।

(एक लोगस्स का या चार नवकार का काउस्सग्ग करना)

सिद्धाणं बुद्धाणं पारगयाणं परंपरगयाणं। लोअग्गमुवगयाणं, नमो सयासव्वसिद्धाणं॥ जो देवाण वि देवो, जं देवा पंजली नमंसंति। तं देवदेवमहिअं, सिरसा वंदे महावीरं॥ इक्को वि नमुक्कारो, जिणवरवसहस्स वद्धमाणस्स। संसारसागराओ, तारेइ नरं व नारिं वा॥ उज्जितसेलसिहरे, दिक्खानाणं निसीहिआ जस्स। तं धम्मचक्कवट्टिं, अरिट्ठनेमिं नमंसामि॥ चत्तारि अट्ठ दस दो, य वंदिया जिणवरा चउव्वीसं। परमट्ठ निट्ठिअट्ठा, सिद्धा सिद्धिं मम दिसंतु॥

सुअदेवयाए करेमि काउस्सग्गं। अन्नत्थ ऊससिएणं, नीससिएणं, खासिएणं, छीएणं, जंभाइएणं, उड्डुएणं, वायनिसग्गेणं, भमलिए, पित्तमुच्छाए, सुहुमेहिं अंगसंचालेहिं, सुहुमेहिं खेलसंचालेहिं, सुहुमेहिं दिट्ठिसंचालेहिं, एवमा-

इएहिं, आगारेहिं, अभग्गो, अविराहिओ हुज्ज मे काउस्सग्गो । जाव अरिहंताणं, भगवंताणं, नमुक्कारेणं, न पारेमि ताव कायं ठाणेणं मोणेणं झाणेणं अप्पाणं वोसिरामि ॥

(एक नवकार का काउस्सग्ग करना। पीछे 'नमोऽर्हत्सिद्धाचार्योपाध्याय सर्वसाधुभ्यः' कहकर सुअदेवया की थुइ कहना)

सुवर्णशालिनी देयाद्, द्वादशांगी जिनोद्भवा । श्रुतदेवी सदा मह्य-मशेष-श्रुत-सम्पदम् ॥ १ ॥

भुवनदेवयाए करेमि काउस्सग्गं । अन्नत्थ ऊससिएणं, नीससिएणं, खासिएणं, छीएणं, जंभाइएणं, उड्डुएणं, वायनिसग्गेणं, भमलिए, पित्तमुच्छाए, सुहुमेहिं अंगसंचालेहिं सुहुमेहिं खेलसंचालेहिं, सुहुमेहिं दिट्ठिसंचालेहिं, एवमाइएहिं आगारेहिं, अभग्गो अविराहिओ हुज्झ मे काउस्सग्गो । जाव अरिहंताणं, भगवंताणं, नमुक्कारेणं न पारेमि तावकायं ठाणेणं मोणेणं झाणेणं अप्पाणं वोसिरामि ।

(एक नवकार का काउस्सग्ग कर "नमोऽर्हत्सिद्धाचार्योपाध्याय सर्वसाधुभ्यः" कहकर भुवनदेवताकी थुइ कहना)

चतुर्वर्णाय सङ्घाय देवी भुवनवासिनी । निहत्य दुरितान्येपा, करोतु सुखमक्षयम् ॥ १ ॥

खित्तदेवयाए करेमि काउस्सग्गं। अन्नत्थ ऊससिएणं, नीससिएणं, खासिएणं, छीएणं, जंभाइएणं, उड्डुएणं, वायनिसग्गेणं, भमलिए, पित्तमुच्छाए, सुहुमेहिं अंगसंचालेहिं, सुहुमेहिं खेलसंचालेहिं, सुहुमेहिं दिट्ठिसंचालेहिं, एवमाइएहिं आगारेहिं अभग्गो अविराहिओ, हुज्ज मे काउस्सग्गो। जाव अरिहंताणं भगवंताणं, नमुक्कारेणं, न पारेमि ताव कायं ठाणेणं मोणेणं झाणेणं अप्पाणं वोसिरामि।

(एक नवकार का काउस्सग्ग कर "नमोऽर्हत्सिद्धाचार्योपाध्याय सर्वसाधुभ्यः" कहकर चेत्रदेवताकी थुइ कहना)

यासां क्षेत्रगताः सन्ति, साधवः श्रावकादयः। जिनाज्ञां साधयन्तस्ता, रक्षन्तु क्षेत्रदेवताः॥ १॥

णमो अरिहंताणं, णमो सिद्धाणं, णमो आयरियाणं, णमो उवज्झायाणं, णमो लोए सव्वसाहूणं, एसो पंच णमुक्कारो, सव्वपावप्पणासणो, मंगलाणं च सव्वेसिं, पढमं हवइ मंगलं।

(अब बैठकर छट्ठा आवश्यककी मुहपत्ति पडिलेहना बाद वंदना दो देना।)

इच्छामि खमासमणो! वंदिउं जावणिज्जाए निसीहिआए, अणुजाणह मे मिउग्गहं। निसीहि, अहोकायं, कायसंफासं, खमणिज्जो मे किलामो अप्पकिलंताणं बहुसुभेण भे

दिवसो वइक्कंतो ? जत्ता भे, जवणिज्जं च भे ? खामेमि खमासमणो ! देवसिअं वइक्कम्मं आवस्सिआए पडिक्कमामि खमासमणाणं, देवसिआए आसायणाए तित्तीसन्नयराए, जं किंचि मिच्छाए मणदुक्कडाए, वयदुक्कडाए, कायदुक्कडाए, कोहाए, माणाए, मायाए लोभाए सव्वकालिआए, सव्वमिच्छोवयाराए, सव्वधम्माइक्कमणाए आसायणाए जो मे अइआरो कओ तस्स खमासमणो पडिक्कमामि निंदामि गरिहामि अप्पाणं वोसिरामि।

इच्छामि खमासमणो ! वंदिउं जावणिज्जाए निसीहिआए। अणुजाणह मे मिउग्गहं। निसीहि, अहोकायं कायसंफासं खमणिज्जो भे किलामो। अप्पकिलंताणं बहुसुभेण भे दिवसो वइक्कंतो ? जत्ता भे ? जवणिज्जं च भे ? खामेमि खमासमणो देवसिअं वइक्कम्मं, पडिक्कमामि, खमासमणाणं, देवसिआए आसायणाए, तित्तीसन्नयराए, जं किंचि मिच्छाए मणदुक्कडाए, वयदुक्कडाए, कायदुक्कडाए, कोहाए, माणाए, मायाए, लोभाए, सव्वकालिआए, सव्वमिच्छोवयाराए सव्वधम्माइक्कमणाए, आसायणाए, जो मे अइआरो कओ तस्स खमासमणो ! पडिक्कमामि निंदामि गरिहामि अप्पाणं वोसिरामि।

"इच्छामो अणुसट्ठिं नमो खमासमणाणं, नमोऽर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधुभ्यः"

(कहकर पुरुषवर्ग 'नमोऽस्तुवर्द्धमानाय' कहे और स्त्रीवर्ग 'संसारदावा' की तीन थुई कहे)

नमोस्तु वर्द्धमानाय, स्पर्द्धमानाय कर्म्मणा। तज्जयावाप्तमोक्षाय, परोक्षाय कुतीर्थिनां। येषां विकचारविन्दराज्या, ज्यायः क्रमकमलावलिं दधत्या। सदृशैरिति सङ्गतं प्रशस्यं, कथितं सन्तु शिवाय ते जिनेन्द्राः। कषायतापार्दितजन्तुनिर्वृत्तिं, करोति यो जैनमुखाम्बुदोद्गतः। स शुक्रमासोद्भववृष्टिसन्निभो, दधातु तुष्टिं मयि विस्तरो गिराम्॥ ३॥

संसार दावानल-स्तुति।

संसारदावानलदाहनीरं, संमोहधूलीहरणे समीरं। मायारसादारणसारसीरं, नमामि वीरं गिरिसारधीरं॥ १॥ भावावनामसुरदानवमानवेन, चूलाविलोलकमलावलि मालितानि। सम्पूरिताभिनतलोकसमीहितानि, कामं नमामि जिनराजपदानि तानि॥ २॥ बोधागाधं सुपदपदवीनीरपूराभिरामं, जीवाहिंसाऽविरललहरीसंगमागाहदेहं। चूलावेलं गुरुगममणीसंकुलं दूरपारं, सारं वीरागमजलनिधिं सादरं साधु सेवे॥ ३॥

नमोत्थुणं अरिहंताणं भगवंताणं, आइगराणं, तित्थयराणं, सयंसंबुद्धाणं, पुरिसुत्तमाणं,पुरिससीहाणं, पुरिसवरपुंडरीआणं, पुरिसवरगंधहत्थीणं, लोगुत्तमाणं, लोगनाहाणं, लोगहिआणं, लोगपईवाणं, लोगपज्जोअगराणं, अभयदयाणं, चक्खुदयाणं, मग्गदयाणं, सरणदयाणं, बोहिदयाणं, धम्मदयाणं, धम्मदेसयाणं, धम्मनायगाणं, धम्मसारहीणं, धम्मवरचाउरंतचक्कवट्टीणं, अप्पडिहयवरनाणदंसण-धराणं, विअट्टछउमाणं जिणाणं जावयाणं, तिन्नाणं तारयाणं, बुद्धाणं बोहयाणं, मुत्ताणं मोअगाणं, सव्वन्नूणं सव्वदरिसीणं, सिवमयलमरुअमणंतमक्खय मव्वाबाहमपुणरावित्ति–सिद्धिगइनामधेयं, ठाणं संपत्ताणं, नमो जिणाणं, जिअभयाणं। जे अ अईआ सिद्धा, जे अ भविस्संति णागए काले। संपइ अ वट्टमाणा, सव्वे तिविहेण वंदामि ॥

इच्छामि खमासमणो वंदिउं जावणिज्जाए निसीहिआए मत्थएण वंदामि, इच्छाकारेण संदिसह भगवन् स्तवन भणुं ? इच्छं।

(ऐसे कहकर 'नमोऽर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधुभ्यः' कहकर अजितशांति स्तवन कहे.)

॥ अथ अजितशांति स्तवन ॥

अजिअं जिअसव्वभयं, संतिं च पसंतसव्वगयपावं। जयगुरु संतिगुणकरे, दो वि जिणवरे पणिवयामि॥ १॥ गाहा। ववगयमंगुलभावे, ते हं विउलतवनिम्मलसहावे। निरुवममहप्पभावे, थोसामि सुदिट्ठसब्भावे ॥ २ ॥ गाहा ॥ सव्वदुक्खप्पसंतीणं, सव्वपावप्पसंतिणं, सया अजिअसंतीणं, नमो अजिअसंतिणं ॥ ३ ॥ सिलोगो ॥ अजियजिण सुहप्पवत्तणं, तव पुरिसुत्तम नामकित्तणं। तह य धिइमइप्पवत्तणं, तव य जिणुत्तम संति कित्तणं ॥ ४ ॥ मागहिआ ॥ किरिआविहिसंचिअकम्मकिलेसविमुक्खयरं, अजिअं निचिअं च गुणेहिं महामुणिसिद्धिगयं। अजिअस्स य संति महामुणिणो वि अ संतिकरं, सययं मम निव्वुइकारणयं च नमंसणयं ॥ ५ ॥ आलिंगणयं॥ पुरिसा जइ दुक्खवारणं, जइ अ विमग्गह सुक्खकारणं। अजिअं संतिं च भावओ, अभयकरे सरणं पवज्जहा ॥ ६ ॥ मागहिआ ॥ अरइरइतिमिरविरहिअमुवरयजरमरणं, सुर असुर गरुलभुयगवइपययपणिवइअं। अजिअमहमवि अ सुनयनयनिउणमभयकरं, सरणमुवसरिअ भुविदिविजमहिअं सययमुवणमे॥ ७॥ संगययं ॥ तं च जिणुत्तममुत्तमनित्तमसत्तधरं, अज्जवमद्दवखंतिविमुत्तिसमाहिनिहिं। संतिकरं

पणमामि दमुत्तमतित्थयरं, संतिमुणी मम संतिसमाहिवरं दिसउ ॥ ८ ॥ सोवाणयं ॥ सावत्थिपुव्वपत्थिवं च वरहत्थिमत्थयपसत्थवित्थिन्नसंथिअं, थिरसरिच्छवच्छं मयगललीलायमाणवरगंधहत्थिपत्थाणपत्थियं संथवारिहं। हत्थिहत्थबाहुं धंतकणगरुअगनिरुवहयपिंजरं पवरलक्खणोवचिअसोमचारुरूवं, सुइसुहमणाभिरामपरमरमणिज्जवरदेवदुंदुहिनिनायमहुरयरसुहगिरं ॥ ९ ॥ वेड्ढओ ॥ अजिअं जिआरिगणं, जिअसव्वभयं भवोहरिउं । पणमामि अहं पयओ, पावं पसमेउ मे भयवं ॥ १० ॥ रासालुद्धओ ॥ कुरुजणवयहत्थिणाउरनरीसरो पढमं तओ महाचक्कवट्टिभोए महप्पभावो, जो बावत्तरिपुरवरसहस्सवरनगरनिगमजणवयवई, बत्तीसारायवरसहस्साणुआयमग्गो। चउदसवररयणनवमहानिहिचउसट्ठिसहस्सपवरजुवईण सुंदरवई, चुलसीहयगयरहसयसहस्ससामी, छण्णवइगामकोडिसामी आसिज्जो भारहंमि भयवं ॥ ११ ॥ वेड्ढओ ॥ तं संतिं संतिकरं, संतिण्णं सव्वभया । संतिं थुणामि जिणं, संतिं विहेउ मे ॥ १२ ॥ रासानंदियं । इक्खाग विदेहनरीसर नरवसहा मुणिवसहा । नवसारयससिसकलाणण, विगयतमा विहुअरया । अजिउत्तम तेअगुणेहिं महामुणिअमिअबला विउलकुला । पणमामि ते भवभयमूरण जगसरणा मम सरणं

॥ १३ ॥ चित्तलेहा ॥ देवदाणविंदचंदसूरवंद हट्ठतुट्ठजिट्ठ-परम,-लट्ठरूव धंतरुप्प-पट्ट-सेअ-सुद्ध-निद्ध-धवल- । दंतपंति संति सत्तिकित्तिमुत्तिजुत्तिगुत्तिपवर, दित्ततेअवंद धेअ सव्व-लोअभाविअप्पभाव णेअ पइस मे समाहिं ॥१४॥ नारायओ ॥ विमलससिकलाइरेअसोमं, वितिमिरसूरकराइरेअतेअं । तिअसव-इगणाइरेअरूवं, धरणिधरप्पवराइरेअसारं ॥१५॥ कुसुमलया ॥ सत्ते अ सया अजिअं, सारीरे अ बले अजिअं । तवसंजमे अ अजिअं, एस थुणामि जिणं अजिअं ॥१६॥ भुअगपरिरंगिअं ॥ सोमगुणेहिं पावइ न तं नवसरयससी, तेअगुणेहिं पावइ न तं नवसरयरवी । रूवगुणेहिं पावइ न तं तिअसगणवई, सारगुणेहिं पावइ न तं धरणिधरवई ॥१७॥ खिज्जिअयं ॥ तित्थवरपवत्तयं तमरयरहिअं, धीरजणथुअच्चिअं चुअकलिकलुसं । संतिसुहप्प-वत्तयं तिगरणपयओ, संतिमहं महामुणिं सरणमुवणमे ॥ १८ ॥ ललिअयं ॥ विणओणयसिरिरइअंजलिरिसिगणसंथुअं थिमिअं, विबुहाहिवधणवइनरवइथुअमहिअच्चिअं बहुसो । अइरुग्गयसरयदिवायरसमहिअसप्पभं तवसा, गयणंगणवियरण-समुइअचारणवंदिअं सिरसा ॥ १९ ॥ किसलयमाला ॥ असुरगरुलपरिवंदिअं, किन्नरोरगणमंसिअं । देवकोडिसयसं-थुअं, समणसंघपरिवंदिअं ॥२०॥ सुमुहं ॥ अभयं अणहं, अरयं

अरुयं। अजिअं अजिअं, पयओ पणमे ॥ २१ ॥ विज्जुविल-सिअं ॥ आगया वरविमाणदिव्वकणग,-रहतुरयपहकरसएहिं हुलिअं। ससंभमोअरणखुभिअलुलिअचल,-कुंडलंगयतिरीड-सोहंतमउलिमाला ॥२२॥ वेड्ढओ ॥ जं सुरसंघा सासुरसंघा वेरविउत्ता भत्तिसुजुत्ता, आयरभूसिअसंभमपिंडिअसुट्ठुसु-विम्हिअसव्वबलोघा। उत्तमकंचणरयणपरूविअभासुरभूसणभा-सुरिअंगा, गायसमोणय भत्तिवसागय पंजलिपेसियसीसपणामा ॥ २३ ॥ रयणमाला ॥ वंदिऊण थोऊण तो जिणं, तिगु-णमेव य पुणो पयाहिणं। पणमिऊण य जिणं सुरासुरा, पमुइआ सभवणाइं तो गया ॥ २४ ॥ खित्तयं ॥ तं महा-मुणिमहंपि पंजली, रागदोसभयमोह-वज्जिअं। देवदाणवन-रिंदवंदिअं, संतिमुत्तममहातवं नमे ॥ २५ ॥ खित्तयं ॥ अंबरंतरविआरणिआहिं, ललिअहंसवहुगामिणि आहिं। पीण-सोणिथणसालिणिआहिं, सकलकमलदललोअणिआहिं ॥२६॥ दीवयं ॥ पीणनिरंतरथणभरविणमियगायलयाहिं, मणिकंच-णपसिढिलमेहलसोहिअसोणितडाहिं। वरखिंखिणिणेउरसतिल-यवलयविभूसणिआहिं, रइकरचउरमणोहरसुंदरदंसणिआहिं ॥ २७ ॥ चित्तक्खरा ॥ देवसुंदरीहिं पायवंदिआहिं वंदिआ य जस्स ते सुविक्कमा कमा, अप्पणो निडालएहि मंडणो-

इणप्पगारएहिं केहिं केहिं वि । अवंगतिलयपत्तलेहनामएहिं चिल्लएहिं संगयंगयाहिं, भत्तिसंनिविट्ठवंदणागयाहिं हुंति ते वंदिआ पुणो पुणो ॥ २८ ॥ नारायओ ॥ तमहं जिणचंदं, अजिअं जिअमोहं। धुअसव्वकिलेसं, पयओ पणमामि ॥२९॥ नंदिअयं ॥ थुअवंदिअस्सा रिसिगणदेवगणेहिं, तो देववहुहिं पयओ पणमिअस्सा । जस्स जगुत्तमसासणअस्सा, भत्तिवसागयपिंडिअआहिं, देववरच्छरसाबहुआहिं सुरवर रइगुण पंडिअआहिं ॥३०॥ भासुरयं ॥ वंससद्दतंतितालमेलिए तिउक्खराभिरामसद्दमीसए कए अ, सुइसमाणणे अ सुद्धसज्जगीअपायजालघंटिआहिं । वलयमेहलाकलावनेउराभिरामसद्दमीसए कए अ, देवनट्टिआहिं हावभावविब्भमप्पगारएहिं नच्चिऊण अंगहारएहिं वंदिआ य जस्स ते सुविक्कमा कमा तयं तिलोअ-सव्वसत्त संतिकारयं, पसंतसव्वपावदोसमेस हं नमामि संतिमुत्तमं जिणं ॥ ३१ ॥ नारायओ ॥ छत्तचामरपडागजूअजवमंडिआ, झयवरमगरतुरयसिरिवच्छसुलंछणा। दीवसमुद्दमंदरदिसागयसोहिआ, सत्थिअवसहसीहरहचक्कवरंकिया ॥३२॥ ललिअयं ॥ सहावलट्ठा समप्पइट्ठा, अदोसदुट्ठा गुणेहिं जिट्ठा। पसायसिट्ठा तवेण पुट्ठा, सिरीहिं इट्ठा रिसीहिं जुट्ठा ॥ ३३ ॥ वाणवासिआ ॥ ते तवेण धुअसव्वपावया, सव्वलोअहिअमूलपावया । संथुआ

अजिअसंतिपायया, हुंतु मे सिवसुहाणदायया ॥३४॥ अपरांतिका ॥ एवं तव वलविउलं, थुअं मए अजिअसंतिजिणजुअलं । ववगयकम्मरयमलं, गइं गयं सासयं विउलं ॥ ३५ ॥ गाहा ॥ तं वहुगुणप्पसायं, मुक्खसुहेण परमेण अविसायं । नासेउ मे विसायं, कुणउ अ परिसा वि अ पसायं ॥३६॥ गाहा ॥ तं मोएउ अ नंदिं, पावेउ अ नंदिसेणमभिनंदिं । परिसा वि य सुहनंदिं मम य दिसउ संजमे नंदिं ॥ ३७ ॥ गाहा ॥ पक्खिअ चाउम्मासिअ, संवच्छरिए अवस्स भणिअव्वो । सो अव्वो सव्वेहिं, उवसग्गनिवारणो एसो ॥ ३८ ॥ जो पढइ जो अ निसुणइ, उभओकालंपि अजिअ संतिथयं । न हु हुंति तस्स रोगा, पुव्वुप्पन्ना विनासंति ॥ ३९ ॥ जइ इच्छह परमपयं, अहवा किंत्तिं सुवित्थडं भुवणे । तातेलुक्कुद्धरणे, जिणवयणे आयरं कुणह ॥ ४० ॥ गाहा ॥ इति ॥

इच्छामि खमासमणो वंदिउं जावणिज्जाए निसीहिआए मत्थएण वंदामि । श्री आचार्य जी मिश्र ।

इच्छामि खमासमणो वंदिउं जावणिज्जाए निसीहिआए मत्थएण वंदामि । उपाध्याय जी मिश्र ।

इच्छामि खमासमणो वंदिउं जावणिज्जाए निसीहिआए मत्थएण वंदामि । सर्वसाधु जी मिश्र ।

(अब खड़ा होकर बोलना चाहिये)

इच्छामि खमासमणो वंदिउं जावणिज्जाए निसीहिआए मत्थएण वंदामि । इच्छाकारेण संदिसह भगवन् ! देवसिअपायच्छित्तविसोहणत्थं काउस्सग्ग करूं ? इच्छं । देवसिअपायच्छित्तविसोहणत्थं करेमि काउस्सग्गं ।

अन्नत्थ ऊससिएणं, नीससिएणं, खासिएणं, छीएणं, जंभाइएणं, उड्डुएणं, वायनिसग्गेणं, भमलिए, पित्त-मुच्छाए, सुहुमेहिं अंगसंचालेहिं, सुहुमेहिं खेलसंचालेहिं, सुहुमेहिं दिट्ठिसंचालेहिं, एवमाइएहिं आगारेहिं, अभग्गो, अविराहिओ हुज्ज मे काउस्सग्गो, जाव अरिहंताणं भगवंताणं नमुक्कारेणं न पारेमि, ताव कायं ठाणेणं मोणेणं झाणेणं अप्पाणं वोसिरामि ।

(चार लोगस्स का या सोलह नवकार का काउस्सग्ग करना पारके प्रगट लोगस्स कहना ।)

लोगस्स उज्जोअगरे, धम्मतित्थयरे जिणे । अरिहंते कित्तइस्सं, चउवीसं पि केवली ॥ उसभमजिअं च वंदे, संभव-मभिणंदणं च सुमइं च । पउमप्पहं सुपासं, जिणं च चंदप्पहं वंदे ॥ सुविहिं च पुप्फदंतं, सीअल सिज्जंस वासुपुज्जं च । विमलमणंतं च जिणं, धम्मं संतिं च वंदामि ॥ कुंथुं अरं च

मल्लिं, वंदे मुणिसुव्वयं नमिजिणं च। वंदामि रिट्ठनेमिं, पासं तह वद्धमाणं च॥ एवं मए अभिथुआ, विहुयरयमला पहीण-जरमरणा। चउवीसं पि जिणवरा, तित्थयरा मे पसीयंतु॥ कित्तियवंदियमहिया, जे ए लोगस्स उत्तमा सिद्धा। आरुग्ग बोहिलाभं, समाहिवरमुत्तमं दिंतु॥ चंदेसु निम्मलयरा, आइच्चेसु अहियं पयासयरा। सागरवरगंभीरा, सिद्धा सिद्धिं मम दिसंतु।

इच्छामि खमासमणो वंदिउं जावणिज्जाए निसीहिआए मत्थएण वंदामि। इच्छाकारेण संदिसह भगवन् खुद्दोपद्दव उड्डावण निमित्तं करेमि काउस्सग्गं।

अन्नत्थ ऊससिएणं, नीससिएणं, खासिएणं, छीएणं, जंभाइएणं, उड्डुएणं, वायनिसग्गेणं, भमलिए, पित्तमुच्छाए, सुहुमेहिं अंगसंचालेहिं, सुहुमेहिं खेलसंचालेहिं, सुहुमेहिं दिट्ठिसंचालेहिं, एवमाइएहिं आगारेहिं अभग्गो अविराहिओ हुज्ज मे काउस्सग्गो। जाव अरिहंताणं भगवंताणं नमुक्कारेणं न पारेमि तावकायं ठाणेणं मोणेणं झाणेणं अप्पाणं वोसिरामि।

(चार लोगस्स या सोलह नवकार का काउस्सग्ग करना)

लोगस्स उज्जोअगरे, धम्मतित्थयरे जिणे। अरिहंते

कित्तइस्सं, चउवीसं पि केवली ॥ १ ॥ उसभ-मजिअं च वंदे, संभवमभिणंदणं च सुमइं च । पउमप्पहं सुपासं, जिणं च चंदप्पहं वंदे ॥ २ ॥ सुविहिं च पुप्फदंतं, सीअल-सिज्जंस-वासुपुज्जं च । विमलमणंतं च जिणं, धम्मं संतिं च वंदामि ॥ ३ ॥ कुंथुं अरं च मल्लिं, वन्दे मुणिसुव्वयं नमि-जिणं च । वंदामि रिट्ठनेमिं, पासं तह वद्धमाणं च ॥ ४ ॥ एवं मए अभिथुआ, विहुयरयमला पहीणजरमरणा । चउ-वीसं पि जिणवरा, तित्थयरा मे पसीयंतु ॥ ५ ॥ कित्तिय-वंदिय-महिया, जे ए लोगस्स उत्तमा सिद्धा । आरुग्गबोहि-लाभं, समाहिवरमुत्तमं दिंतु ॥ ६ ॥ चंदेसु निम्मलयरा, आइच्चेसु अहियं पयासयरा । सागरवरगंभीरा, सिद्धा सिद्धिं मम दिसंतु ॥ ७ ॥

इच्छामि खमासमणो वंदिउं जावणिज्जाए निसीहिआए मत्थएण वंदामि । इच्छाकारेण संदिसह भगवन् चैत्य-वंदन करूं ? 'इच्छं' ।

श्री सेढीतटिनीतटे पुरवरे श्रीस्तम्भने स्वर्गिरौ, श्री-पूज्याभयदेवसूरिविबुधा-धीशैः समारोपितः । संसिक्तः स्तुतिभिर्जलैः शिवफलैः स्फूर्जत्फणापल्लवः, पार्श्वः कल्पतरुः स मे प्रथयतां नित्यं मनोवाञ्छितम् ॥ १ ॥ आधिव्याधिहरो

देवो, जीरावल्ली शिरोमणिः। पार्श्वनाथो जगन्नाथो, नत-नाथो नृणां श्रिये ॥ २ ॥

नमोऽत्थुणं अरिहंताणं भगवंताणं, आइगराणं तित्थय-राणं सयंसंबुद्धाणं। पुरिसुत्तमाणं पुरिससीहाणं, पुरिसवर पुंडरीआणं, पुरिसवर-गंधहत्थीणं। लोगुत्तमाणं लोगनाहाणं लोगहिआणं लोगपईवाणं लोगपज्जोअगराणं। अभयदयाणं चक्खुदयाणं मग्गदयाणं, सरणदयाणं, बोहिदयाणं, धम्मद-याणं, धम्मदेसयाणं, धम्मनायगाणं, धम्मसारहीणं, धर्मवर-चाउरंतचक्कवट्टीणं, अप्पडिहयवरनाणदंसणधराणं, विअट्ट-छउमाणं, जिणाणं जावयाणं, तिन्नाणं तारयाणं, बुद्धाणं बोहयाणं, मुत्ताणं मोअगाणं, सव्वन्नूणं सव्वदरिसीणं, सिव-मयलमरूअमणंतमक्खयमव्वाबाहमपूणरावित्ति। सिद्धिगइ-नामधेयं, ठाणं संपत्ताणं, नमो जिणाणं, जिअभयाणं। जे अ अईआ सिद्धा, जे अ भविस्संति णागए काले। संपइअ वट्टमाणा, सव्वे तिविहेण वंदामि।

जावंति चेइआइं, उड्ढे अ अहे अ तिरि अ लोए अ। सव्वाइं ताइं वंदे, इह संतो तत्थ संताइं ॥ १ ॥

जावंत के वि साहू, भरहेरवय महाविदेहे अ। सव्वेसिं तेसिं पणओ, तिविहेण तिदंडविरयाणं ॥ १ ॥

नमोऽर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधुभ्यः॥

उवसग्गहरं पासं, पासं वंदामि कम्मघणमुक्कं। विसहर-विसनिन्नासं, मंगलकल्लाण-आवासं॥१॥ विसहर फुल्लिंगमंतं, कंठे धारेइ जो सया मणुओ। तस्स गहरोगमारी, दुट्ठजरा जंति उवसामं॥ २ ॥ चिट्ठउ दूरे मंतो, तुज्झ पणामो वि बहुफलो होइ। नरतिरिएसु वि जीवा, पावंति न दुक्खदोगच्चं॥ ३ ॥ तुह सम्मत्ते लद्धे, चिंतामणिकप्पपायवब्भहिए। पावंति अविग्घेणं, जीवा अयरामरं ठाणं ॥४॥ इअ संथुओ महायस, भत्तिब्भरनिब्भरेण हिअएण। ता देव दिज्जबोहिं, भवे भवे पासजिणचंद॥ ५ ॥

जय वीअराय! जगगुरु!, होउ ममं तुह पभावओ भयवं। भवनिव्वेओ मग्गाणुसारिआ इट्ठफलसिद्धी॥ १ ॥ लोगविरुद्धचाओ, गुरुजणपूआ परत्थकरणं च। सुहगुरुजोगो तव्वयण सेवणा आभवमखंडा॥ २ ॥

इच्छामि खमासमणो! वंदिउं जावणिज्जाए निसीहिआए मत्थएण वंदामि।

सिरि-थंभणय-ट्ठिय-पाससामिणो सेस तित्थसामीणं। तित्थसमुन्नइकारणं सुरासुराणं च सव्वेसिं॥ १ ॥ एसिमहं

सरणत्थं, काउस्सग्गं करेमि सत्तीए। भत्तीए गुणसुट्ठियस्स संघस्स समुन्नइ-निमित्त ॥ २ ॥

(अब खड़े होकर बोलना चाहिये)

श्रीथंभणा पार्श्वनाथजी आराधवा निमित्तं करेमि काउस्सग्गं। वंदणवत्तिआए, पूअणवत्तिआए, सक्कारवत्तिआए, सम्माणवत्तिआए, बोहिलाभवत्तिआए, निरुवसग्गवत्तिआए, सद्धाए, मेहाए, धिईए, धारणाए, अणुप्पेहाए, वड्ढमाणिए ठामि काउस्सग्गं।

अन्नत्थ ऊससिएणं, नीससिएणं, खासिएणं, छीएणं, जंभाइएणं, उड्डुएणं, वायनिसग्गेणं, भमलिए, पित्तमुच्छाए, सुहुमेहिं अंगसंचालेहिं, सुहुमेहिं खेलसंचालेहिं, सुहुमेहिं दिट्ठिसंचालेहिं, एवमाइएहिं, आगारेहिं, अभग्गो, अविराहिओ, हुज्ज मे काउस्सग्गो। जाव अरिहंताणं भगवंताणं, नमुक्कारेणं, न पारेमि, तावकायं, ठाणेणं, मोणेणं, झाणेणं अप्पाणं वोसिरामि।

(चार लोगस्स का या सोलह नवकार का काउस्सग्ग करना)

लोगस्स उज्जोअगरे, धम्मतित्थयरे जिणे। अरिहंते कित्तइस्सं, चउवीसं पि केवली ॥ १ ॥ उसभ-मजिअं च वंदे, संभवमभिणंदणं च सुमइं च। पउमप्पहं सुपासं, जिणं

च चंदप्पहं वंदे ॥ २ ॥ सुविहिं च पुप्फदंतं, सीअल-सिज्जंस-वासुपूज्जं च । विमलमणंतं च जिणं, धम्मं संतिं च वंदामि ॥ ३ ॥ कुंथुं अरं च मल्लिं, वन्दे मुणिसुव्वयं नमि-जिणं च । वंदामि रिट्ठनेमिं, पासं तह वद्धमाणं च ॥ ४ ॥ एवं मए अभिथुआ, विहुअरयमला पहीणजरमरणा । चउ-वीसं पि जिणवरा, तित्थयरा मे पसीयंतु ॥ ५ ॥ कित्तिय-वंदिय-महिया, जे ए लोगस्स उत्तमा सिद्धा । आरुग्गबोहि-लाभं, समाहिवरमुत्तमं दिंतु ॥ ६ ॥ चंदेसु निम्मलयरा, आइच्चेसु अहियं पयासयरा । सागरवरगंभीरा, सिद्धा सिद्धिं मम दिसंतु ॥ ७ ॥

इच्छामि खमासमणो वंदिउं जावणिज्जाए निसीहिआए मत्थएण वंदामि । श्रीचौराशिगच्छ शृंगारहार जंगमयुगप्रधान भट्टारक दादाजी श्रीजिनदत्तसूरिजी चारित्र चूड़ामणिजी आराधवा निमित्तं करेमि काउस्सग्गं ।

अन्नत्थ ऊससिएणं, नीससिएणं, खासिएणं, छीएणं, जंभाइएणं, उड्डुएणं, वायनिसग्गेणं, भमलिए, पित्तमुच्छाए, सुहुमेहिं अंगसंचालेहिं, सुहुमेहिं खेलसंचालेहिं, सुहुमेहिं दिट्ठिसंचालेहिं, एवमाइएहिं आगारेहिं अभग्गो अविराहिओ हुज्ज मे काउस्सग्गो । जाव अरिहंताणं भगवंताणं नमुक्का-

रेणं न पारेमि तावकायं, ठाणेणं मोणेणं, झाणेणं, अप्पाणं वोसिरामि ।

(चार नवकार का काउस्सग्ग करना)

लोगस्स उज्जोअगरे, धम्मतित्थयरे जिणे । अरिहंते कित्तइस्सं, चउवीसं पि केवली ॥ उसभमजिअं च वंदे, संभव-मभिणंदणं च सुमइं च । पउमप्पहं सुपासं, जिणं च चंदप्पहं वंदे ॥ सुविहिं च पुप्फदंतं, सीअल सिज्जंस-वासुपुज्जं च । विमलमणंतं च जिणं, धम्मं संतिं च वंदामि ॥ कुंथुं अरं च मल्लिं, वंदे मुणिसुव्वयं नमिजिणं च । वंदामि रिट्ठनेमिं, पासं तह वद्धमाणं च ॥ एवं मए अभिथुआ, विहुयरयमला पहीण-जरमरणा । चउवीसं पि जिणवरा, तित्थयरा मे पसीयंतु ॥ कित्तियवंदियमहिया, जे ए लोगस्स उत्तमा सिद्धा । आरुग्ग बोहिलाभं, समाहिवरमुत्तमं दिंतु ॥ चंदेसु निम्मलयरा, आइच्चेसु अहियं पयासयरा । सागरवरगंभीरा, सिद्धा सिद्धिं मम दिसंतु ।

इच्छामि खमासमणो वंदिउं जावणिज्जाए निसीहिआए मत्थएण वंदामि । श्रीचौराशिगच्छ श्रृङ्गारहार जंगमयुगप्रधान भट्टारक दादाजी श्रीजिनकुशलसूरिजी चारित्र चूड़ामणिजी आराधना निमित्तं करेमि काउस्सग्गं ।

अन्नत्थ ऊससिएणं, नीससिएणं, खासिएणं, छीएणं, जंभाइएणं, उड्डुएणं, वायनिसग्गेणं, भमलिए, पित्त-मुच्छाए, सुहुमेहिं अंगसंचालेहिं, सुहुमेहिं खेलसंचालेहिं, सुहुमेहिं दिट्ठिसंचालेहिं, एवमाइएहिं, आगारेहिं अभग्गो, अविराहिओ हुज्ज मे काउस्सग्गो, जाव अरिहंताणं भगवंताणं नमुक्कारेणं न पारेमि, ताव कायं ठाणेणं मोणेणं झाणेणं अप्पाणं वोसिरामि।

(चार नवकार का काउस्सग्ग करना)

लोगस्स उज्जोअगरे, धम्मतित्थयरे जिणे । अरिहंते कित्तइस्सं, चउवीसं पि केवली ॥ १ ॥ उसभमजिअं च वंदे, संभवमभिणंदणं च सुमइं च। पउमप्पहं सुपासं, जिणं च चंदप्पहं वंदे ॥ २ ॥ सुविहिं च पुप्फदंतं, सीअलसिज्जंस-वासुपुज्जं च । विमलमणंतं च जिणं, धम्मं संतिं च वंदामि ॥ ३ ॥ कुंथुं अरं च मल्लिं, वंदे मुणिसुव्वयं नमिजिणं च । वंदामि रिट्ठनेमिं, पासं तह वद्धमाणं च ॥ ४ ॥ एवं मए अभिथुआ, विहुयरयमला पहीणजरमरणा । चउवीसं पि जिणवरा, तित्थयरा मे पसीयंतु ॥ ५ ॥ कित्तियवंदिय-महिया, जे ए लोगस्स उत्तमा सिद्धा । आरुग्गबोहिलाभं, समाहिवरमुत्तमं दिंतु ॥ ६ ॥ चंदेसु निम्मलयरा,

आइच्चेसु अहियं पयासयरा। सागरवरगंभीरा, सिद्धा सिद्धिं मम दिसंतु ॥ ७ ॥

(अब नीचे बैठकर बांया गोड़ा ऊंचा करके चैत्यवंदन करे)

इच्छामि खमासमणो वंदिउं जावणिज्जाए निसीहिआए मत्थएण वंदामि । इच्छाकारेण संदिसह भगवन् चैत्य-वंदन करूं ? 'इच्छं' ।

चउक्कसायपडिमल्लुल्लूरणु, दुज्जयमयणबाणमुसुमूरणु । सरसपिअंगुवन्नु गयगामिउ, जयउ पासु भुवणत्तयसामिउ ॥ १ ॥ जसु तणुकंतिकडप्प सिणिद्धउ, सोहइ फणिमणिकिरणा लिद्धउ, नं नवजलहरतडिल्लयलंछिउ, सो जिणु पासु पयच्छउ वंछिउ ॥ २ ॥

अर्हन्तो भगवन्त इन्द्रमहिताः सिद्धाश्च सिद्धिस्थिता, आचार्या जिनशासनोन्नतिकराः पूज्या उपाध्यायकाः । श्री-सिद्धान्तसुपाठका मुनिवरा रत्नत्रयाराधकाः, पञ्चैते परमेष्ठिनः प्रतिदिनं कुर्वन्तु वो मङ्गलम् ॥ १ ॥

नमोत्थुणं अरिहंताणं भगवंताणं ॥ १ ॥ आइगराणं, तित्थयराणं, सयंसंबुद्धाणं ॥ २ ॥ पुरिसुत्तमाणं, पुरिससीहाणं, पुरिसवरपुंडरीआणं, पुरिसवरगंधहत्थीणं ॥ ३ ॥ लोगुत्तमाणं, लोगनाहाणं, लोगहिआणं, लोगपईवाणं, लोग-

पज्जोअगराणं ॥४॥ अभयदयाणं, चक्खुदयाणं, मग्गदयाणं, सरणदयाणं, बोहिदयाणं ॥ ५ ॥ धम्मदयाणं, धम्मदेसआणं, धम्मनायगाणं, धम्मसारहीणं, धम्मवरचाउरंतचक्कवट्टीणं ॥ ६ ॥ अप्पडिहयवरनाणदंसणधराणं, विअट्टछउमाणं ॥ ७ ॥ जिणाणं जावयाणं, तिन्नाणं तारयाणं, बुद्धाणं बोहयाणं, मुत्ताणं मोअगाणं ॥ ८ ॥ सव्वन्नूणं सव्वदरिसीणं, सिवमयलमरुअमणंतमक्खयमव्वाबाहमपुणराविति, सिद्धिगइनामधेयं, ठाणं संपत्ताणं, नमो जिणाणं, जिअभयाणं ॥ ९ ॥ जे अ अईआ सिद्धा, जे अ भविस्संति णागए काले। संपइअ वट्टमाणा, सव्वे तिविहेण वंदामि ॥ १० ॥

जावंति चेइआइं, उड्ढेअ अहे अ तिरिअ लोए अ। सव्वाइं ताइं वंदे, इह संतो तत्थ संताइं ॥ १ ॥

जावंत केवि साहू, भरहेरवय महाविदेहे अ। सव्वेसिं तेसिं पणओ, तिविहेण तिदंड विरयाणं ॥ १ ॥

नमोऽर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधुभ्यः ॥

उवसग्गहरं पासं, पासं वंदामि कम्मघणमुक्कं। विसहरविसनिन्नासं, मंगलकल्लाण-आवासं ॥१॥ विसहर फुलिंगमंतं, कंठे धारेइ जो सया मणुओ। तस्स गहरोगमारी, दुट्ठजरा जंति उवसामं ॥ २ ॥ चिट्ठउ दूरे मंतो, तुज्झ पणामो वि

बहुफलो होइ। नरतिरिएसु वि जीवा, पावंति न दुक्खदोगच्चं ॥ ३ ॥ तुह सम्मत्ते लद्धे, चिंतामणिकप्पपायवब्भहिए। पावंति अविग्घेणं, जीवा अयरामरं ठाणं ॥ ४ ॥ इअ संथुओ महायस, भत्तिब्भरनिब्भरेण हिअएण। ता देव दिज्जबोहिं, भवे भवे पासजिणचंद ॥ ५ ॥

(अब दोनों हाथ जोड़कर जय वीअराय कहना)

जय वीअराय ! जगगुरु !, होउ ममं तुह पभावओ भयवं ! भवनिव्वेओ मग्गाणुसारिआ इट्ठफलसिद्धी ॥ १ ॥ लोगविरुद्धचाओ, गुरुजणपूआ परत्थकरणं च। सुहगुरुजोगो तव्वयण सेवणा आभवमखंडा ॥ २ ॥

नमोऽर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधुभ्यः ॥

॥ अथ बड़ी शांति ॥

भो भो भव्याः शृणुत वचनं प्रस्तुतं सर्वमेतद्, ये यात्रायां त्रिभुवनगुरोरार्हतां भक्तिभाजः। तेषां शान्तिर्भवतु भवतामर्हदादिप्रभावा-दारोग्यश्रीधृतिमतिकरी क्लेशविध्वंस-हेतुः ॥ १ ॥ भो भो भव्यलोका इह हि भरतैरावतविदेहसम्भवानां समस्ततीर्थकृतां जन्मन्यासनप्रकम्पानन्तरमवधिना विज्ञाय सौधर्माधिपतिः सुघोषाघंटाचालनानन्तरं सकलसुरासुरेन्द्रैः सह समागत्य सविनयमर्हद्भट्टारकं गृहीत्वा गत्वा

कनकाद्रिशृंगे विहितजन्माभिषेकः शान्तिमुद्घोषयति। ततोऽहं कृतानुकारमिति कृत्वा महाजनो येन गतः स पन्थाः। इति भव्यजनैः सह समागत्य स्नात्रपीठे स्नात्रं विधाय शांतिमुद्घोषयामि तत्पूजायात्रास्नात्रादिमहोत्सवानन्तरमिति कृत्वा कर्णं दत्वा निशम्यतां निशम्यतां स्वाहा। ॐ पुण्याहं पुण्याहं प्रीयन्तां प्रीयन्तां भगवन्तोऽर्हन्तः सर्वज्ञाः सर्वदर्शिनस्त्रिलोकनाथास्त्रिलोकमहिता-स्त्रिलोक्यपूज्या-स्त्रिलोकेश्वरा-स्त्रिलोकोद्योतकराः। ॐ श्रीकेवलज्ञानि-निर्वाणि-सागर-महायश-विमल-सर्वानुभूति-श्रीधर-दत्त-दामोदर-सुतेज-स्वामि-मुनिसुव्रत-सुमति-शिवगति-अस्ताग-नमीश्वर-अनिल-यशोधर-कृतार्थ-जिनेश्वर-शुद्धमति-शिवकर-स्यन्दन-सम्प्रति इति एते अतीत-चतुर्विंशतितीर्थङ्कराः। ॐ श्रीऋषभ-अजित-सम्भव-अभिनन्दन-सुमति-पद्मप्रभ-सुपार्श्व-चन्द्रप्रभ-सुविधि-शीतल-श्रेयांस-वासुपूज्य-विमल-अनन्त-धर्म-शान्ति-कुन्थु-अर-मल्लि-मुनिसुव्रत-नमि-नेमि-पार्श्व-वर्द्धमान इति एते वर्त्तमानजिनाः। ॐ श्रीपद्मनाभ-शूरदेव-सुपार्श्व-स्वयंप्रभ-सर्वानुभूति-देवश्रुत-उदय-पेढाल-पोट्टिल-शतकीर्ति-सुव्रत-अमम-निष्कषाय-निष्पुलाक-निर्मम-चित्रगुप्त-समाधि-संवर-यशोधर-विजय-मल्लि-देव-अनन्तवीर्य-भद्रंकर इति एते भावितीर्थङ्कराः। शान्ताः शान्तिकरा

भवन्तु । ॐ मुनयो मुनिप्रवरा रिपुविजयदुर्भिक्षकान्तारेषु दुर्गमार्गेषु रक्षन्तु वो नित्यम् । ॐ श्रीनाभि-जितशत्रु-जितारि-संवर-मेघ-धर-प्रतिष्ठ-महसेन-सुग्रीव-दृढरथ-विष्णु-वासुपूज्य-कृतवर्म-सिंहसेन-भानु-विश्वसेन-सूर-सुदर्शन-कुम्भ-सुमित्र-विजय-समुद्रविजय-अश्वसेन-सिद्धार्थ इति एते वर्त्तमानचतुर्विंशतिजिन-जनकाः।ॐ श्रीमरुदेवा-विजया-सेना-सिद्धार्था-सुमङ्गला-सुसीमा-पृथिवीमाता-लक्ष्मणा-रामा-नन्दा-विष्णु-जया-श्यामा - सुयशा-सुव्रता-अचिरा-श्रीदेवी-प्रभावती-पद्मा-वप्रा-शिवा-वामा-त्रिशला इति एते वर्त्तमानजिनजनन्यः । ॐ श्रीगोमुख-महायक्ष-त्रिमुख-यक्षनायक-तुम्बरु-कुसुम-मातंग-विजय-अजित-ब्रह्मा-यक्षराज-कुमार-षण्मुख-पाताल-किन्नर- गरुड़-गन्धर्व-यक्षराज-कुबेर-वरुण-भृकुटि-गोमेध-पार्श्व-ब्रह्मशान्ति इति एते वर्त्तमान-जिनयक्षाः । ॐ श्रीचक्रेश्वरी-अजितबला-दुरितारि-काली-महाकाली-श्यामा-शान्ता-भृकुटि-सुतारका-अशोका-मानवी-चण्डा-विदिता-अंकुशा-कन्दर्पा-निर्वाणी-बला - धारिणी-धरणप्रिया-नरदत्ता-गान्धारी-अम्बिका-पद्मावती-सिद्धायिका इति एते वर्त्तमानचतुर्विंशतितीर्थङ्करशासनदेव्यः । ॐ ह्रीं श्रीं धृति-कीर्ति-कांति-बुद्धि-लक्ष्मी-मेधा-विद्या-साधन-प्रवेशन-निवेशनेषु सुगृहीतनामानो जयंतु ते जिनेन्द्राः । ॐ रोहिणी-प्रज्ञप्ति-

वज्रशृंखला–वज्रांकुशी–चक्रेश्वरी–पुरुषदत्ता-काली-महाकाली-गौरी-गांधारी-सर्वास्त्रा-महाज्वाला-मानवी-वैरोट्या-अछुप्ता-मानसी-महामानसी - एता-षोडश-विद्यादेव्यो रक्षन्तु मे स्वाहा। ॐ आचार्योपाध्यायप्रभृतिचातुर्वर्ण्यस्य श्रीश्रमणसंघस्य शान्तिर्भवतु। ॐ तुष्टिर्भवतु पुष्टिर्भवतु। ॐ ग्रहाश्चन्द्रसूर्यांगारकबुधबृहस्पतिशुक्रशनैश्चरराहुकेतुसहिताः सलोकपालाः सोम-यम-वरुण-कुबेर-वासवादित्य-स्कन्द-विनायक ये चान्येऽपि ग्रामनगर क्षेत्रदेवतादयस्ते सर्वे प्रीयन्तां प्रीयन्तां अक्षीणकोशकोष्ठागारा नरपतयश्च भवन्तु स्वाहा। ॐ पुत्र-मित्र-भ्रातृ-कलत्र-सुहृद्-स्वजन-सम्बंधि-बंधु-वर्गसहिताः नित्यं चामोदप्रमोदकारिणः। अस्मिश्च भूमण्डले आयतननिवासिनां साधु–साध्वी–श्रावक–श्राविकाणां रोगोपसर्गव्याधिदुःखदुर्भिक्षदौर्मनस्योपशमनाय शान्तिर्भवतु ॥ ॐ तुष्टि-पुष्टि-ऋद्धि-वृद्धि-मांगल्योत्सवाः भवन्तु सदा प्रादुर्भूतानि (दुरितानि) पापानि शाम्यन्तु शत्रवः पराङ्मुखा भवन्तु स्वाहा। श्रीमते शान्तिनाथाय, नमः शान्तिविधायिने। त्रैलोक्यस्यामराधीश-मुकुटाभ्यर्चितांघ्रये ॥ १ ॥ शान्तिः शान्तिकरः श्रीमान्, शान्ति दिशतु मे गुरुः। शांतिरेव सदा तेषां, येषां शान्तिर्गृहे गृहे ॥ २ ॥ ॐ उन्मृष्टरिष्ट-दुष्टग्रहगतिदुःस्वप्नदुर्निमित्तादि। सम्पादितहितसम्पन्नामग्रहणं

जयति शान्तेः ॥ ३ ॥ श्रीसंघपौरजनपद, राजाधिपराजसन्निवेशानाम् । गोष्ठिकपुरमुख्यानां व्याहरणैर्व्याहरेच्छान्तिम् ॥ ४ ॥ श्रीश्रमणसंघस्य शान्तिर्भवतु, श्रीपौरलोकस्य शान्तिर्भवतु, श्रीजनपदानां शान्तिर्भवतु, श्रीराजाधिपानां शान्तिर्भवतु श्रीराजसन्निवेशानां शान्तिर्भवतु, श्रीगोष्ठिकानां शान्तिर्भवतु, ॐ स्वाहा ॐ स्वाहा ॐ ह्रीं श्रीपार्श्वनाथाय स्वाहा । एषा शान्तिः प्रतिष्ठायात्रास्नात्राद्यवसानेषु शान्तिकलशं गृहीत्वा कुंकुमचन्दनकर्पूरागरुधूपवासकुसुमांजलिसमेतः स्नात्रपीठे श्रीसंघसमेतः शुचिशुचिवपुःपुष्पवस्त्रचन्दनाभरणालंकृतःपुष्पमालां कंठे कृत्वा शांतिमुद्घोषयित्वा शान्तिपानीयं मस्तके दातव्यमिति।नृत्यन्ति नित्यं मणिपुष्पवर्षं, सृजन्ति गायन्ति च मङ्गलानि । स्तोत्राणि गोत्राणि पठन्ति मंत्रान्,कल्याणभाजो हि जिनाभिषेके॥१॥अहं तित्थयरमाया सिवादेवी तुम्हनयरनिवासिनी । अम्ह सिवं तुम्ह सिवं असिवोवसमं सिवं भवतु स्वाहा ॥२॥ शिवमस्तु सर्वजगतः, परहितनिरता भवन्तु भूतगणाः । दोषाः प्रयान्तु नाशं, सर्वत्र सुखी भवन्तु लोकाः ॥ ३ ॥ उपसर्गाः क्षयं यान्ति, छिद्यन्ते विघ्नवल्लयः । मनः प्रसन्नतामेति, पूज्यमाने जिनेश्वरे ॥ ४ ॥ सर्वमंगलमांगल्यं, सर्वकल्याणकारणम् । प्रधानं सर्वधर्माणां जैनं जयति शासनम् ॥

(चीराक या वीजली का प्रकाश शरीर पर गिरा हो या कोई दोष लगा हो तो इरियावहियं कहकर पीछे सामायक पारे दोष न लगा हो तो इरियावहियं करने की आवश्यकता नहीं)

इच्छामि खमासमणो वंदिउं जावणिज्जाए निसीहिआए मत्थएण वंदामि।

इच्छाकारेण संदिसह भगवन् इरियावहियं पडिक्कमामि ? इच्छं,इच्छामि पडिक्कमिउं, इरियावहियाए, विराहणाए, गमणागमणे, पाणक्कमणे बीयक्कमणे हरियक्कमणे, ओसा उत्तिंग पणग दग मट्टी मक्कडासंताणा संकमणे, जे मे जीवा विराहिआ, एगिंदिया, बेइंदिया, तेइंदिया, चउरिंदिया, पंचिंदिया, अभिहया वत्तिया लेसिया संघाइया संघट्टिया परियाविया किलामिया उद्दविया ठाणाओ ठाणं संकामिया जीवियाओ ववरोविया तस्स मिच्छामि दुक्कडं ।

तस्स उत्तरीकरणेणं, पायच्छित्तकरणेणं, विसोहीकरणेणं विसल्लीकरणेणं, पावाणं कम्माणं निग्घायणट्ठाए, ठामि काउस्सग्गं ॥

अन्नत्थ ऊससिएणं, नीससिएणं, खासिएणं, छीएणं, जंभाइएणं, उड्डुएणं, वायनिसग्गेणं, भमलिए, पित्तमुच्छाए, सुहुमेहिं अंगसंचालेहिं, सुहुमेहिं खेलसंचालेहिं, सुहुमेहिं

दिट्ठिसंचालेहिं, एवमाइएहिं, आगारेहिं, अभग्गो अविराहिओ हुज्ज मे काउस्सग्गो। जाव अरिहंताणं, भगवंताणं, नमुक्कारेणं न पारेमि ताव कायं ठाणेणं मोणेणं झाणेणं अप्पाणं वोसिरामि ॥

(एक लोगस्सका या चार नवकारका काउस्सग्ग करना)

लोगस्स उज्जोअगरे, धम्मतित्थयरे जिणे। अरिहंते कित्तइस्सं, चउवीसं पि केवली ॥ १ ॥ उसभ-मजिअं च वंदे, संभवमभिणंदणं च सुमइं च। पउमप्पहं सुपासं, जिणं च चंदप्पहं वंदे ॥ २ ॥ सुविहिं च पुप्फदंतं, सीअल सिज्जंस-वासुपूज्जं च। विमलमणंतं च जिणं, धम्मं संतिं च वंदामि ॥ ३ ॥ कुंथुं अरं च मल्लिं, वन्दे मुणिसुव्वयं नमिजिणं च। वंदामि रिट्ठनेमिं, पासं तह वद्धमाणं च ॥ ४ ॥ एवं मए अभिथुआ, विहुयरयमला पहीणजरमरणा। चउवीसं पि जिणवरा, तित्थयरा मे पसीयंतु ॥ ५ ॥ कित्तिय-वंदिय-महिया, जे ए लोगस्स उत्तमा सिद्धा। आरुग्गबोहिलाभं, समाहिवरमुत्तमं दिंतु ॥ ६ ॥ चंदेसु निम्मलयरा, आइच्चेसु अहियं पयासयरा। सागरवरगंभीरा, सिद्धा सिद्धिं मम दिसंतु ॥ ७ ॥

(पाक्षिक आदि प्रतिक्रमण करते समय यदि छींक हो जाय या बिल्ली आदि के अपशुकन हो जाय तो नीचे मुजब काउस्सग्ग करके पीछे सामायिक पारे)।

इच्छामि खमासमणो वंदिउं जावणिज्जाए निसीहिआए मत्थएण वंदामि। इच्छाकारेण संदिसह भगवन् 'अपशुकन दुर्निमित्तं उड्डावण निमित्तं करेमि काउस्सग्गं'।

अन्नत्थ ऊससिएणं, नीससिएणं, खासिएणं, छीएणं, जंभाइएणं, उड्डुएणं, वायनिसग्गेणं भमलिए, पित्त-मुच्छाए, सुहुमेहिं अंगसंचालेहिं सुहुमेहिं खेलसंचालेहिं, सुहुमेहिं दिट्ठिसंचालेहिं, एवमाइएहिं आगारेहिं, अभग्गो, अविराहिओ हुज्ज मे काउस्सग्गो, जाव अरिहंताणं भगवंताणं नमुक्कारेणं न पारेमि, तावकायं ठाणेणं मोणेणं झाणेणं अप्पाणं वोसिरामि।

(चार लोगस्स का या सोलह नवकार का काउस्सग्ग करना)।

लोगस्स उज्जोअगरे, धम्मतित्थयरे जिणे। अरिहंते कित्तइस्सं, चउवीसं पि केवली ॥ १ ॥ उसभ-मजिअं च वंदे, संभवमभिणंदणं च सुमइं च। पउमप्पहं सुपासं, जिणं च चंदप्पहं वंदे ॥ २ ॥ सुविहिं च पुप्फदंतं, सीअल-सिज्जंस-वासुपूज्जं च। विमलमणंतं च जिणं, धम्मं संतिं च

वंदामि ॥ ३ ॥ कुंथुं अरं च मल्लिं, वन्दे मुणिसुव्वयं नमि-जिणं च । वंदामि रिट्ठनेमिं, पासं तह वद्धमाणं च ॥ ४ ॥ एवं मए अभिथुआ, विहुअरयमला पहीणजरमरणा । चउ-वीसं पि जिनवरा, तित्थयरा मे पसीयंतु ॥ ५ ॥ कित्तिय-वंदिय-महिया, जे ए लोगस्स उत्तमा सिद्धा । आरुग्गबोहि-लाभं, समाहिवरसुत्तमं दिंतु ॥ ६ ॥ चंदेसु निम्मलयरा, आइच्चेसु अहियं पयासयरा । सागरवरगंभीरा, सिद्धा सिद्धिं मम दिसंतु ॥ ७ ॥

सामायिक पारने की विधि ।

इच्छामि खमासमणो वंदिउं जावणिज्जाए निसीहिआए मत्थएण वंदामि । इच्छाकारेण संदिसह भगवन् सामायिक पारवा मुहपत्ति पडिलेहूँ ? इच्छं ।

(यहां मुहपत्ति की पडिलेहन करे, पीछे)

इच्छामि खमासमणो वंदिउं जावणिज्जाए निसीहिआए मत्थएण वंदामि । इच्छाकारेण संदिसह भगवन् सामायिक पारूं ? यथाशक्ति ।

इच्छामि खमासमणो वंदिउं जावणिज्जाए निसीहिआए मत्थएण वंदामि । इच्छाकारेण संदिसह भगवन् सामायिक पारेमि ? तहत्ति ।

(आधा अङ्ग नमाकर खड़े ही खड़े तीन नवकार पढ़े । पीछे घुटने टेक कर शिर नमाकर 'भयवं दसन्नभद्दो' कहे) ।

भयवं दसण्णभद्दो, सुदंसणो थुलभद्द वइरो य। सफलीकयगिहचाया, साहू एवं विहा हुंति ॥ १ ॥ साहूण वंदणेणं, नासइ पावं असंकिया भावा। फासुअदाणे निज्जर, अभिग्गहो नाण माईणं ॥ २ ॥ छउमत्थो मूढ़मणो, कित्तियमित्तंपि संभरइ जीवो। जं च न संभरामि अहं, मिच्छामि दुक्कडं तस्स ॥ ३ ॥ जं जं मणेण चिंतिय-मसुहं वायाइ भासियं किंचि। असुहं काएण कयं, मिच्छामि दुक्कडं तस्स ॥ ४ ॥ सामाइयपोसहसंठियस्स जीवस्स जाइ जो कालो। सो सफलो बोधव्वो, सेसो संसारफलहेऊ ॥ ५ ॥ सामायिक विधिसे लिया, विधिसे किया, विधिसे करते हुए अविधि आशातना लगी हो, दश मनका, दश वचनका, बारह कायाका, इन बत्तीस दूसणों में जो कोई दूषण लगा हो, उन सबका मन वचन काया करके मिच्छामि दुक्कडं।

इति पक्खी प्रतिक्रमणविधि समाप्त।

दासानुदासा इव सर्वदेवा, यदीयपादाब्जतले लुठन्ति। मरुस्थली कल्पतरुः स जीयाद् युगप्रधानो जिनदत्तसूरिः॥ १ ॥

कुशलगुरु देव के दर्शन, मेरा दिल होत है परसन।

जगतमें आप समा कोई, न देखा नयन भर जोई ॥ कु० ॥ १ ॥ वीरुद भूमण्डले छाजै, फरसता पाप सहु भाजे । पूजतां संपदा पावे, अचिंती लक्ष्मी घर आवे ॥ कु० ॥ २ ॥ इक मुखे गुण कहुं केता, मुझे विज्ञान नहीं हेता । लालचंद की अरज सुन लीजे, चरणकी शरण मोहि दीजे ॥ कु० ॥ ३ ॥ इति ॥

पौषध-विधि ।



आठ प्रहर पौषधविधि—

पोसह के उपगरण लेकर उपाश्रय में जावें । वहां गुरु महाराज का संयोग न हो तो सामायिक विधिके अनुसार स्थापनाचार्य की स्थापना करके विधि पूर्वक गुरुवंदन करें । पीछे खमासमण पूर्वक 'इरियावहियं' पढ़कर, एक लोगस्स का काउस्सग्ग करके प्रकट लोगस्स कहे । पीछे खमासमण देकर 'इच्छाकारेण संदिसह भगवन् ! पोसह मुहपत्ति पडिलेहुँ ? इच्छं' ऐसा कहकर मुहपत्ति की पडिलेहना करे । बाद खमासमण पूर्वक 'इच्छाकारेण संदिसह भगवन् ! पोसह संदिसाहुं ? इच्छं' फिर खमासमण पूर्वक 'इच्छाकारेण संदिसह भगवन् ! पोसह ठाउं ? इच्छं', कहकर खमासमण देकर खड़े हो जाय और हाथ जोड़कर, आधा अंग नमाकर, तीन नवकार गिने । पीछे "इच्छाकारेण संदिसह भगवन् ! पसाय करी पोसह दंडक उच्चरावोजी" ऐसा बोलकर नीचे लिखा हुआ पोसहका पच्चक्खाण तीनवार बड़े आदमी उच्चरावे या स्वयं उच्चर ले ।

पोसहका पच्चक्खाण।

करेमि भंते! पोसहं, आहार पोसहं, देसओ सव्वओ वा, सरीरसक्कार-पोसहं। सव्वओ बंभचेर-पोसहं। सव्वओ अव्वावार-पोसहं। सव्वओ चउव्विहे पोसहे। सावज्जं जोगं पच्चक्खामि, जाव[1] अहोरत्तिं पज्जुवासामि, दुविहं तिविहेणं, मणेणं वायाए काएणं, न करेमि न कारवेमि, तस्स भंते! पडिक्कमामि निंदामि गरिहामि अप्पाणं वोसिरामि।

पीछे 'इच्छामि० इच्छा० सामायिक मुहपत्ति पडिलेहुं? इच्छं', कहकर खमासमण देकर मुहपत्ति पडिलेहन करे। पीछे 'इच्छामि० इच्छा० सामायिक संदिसाहुं? इच्छं'। 'इच्छामि० इच्छा० सामायिक ठाउं? इच्छं' कहकर, खमासमण देकर, खड़े होकर तीन नवकार गिने। पीछे "इच्छाकारेण संदिसह भगवन्! सामायिक दंडक उच्चरावोजी" ऐसा बोलकर 'करेमि भंते सामाइयं' का पाठ तीन-चार उच्चरे, इसमें 'जाव नियमं' की जगह 'जाव पोसहं' बोले। (यहां इरियावहियं न बोले) पीछे 'इच्छामि० इच्छा० बेसणो संदिसाहुं? इच्छं', 'इच्छामि० इच्छा० बेसणो ठाउं?

---

१ सिर्फ दिनका पौषध लेना हो तो 'जावदिवसं', दिन-रात का करना हो तो 'जावअहोरत्तिं' और सिर्फ रातका करना हो तो 'जाव सेस दिवसंरत्तिं' कहना चाहिये।

इच्छं'। 'इच्छामि० इच्छा० सज्झाय संदिसाहुं ? इच्छं' 'इच्छामि० इच्छा० सज्झाय करूं ? इच्छं', कहकर खमासमण देकर खड़ेही खड़े आठ नवकार गिने। पीछे शीत आदि परिसह निवारण के लिए वस्त्रकी आवश्यकता हो तो 'इच्छामि० इच्छा० पंगुरण संदिसाहुं ? इच्छं'। 'इच्छामि० इच्छा० पंगुरण पडिग्गाहुं ? इच्छं' ऐसा कहकर वस्त्र ग्रहण करें। पीछे 'इच्छामि० इच्छा० बहुवेलं संदिसाहुं ? इच्छं'। 'इच्छामि० इच्छा० बहुवेलं करूं ? इच्छं', इस प्रकार पौषध लेकर राई प्रतिक्रमण पहले नहीं किया हो तो करें, किंतु इसमें चार थुई के देववंदन के बाद नमोऽत्थुणं कहकर खमासमण पूर्वक 'बहुवेलं', का आदेश लेकर पीछे आचार्य जी मिश्र इत्यादि कहे। प्रतिक्रमण पूर्ण होने बाद पडिलेहन नीचे लिखी विधिके अनुसार करे।

पडिलेहन विधि।

खमासमण देकर इरियावहि तस्सउत्तरी० अन्नत्थ० कहकर, एक लोगस्सका काउस्सग्ग करके प्रकट लोगस्स कहे। पीछे 'इच्छामि० इच्छा० पडिलेहन संदिसाहुं ? इच्छं'। 'इच्छामि० इच्छा० पडिलेहन करूं ? इच्छं', कहकर मुहपत्ति पडिलेहे। पीछे 'इच्छामि० इच्छा० अंगपडिलेहन संदिसाहुं ? इच्छं'। 'इच्छामि० इच्छा० अंगपडिलेहन करूं ? इच्छं', कहकर धोती और कटीसूत्र (कणदोरा) पडिलेहे।

पीछे 'इच्छामि० इच्छाकारेण संदिसह भगवन् पसाय करी पडिलेहण पडिलेहावोजी ? इच्छं' ऐसा कहकर स्थापनाचार्य की पडिलेहना 'शुद्धस्वरूप धारे' का पाठ पूर्वक करके ऊंचे स्थान पर रक्खे । पीछे 'इच्छामि० इच्छा० उपधि मुहपत्ति पडिलेहुं ? इच्छं' कहकर मुहपत्ति पडिलेहे । पीछे 'इच्छामि० इच्छा० उपधि पडिलेहन संदिसाहुं ? इच्छं' । 'इच्छामि० इच्छा० उपधि पडिलेहन करूं ? इच्छं', कहकर कंबल वस्त्र आदि सब पडिलेहे । पीछे पौषधशाला की प्रमार्जना करके कचरे को जयणा पूर्वक परठे । पीछे खमासमण देकर इरियावहि० तस्स उत्तरी०, अन्नत्थ० कहकर एक लोगस्स का काउस्सग्ग करके प्रकट लोगस्स कहे । पीछे 'इच्छामि० इच्छा० सज्झाय संदिसाहुं ? इच्छं' । 'इच्छामि० इच्छा० सज्झाय करूं ? इच्छं', कहकर एक नवकार गिने । पीछे 'उपदेशमाला' की सज्झाय कहकर फिर एक नवकार गिने ।

उपदेशमाला सज्झाय ।

जग चूडामणिभूओ, उसभो वीरो तिलोय सिरितिलओ । एगो लोगाइच्चो, एगो चक्खू तिहुअणस्स ॥ १ ॥ संवच्छर-मुसभजिणो, छम्मासे वद्धमाण जिणचंदो । इह विहरिया निरसणा, जएज्ज एए ओवमाणेणं ॥ २ ॥ जइत्ता तिलोय-नाहो, विसहइ बहुयाइं असरिसजणस्स । इय जीयंतकराइं,

एस खमा सव्वसाहूणं ॥ ३ ॥ न चइज्जइ चालेउ, महइ महावद्धमाण जिणचंदो। उवसग्ग सहस्सेहिं वि, मेरु जहा वायगुंजाहिं ॥ ४ ॥ भद्दो विणीय विणओ, पढम गणहरो समत्त सुयनाणी। जाणंतो वि तमत्थं, विम्हिय हियओ सुणइ सव्वं ॥ ५ ॥ जं आणवेइ राया, पयइओ तं सिरेण इच्छन्ति। इअ गुरुजण मुह भणियं, कयंजली उडेहिं सोयव्वं ॥ ६ ॥ जह सुरगणाण इंदो, गहगण तारागणाण जह चंदो। जहय पयाण नरिंदो, गणस्स वि गुरु तहाणंदो ॥ ७ ॥ बालुत्ति महीपालो, न पया परिहवइ एस गुरु उवमा। जं वा पुरओ काउं, विहरंति मुणि तहा सोवि ॥ ८ ॥ पडिरूवो तेहस्सि, जुगप्पहाणागमो महुरवक्को। गंभीरो धिइमंतो, उवएसपरो य आयरिओ॥ ९ ॥ अपरिस्सावी सोमो, संगहसीलो अभिग्गहमई य। अविकत्थणो अचवलो, पसंतहियओ गुरू होई ॥ १० ॥ कइयावि जिणवरिंदा, पत्ता अयरामरं पहं दाउं। आयरिएहिं पवयणं, धारिज्जइ संपयं सयलं॥ ११ ॥ अणुगम्मए भगवई, रायसुयज्जा सहस्स वंदेहिं। तहवि न करेइ माणं, परियच्छइ तं तहा नूणं ॥ १२ ॥ दिणदिक्खियस्स दमगस्स, अभिमुहा अज्जचंदणा अज्जा। नेच्छइ आसणगहणं, सो विणओ सव्व अज्जाणं ॥ १३ ॥ वरसयस

दिक्खियाए, अज्जाए अज्जदिक्खिओ साहू । अभिगमण वंदण नमंसणेण, विणएण सो पुज्जो ॥ १४ ॥ धम्मो पुरिसप्पभवो, पुरिसवरदेसिओ पुरिसजिट्ठो। लोएवि पहू पुरिसो, किं पुण लोगुत्तमे धम्मे ॥ १५ ॥ संवाहणस्स रण्णो, तइया वाणारसीइ नयरीए । कन्ना सहस्स महियं, आसी किररूववंतीणं ॥ १६ ॥ तहविय सा रायसिरी, उल्लट्टंती न ताइया ताहिं । उयरट्ठिएण इक्केण ताइया अंगवीरेण ॥ १७ ॥ महिलाणसु बहुयाण वि, मज्जाओ इह समत्त घरसारो । रायपुरिसेहिं निज्जइ, जणेवि पुरिसो जहिं नत्थि ॥ १८ ॥ किं परजण बहुजाणा वणाहिं, वरमप्प सक्खियं सुकयं । इह भरहचक्कवट्टी, पसन्नचंदो य दिट्ठंता ॥ १९ ॥ वेसो वि अप्पमाणो, असंजम पएसु वट्टमाणस्स । किं परियत्तिय वेसं, विसं न मारेइ खज्जंतं ॥ २० ॥ धम्मं रक्खइ वेसो, संकइ वेसेण दिक्खिओम्मि अहं । उम्मग्गेण पडंतं, रक्खइ राया जणवओ य ॥ २१ ॥ अप्पा जाणइ अप्पा, जहट्ठिओ अप्पसक्खिओ धम्मो । अप्पा करेइ तं तह, जह अप्पसुहावहं होइ ॥ २२ ॥ जं जं समयं जीवो, आविस्सइ जेण जेण भावेण । सो तम्मि तम्मि समए, सुहासुहं बंधए कम्मं ॥ २३ ॥ धम्मो मएण हुंतो, तो नवि सीउण्ह वायविज्ज-

डिओ। संवच्छर मणसीओ, वाहुवली तह किलिस्संतो ॥ २४ ॥ नियगमइ विगप्पिय चिंतिएण, सच्छंद बुद्धि चरिएण। कत्तो पारत्तहियं, कीरइ गुरु अणुवएसेणं ॥ २५ ॥ थद्धो निरोवयारी, अविणीओ गव्विओ निरवणामो। साहुजणस्स गरहिओ, जणे वि वयणिज्जयं लहइ ॥ २६ ॥ थोवेण वि सप्पुरिसा, सणंकुमारुव्व केइ बुज्झंति। देहे खणपरिहाणि, जंकिर देवेहिं से कहियं ॥ २७ ॥ जइ तालाव सत्तम सुर, विमाणवासी वि परिवडंति सुरा। चिंतिज्जंतं सेसं, संसारे सासयं कयरं ॥ २८ ॥ कह तं भण्णइ सुक्खं, सुचिरेण वि जस्स दुक्खमल्लि हियए। जं च मरणावसाणे, भव संसाराणुबंधि च ॥ २९ ॥ उवएस सहस्सेहिं, बोहिज्जंतो न बुज्झई कोई। जह बंभदत्तराया, उदाइनिव मारओ चेव ॥ ३० ॥ गयकन्न चञ्चलाए, अपरिचत्ताइ रायलच्छीए। जीवासकम्म कलिमल, भरिय भरातो पडंति अहे ॥ ३१ ॥ वोत्तूण वि जीवाणं, सुदुक्करा इति पावचरियाइं। भयवंजा सा सासा, पचाएसो हु इणमो ते ॥ ३२ ॥ पडिवज्जिऊण दोसे, नियए सम्मं च पाय वडियाए। तो किर मिगावईए, उप्पन्नं केवलं नाणं ॥ ३३ ॥ इति ॥

इस प्रकार सज्झाय कहकर एक नवकार गिने । पीछे गुर्वादिक विद्यमान हो तो विधिपूर्वक वंदना करे । बाद पच्चक्खाण करके बहुवेल का आदेश लेवे । पीछे देवदर्शन करने के लिये जिनमंदिरमें जावे ।

(जिसने पोसह किया हो वह यदि देवदर्शन न करे तो दो या पांच उपवास के प्रायश्चित का भागी होता है) ।

मंदिर में इरियावहियं पूर्वक विधिसे चैत्यवंदन करके पच्चक्खाण करे । मंदिर और उपाश्रय से निकलते समय तीनवार "आवस्सही" कहे । और प्रवेश करते समय तीन वार "निस्सीही" कहे । अब उपाश्रय आकर 'इरियावहियं' पडिक्कमे । पीछे धर्मध्यान करे, पढ़े गुने या व्याख्यान सुने । लघुनीति और बड़ीनीति परठनी हो तो पहले "अणूजाणह जस्स गो" कहे और पीछे से तीनवार "वोसिरे" कहे । और 'इरियावहियं' पडिक्कमे । जब पौन पोरसी (प्रहर) दिन चढ़ने पर उग्घाडा पोरसी या बहु पडिपुन्ना पोरसी भणावे । यथा-'इच्छामि० इच्छा० उग्घाडा पोरसी? इच्छं' कहकर 'इच्छामि० इच्छा० इरियावहियं० तस्स उत्तरी० अन्नत्थ० कहकर एक लोगस्सका काउस्सग्ग करे । पीछे प्रकट लोगस्स कहकर, 'इच्छामि० इच्छा० उग्घाडा पोरसी मुहपत्ति संदिस्साहुं ? इच्छं', 'इच्छामि० इच्छा० उग्घाडा पोरसी मुहपत्ति पडिलेहुं ? इच्छं' । कहकर मुहपत्ति

पडिलेहे। उपधानवाही भोजनपात्र पडिलेही रखे। पीछे सज्झाय ध्यान करे। जब कालवेला हो तब मंदिर में या उपाश्रयमें नीचे लिखी हुई विधिके अनुसार पांच शक्रस्तवसे देववंदन करे।

देववंदन विधि।

'इच्छामि० इच्छा० चैत्यवन्दन करूं ? इच्छं'। कहकर चैत्यवंदन और नमोऽत्थुणं० कहे। बाद खमासमण देकर इरियावहियं० तस्स उत्तरी० अन्नत्थ० कहकर एक लोगस्सका काउस्सग्ग करके प्रकट लोगस्स कहे। पीछे 'इच्छामि० इच्छा० चैत्यवंदन करूं ? इच्छं' कहकर चैत्यवंदन करे, बाद जं किंचि० नमोऽत्थुणं० कहकर खड़े हो जाय। पीछे अरिहंत चेइआणं० अन्नत्थ० कहकर एक नवकार का काउस्सग्ग करना, पीछे 'नमो अरिहंताणं' कहता हुआ काउस्सग्ग पारकर 'नमोऽर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधुभ्यः' कहकर पहली थुई कहे। बाद लोगस्स० सव्वलोए० अन्नत्थ० कहकर एक नवकार का काउस्सग्ग करके दूसरी थुई कहे। पीछे 'पुक्खरवरदीवड्ढे० सुअस्स भगवओ० अन्नत्थ० कहकर एक नवकार का काउस्सग्ग करके तीसरी थुई कहे। बाद सिद्धाणं बुद्धाणं० वेयावच्चगराणं० अन्नत्थ० कहकर एक नवकार का काउस्सग्ग करके नमोऽर्हत्० कहकर चौथी थुई कहे। अब नीचे बैठकर

'नमोऽत्थुणं०' कहे, बाद खड़े होकर फिर अरिहंत चेइआणं० अन्नत्थ० एक नवकार का काउस्सग्ग पारकर नमोऽर्हत्० कहकर पहली थुई कहे। बाद लोगस्स० सव्वलोए० अन्नत्थ० कहकर एक नवकार का काउस्सग्ग पारकर दूसरी थुई कहे। पीछे पुक्खरवरदीवड्ढे० सुअस्स भगवओ० अन्नत्थ० एक नवकार का काउस्सग्ग करके तीसरी थुई कहे। बाद सिद्धाणं बुद्धाणं० वेयावच्चगराणं० अन्नत्थ० एक नवकार का काउस्सग्ग करके नमोऽर्हत्० कहकर चौथी थुई कहे। अब नीचे बैठकर नमोऽत्थुणं० जावंतिचेइआइं० जावंत के वि साहू० नमोऽर्हत्० उवसग्गहर० या कोई स्तवन कहकर जय वीयराय० कहे। बाद नमोऽत्थुणं कहे ॥ इति ॥

ऊपर मूजब देववंदन करने बाद सज्झाय ध्यान करें। जल आदि पीने की इच्छा हो तो नीचे लिखी विधिके अनुसार पच्चक्खाण पारकर जल आदिक लेवे।

पच्चक्खाण पारनेकी विधि।

खमासमण पूर्वक इरियावहियं० तस्स इत्तरी० अन्नत्थ० कहकर एक लोगस्सका काउस्सग्ग करे। बाद प्रकट लोगस्स कहकर 'इच्छामि० इच्छा० पच्चक्खाण पारनेको मुहपत्ति पडिलेहुं ? इच्छं'। कहकर खमासमण देकर मुहपत्ति पडिलेहे। पीछे 'इच्छामि० इच्छा० पच्चक्खाण

पारूं ? यथाशक्ति' कहकर, फिर 'इच्छामि० इच्छा० पच्चक्खाण पारेमि ? तहत्ति' कहकर मुट्ठी बन्दकर एक नवकार गिने। पीछे जो पच्चक्खाण किया हो उस पक्खाण का नाम लेकर "पच्चक्खाण फासियं, पालियं, सोहियं, तीरियं, किट्टियं, आराहियं जं च न आराहियं तस्स मिच्छामि दुक्कडं" बोलकर एक नवकार गिने। बाद खमासमण देकर 'इच्छा० चैत्यवंदन करूं? इच्छं' कहकर 'जयउ सामिय०' जं किंचि० जावंति चेइआइं० जावंत के वि साहू० नमोऽर्हत्० उवसग्गहर० जयवीयराय० तक कहे। पीछे क्षणमात्र सज्झाय ध्यान करके पानी पीवे। तथा उपधानुवाही होवे तो पोरसी प्रमुख पच्चक्खाण पारकर आहार करे। पीछे आसन बैठा हुआ ही 'दिवसचरिमं' पच्चक्खे पीछे इरियावहियं कहकर चैत्यवंदन करे। (यह चैत्यवंदन आहार संवरण निमित्त का है) ॥ इति ॥

यदि बाहिर्भूमि (स्थंडिल) जाना हो तो आवस्सही कहकर उपयोग पूर्वक निर्जीव भूमिमें या स्थंडिल के पात्रमें जावे। 'अणुजाणह जस्स गो' कहकर मलमूत्र परठे। प्राशुक जलसे शुद्ध होकर तीन वार 'वोसरामि' कहकर मलमूत्र वोसरावे। पीछे पोसहशालामें 'निसीहि' बोलते हुए आवे और खमासमण पूर्वक 'इरियावहियं' पडिकमे। बाद 'इच्छामि० इच्छा० गमणागमणं आलोऊं ? इच्छं' कहकर गमणागमण इस प्रकार आलोवे—"आव-

स्सही करी, प्राशुक देशे जइ, संडाशा पूंजी, पडिलो पडिलेही, उच्चार प्रश्रवण वोसरावी, निस्सीहि करी, पोसहशालामें आया। आवंति जंतेहिं जं खंडियं, जं विराहियं, तस्स मिच्छामि दुक्कडं।" ऐसा कहकर बैठ जाय। और सज्झाय ध्यान करे। अब चौथे प्रहरमें संध्याकाल की पडिलेहन नीचे लिखी विधि से करे।

संध्याकालिन-पडिलेहन विधि।

खमासमण पूर्वक 'इच्छाकारेण संदिसह भगवन्! बहुपडी पुन्ना पोरसी? इच्छं' कहकर, खमासमण पूर्वक इरियावहियं० तस्स उत्तरी० अन्नत्थ० कहकर एक लोगस्स का काउस्सग्ग करके प्रकट लोगस्स कहे। पीछे 'इच्छामि० इच्छा० पडिलेहन करूं? इच्छं' 'इच्छामि० इच्छा० पोसहशाला प्रमार्जु? इच्छं' कहकर मुहपत्ति पडिलेहे। पीछे 'इच्छामि० इच्छा० अंगपडिलेहन संदिसाहुं? इच्छं' 'इच्छामि० इच्छा० अंगपडिलेहन करूं। इच्छं' कहकर आसन, धोती, कटीसूत्र आदि पडिलेहे और पौषधशाला में से कचरा निकालकर जीवादि देखकर जयणा पूर्वक परठे। पीछे खमासमण पूर्वक 'इरियावहियं' पडिक्कमे। बाद खमासमण पूर्वक 'इच्छाकारेण संदिसह भगवन्! पसाय करी पडिलेहन पडिलेहावोजी? इच्छं' कहकर स्थापनाचार्यजी की 'शुद्धस्वरूपधारें' के पाठ पूर्वक पडिलेहन

करके ऊंच स्थानपर रक्खें। पीछे 'इच्छामि० इच्छा० उपधि मुहपत्ति पडिलेहुं ? इच्छं' कहकर खमासमण देकर मुहपत्ति पडिलेहे। पीछे इच्छामि० इच्छा० सज्झाय संदिसाहुं ? इच्छं'। 'इच्छामि० इच्छा० सज्झाय करूं ? इच्छं' कहकर एक नवकार गिनकर उपदेशमाला की सज्झाय कहे। बाद एक नवकार गिने। पीछे पच्चक्खाण करे। यदि उपधानवाहीने आहार किया हो तो दो वांदणा देकर पीछे पच्चक्खाण करे। पीछे 'इच्छामि० इच्छा० उपधि थंडिला पडिलेहन संदिसाहुं ? इच्छं' 'इच्छामि० इच्छा० उपधि थंडिला पडिलेहन करूं ? इच्छं'। 'इच्छामि० इच्छा० बेसणो संदिसाहुं ? इच्छं'। 'इच्छामि० इच्छा० बेसणो ठाउं ? इच्छं', कहकर बैठ जाय और वस्त्र, कंबल, चरवला आदि पडिलेहे और उपवासी यहां पर वस्त्रादिकी पडिलेहना कर कटीसूत्र और धोती फिर पडिलेहे। पीछे उच्चार प्रश्रवण के २४ थंडिला पडिलेहे।

चोवीस थंडिला पडिलेहण-पाठ।

१ आगाढे आसन्ने उच्चारे पासवणे अणहियासे। २ आगाढे मज्झे उच्चारे पासवणे अणहियासे। ३ आगाढे दूरे उच्चारे पासवणे अणहियासे। ४ आगाढे आसन्ने पासवणे अणहियासे। ५ आगाढे मज्झे पासवणे अणहियासे। ६ आगाढे दूरे पासवणे अणहियासे। ७ आगाढे आसन्ने उच्चारे

पासवणे अहियासे। ८ आगाढे मज्झे उच्चारे पासवणे अहियासे। ९ आगाढे दूरे उच्चारे पासवणे अहियासे। १० आगाढे आसन्ने पासवणे अहियासे। ११ आगाढे मज्झे पासवणे अहियासे। १२ आगाढे दूरे पासवणे अहियासे। १३ अणागाढे आसन्ने उच्चारे पासवणे अणहियासे। १४ अणागाढे मज्झे उच्चारे पासवणे अणहियासे। १५ अणागाढे दूरे उच्चारे पासवणे अणहियासे। १६ अणागाढे आसन्ने पासवणे अणहियासे। १७ अणागाढे मज्झे पासवणे अणहियासे। १८ अणागाढे दूरे पासवणे अणहियासे। १९ अणागाढे आसन्ने उच्चारे पासवणे अहियासे। २० अणागाढे मज्झे उच्चारे पासवणे अहियासे। २१ अणागाढे दूरे उच्चारे पासवणे अहियासे। २२ अणागाढे आसन्ने पासवणे अहियासे। २३ अणागाढे मज्झे पासवणे अहियासे। २४ अणागाणे दूरे पासवणे अहियासे।

इन चौवीस थंडिला में से ६ थंडिला शय्या के दो तरफ दक्षिण और ३ और वायीं ओर ३ पडिलेहे। ६ थंडिला दरवाजेके भीतर दक्षिण ३ और वायीं ३ पडिलेहे। ६ थंडिला दरवाजे के बाहर दोनों तरफ पडिलेहे और ६ थंडिला उच्चार प्रस्रवण की जगह हो वहां दोनों तरफ पडिलेहे॥ इति॥

अब प्रतिक्रमण का समय हो गया हो तो प्रतिक्रमण करें। प्रतिक्रमणमें 'आजुणा चार प्रहर' पाठ की जगह नीचे लिखा हुआ ठाणेकमणे का पाठ बोले।

पोसह संध्या अतिचार ।

ठाणेक्रमणे चंकमणे, आउत्ते, अणाउत्ते, हरियकाय संघट्टे। बीयकाय संघट्टे, थावकाय संघट्टे, छप्पइया संघट्टे, सव्वस्स वि देवसिय, दुचिंतिय, दुब्भासिय, दुचिट्ठिय इच्छाकारेण संदिसह भगवन् ! इच्छं तस्स मिच्छा मि दुक्कडं।

और खुद्दोवद्दव का काउस्सग्ग किये बाद 'इच्छामि० इच्छा० सज्झाय संदिसाहुं ? इच्छं०' 'इच्छामि० इच्छा० सज्झाय करूं ? इच्छं' ऐसा कहकर बैठ कर तीन नवकार आदि सज्झाय करे। प्रतिक्रमण किये बाद गुरु आदि की वेयावच्च करें। प्रहर रात तक सज्झाय ध्यान करे। यदि लघु नीति आदि करना हो तो जयणा पूर्वक थंडिल के स्थान जाकर लघुशंका निवारे। वापीस आकर 'भगवन् ! बहुपडिपुन्ना पोरसी ?' ऐसा बोलकर खमासमण पूर्वक इरियावहियं पडिक्कमे। पीछे रात्रि संथारा का समय हो तब नीचे लिखी विधिके अनुसार रात्रि संथारा करे।

रात्रि संथारा विधि।

खमासमण पूर्वक 'इच्छाकारेण संदिसह भगवन् ! वहुपडिपुण्णा पोरिसी ? इच्छं' कहकर 'इच्छामि० इच्छा० इरियावहियं० तस्स उत्तरी० अन्नत्थ० कहकर एक लोगस्स का काउस्सग्ग करना। बाद प्रकट लोगस्स कहना। पीछे 'इच्छामि० इच्छा० राइसंथारा मुहपत्ति पडिलेहुं ? इच्छं' कहकर मुहपत्ति पडिलेहे। बाद 'इच्छामि० इच्छा० राइ-संथारा संदिसाहुं ? इच्छं', 'इच्छामि० इच्छा० राइसंथारा ठाउं ? इच्छं' कहे। फिर 'इच्छामि० इच्छा० चैत्यवन्दन करूं ? इच्छं' ऐसा कहकर चउक्कसाय० नमोऽत्थुणं० जावंति चेइआइं० जावंत के वि साहू० नमोऽर्हत्० उवसग्गहर० जय वीयराय० तक चैत्यवन्दन करे। बाद भूमि प्रमार्जन करके संथारा बीछावे। पीछे शरीर प्रमार्जन करके संथारे पर बैठकर राइसंथारे का पाठ पढ़े।

राइसंथारा पोसह का पाठ।

निसीहि निसीहि निसीहि णमो खमासमणाणं गोयमा-इणं महामुणिणं।

(इतना पाठ कहकर तीन नवकार और तीन करेमि भंते ! कहे बाद नीचे का पाठ बोले)।

अणुजाणह जिट्ठिज्जा ! अणुजाणह परमगुरु ! गुणगण रयणेहिं मंडिअसरीरा। बहुपडिपुन्ना पोरिसि, राइसंथारए

ठामि ॥ १ ॥ अणुजाणह संथारं, बाहुवहाणेण वामपासेण।
कुक्कुडिपायपसारणं, अंतरं तु पमज्जए भूमिं ॥ २ ॥ संको-
इय संडासं, उवट्टंते अ कायपडिलेहा। दव्वाई उवओगं,
ऊसास निरुंभणालोए ॥ ३ ॥ जइ मे हुज्ज पमाओ, इमस्स
देहस्सिमाइ रयणीए। आहार-मुवहिदेहं, सव्वं तिविहेण
वोसरियं ॥ ४ ॥ आसव-कसाय-बंधण, कलहा-भक्खाण-
परपरिवाओ। अरइरई पेसुन्नं, मायामोसं च मिच्छत्तं ॥५॥
वोसिरिसु इमाइं, मुक्खमग्ग-संसग्ग-विग्घ-भूआइं। दुग्गइ-
निबंधणाइं, अट्ठारसपाव-ठाणाइं ॥ ६ ॥ एगोऽहं नत्थि मे
कोइ, नाहमन्नस्स कस्सवि। एवं अदीणमणसो, अप्पाणमणु-
सासए ॥ ७ ॥ एगो मे सासओ अप्पा, नाणदंसण संजुओ।
सेसा मे बाहिरा भावा, सव्वे संजोग लक्खणा ॥ ८ ॥
संजोगमूला जीवेण, पत्ता दुक्खपरंपरा। तम्हा संयोगसंबंधं,
सव्वं तिविहेण वोसिरे ॥ ९ ॥ अरिहंतो महदेवो, जावज्जीवं
सुसाहुणो गुरुणो। जिणपन्नत्तं तत्तं, इअ सम्मत्तं मए गहियं
॥ १० ॥ चत्तारि मंगलं—अरिहंता मंगलं, सिद्धा मंगलं,
साहू मंगलं, केवलीपण्णत्तो धम्मो मंगलं। चत्तारि लोगुत्तमा—
अरिहंता लोगुत्तमा, सिद्धा लोगुत्तमा, साहू लोगुत्तमा,
केवलीपण्णत्तो धम्मो लोगुत्तमो। चत्तारि शरणं पवज्जामि—

अरिहंते सरणं पवज्जामि, सिद्धे सरणं पवज्जामि, साहू सरणं पवज्जामि, केवली पण्णत्तं धम्मं सरणं पवज्जामि । अरिहंता मंगलं मज्झ, अरिहंता मज्झ देवया । अरिहंता कित्तिअत्ताणं, वोसिरामि त्ति पावगं ॥ १ ॥ सिद्धा य मंगलं मज्झ, सिद्धा य मज्झ देवया । सिद्धा य कित्तिअत्ताणं, वोसिरामि त्ति पावगं ॥ २ ॥ आयरिया मंगलं मज्झ, आयरिया मज्झ देवया । आयरिया कित्तिअत्ताणं, वोसिरामि त्ति पावगं ॥३॥ उवज्झाया मंगलं मज्झ, उवज्झाया मज्झ देवया । उवज्झाया कित्तिअत्ताणं, वोसिरामि त्ति पावगं ॥४॥ साहूणो मंगलं मज्झ, साहूणो मज्झ देवया । साहूणो कित्तिअत्ताणं, वोसिरामि त्ति पावगं ॥ ५ ॥ पुढवि-दग-अगणि-मारुय इक्किक्के सत्त जोणि-लक्खाओ । वणपत्तेय-अणंते, दस चउद्दस जोणि-लक्खाओ ॥१॥ विगलिंदिएसु दो दो, चउरो चउरो य नारय-सुरेसु । तिरिएसु हुंति चउरो, चउद्दस लक्खा य मणुएसु ॥ २ ॥ खामेमि सव्वजीवे, सव्वे जीवा खमंतु मे । मित्ती मे सव्व-भूएसु, वेरं मज्झं न केणइ ॥ ३ ॥ एवमहं आलोइअ, निंदिअ गरहिअ दुगंछिअं सम्मं । तिविहेण पडिक्कंतो, वंदामि जिणे चउव्वीसं ॥ ४ ॥ खमिअ खमाविअ, मइ खमिअ सव्वह जीवनिकाय । सिद्धहसाख आलोयणह, मज्झह वैर न भाय

॥ ५ ॥ सव्वे जीवा कम्मवस्, चउदहराज भमन्तु । ते मइं सव्व खमाविया, मज्झवि तेह खमंतु ॥ ६ ॥ इति ॥

यह पाठ बोलकर सात नवकारका चिंतवन करता हुआ शयन करे, निद्रा न आवे वहां तक शुभ ध्यान करे। पीछली रात्रिको उठकर नवकारमंत्र गिने। बाद खमासमण पूर्वक इरियावहियं० तस्स उत्तरी० अन्नत्थ० कहकर एक लोगस्स का काउस्सग्ग करके प्रकट लोगस्स कहे। बाद खमासमण देकर कुसुमिणदुसुमिण का काउस्सग्ग करे। (पोसहवाला कुसुमिणदुसुमिण का काउस्सग्ग पहले करके बाद चैत्यवंदन करे)। बाद राइप्रतिक्रमण करे । इसमें सातलाख की जगह नीचेका पाठ बोले।

पोसहरात्रि अतिचार।

संथारा उवट्टणकी, आउट्टणकी, परिअट्टणकी, पसारणकी छप्पइआ संघट्टणकी, अचक्खु विसयकायकी, सव्वस्स वि राइय दुच्चिंतिय दुब्भासिय दुच्चिट्ठिय इच्छाकारेण संदिस्सह भगवन् इच्छं तस्स मिच्छामि दुक्कडं।

प्रतिक्रमण पूरा होने बाद प्रभात की पडिलेहन विधिके अनुसार पडिलेहन करे। पोसहशालामें से कचरा निकालकर इरियावहियं पडिक्कमे। बाद दो खमासमण पूर्वक सज्झाय

संदिसाहुं ? सज्झाय करूं ? आदेश मांगकर उपदेशमाला की सज्जाय करे। पीछे पोसह पारे।

पोसह-पारणे की विधि।

खमासमण पूर्वक इरियावहियं० तस्स उत्तरी० अन्नत्थ० कहकर एक लोगस्स का काउस्सग्ग करके प्रकट लोगस्स कहे। पीछे 'इच्छामि० इच्छा० पोसह पारूं ? यथाशक्ति'। 'इच्छामि० इच्छा० पोसह पारेमि ? तहत्ति' कहकर दाहिना हाथ नीचे रखकर तीन नवकार गिने। पीछे खमासमण देकर मुहपत्ति पडिलेवे। पीछे 'इच्छामि० इच्छा० सामायिक पारूं ? यथाशक्ति'। फिर 'इच्छामि० इच्छा० सामायिक पारेमि ? तहत्ति' कहकर खमासमण पूर्वक आधा अंग नमाकर तीन नवकार गिने। पीछे घूटने टेक कर शिर नमाकर दाहिना हाथ नीचे रखकर 'भयवंदसण्ण भद्दो' का पाठ बोले। इस प्रकार पोसह पारकर पोसह के उपगरण लेकर, देवदर्शन करके घर आकर अतिथिसंविभाग व्रत आचरण करता हुआ आहार करे। इति आठ प्रहर पौषध विधि।

दिन संबंधि चउपुहरी पौषध विधि।

आगे जो आठ प्रहर पौषध लेनेकी विधि लिखी है उसीही प्रकार चार प्रहर पौषध लेनेकी विधि है, किन्तु

पोसह दंडक उचरते समय 'जाव अहोरत्तिं पज्जुवासामि' पाठ है, उसी जगह 'जावदिवसं पज्जुवासामि' ऐसा पाठ बोलना चाहिये। बाद पूर्ववत् सामायिक ले। यदि प्रतिक्रमण गुरुके साथ न किया हो तो गुरुके पास आकरके पौषध और सामायिक की पूर्ववत् सब विधि करे। पीछे आलोयण खामणादि निमित्त मुहपत्ति पडिलेहे और दो वांदना दे। बादमें 'इच्छा० सं० भ० राइअं आलोउं ? इच्छं, आलोएमि जो मे राइओ अइआरो०' इत्यादि पाठ से राइं आलोवे। फिर एक खमासमण देकर 'इच्छा का० सं० भ० अब्भुट्ठिओमि अब्भिंतर राइअं खामेउं ? इच्छं खामेमि राइअं जं किंचि०' इत्यादि पाठ से राई खामे अर्थात् विधि पूर्वक गुरुवंदन करे। पीछे गुरु समक्ष उपवास आदिका पच्चक्खान करे। बाद दो खमासमण से बहुवेल संदिसरावे। पडिलेहन पहले किया हो तो भी आदेश लेना—'इच्छामि० इच्छा० पडिलेहन संदिस्साहुं, ? इच्छं' 'इच्छामि० इच्छा० पडिलेहन करूं ? इच्छं' कहकर मुहपत्ति पडिलेहना। पीछे फिर 'इच्छामि० इच्छा० अंगपडिलेहन संदिसाहुं ? इच्छं' 'इच्छामि० इच्छा० अंगपडिलेहन करूं ? इच्छं' कहकर मुहपत्ति पडिलेहे। पीछे 'इच्छामि० इच्छाकारेण संदिसह भगवन् पसाय करी पडिलेहण पडिलेहवोजी ? इच्छं'। बाद 'इच्छामि० इच्छा० उपधि मुहपत्ति पडिलेहुं ? इच्छं' कहकर कोई वस्त्र बिना पडिलेहण रखा हो तो पडिलेहे,

नहीं तो फिर एक आसन पडिलेहे । बाद दो खमासमण पूर्वक सज्झाय संदिसाहुं और सज्झाय करूं कहकर उपदेश-मालाकी सज्झाय कहे। और पीछले प्रहर पच्चक्खाण करने बाद दो खमासमण पूर्वक उपधि पडिलेहन संदिसाहुं ? और उपधिपडिलेहन करूं ? ऐसा कहकर पडिलेहन करे, परंतु थंडिला पद न कहे और थंडिला पडिलेहे भी नहीं। बाकी सब विधि आठप्रहर पौषध की तरह समझना ॥ इति ॥

रात्रिसंबंधि चउपुहरी पोसह विधि ।

जिसने दिनका चउपुहरी पोसह लिया है, उसको यदि रात्रि पोसह का भाव हुआ तो वह संध्याका पडिलेहन और पच्चक्खाण करने बाद, दो खमासमण पूर्वक पोसहमुहपत्ति पडिलेह कर, दो खमासमण पूर्वक पोसह का आदेश मांग-कर, तीन नवकार गिनकर तीनवार पोसह-दंडक उच्चरें, इसमें 'जावअहोरत्तं पज्जुवासामि' पाठके ठिकाने 'जावरत्तिं पज्जुवासामि' ऐसा पाठ उच्चरें। बाद सामायिक मुहपत्ति पडिलेह कर जो पहले विधि लिखा है उसी तरह सब विधि करें।

यदि कारण विशेष दिनका पौषध न कर सके और रात्रिका पौषध लेनेकी इच्छा हुई हो तो—पहले सब उपग-रणका पडिलेहन कर इरियावहियं पडिक्कमे। पीछे चउवि-हाहार पच्चक्खाण करके दो खमासमण पूर्वक पोसहमुहपत्ति

पडिलेहे। बाद दो खमासमण पूर्वक पोसह का आदेश मांगकर, तीन नवकार गिनकर तीनवार पोसह-दंडक उच्चरें। इसमें संध्यासमय हो तो 'जावरत्तिं पज्जुवासामि' पाठ बोले और दिवस शेष रहा हो तो 'जाव दिवससेसं रत्तिं पज्जुवासामि' ऐसा पाठ बोले। बाद सामायिक मुहपत्ति पडिलेह कर जो पहले विधि लिखा है उसी तरह सब विधि करे। अंतमें पडिलेहन का आदेश मांगने बाद स्थानक शून्यता मिटाने के लिये फक्त एक आसन पडिलेहे, परंतु पहले पडिलेहन न किया हो तो सब उपधि पडिलेहे। और उच्चार प्रस्रवण के चौवीस थंडिला भी पडिलेहे। बाकी सब विधि पहलेकी तरह समझना॥ इति॥

देसावगासिक लेने और पारने की विधि।

देसावगासिक लेनेकी विधि पोसह लेनेकी विधि के अनुसार है। परन्तु पोसह लेने के आदेश में देसावगासिक का आदेश लेना चाहिये, जैसे—"देसावगासिक मुहपत्ति पडिलेहुं? देसावगासिक संदिस्साहुं? देसावगासिक ठाउं? देसावगासिक दंडक उच्चरावोजी?" इस प्रकार खमासमण पूर्वक आदेश मांगकर 'करेमि भंते! पोसहं०' यह पोसह के पच्चक्खाण के बदले नीचे लिखा हुआ देसावगासिक का पच्चक्खाण तीन बार कहना चाहिये।

देसावगासिक का पच्चक्खाण।

अहं णं भंते! तुम्हाणं समीवे देसावगासियं पच्चक्खामि। दव्वओ, खित्तओ, कालओ, भावओ। दव्वओ णं देसावगासियं, खित्तओणं इत्थ वा, अन्नत्थ वा, कालओ णं जाव धारणा, भावओ णं जाव गहेणं न गहेज्जामि, छलेणं न छलेज्जामि, अन्नेण केणवि रोगायंकेण वा एस मे परिणामो न परिवडइ ताव अभिग्गहो, अण्णत्थणाभोगेणं, सहसागारेणं, महत्तरागारेणं, सव्व-समाहि-वत्तियागारेणं वोसिरइ।

इस प्रकार देसावगासिक का पच्चक्खान तीन वार उच्चरें। और इसमें बहुवेल का आदेश लेवे नहीं। देसावगासिक जघन्य से तीन सामायिक और उत्कृष्ट से १५ सामायिक का होता है।

देसावगासिक पारने की विधि पोसह पारने की विधि के अनुसार समझना। जैसे—'देसावगासिक पारूं? पारेमि?' इत्यादि दो खमासमण पूर्वक आदेश मांगकर पारने का सूत्र 'भयवं दसण्णभद्दो०' के पाठमें 'सामाइय पोसह संठियस्स' की जगह 'सामाइय देसावगासियं संठियस्स' इत्यादि पाठ कहे॥ इति॥

अथ पच्चक्खाण-सूत्राणि ।

(१) नवकार सहिअ-पच्चक्खाण ।

उग्गए सूरे, नमुक्कार-सहिअं मुट्ठि-सहिअं पच्चक्खाइ चउव्विहंपि आहारं—असणं, पाणं, खाइमं, साइमं, अण्णत्थणाभोगेणं, सहसागारेणं, महत्तरागारेणं, सव्वसमाहि-वत्तिआगारेणं, विगईओ पच्चक्खाइ, अण्णत्थणाभोगेणं, सहसागारेणं, लेवालेवेणं, गिहत्थसंसिट्ठेणं, उक्खित्त-विवेगेणं, पडुच्च-मक्खिएणं, पारिट्ठावणियागारेणं, महत्तरागारेणं । देसावगासियं भोगपरिभोगं पच्चक्खाइ, अण्णत्थणाभोगेणं, सहसागारेणं, महत्तरागारेणं सव्वसमाहि-वत्तिआगारेणं वोसिरइ ।

---

१ यह पच्चक्खाण जो चौदह नियम प्रतिदिन संभारता है उसके लिये है । सर्वत्र पच्चक्खाण में जहां जहां 'पच्चक्खाइ' और 'वोसरइ' पाठ आते हैं । वहां वहां यदि पच्चक्खाण स्वयं बोलता हो तो 'पच्चक्खामि' और 'वोसिरामि' बोले । और दूसरों को पच्चक्खाण कराना हो तो 'पच्चक्खाइ' और 'वोसरइ' बोले । एवं 'लेवालेवेणं' से पांच आगार साधु के लिये है, गृहस्थ के लिये नहीं है, जिससे गृहस्थ ये पांच आगार न बोलें ।

(२) नवकारसहिअं पच्चक्खाण ।

उग्गए सूरे नमुक्कारसहिअं पच्चक्खाइ, चउव्विहंपि आहारं—असणं, पाणं, खाइमं, साइमं, अण्णत्थणाभोगेणं, सहसागारेणं वोसिरइ ।

(३) पोरिसी-साड्ढपोरिसी-पच्चक्खाण ।

पोरिसिं, साड्ढपोरिसिं, मुट्ठिसहिअं, पच्चक्खाइ । उग्गए सूरे, चउव्विहंपि आहारं—असणं, पाणं, खाइमं, साइमं, अण्णत्थणाभोगेणं, सहसागारेणं, पच्छण्ण-कालेणं, दिसामोहेणं, साहुवयणेणं, सव्वसमाहिवत्तियागारेणं वोसिरइ ।

(४) पुरिमड्ढ-अवड्ढ-पच्चक्खाण ।

सूरे उग्गए पुरिमड्ढं, अवड्ढं, मुट्ठिसहियं पच्चक्खाइ चउव्विहंपि आहारं—असणं, पाणं, खाइमं; साइमं, अण्णत्थणाभोगेणं, सहस्सागारेणं, पच्छण्णकालेणं, दिसामोहेणं, साहुवयणेणं, महत्तरागारेणं, सव्वसमाहिवत्तियागारेणं वोसिरइ ।

(५) एकासण-बिआसण-पच्चक्खाण ।

पोरिसिं साड्ढपोरिसिं वा पच्चक्खाइ, उग्गए सूरे चउ-

---

२ यह पच्चक्खाण जो चौदह नियम न धारते हो उसके लिये है, अर्थात् जो श्रावक नियम नहीं संभारता हो; वह विगइ का और देसावगासिक का आगार नहीं पच्चक्खे ।

व्विहंपि आहारं—असणं, पाणं, खाइमं, साइमं, अण्णत्थणाभोगेणं, सहसागारेणं, पच्छण्णकालेणं, दिसामोहेणं, साहुवयणेणं, सव्वसमाहिवत्तियागारेणं; एकासणं बिआसणं वा पच्चक्खाइ, दुविहं तिविहंपि आहारं असणं, खाइमं, साइमं, अण्णत्थणा भोगेणं सहसागारेणं, सागारिआगारेणं, आउंटणपसारेणं, गुरुअब्भुट्ठाणेणं, पारिट्ठावणियागारेणं, महत्तरागारेणं, सव्वसमाहिवत्तियागारेणं* वोसिरइ ।

(६) एगलठाण-पच्चक्खाण ।

पोरिसिं साड्ढपोरिसिं वा पच्चक्खाइ, उग्गए सूरे चउव्विहंपि आहारं—असणं, पाणं, खाइमं, साइमं; अण्णत्थणाभोगेणं, सहसागारेणं, पच्छण्णकालेणं, दिसामोहेणं, साहुवयणेणं, सव्वसमाहिवत्तियागारेणं, एकासणं, एगट्ठाणं पच्चक्खाइ, दुविहं तिविहं चउव्विहंपि आहारं—असणं, खाइमं, साइमं, अण्णत्थणाभोगेणं, सहसागारेणं सागारिआगारेणं, गुरुअब्भुट्ठाणेणं, पारिट्ठावणियागारेणं, महत्तरागारेणं सव्वसमाहिवत्तियागारेणं वोसिरइ ।

* यहां पर साधु के लिए एकासण, बिआसण, आयंबिल नीवी और तिविहाहार उपवास के पच्चक्खाण में छह आगार और होते हैं—"पाणस्स लेवेण वा, अलेवेण वा, अच्छेण वा, बहुलेण वा, ससित्थेण वा, असित्थेण वा ।" ....

(७) आयंबिल-पच्चक्खाण।

पोरिसिं साड्ढपोरिसिं वा पच्चक्खाइ, उग्गए सूरे चउ-व्विहंपि आहारं—असणं, पाणं, खाइमं, साइमं; अण्णत्थ-णाभोगेणं, सहसागारेणं, पच्छण्णकालेणं, दिसामोहेणं, साहु-वयणेणं, सव्वसमाहिवत्तियागारेणं, आयंबिलं पच्चक्खाइ, अण्णत्थणाभोगेणं, सहसागारेणं, लेवालेवेणं, गिहत्थसंसि-ट्ठेणं, उक्खित्तविवेगेणं, पारिट्ठावणियागारेणं महत्तरा-गारेणं, सव्वसमाहिवत्तियागारेणं, एकासणं पच्चक्खाइ, तिविहंपि आहारं—असणं, खाइमं, साइमं, अण्णत्थणा-भोगेणं, सहसागारेणं, सागारि आगारेणं, आउंटणपसारेणं, गुरुअब्भुट्ठाणेणं, पारिट्ठावणियागारेणं महत्तरागारेणं, सव्व-समाहिवत्तियागारेणं वोसिरइ।

(८) निव्विगइय-पच्चक्खाण।

पोरिसिं साड्ढपोरिसिं वा पच्चक्खाइ, उग्गए सूरे चउ-व्विहंपि आहारं—असणं, पाणं, खाइमं, साइमं; अण्णत्थणा-भोगेणं, सहसागारेणं, पच्छण्णकालेणं, दिसामोहेणं, साहुव-यणेणं, सव्वसमाहिवत्तियागारेणं, निव्विगइयं, पच्चक्खाइ, अण्णत्थणाभोगेणं, सहसागारेणं, लेवालेवेणं, गिहत्थसंसिट्ठेणं, उक्खित्तविवेगेणं, पडुच्चमक्खिएणं, पारिट्ठावणियागारेणं,

महत्तरागारेणं, सव्वसमाहिवत्तियागारेणं, एकासणं पच्चक्खाइ तिविहंपि आहारं-असणं, खाइमं, साइमं; अण्णत्थणाभोगेणं, सहसागारेणं, सागारिआगारेणं, आउंटणपसारेणं, गुरुअब्भुट्ठाणेणं, पारिट्ठावणियागारेणं, महत्तरागारेणं, सव्वसमाहिवत्तियागारेणं वोसिरइ।

(९) चउव्विहाहार-उपवास-पच्चक्खाण।

सूरे उग्गए अब्भत्तट्ठं पच्चक्खाइ, चउव्विहंपि आहारं—असणं, पाणं, खाइमं, साइमं; अण्णत्थणाभोगेणं, सहसागारेणं, महत्तरागारेणं, सव्वसमाहिवत्तियागारेणं वोसिरइ।

(१०) तिविहाहार उपवास पच्चक्खाण।

सूरे उग्गए अब्भत्तट्ठं पच्चक्खाइ, तिविहंपि आहारं—असणं, खाइमं, साइमं; अण्णत्थणाभोगेणं, सहसागारेणं, पाणहार पोरिसिं, साड्ढपोरिसिं, पुरिमड्ढं, अवड्ढं वा पच्चक्खाइ अण्णत्थणभोगेणं, सहसागारेणं, पच्छण्णकालेणं, दिसामोहेणं, साहुवयणेणं, सव्वसमाहिवत्तियागारेणं वोसिरइ।

(११) विगई-पच्चक्खाण।

विगईओ पच्चक्खाइ, अण्णत्थणाभोगेणं, सहसागारेणं, लेवालेवेणं, गिहत्थसंसिट्ठेणं, उक्खित्तविवेगेणं, पडुच्चमक्खि-

एणं, पारिट्ठावणियागारेणं, महत्तरागारेणं, सव्वसमाहिवत्ति-
यागारेणं वोसिरइ ।

(१२) देसावगासिक-पच्चक्खाण ।

देसावगासियं भोगपरिभोगं पच्चक्खाइ, अण्णत्थणा-
भोगेणं, सहसागारेणं, महत्तरागारेणं, सव्वसमाहिवत्तिया-
गारेणं वोसिरइ ।

(१३) दत्ति-पच्चक्खाण ।

पोरिसिं साड्ढपोरिसिं पुरिमड्ढं वा पच्चक्खाइ, उग्गए
सूरे चउव्विहं पि आहारं—असणं, पाणं, खाइमं, साइमं;
अण्णत्थणाभोगेणं, सहसागारेणं, पच्छण्णकालेणं, दिसामो-
हेणं, साहुवयणेणं, सव्वसमाहिवत्तियागारेणं, एकासणं एग-
ट्ठाणं दत्तियं पच्चक्खाइ, तिविहंपि चउव्विहंपि आहारं—
असणं, पाणं, खाइमं, साइमं; अण्णत्थणाभोगेणं, सहसागा-
रेणं, सागारिआगारेणं, गुरुअब्भुट्ठाणेणं, महत्तरागारेणं,
सव्वसमाहिवत्तियागारेणं वोसिरइ ।

१०-११ ये दोनों पच्चक्खाण प्रत्येक पच्चक्खाण के अन्तिम पद 'वोसिरइ' के पहले, जो चौदह नियम धारता हो वह उच्चरें। जो चौदह नियम नहीं धारता हो तो ये दोनों पच्चक्खाण न उच्चरें।

(१४) दिवसचरिम-चउव्विहाहार-पच्चक्खाण।

दिवसचरिमं पच्चक्खाइ, चउव्विहंपि आहारं—असणं, पाणं, खाइमं, साइमं; अण्णत्थणाभोगेणं, सहसागारेणं, महत्तरागारेणं, सव्वसमाहिवत्तियागारेणं वोसिरइ।

(१५) दिवसचरिम-दुविहाहार-पच्चक्खाण।

दिवसचरिमं पच्चक्खाइ, दुविहंपि आहारं—असणं, खाइमं, अण्णत्थणाभोगेणं, सहसागारेणं, महत्तरागारेणं, सव्वसमाहिवत्तियागारेणं वोसिरइ।

(१६) पाणहार-पच्चक्खाण।

पाणहार दिवसचरिमं पच्चक्खाइ, अन्नत्थणाभोगेणं, सहसागारेणं, महत्तरागारेणं, सव्वसमाहिवत्तियागारेणं वोसिरइ।

(१७) भवचरिम-पच्चक्खाण।

भवचरिमं पच्चक्खाइ तिविहंपि चउव्विहंपि आहारं—असणं, पाणं, खाइमं, साइमं, अण्णत्थणाभोगेणं, सहसागारेणं, महत्तरागारेणं, सव्वसमाहिवत्तियागारेणं वोसिरइ।

(१८) गंठिसहिअ, मुट्ठिसहिअ और अंगुट्ठसहिअ आदि अभिग्रह का पच्चक्खाण।

गंठिसहिअं मुट्ठिसहिअं वा पच्चक्खाइ, अण्णत्थणाभोगेणं, सहसागारेणं, महत्तरागारेणं, सव्वसमाहिवत्तियागारेणं वोसिरइ।

---

१८ इस पच्चक्खाण में पांचवां 'चोलपट्टागारेणं' चोलपट्टाका आगार साधु के लिये होता है।

पच्चक्खाण की आगार संख्या।

दो चेव नमुक्कारे, आगारा छच्च हुंति पोरिसिए।
सत्तेव य पुरिमड्ढे, एगासणयम्मि अट्ठेव ॥१॥
सत्तेगट्ठाणस्स, अट्ठेव य अंबिलम्मि आगारा।
पंचेव अब्भत्तट्ठे, छप्पाणे चरिम चत्तारि ॥२॥
पंच चउरो अभिग्गहे, निव्वीए अट्ठ नव य आगारा।
अप्पावरणे पंच चउ, हवंति सेसेसु चत्तारि ॥३॥ इति॥

अथ मांगलिक सप्त स्मरणानि ।



(१) प्रथमं श्रीबृहदजितशान्तिस्मरणम् ।

अजिअं जिअ-सव्व-भयं, संतिं च पसंत-सव्व-गय-पावं । जय-गुरु-संति-गुणकरे, दोवि जिणवरे पणिवयामि ॥ १ ॥ (गाहा) ॥ ववगय-मंगुल-भावे, ते हं विउल-तव-निम्मल-सहावे । निरुवम-मह-प्पभावे, थोसामि सुदिट्ठ-सब्भावे ॥ २ ॥ (गाहा) ॥ सव्व-दुक्ख-प्पसंतीणं, सव्व-पाव-प्पसंतिणं । सया अजिय-संतीणं, नमो अजिअ-संतिणं ॥ ३ ॥ (सिलोगो) ॥ अजिय ! जिण ! सुहप्पवत्तणं, तव पुरिसुत्तम ! नाम-कित्तणं । तह य धिइमइ-प्पवत्तणं, तव य जिणुत्तम ! संति ! कित्तणं ॥ ४ ॥ (मागहिया) ॥ किरिआ-विहि-संचिअ-कम्म-किलेस-विमुक्खयरं, अजिअं निचिअं च गुणेहिं महामुणि-सिद्धि-गयं । अजिअस्स य संति-महा-मुणिणोवि अ संतिकरं, सययं मम निव्वुइ-कारणयं च नमंसणयं ॥ ५ ॥ (आलिंगणयं) ॥ पुरिसा ! जइ दुक्ख-वारणं, जइ अ विमग्गह सुक्ख-कारणं । अजिअं संतिं च भावओ, अभयकरे सरणं पवज्जहा ॥ ६ ॥ (मागहिआ) ॥

अरइ-रइ-तिमिर-विरहिअमुवरय-जर-मरणं, सुर-असुर गरुल-भुअगवइ-पयय-पणिवइअं। अजिअमहमवि अ सुनय-नय-निउणमभयकरं, सरणमुवसरिअ भुवि-दिविज्ज-महिअं सययमुवणमे ॥ ७ ॥ (संगययं) ॥ तं च जिणुत्तममुत्तम-नित्तम-सत्तधरं, अज्जव-मद्दव-खंति-विमुत्ति-समाहि-निहिं। संतिकरं पणमामि दमुत्तम-तित्थयरं, संति-मुणी मम संति-समाहि-वरं दिसउ ॥ ८ ॥ (सोवाणयं) सावत्थि-पुव्व-पत्थिवं च वर-हत्थि मत्थय-पसत्थ-वित्थिन्न-संथिअं, थिर-सरिच्छ-वच्छं मयगल-लीलायमाण-वर-गंध-हत्थि-पत्थाण-पत्थियं संथवारिहं। हत्थि-हत्थ-बाहु-धंत-कणग-रुअग-निरुवहय-पिंजरं, पवर-लक्खणोवचिअसोम-चारु-रूवं, सुइ-सुह-मणाभिराम-परम-रमणिज्ज-वर-देव-दुन्दुहि-निनाय-महुरयर-सुह-गिरं ॥ ९ ॥ (वेड्ढओ) ॥ अजिअं जिआरि-गणं, जिअ-सव्व-भयं भवोह-रिउं। पणमामि अहं पयओ, पावं पसमेउ मे भयवं ॥ १० ॥ (रासालुद्धओ) कुरु-जणवय-हत्थिणाउर-नरीसरो पढमं तओ महा-चक्कवट्टि-भोए मह-प्पभावो, जो बावत्तरि-पुर-वर-सहस्स-वर-णगर-णिगम-जणवय-वई, बत्तीसा-रायवर-सहस्साणुयाय-मग्गो, चउदस-वर-रयण-नव-महानिहि-चउसट्ठि-सहस्स-पवर-जुवईण सुंदर-वई, चुलसी-हय-गय-रहसय-सहस्स-सामी, छन्नवइ-गाम-

कोडि-सामी आसिज्जो भारहम्मि भयवं ॥११॥ (वेड्ढओ) ॥ तं संतिं संतिकरं, संतिण्णं सव्व-भया। संतिं थुणामि जिणं, संतिं विहेउ मे ॥१२॥ (रासानंदियं) ॥ इक्खाग-विदेह-नरीसर ! नर-वसहा ! मुणि-वसहा !, नव-सारय-ससि-सकलाणण ! विगय-तमा ! विहुअ-रया ! । अजिउत्तम-तेअ-गुणेहिं महा-मुणि-अमिय-बला ! विउल-कुला !, पणमामि ते भव-भय-मूरण ! जग-सरणा ! मम सरणं ॥ १३ ॥ (चित्तलेहा) ॥ देव-दाणविंद-चंद-सूर-वंद ! हट्ठ-तुट्ठ-जिट्ठ-परम, लट्ठ-रूव ! धंत-रुप्प-पट्ट-सेअ-सुद्ध-निद्ध-धवल, दंत-पंति ! संति ! सत्ति-कित्ति-मुत्ति-जुत्ति-गुत्ति-पवर !, दित्त-तेअ-वंद-धेअ ! सव्व-लोअ-भाविअ-प्पभाव-णेय ! पइस मे समाहिं ॥ १४ ॥ (नारायओ) ॥ विमल-ससि-कलाइरेअ-सोमं, वितिमिर-सूर-कराइरेअ-तेअं। तियसवइ-गणाइरेअ-रूवं, धरणिधरपवरा-इरेअ-सारं ॥ १५ ॥ (कुसुमलया) ॥ सत्ते अ सया अजिअं, सारीरे अ बले अजिअं । तव-संजमे अ अजिअं, एस थुणामि जिणं अजिअं ॥१६॥ (भुअगपरिरंगियं) ॥ सोमगुणेहिं पावइ न तं नव-सरय-ससी, तेअ-गुणेहिं पावइ न तं नव-सरय-रवी। रूव-गुणेहिं पावइ न तं तिअस-गण-वई, सार-गुणेहिं पावइ न तं धरणि-धर-वई ॥ १७ ॥ (खिज्जिअयं) ॥ तित्थ-नर-पवत्तयं

तम-रय-रहिअं, धीर-जण-थुअच्चिअं चुअकलि-कलुसं । संति-सुह-प्पवत्तयं ति-गरण-पयओ, संतिमहं महामुणिं सरणमुवणमे ॥ १८ ॥ (ललिअयं) ॥ विणओणय-सिरि-रइअंजलि-रिसि-गण-संथुअं थिमिअं, विबुहाहिव-धणवइ-नरवइ-थुअ-महिअ-च्चियं बहुसो । अइरुग्गय-सरय-दिवायर-समहिअ-सप्पभं तवसा, गयणंगणवियरण-समुइय-चारण-वंदिअं सिरसा ॥ १९ ॥ (किसलयमाला) ॥ असुर-गरुल-परिवंदिअं, किन्नरोरग-णमंसिअं । देव-कोडि-सय-संथुअं, समण-संघ-परिवंदिअं ॥ २० ॥ (सुमुहं) ॥ अभयं अणहं, अरयं अरुयं । अजिअं अजिअं, पयओ पणमे ॥ २१ ॥ (विज्जुविल-सिअं) ॥ आगया वरविमाण-दिव्व-कणग-रह-तुरय-पहकर-सएहिं हुलिअं । ससंभमोअरण-खुभिअ-लुलिय-चल-कुण्डलंगय-तिरीड-सोहंत-मउलि-माला ॥ २२ ॥ (वेड्ढओ) ॥ जं सुर-संघा सासुर-संघा वेर-विउत्ता, भत्ति-सुजुत्ता, आयर-भूसि-असंभम-पिंडिअ-सुट्ठु-सुविम्हिय-सव्व-बलोघा । उत्तम-कंचण-रयण-परूविअ-भासुर-भूसण-भासुरिअंगा, गाय-समोणय-भत्ति-वसागय-पंजलि-पेसिअ-सीस-पणामा ॥ २३ ॥ (रयणमाला) ॥ वंदिऊण थोऊण तो जिणं, तिगुणमेव य पुणो पयाहिणं । पणमि-ऊण य जिणं सुरासुरा, पमुइआ स-भवणाइं तो गया ॥ २४ ॥

(खित्तयं) ॥ तं महामुणिमहंपि पंजली, राग-दोप-भय-मोह-व-ज्जिअं । देव-दाणवनरिंद-वंदिअं, संति-मुत्तम-महातवं नमे ॥२५॥ (खित्तयं) ॥ अंवरंतर-वियारणिआहिं, ललिअ-हंस-वहू-गामिणिआहिं । पीण-सोणि-थण-सालिणिआहिं, सकल-कमल-दल-लोअणिआहिं ॥ २६ ॥ (दीवयं) ॥ पीण-निरं-तर-थण-भर-विणमिअ-गाय-लयाहिं, मणि-कञ्चण-पसि-ढिल-मेहल-सोहिअ-सोणि-तडाहिं । वर-खिंखिणि-नेउर-सतिलय-वलय-विभूसणियाहिं, रइकर-चउर-मणोहर-सुन्दर-दंसणिआहिं ॥ २७ ॥ (चित्तखरा) ॥ देव-सुंदरीहिं पाय-चंदआहिं, वंदआ य जस्स ते सुविक्कमा कमा, अप्पणो निडालएहिं मंडणोड्डण-पगारएहिं केहिं केहिं वि अवंग-तिलय-पत्त-लेह-नामएहिं चिल्लएहिं संगयं-गयाहिं, भत्ति-सन्निविट्ठ-वंदणा-गयाहिं हुंति ते वंदिआ पुणो पुणो ॥ २८ ॥ (नारायओ) ॥ तमहं जिणचंदं, अजिअं जिअ-मोहं । धुअ-सव्व-किलेसं, पयओ पणमामि ॥ २९ ॥ (नंदिअयं) ॥ थुअ-वंदिअस्सा रिसि-गणदेव-गणेहिं, तो देव-वहूहिं पयओ पणमिअस्सा । जस्स जगुत्तम-सासणअस्सा, भत्ति-वसागय-पिंडिअआहिं । देव-वरच्छरसा-बहुआहिं, सुर-वर-रइ-गुण-पंडिअआहिं ॥३०॥ (भासुरयं) ॥ वंस-सद्द-तंति-ताल-मेलिए, तिउ-क्खराभिराम-

सद्द-मीसए कए अ, सुइ-समाणणे अ सुद्ध-सज्ज-गीअ-पाय-जाल-घंटिआहिं, वलय-मेहला-कलाव-नेउरा-भिराम-सद्द-मीसए कए य देव-नट्टिआहिं, हाव-भाव-विब्भम-प्पगारएहिं, नच्चिऊण अंग-हारएहिं वंदिआ य जस्स ते सुविक्कमा कमा, तयं तिलोय-सव्व-सत्त-संति-कारयं, पसंत-सव्व-पाव-दोसमेस हं नमामि संतिमुत्तमं जिणं ॥ ३१ ॥ (नारायओ) ॥ छत्त-चामर-पडाग-जूअ-जव-मंडिआ, झय-वर-मगर-तुरय-सिरिवच्छ-सुलंछणा । दीव-समुद्द-मंदर-दिसागय-सोहिआ, सत्थिय-वसह-सीह-रह-चक्क-वरंकिया ॥ ३२ ॥ (ललिअयं) ॥ सहाव-लट्ठा सम-प्पइट्ठा,अदोस-दुट्ठा गुणेहिं जिट्ठा । पसाय-सिट्ठा तवेण पुट्ठा, सिरीहिं इट्ठा रिसीहिं जुट्ठा ॥ ३३ ॥ (वाणवासिआ) ॥ ते तवेण धुअ-सव्व-पावया, सव्व-लोअ-हिअ-मूल-पावया । संथुआ अजिय-संति-पायया, हुंतु मे सिव-सुहाण दायया ॥ ३४ ॥ (अपरान्तिका) ॥ एवं-तव-बल-विउलं, थुअं मए अजिअ-संति-जिण-जुअलं । ववगय-कम्म-रय-मलं, गइं गयं सासयं विउलं ॥ ३५ ॥ (गाहा) ॥ तं बहु-गुण-प्पसायं, मुक्ख-सुहेण परमेण अविसायं । नासेउ मे विसायं, कुणउ अ परिसावि अ पसायं ॥ ३६ ॥ (गाहा) ॥ तं मोएउ अ नंदिं, पावेउ अ नंदिसेणमभिनंदिं । परिसा

विअ सुहनंदिं, मम य दिसउ संजमे नंदिं ॥३७॥ (गाहा)॥ पक्खिअ चाउम्मासे, संवच्छरिए अ अवस्स-भणिअव्वो ॥ सोअव्वो सव्वेहिं, उवसग्ग-निवारणो एसो ॥ ३८ ॥ जो पढइ जो अ निसुणइ, उभओ-कालंपि अजिय-संति-थयं । न हु हुंति तस्स रोगा, पुव्वुप्पन्ना विनासंति ॥ ३९ ॥ जइ इच्छह परम-पयं, अहवा कित्तिं सुवित्थडं भुवणे । ता तेलु-क्कुद्धरणे, जिण-वयणे आयरं कुणह ॥ ४० ॥ इति श्रीबृह-दजितशान्तिस्तवनं प्रथमं स्मरणम् ॥ १ ॥

(२) द्वितीयं लघु-अजितशान्तिस्मरणम् ।

उल्लासि-क्कम-णक्ख-णिग्गय-पहा-दण्ड-च्छलेणंगिणं, वंदा-रूण दिसंतइव्व पयडं निव्वाणमग्गावलिं । कुंदिंदुज्जलदंत-कंति-मिसओ नीहंत-नाणंकुरु-क्केरे दोवि दुइज्जसोलस-जिणे थोसामि खेमंकरे ॥ १ ॥ चरम-जलहि-नीरंजो मिणिज्जंज-लीहिं, खय-समय-समीरं जो जिणिज्जा गईए । सयल-नहयलं वा लंघए जो पएहिं, अजियमहव संतिं सो समत्थो थुणेउं ॥ २ ॥ तहवि हु बहु-माणुल्लासि-भत्ति-ब्भरेण, गुणकणमिव कित्तेहामि चिंतामणि व्व । अलमहव अचिंताणंत-सामत्थओ सिं, फलिहइ लहु सव्वं वंछिअं णिच्छिअं मे ॥ ३ ॥ सयल-जय-हिआणं नाम-मित्तेण जाणं, विहडइ लहु दुट्ठानिट्ठ-

दोवट्ट-थट्ठं । नमिर-सुर-किरीडुग्घिट्ट-पायारविंदे, सययम-
जिअ-संती ते जिणंदेभिवंदे ॥ ४ ॥ पसरइ वर-कित्ती वड्ढए
देह-दित्ती, विलसइ भुवि मित्ती जायए सुप्पवित्ती । फुरइ
परम-तित्ती होइ संसार-छित्ती, जिण-जुअ-पय-भत्ती ही अचिं-
तोरु-सत्ती ॥ ५ ॥ ललिअ-पय-पयारं भूरि-दिव्वंग-हारं, फुड-
घण-रस-भावोदार-सिंगार-सारं । अणिमिस-रमणीजद्द सण-
च्छेअ-भीया, इव पणमण-मंदा कासि-नट्टोवयारं ॥ ६ ॥
थुणह अजिअ-संती ते कया-सेस-संती, कणय-रय-पिसंगा
छज्जए जाणि मुत्ती । सरभस-परिरंभारंभि-निव्वाण-लच्छी,
घण-थण-घुसिणिक्कुप्पंक-पिंगीकयव्व ॥ ७ ॥ बहुविह-नय-
भंगं वत्थु णिच्चं अणिच्चं, सदसदणभिलप्पालप्पमेगं अणेगं ।
इय कुनय-विरुद्धं सुप्पसिद्धं च जेसिं, वयणमवयणिज्जं ते
जिणे संभरामि ॥ ८ ॥ पसरइ तिय-लोए ताव मोहंधयारं,
भमइ जयमसण्णं ताव मिच्छत्त-छण्णं । फुरइ फुड-फलंताणत-
णाणंसु-पूरो, पयड-मजिअ-संतीज्झाण-सूरो न जाव ॥ ९ ॥
अरि-करि-हरि-तिण्हुण्हंबु-चोराहि-वाही, समर-डमर-मारीरुद्द-
खुद्दोवसग्गा । पल-यमजिअ-संती-कित्तणे झत्ति जंती, निवि-
डतर-तमोहा भक्खरालुंखिअव्व ॥ १० ॥ निचिअ-दुरिअ-
दारु-दित्त-झाणग्गि-जाला, परिगयमिव गोरं चिंतिअं जाण

रूवं । कणय-निहसरेहा-कंति-चोरं करिज्जा, चिर-थिरमिह लच्छिं गाढ-संथंभिअव्व ॥ ११ ॥ अडवि-निवडियाणं पत्थि-वुत्तासिआणं, जलहि-लहरि-हीरंताण गुत्ति-द्वियाणं । जलिअ-जलण-जाला-लिंगिआणं च झाणं, जणयइ लहु संतिं संति-नाहाजिआणं ॥ १२ ॥ हरि-करि-परिकिण्णं पक्क-पाइक्क-पुन्नं, सयल-पुहवि रज्जं छड्डिउं आण-सज्जं । तणमिव पडिलग्गं जे जिणा मुत्ति-मग्गं, चरणमणुपवन्ना हुंतु ते मे पसन्ना ॥ १३ ॥ छण-ससि-वयणाहिं फुल्ल-निलुप्पलाहिं, थण-भर-नमिरीहिं मुट्ठि-गिज्झोदरीहिं । ललिअ-भुअ-लयाहिं पीण-सोणि-त्थलाहिं, सइ-सुर-रमणीहिं वंदिआ जेसि पाया ॥ १४ ॥ अरिस-किडिम-कुट्ठ-गंठि-कासाइसार-खय-जर-वण-लूआ-सास-सोसोदराणि । नह-मुह-दसणच्छी-कुच्छि-कण्णाइ-रोगे, मह जिण-जुअ-पाया सुप्पसाया हरंतु ॥ १५ ॥ इअ गुरु-दुह-तासे पक्खिए चाउमासे, जिणवर-दुग-थुत्तं वच्छरे वा पवित्तं । पढह सुणह सिज्झाएह झाएह चित्ते, कुणह मुणह विग्घं जेण घाएह सिग्घं ॥ १६ ॥ इय विजयाऽजिअ-सत्तु-पुत्त ! सिरि-अजिअ-जिणेसर !, तह अइरा-विस-सेण-तणय ! पंचम-चक्कीसर ! । तित्थंकर ! सोलसम ! संति ! जिण-वल्लह-संथुअ !, कुरु मंगल मम हरसु दुरियमखिलंपि,

थुणंतह ॥ १७ ॥ इति श्रीलघु-अजितशान्तिस्तवनं द्वितीयं स्मरणम् ॥ २ ॥

(३) नमिऊणनामकं तृतीयं स्मरणम् ।

नमिऊण पणय-सुर-गण-चूड़ामणि-किरण-रंजिअं मुणिणो । चलण-जुअलं महाभय, पणासणं संथवं वुच्छं ॥ १ ॥ सडिय-कर-चरण-नह-मुह-निवुड्ड-नासा विवन्नला-यण्णा । कुट्ठ-महा-रोगानल-फुलिंग-निद्दड्ढ-सव्वंगा ॥ २ ॥ ते तुह चलणा-राहण-सलिलंजलि-सेअ-वुड्ढिअ-च्छाया । वण-दव-दड्ढा गिरि-पायवव्व पत्ता पुणो लच्छि ॥ ३ ॥ दुव्वाय-खुब्भिय-जलनिहि, उब्भड-कल्लोल-भीसणारावे । सं-भंत-भय-विसंठुल,-निज्जामय-मुक्क-वावारे ॥ ४ ॥ अविदलि-यजाणवत्ता, खणेण पावंति इच्छिअं कूलं । पास-जिण-चलण-जुअलं, निच्चं चिअ जे नमंति नरा ॥५॥ खर-पवणुद्धुय-वणदव-जालावलि-मिलिय-सयल-दुम-गहणे । डज्झंत-मुद्ध-मिय-वहु,-भीसण-रव-भीसणम्मि वणे ॥ ६ ॥ जग-गुरुणो कम-जुअलं, निव्वाविय-सयल-तिहुअणाभोअं । जे संभरंति मणुआ, न कुणइ जलणो भयं तेसिं ॥ ७ ॥ विलसंत-भोग-भीसण,—फुरिआरुण-नयण—तरल-जीहालं । उग्ग-भुअंग नव-जलय, सच्छहं भीसणायारं ॥ ८ ॥ मन्नंति कीडसरिसं,

दूर-परिच्छूढ-विसम-विस-वेगा । तुह नामक्खर-फुड-सिद्ध-मंत-गुरुआ नरा लोए ॥ ९ ॥ अडवीसु भिल्ल-तक्कर-पुलिंद-सद्दूल-सद्द-भीमासु । भय-विहलवुन्न-कायर-उल्लूरिअ-पहिअ-सत्थासु ॥ १० ॥ अविलुत्तविहव-सारा, तुह नाह ! पणाम-मत्त-वावारा । ववगय-विग्घा सिग्घं, पत्ता हिय-इच्छियं ठाणं ॥ ११ ॥ पज्जलिआनल-नयणं, दूर-विआरिय-मुहं महाकायं । नह-कुलिस-घायविअलिअ-गइंद-कुंभ-त्थलाभोअं ॥ १२ ॥ पणय-ससंभम-पत्थिव, नह-मणि-माणिक्क-पडिअ-पडिमस्स । तुह वयण-पहरणधरा, सीहं कुद्धंपि न गणंति ॥ १३ ॥ ससि-धवल-दंत-मुसलं, दीह-करुल्लाल-वड्ढिउच्छाहं । महु-पिंग-नयण-जुअलं, ससलिल-नव-जलहरारावं ॥ १४ ॥ भीमं महा-गइंदं, अच्चासन्नंपि ते नवि गणंति । जे तुम्ह चलण-जुअलं मुणिवइ ! तुंगं समल्लीणा ॥ १५ ॥ समरम्मि तिक्ख-खग्गा-भिग्घाय-पविद्ध-उद्धुय-कबंधे । कुंत-विणिभिन्नकरि-कलह-मुक्क-सिक्कार-पउरम्मि ॥ १६ ॥ निज्जिय-दप्पुद्धररिउ-नरिंद-निवहा भडा जसं धवलं । पावंति पावपसमिण ! पास-जिण ! तुह प्पभावेण ॥ १७ ॥ रोग-जल-जलण-विसहर-चोरारि-मइन्द-गय-रण-भयाइं । पास-जिणनाम-संकित्तणेण पसमंति सव्वाइं ॥ १८ ॥ एवं महाभयहरं, पास-जिणिंदस्स

संथवसुआरं । भविय-जणाणंदयरं, कल्लाण-परंपर-निहाणं ॥ १९ ॥ राय-भय-जक्ख-रक्खस,-कुसुमिण-दुस्सउण-रिक्ख-पीडासु । संझासु दोसु पंथे, उवसग्गे तह य रयणीसु ॥ २० ॥ जो पढइ जो अ निसुणइ, ताणं कइणो य माण-तुंगस्स । पासो पावं पसमेउ, सयल-भुवणच्चिअ-चलणो ॥ २१ ॥ इति श्रीपार्श्वजिनस्तवनं तृतीयं स्मरणम् ।

(४) गणधरदेव-स्तुतिरूपं चतुर्थं स्मरणम् ।

तं जयउ जए तित्थं, जमित्थ तित्थाहिवेण वीरेण ॥ सम्मं पवत्तियं भव्व-सत्त-संताण-सुह- जणयं ॥ १ ॥ नासिय-सयल-किलेसा, निहय-कुलेसा पसत्थ-सुह-लेस्सा । सिरिवद्ध-माण-तित्थस्स मंगलं दिंतु ते अरिहा ॥ २ ॥ निद्दड्ढकम्म-बीआ, बीआ परमेट्ठिणो गुण-समिद्धा । सिद्धा ति-जय-पसिद्धा, हणंतु दुत्थाणि तित्थस्स ॥ ३ ॥ आयारमायरंता, पंच-पयारं सया पयासंता । आयरिआ तह तित्थं, निहय-कुतित्थं पयासंतु ॥ ४ ॥ सम्म-सुअ-वायगा वायगा य सि-अवाय-वायगा वाए । पवयण-पडणीय-कए-ऽवणिंतु सव्वस्स संघस्स ॥ ५ ॥ निव्वाण-साहणुज्जय-साहूणं जणिय-सव्व-साहज्जा । तित्थ-प्पभावगा ते हवंतु परमेट्ठिणो जइणो ॥ ६ ॥ जेणाणुगयं णाणं निव्वाण-फलं च चरणमवि हवइ ।

तित्थस्स दंसणं तं, मंगुलमवणेउ सिद्धियरं ॥७॥ निच्छउमो सुअधम्मो, समग्ग-भव्वंगि-वग्ग-कय-सम्मो । गुण-सुट्ठिअस्स संघस्स, मंगलं सम्ममिह दिसउ ॥ ८ ॥ रम्मो चरित्तधम्मो, संपाविअ-भव्व-सत्त-सिव-सम्मो । नीसेस-किलेसहरो, हवउ सया सयल-संघस्स ॥ ९ ॥ गुण-गण-गुरुणो गुरुणो, सिव-सुह-मइणो कुणंतु तित्थस्स । सिरि-वद्धमाण-पहु-पयडि-अस्स कुसलं समग्गस्स ॥ १० ॥ जिय-पडिवक्खा जक्खा, गोमुह-मायंग-गयमुह-पमुक्खा । सिरि-बंभसंति-सहिआ, कय-नय-रक्खा सिवं दिंतु ॥ ११ ॥ अंबा पडिहयडिंबा; सिद्धा सिद्धाइया पवयणस्स । चक्केसरि-वइरुट्टा, संति सुरा दिसउ सुक्खाणि ॥ १२ ॥ सोलस विज्जा-देवीउ, दिंतु संघस्स मंगलं विउलं । अच्छुत्ता-सहिआओ, विस्सुअ-सुयदेवयाइ समं ॥ १३ ॥ जिण-सासणं-कय-रक्खा, जक्खा चउवीस-सासण-सुरावि । सुहभावा संतावं, तित्थस्स सया पणासंतु ॥ १४ ॥ जिण-पवयणम्मि निरया, विरया कुपहाउ सव्वहा सव्वे । वेयावच्चकरावि थ, तित्थस्स हवंतु संतिकरा ॥ १५ ॥ जिण-समय-सिद्ध-सुमग्ग-वहिय-भव्वाण जणिय-साहज्जो । गीयरई गीअजसो, सपरिवारो सिवं दिसउ ॥ १६ ॥ गिह-गुत्त-खित्त-जल-थल-वण-पव्वयवासी देव-देवीओ । जिण-सासण-

ट्ठिआणं, दुहाणि सव्वाणि निहणंतु ॥ १७ ॥ दस-दिसि-पाला स-क्खित्तपालया नव ग्गहा स-नक्खत्ता । जोइणि-राहु-गह-काल-पास-कुलिअद्ध-पहरेहिं ॥ १८ ॥ सह काल-कंटएहिं सविट्ठि-वच्छेहिं कालवेलाहिं । सव्वे सव्वत्थ सुहं, दिसंतु सव्वस्स संघस्स ॥ १९ ॥ भवणवइ-वाणमंतर, जोइस-वेमाणिआ य जे देवा । धरणिंद-सक्क-सहिआ, दलंतु दुरियाइं तित्थस्स ॥ २० ॥ चक्कं जस्स जलंतं, गच्छइ पुरओ पणासिय-तमोहं । तं तित्थस्स भगवओ, नमो नमो वद्धमाणस्स ॥ २१ ॥ सो जयउ जिणो वीरो, जस्सज्जवि सासणं जए जयइ । सिद्धि-पह-सासणं कुपह-नासणं सव्व-भय-महणं ॥२२॥ सिरि-उसभसेण-पमुहा, हय-भय-निवहा दिसंतु तित्थस्स । सव्व-जिणाणं गणहारिणोऽणहं वंछियं सव्वं ॥ २३ ॥ सिरि-वद्धमाण-तित्थाहिवेण तित्थं समप्पियं जस्स । सम्मं सुहम्म-सामी, दिसउ सुहं सयल-संघस्स ॥२४॥ पयईए भद्दिया जे, भद्दाणि दिसंतु सयल-संघस्स । इयर-सुरा वि हु सम्मं, जिण गणहर-कहिय-कारिस्स ॥२५॥ इय जो पढइ तिसंझं, दुस्सज्झं तस्स नत्थि किंपि जए । जिणदत्ताणाए ठिओ, सुनिट्ठिअट्ठो सुही होई ॥ २६ ॥ इति श्रीगणधरदेवस्तुतिनामकं चतुर्थं स्मरणम् ॥ ४ ॥

(५) गुरुपारतन्त्र्यनामकं पञ्चम स्मरणम् ।

मयरहियं गुण-गण-रयण,–सायरं सायरं पणमिऊणं । सुगुरु-जण-पारतंतं, उवहिव्व थुणामि तं चेव ॥ १ ॥ निम्महिय-मोह-जोहा, निहय-विरोहा पणट्ठ-संदेहा । पणयंगि-वग्ग-दाविअ-सुह-संदोहा सुगुण-गेहा ॥ २ ॥ पत्त-सुजइत्त-सोहा, समत्त-पर-तित्थ-जणिय-संखोहा । पडिभग्ग-लोह-जोहा, दंसिअ-सुमहत्थ-सत्थोहा ॥ ३ ॥ परिहरिअ-सत्थ-वाहा, हय-दुहदाहा सिवंब-तरु-साहा । संपाविअ-सुह-लाहा, खीरोदहिणुव्व अग्गाहा ॥ ४ ॥ सुगुण-जण-जणिय-पुज्जा, सज्जो निरवज्ज-गहिय-पव्वज्जा । सिव-सुह-साहण-सज्जा, भव-गुरु-गिरि-चूरणे वज्जा ॥ ५ ॥ अज्ज-सुहम्म-प्पमुहा, गुण-गण-निवहा सुरिंद-विहिअ-महा । ताण तिसंझं नामं, नामं न पणासइ जियाणं ॥ ६ ॥ पडिवज्जिअ-जिण-देवो, देवायरिओ दुरंत-भवहारी । सिरि-नेमिचंद-सूरी उज्जोअण-सूरिणो सुगुरू ॥७॥ सिरि वद्धमाणसूरी, पयडीकय-सूरि-मंत-माहप्पो । पडिहय-कसाय-पसरो, सरय-ससंकुव्व सुह-जणओ ॥ ८ ॥ सुह-सील-चोर-चप्परण-पच्चलो निच्चलो जिण-मयम्मि । जुगपवर-सुद्ध-सिद्धंत-जाणओ पणय-सुगुण-जणो ॥ ९ ॥ पुरओ दुल्लह-महिव,–ल्लहस्स अणहिल्लवाडए पयडं । मुक्का विआरिऊणं, सीहेण व दव्वलिंगि-

गया ॥ १० ॥ दसमच्छेरय-निसि-विप्फुरंत-सच्छन्द-सूरि-मय-तिमिरं । सूरेण व सूरि-जिणे,-सरेण हय-महिअ-दोसेण ॥११॥ सुकइत्त-पत्त-कित्ती, पयडिअ-गुत्ती पसंत-सुह-मुत्ती । पहय-परवाइ-दित्ती, जिणचंद-जईसरो मंती ॥ १२ ॥ पयडिअ-नवंग-सुत्तत्थ,—रयणुकोसो पणासिअ-पओसो । भव-भीअ-भविअ-जण-मण, कय-संतोसो विगय-दोसो ॥ १३ ॥ जुग-पवरागम-सार——प्परूवणा-करण-बन्धुरो धणिअं । सिरि-अभयदेव-सूरी, मुणि-पवरो परम-पसम-धरो ॥ १४ ॥ कय-सावय-सत्तासो, हरिव्व सारंग-भग्ग-संदेहो । गयसमय-दप्प-दलणो, आसाइय-पवर-कव्व-रसो ॥ १५ ॥ भीम-भव-काणणम्मि अ, दंसिअ-गुरु-वयण-रयण-संदोहो । नीसेस-सत्त-गुरुओ, सूरी जिणवल्लहो जयइ ॥ १६ ॥ उवरिट्ठिअ-सच्चरणो, चउरणुओग-प्पहाण-संचरणो । असम-मयराय-महणो, उड्ढ-मुहो सहइ जस्स करो ॥१७॥ दंसिअ-निम्मल-निच्चल,-दंत-गणोगणिअ-सावओत्थ-भओ । गुरु-गिरि-गरुओ सरहुव्व सूरी जिणवल्लहो होत्था ॥ १८ ॥ जुग-पवरागम-पीऊस-पाण-पीणिय-मणा कया भव्वा । जेण जिणवल्लहेणं, गुरुणा तं सव्वहा वंदे ॥ १९ ॥ विप्फुरिय-पवर-पवयण,-सिरोमणी वूढ-दुव्वह-खमो य । जो

सेसाणं सेसुव्व, सहइ सत्ताण ताणकरो ॥२०॥ सचरिआण-महीणं, सुगुरूणं पारतंतमुव्वहइ । जयइ जिणदत्त-सूरी, सिरि-निलओ पणय-मुणि-तिलओ ॥ २१ ॥ इति श्रीगुरूपार-तन्त्र्यनामकं पञ्चमं स्मरणम् ॥ ५ ॥

(६) षष्ठं 'सिग्घमवहरउ' स्मरणम्।

सिग्घमवहरउ विग्घं, जिण-वीराणाणुगामि-संघस्स ।
सिरि-पास-जिणो थंभण-पुर-ट्ठिओ निट्ठिआनिट्ठो ॥ १ ॥
गोयम-सुहम्म-पमुहा, गणवइणो विहिअ-भव्व-सत्त-सुहा ।
सिरि-वद्धमाण-जिण-तित्थ-सुत्थयं ते कुणंतु सया ॥ २ ॥
सक्काइणो सुरा जे, जिण-वेयावच्च-कारिणो संति । अवहरिय-विग्घ-संघा, हवंतु ते संघ-संतिकरा ॥ ३ ॥ सिरिथंभणय-ट्ठिय-पास-सामि-पय-पउम-पणय-पाणीणं । निद्दलिय-दुरिय-विंदो, धरणिंदो हरउ दुरियाइं ॥ ४ ॥ गोमुहपमुक्ख जक्खा, पडिहय-पडिवक्ख-पक्ख-लक्खा ते । कय-सगुण-संघ-रक्खा, हवंतु संपत्त-सिव-सुक्खा ॥ ५ ॥ अप्पडिचक्का-पमुहा, जिण-सासण-देवया य जण-पणया । सिद्धाइया-समेया, हवंतु संघस्स विग्घहरा ॥ ६ ॥ सक्काएसा सचउर-पुरट्ठिओ वद्ध-माण-जिण-भत्तो । सिरि-बंभसंति-जक्खो, रक्खउ संघं पय-त्तेण ॥ ७ ॥ खित्त-गुह-गुत्त-संताण-देस-देवाहिदेवया ताओ।

निव्वुइ-पुर-पहिआणं, भव्वाण कुणंतु सुक्खाणि ॥ ८ ॥ चक्केसरि-चक्कधरा, विहि-पहरिउच्छिण्ण-कंधरा धणियं। सिवि-सरणि-लग्ग-संघस्स, सव्वहा हरउ विग्घाणि ॥ ९ ॥ तित्थवइ-वद्धमाणो, जिणेसरो संगओ सुसंघेण। जिणचंदोऽभयदेवो, रक्खउ जिणवल्लहो पहू मं ॥ १० ॥ सो जयउ वद्धमाणो, जिणेसरो दिणेसरो व्व हय-तिमिरो। जिणचंदाऽभयदेवा, पहुणो जिणवल्लहा जे अ ॥ ११ ॥ गुरु-जिणवल्लह-पाए,-ऽभयदेव-पहुत्त-दायगे वंदे। जिणचंद-जिणेसर-वद्धमाण-तित्थस्स वुड्ढि-कए ॥ १२ ॥ जिणदत्ताणं सम्मं, मन्नंति कुणंति जे य कारिंति। मणसा वयसा वउसा, जयंतु साहम्मिओ ते वि ॥ १३ ॥ जिणदत्त-गुणे नाणाइणो सया जे धरिंति धारंति। दंसिअ-सिअवाय-पए, नमामि साहम्मिआ ते वि ॥ १४ ॥ इति षष्ठं स्मरणम् ॥ ६ ॥

(७) उवसग्गहरनामकं सप्तमं स्मरणम्।

उवसग्गहरं पासं, पासं वंदामि कम्म-घण-मुक्कं। विसहर-विस-निन्नासं, मंगल-कल्लाण-आवासं ॥ १ ॥ विसहर फुलिंग-मंतं, कंठे धारेइ जो सया मणुओ। तस्स गह-रोग-मारी, दुट्ठ-जरा जंति उवसामं ॥ २ ॥ चिट्ठउ दूरे मंतो, तुज्झ पणामो वि बहु-फलो होइ। नर-तिरिएसु वि जीवा,

पावंति न दुक्ख-दोगच्चं ॥ ३ ॥ तुह सम्मत्ते लद्धे, चिंतामणि-कप्प-पायवब्भहिए । पावंति अविग्घेणं, जीवा अयरामरं ठाणं ॥ ४ ॥ इअ संथुओ महायस !, भत्ति-ब्भर-निब्भरेण हिअएण । ता देव ! दिज्ज बोहिं, भवे भवे पास ! जिणचंद ! ॥ ५ ॥ इति श्रीपार्श्वजिनस्तवनं सप्तमं स्मरणम् ॥ ७ ॥

अथ अन्य प्रभाविक स्तोत्राणि ।



श्रीभक्तामर-स्तोत्रम् ।

भक्तामर-प्रणत-मौलि-मणि-प्रभाणा,—मुद्द्योतकं दलित-पाप-तमो-वितानम् । सम्यक् प्रणम्य जिन-पाद-युगं युगादा,—वालम्बनं भव-जले पततां जनानाम् ॥ १ ॥ यः संस्तुतः सकल-वाङ्मय-तत्त्व-बोधा,—दुद्भूत-बुद्धि-पटुभिः सुरलोक-नाथैः । स्तोत्रैर्जगत्त्रितय-चित्तहरैरुदारैः, स्तोष्ये किलाहमपि तं प्रथमं जिनेन्द्रम् ॥ २ ॥ युग्मम् ॥ बुद्ध्या विनापि विबुधार्चित-पादपीठ ! स्तोतुं समुद्यत-मतिर्विगत-त्रपोऽहम् । बालं विहाय जल-संस्थितमिन्दु-बिम्ब,—मन्यः क इच्छति जनः सहसा ग्रहीतुम् ? ॥ ३ ॥ वक्तुं गुणान् गुण-समुद्र ! शशाङ्क-कान्तान्, कस्ते क्षमः सुरगुरु-प्रतिमोऽपि बुद्ध्या ? । कल्पान्त-काल-पवनोद्धत-नक्र-चक्रं, को वा तरीतुमलमम्बुनिधिं भुजाभ्याम् ॥ ४ ॥ सोऽहं तथापि तव भक्ति-वशान्मुनीश !, कर्तुं स्तवं विगत-शक्तिरपि प्रवृत्तः । प्रीत्यात्म-वीर्यमविचार्य मृगो मृगेन्द्रं, नाभ्येति किं निज-शिशोः परिपालनार्थम् ? ॥ ५ ॥ अल्पश्रुतं

श्रुतवतां परिहास-धाम, त्वद्भक्तिरेव मुखरीकुरुते बलान्माम् । यत् कोकिलः किल मधौ मधुरं विरौति, तच्चारु-चूत-कलिका-निकरैक-हेतुः ॥ ६ ॥ त्वत्संस्तवेन भव-संतति-सन्निबद्धं, पापं क्षणात् क्षयमुपैति शरीरभाजाम् । आक्रान्त-लोकमलि-नीलमशेषमाशु, सूर्यांशु-भिन्नमिव शार्वरमन्धकारम् ॥ ७ ॥ मत्वेति नाथ ! तव संस्तवनं मयेद,-मारभ्यते तनु-धियापि तव प्रभावात् । चेतो हरिष्यति सतां नलिनी-दलेषु, मुक्ताफल-द्युतिमुपैति ननूद-बिन्दुः ॥ ८ ॥ आस्तां तव स्तवनमस्त-समस्त-दोषं, त्वत्संकथापि जगतां दुरितानि हन्ति । दूरे सहस्र-किरणः कुरुते प्रभैव, पद्माकरेषु जलजानि विकाशभाञ्जि ॥९॥ नात्यद्भुतं भुवन-भूषण ! भूतनाथ !, भूतैर्गुणैर्भुवि भवन्तमभिष्टुवन्तः । तुल्या भवन्ति भवतो ननु तेन किं वा, भूत्याश्रितं य इह नात्म-समं करोति ? ॥ १० ॥ दृष्ट्वा भवन्तमनिमेष-विलोकनीयं, नान्यत्र तोषमुपयाति जनस्य चक्षुः । पीत्वा पयः शशि-कर-द्युति-दुग्ध-सिन्धोः, क्षारं जलं जलनिधेरशितुं क इच्छेत् ?॥ ११ ॥ यैः शान्तराग-रुचिभिः परमाणुभिस्त्वं, निर्मापितस्त्रिभुवनैक-ललाम-भूत !। तावन्त एव खलु तेऽप्यणवः पृथिव्यां, यत्ते समानमपरं नहि रूप-

मस्ति ॥ १२ ॥ वक्त्रं क्व ते सुर-नरोरग-नेत्र-हारि, निःशेष-निर्ज्जित-जगत्-त्रितयोपमानम् । बिम्बं कलङ्कमलिनं क्व निशाकरस्य, यद् वासरे भवति पाण्डु-पलाश-कल्पम् ॥ १३ ॥ सम्पूर्ण-मण्डल-शशाङ्क-कला-कलाप,-शुभ्रा गुणास्त्रिभुवनं तव लङ्घयन्ति । ये संश्रितास्त्रि-जगदीश्वर-नाथमेकं, कस्तान् निवारयति संचरतो यथेष्टम् ? ॥ १४ ॥ चित्रं किमत्र यदि ते त्रिदशाङ्गनाभि-र्नीतं मनागपि मनो न विकार-मार्गम् । कल्पान्त-काल-मरुता चलिताचलेन, किं मन्दराद्रि-शिखरं चलितं कदाचित् ? ॥ १५ ॥ निर्धूम-वर्त्तिरपवर्ज्जित-तैलपूरः, कृत्स्नं जगत्त्रयमिदं प्रकटीकरोषि । गम्यो न जातु मरुतां चलिताचलानां, दीपोऽपरस्त्वमसि नाथ ! जगत्प्रकाशः ॥ १६ ॥ नास्तं कदाचिदुपयासि न राहुगम्यः, स्पष्टीकरोषि सहसा युगपज्जगन्ति । नाम्भोधरोदर-निरुद्ध-महा-प्रभावः, सूर्यातिशायि-महिमाऽसि मुनीन्द्र ! लोके ॥ १७ ॥ नित्योदयं दलित-मोह-महान्धकारं, गम्यं न राहु-वदनस्य न वारिदानाम् । विभ्राजते तव मुखाब्जमनल्प-कान्ति, विद्योतयज्जगदपूर्व्व-शशाङ्क-बिम्बम् ॥ १८ ॥ किं शर्वरीषु शशिनाऽह्नि विवस्वता वा, युष्मन्मुखेन्दु-दलितेषु तमस्सु नाथ ! । निष्पन्न-शालि-वन-

शालिनि जीव-लोके, कार्यं कियज्जलधरैर्जल-भार-नम्रैः ? ॥१९॥ ज्ञानं यथा त्वयि विभाति कृतावकाशं, नैवं तथा हरि-हरादिषु नायकेषु । तेजः स्फुरन्मणिषु याति यथा महत्वं, नैवं तु काच-शकले किरणाकुलेऽपि ॥ २० मन्ये वरं हरि-हरादय एव दृष्टा, दृष्टेषु येषु हृदयं त्वयि तोषमेति । किं वीक्षितेन भवता भुवि येन नान्यः, कश्चिन्मनो हरति नाथ ! भवान्तरेऽपि ॥ २१ ॥ स्त्रीणां शतानि शतशो जनयन्ति पुत्रान्, नान्या सुतं त्वदुपमं जननी प्रसूता । सर्वा दिशो दधति भानि सहस्र-रश्मिं, प्राच्येव दिग्जनयति स्फुरदंशु-जालम् ॥ २२ ॥ त्वामामनन्ति मुनयः परमं पुमांस-मादित्य-वर्णममलं तमसः परस्तात् । त्वामेव सम्यगुपलभ्य जयन्ति मृत्युं, नान्यः शिवः शिव-पदस्य मुनीन्द्र ! पन्थाः ॥ २३ ॥ त्वामव्ययं विभुमचिन्त्यमसंख्यमाद्यं, ब्रह्माणमीश्वरमनन्तमनङ्गकेतुम् । योगीश्वरं विदितयोगमनेकमेकं, ज्ञान-स्वरूपममलं प्रवदन्ति सन्तः ॥ २४ ॥ बुद्धस्त्वमेव विबुधार्चित-बुद्धि-बोधात्, त्वं शंकरोऽसि भुवनत्रय-शंकरत्वात् । धाताऽसि धीर ! शिव-मार्ग-विधेर्विधानाद्, व्यक्तं त्वमेव भगवन् ! पुरुषोत्तमोऽसि ॥ २५ ॥ तुभ्यं नमस्त्रिभुवनार्त्तिहराय नाथ ! तुभ्यं नमः क्षिति-तलामलभूषणाय । तुभ्यं नमस्त्रिजगतः

परमेश्वराय, तुभ्यं नमो जिन ! भवोदधि-शोषणाय ॥ २६ ॥ को विस्मयोऽत्र यदि नाम गुणैरशेषै-स्त्वं संश्रितो निरवकाशतया मुनीश ! दोषै-रुपात्त-विविधाश्रय-जात-गर्वैः, स्वप्नान्तरेऽपि न कदाचिदपीक्षितोऽसि ॥ २७ ॥ उच्चैरशोक-तरु-संश्रितमुन्मयूख,-माभाति रूपममलं भवतो नितान्तम् । स्पष्टोल्लसत्किरण-मस्त-तमो-वितानं, बिम्बं रवेरिव पयोधर-पार्श्व-वर्त्ति ॥ २८ ॥ सिंहासने मणि-मयूख-शिखा-विचित्रे, विभ्राजते तव वपुः कनकावदातम् । बिम्बं वियद्विलसदंशु-लता-वितानं, तुङ्गोदयाद्रि-शिरसीव सहस्त्ररश्मेः ॥ २९ ॥ कुन्दावदात-चल-चामर-चारु-शोभं, विभ्राजते तव वपुः कलधौत-कान्तम् । उद्यच्छशाङ्क-शुचि-निर्झर-वारिधार-मुच्चैस्तटं सुरगिरेरिव शातकौम्भम् ॥ ३० ॥ छत्र-त्रयं तव विभाति शशाङ्ककान्त-मुच्चैः स्थितं स्थगित-भानु-कर-प्रतापम् । मुक्ताफल- प्रकर-जाल-विवृद्ध-शोभं, प्रख्यापयत् त्रिजगतः परमेश्वरत्वम् ॥ ३१ ॥ उन्निद्र-हेम-नव-पङ्कज-पुञ्ज-कान्ति,-पर्युल्लसन्नख-मयूख-शिखाभिरामौ । पादौ पदानि तव यत्र जिनेन्द्र ! धत्तः, पद्मानि तत्र विबुधाः परिकल्पयन्ति ॥ ३२ ॥ इत्थं यथा तव विभूतिरभूज्जिनेन्द्र ! धर्मोपदेशन-विधौ न तथा परस्य । यादृक् प्रभा दिनकृतः प्रहतान्धकारा, तादृक् कुतो

ग्रह-गणस्य विकासिनोऽपि ॥ ३३ ॥ श्च्योतन्मदाविल-विलोल-कपोल-मूल,-मत्त-भ्रमद्-भ्रमर-नाद-विवृद्ध-कोपम् । ऐरावताभमिभमुद्धतमापतन्तं, दृष्ट्वा भयं भवति नो भवदाश्रितानाम् ॥ ३४ ॥ भिन्नेभ-कुम्भ-गलदुज्ज्वल-शोणिताक्त, मुक्ताफल-प्रकर-भूषित-भूमि-भागः । बद्ध-क्रमः क्रम-गतं हरिणाधिपोऽपि, नाक्रामति क्रम-युगाचल-संश्रितं ते ॥३५॥ कल्पान्त-काल-पवनोद्धत-वह्नि-कल्पं, दावानलं ज्वलितमुज्ज्वलमुत्स्फुलिङ्गम् । विश्वं जिघत्सुमिव संमुखमापतन्तं, त्वन्नाम-कीर्तन-जलं शमयत्यशेषम् ॥ ३६ ॥ रक्तेक्षणं समद-कोकिल-कण्ठ-नीलं, क्रोधोद्धतं फणिनमुत्फणमापतन्तम् । आक्रामति क्रम-युगेन निरस्त-शङ्क-स्त्वन्नाम-नाग-दमनी हृदि यस्य पुंसः ॥३७॥ वल्गत्तुरङ्ग-गज-गर्जित-भीम-नाद,-माजौ बलं बलवतामपि भूपतीनाम् । उद्यद्दिवाकर-मयूख-शिखापविद्धं, त्वत्कीर्त्तनात् तम इवाशु भिदामुपैति ॥३८॥ कुन्ताग्र-भिन्न-गज-शोणित-वारिवाह,-वेगावतार-तरणातुर-योध-भीमे । युद्धे जयं विजित-दुर्ज्जय जेय-पक्षा,—स्त्वत्पाद-पङ्कज-वनाश्रयिणो लभन्ते ॥ ३९ ॥ अम्भोनिधौ क्षुभित-भीषण-नक्र-चक्र,—पाठीन-पीठ-भयदोल्वण-वाडवाग्नौ । रङ्गत्तरङ्ग-शिखर-स्थित-यानपात्रा, — स्त्रासं विहाय भवतः

स्मरणाद् व्रजन्ति ॥ ४० ॥ उद्भूत-भीषण-जलोदर-भार-भुग्नाः, शोच्यां दशामुपगताश्च्युत-जीविताशाः। त्वत्पाद-पङ्कज-रजोऽमृत-दिग्ध-देहा, मर्त्या भवन्ति मकरध्वज-तुल्य-रूपाः ॥ ४१ ॥ आपाद-कण्ठमुरु-शृङ्खल-वेष्टिताङ्गा, गाढं बृहन्निगड-कोटि-निघृष्टजङ्घाः। त्वन्नाममन्त्रमनिशं मनुजाः स्मरन्तः सद्यः स्वयं विगत-बन्ध-भया भवन्ति ॥ ४२ ॥ मत्त-द्विपेन्द्र-मृगराज-दवानलाहि-संग्राम-वारिधि-महो-दर-बन्धनोत्थम्। तस्याशु नाशमुपयाति भयं भियेव, यस्तावकं स्तवमिमं मतिमानधीते ॥ ४३ ॥ स्तोत्रस्रजं तव जिनेन्द्र गुणैर्निबद्धां, भक्त्या मया रुचिरवर्णविचित्रपुष्पाम्। धत्ते जनो य इह कंठगतामजस्रं, तं मानतुंगमवशा समुपैति लक्ष्मीः ॥ ४४ ॥ इति भक्तामरस्तोत्रम् ॥

श्री कल्याणमन्दिरस्तोत्रम्।

कल्याणमन्दिरमुदारमवद्यभेदि, भीताभयप्रदमनिंदित-मंघ्रिपद्मम्। संसारसागरनिमज्जदशेषजन्तु,-पोतायमानम-भिनम्य जिनेश्वरस्य ॥ १ ॥ यस्य स्वयं सुरगुरुर्गरिमाम्बु-राशेः, स्तोत्रं सुविस्तृतमतिर्न विभुर्विधातुम्। तीर्थेश्वरस्य कमठस्मयधूमकेतो-स्तस्याहमेष किल संस्तवनं करिष्ये ॥ २ ॥ युग्मम्। सामान्यतोऽपि तव वर्णयितुं स्वरूप-मस्मादृशाः

कथमधीश भवन्त्यधीशाः । धृष्टोऽपि कौशिकशिशुर्यदि वा दिवान्धो, रूपं प्ररूपयति किं किल घर्मरश्मेः ॥ ३ ॥ मोहक्षयादनुभवन्नपि नाथ मर्त्यो, नूनं गुणान् गणयितुं न तव क्षमेत । कल्पान्तवान्तपयसः प्रकटोऽपि यस्मा-न्मीयेत केन जलधेर्ननु रत्नराशिः ॥ ४ ॥ अभ्युद्यतोऽस्मि तव नाथ जडाशयोऽपि, कर्तुं स्तवं लसदसङ्ख्यगुणाकरस्य । बालोऽपि किं न निजबाहुयुगं वितत्य, विस्तीर्णतां कथयति स्वधिया-म्बुराशेः ॥ ५ ॥ ये योगिनामपि न यान्ति गुणास्तवेश, वक्तुं कथं भवति तेषु ममावकाशः । जाता तदेवमसमीक्षितकारितेयं, जल्पन्ति वा निजगिरा ननु पक्षिणोऽपि ॥ ६ ॥ आस्तामचिन्त्यमहिमा जिन संस्तवस्ते, नामापि पाति भवतो भवतो जगन्ति । तीव्रातपोपहतपान्थजनान्निदाघे, प्रीणाति पद्मसरसः सरसोऽनिलोऽपि ॥ ७ ॥ हृद्वर्त्तिनि त्वयि विभो शिथिलीभवन्ति, जन्तोः क्षणेन निविडा अपि कर्मबन्धाः । सद्यो भुजङ्गमनया इव मध्यभाग-मभ्यागते वनशिखण्डिनि चन्दनस्य ॥ ८ ॥ मुच्यन्त एव मनुजाः सहसा जिनेन्द्र, रौद्रैरुपद्रवशतैस्त्वयि वीक्षितेऽपि । गोस्वामिनि स्फुरिततेजसि दृष्टमात्रे, चौरैरिवाशु पशवः प्रपलायमानैः ॥ ९ ॥ त्वं तारको जिन कथं भविनां त एव, त्वामुद्वहन्ति हृदयेन यदु-

मेन-मागत्य निर्वृतिपुरीं प्रति सार्थवाहम्। एतन्निवेदयति देव जगत्त्रयाय,मन्ये नदन्नभिनभः सुरदुन्दुभिस्ते॥२५॥ उद्योतितेषु भवता भुवनेषु नाथ,तारान्वितो विधुरयं विहिताधिकारः। मुक्ता-कलापकलितोच्छ्वसितातपत्र--व्याजात्त्रिधा धृततनुर्ध्रुवमभ्युपेतः ॥२६॥स्वेन प्रपूरितजगत्त्रयपिण्डितेन, कान्तिप्रतापयशसामिव सञ्चयेन। माणिक्यहेमरजतप्रविनिर्मितेन, सालत्रयेण भगवन्न-भितो विभासि ॥२७॥ दिव्यस्रजो जिन नमत्-त्रिदशाधिपाना-मुत्सृज्य रत्नरचितानपि मौलिबन्धान्। पादौ श्रयन्ति भवतो यदि वा परत्र, त्वत्सङ्गमे सुमनसो न रमन्त एव ॥२८॥ त्वं नाथ जन्मजलधेर्विपराङ्मुखोऽपि, यत्तारयस्यसुमतो निजपृष्ठलग्नान्। युक्तं हि पार्थिवनिपस्य सतस्तवैव, चित्रं विभो यदसि कर्म विपाकशून्यः ॥२९॥ विश्वेश्वरोऽपि जनपालक दुर्गतस्त्वं, किं वाक्षरप्रकृतिरप्यलिपिस्त्वमीश। अज्ञानवत्यपि सदैव कथञ्चि-देव, ज्ञानं त्वयि स्फुरति विश्वविकाशहेतुः ॥३०॥ प्राग्भार-सम्भृतनभांसि रजांसि रोषा-दुत्थापितानि कमठेन शठेन यानि। छायापि तैस्तव न नाथ हता हताशो, ग्रस्तस्त्वमीभिरयमेव परं दुरात्मा॥ ३१ ॥ यद्गर्ज्जदूर्जितघनौघमदभ्रभीमं, भ्रश्यत्त-डिन्मुसलमांसलघोरधारम्। दैत्येन मुक्तमथ दुस्तरवारि दध्रे, ते नैव तस्य जिन दुस्तरवारिकृत्यम् ॥ ३२ ॥ ध्वस्तोर्ध्वकेश-

विकृताकृतिमर्त्यमुण्ड—प्रालम्बभृद्भयदवक्त्रविनिर्यदग्निः। प्रेतव्रजः प्रति भवन्तमपीरितो यः, सोऽस्याऽभवत्प्रतिभवं भवदुःखहेतुः ॥ ३३ ॥ धन्यास्त एव भुवनाधिप ये त्रिसन्ध्य,-माराधयन्ति विधिवद्विधुतान्यकृत्याः। भक्त्योल्लसत्पुलकपक्ष्मलदेहदेशाः, पादद्वयं तव विभो भुवि जन्मभाजः ॥ ३४ ॥ अस्मिन्नपारभववारिनिधौ मुनीश, मन्ये न मे श्रवणगोचरतां गतोऽसि। आकर्णिते तु तव गोत्रपवित्रमन्त्रे, किं वा विपद्विषधरी सविधं समेति ॥ ३५ ॥ जन्मान्तरेऽपि तव पादयुगं न देव!, मन्ये मया महितमीहितदानदक्षम्। तेनेह जन्मनि मुनीश! पराभवानां जातो निकेतनमहं मथिताशयानाम् ॥ ३६ ॥ नूनं न मोहतिमिरावृतलोचनेन, पूर्वं विभो! सकृदपि प्रविलोकितोऽसि। मर्माविधो विधुरयन्ति हि मामनर्थाः, प्रोद्यत्प्रबन्धगतयः कथमन्यथैते ॥ ३७ ॥ आकर्णितोऽपि महितोऽपि निरीक्षितोऽपि, नूनं न चेतसि मया विधृतोऽसि भक्त्या। जातोऽस्मि तेन जनबान्धव दुःखपात्रं, यस्मात्क्रियाः प्रतिफलन्ति न भावशून्याः ॥ ३८ ॥ त्वं नाथ! दुःखिजनवत्सल! हे शरण्य!, कारुण्यपुण्यवसते वशिनां वरेण्य!। भक्त्या नते मयि महेश! दयां विधाय, दुःखांकुरोद्दलनतत्परतां विधेहि ॥ ३९ ॥ निःसंख्यसारसरणं शरणं

शरण्य-मासाद्य सादितरिपुप्रथितावदातम्। त्वत्पादपङ्कजमपि प्रणिधानवन्ध्यो, वध्योऽस्मि चेद्भुवनपावन हा हतोऽस्मि ॥ ४० ॥ देवेन्द्रवन्द्य विदिताखिलवस्तुसार ! संसारतारक ! विभो ! भुवनाधिनाथ ! । त्रायस्व देव ! करुणाहृद मां पुनीहि, सीदन्तमद्य भयदव्यसनाम्बुराशेः ॥ ४१ ॥ यद्यस्ति नाथ भवदङ्घ्रिसरोरुहाणां, भक्तेः फलं किमपि सन्ततिसञ्चितायाः । तन्मे त्वदेकशरणस्यः शरण्यः भूयाः, स्वामी त्वमेव भुवनेऽत्र भवान्तरेऽपि ॥ ४२ ॥ इत्थं समाहितधियो विधिवज्जिनेन्द्र, सान्द्रोलसत्पुलककञ्चुकिताङ्गभागाः । त्वद्बिम्बनिर्मलमुखाम्बुजबद्धलक्ष्या, ये संस्तवं तव विभो रचयन्ति भव्याः ॥ ४३ ॥ जननयनकुमुदचन्द्रप्रभास्वराः स्वर्गसम्पदो भुक्त्वा । ते विगलितमलनिचया, अचिरान्मोक्षं प्रपद्यन्ते ॥ युग्मम् ॥ ४४ ॥ इति श्रीकल्याणमंदिर स्तोत्रम् ॥

श्रीभद्रबाहुस्वामिविरचिता ग्रहशान्तिः ।

जगद्गुरुं नमस्कृत्य, श्रुत्वा सद्गुरुभाषितम् । ग्रहशान्तिं प्रवक्ष्यामि, लोकानां सुखहेतवे ॥ १ ॥ जिनेन्द्रैः खेचरा ज्ञेयाः, पूजनीया विधिक्रमात् । पुष्पैर्विलेपनैर्धूपै,-र्नैवेद्यैस्तुष्टि-हेतवे ॥ २ ॥ पद्मप्रभस्य मार्त्तण्ड-श्चन्द्रश्चन्द्रप्रभस्य च । वासुपूज्ये भूमिपुत्रो, बुधोऽप्यष्टजिनेषु च ॥ ३ ॥ विमलान-

न्तधर्मारा:, शान्तिः कुन्थुर्नमिस्तथा। वर्धमानस्तथैतेषां, पादपद्मे बुधं न्यसेत् ॥ ४ ॥ ऋषभाजितसुपार्श्वा-श्चाभिनन्दनशीतलौ। सुमतिः संभवस्वामी, श्रेयांसश्चेषु गीष्पतिः ॥ ५ ॥ सुविधेः कथितःशुक्रः सुव्रतस्य शनैश्चरः। नेमिनाथे भवेद्राहुः, केतुः श्रीमल्लिपार्श्वयोः ॥ ६ ॥ जनांल्लग्ने च राशौ च, यदा पीडन्ति खेचराः। तदा सम्पूजयेद्धीमान्, खेचरैः सहितान् जिनान् ॥ ७ ॥

अथ नवग्रहपूजा।

पद्मप्रभजिनेन्द्रस्य, नामोच्चारेण भास्कर। शान्तिं तुष्टिं च पुष्टिं च, रक्षां कुरुकुरु श्रियम् ॥ ८॥ इति श्रीसूर्यपूजा॥ चन्द्रप्रभजिनेन्द्रस्य, नाम्ना तारागणाधिप। प्रसन्नो भव शान्तिं च, रक्षां कुरु जयं ध्रुवम् ॥९॥ इति श्रीचन्द्रपूजा॥ सर्वदा वासुपूज्यस्य, नाम्ना शान्तिं जयश्रियम्। रक्षां कुरु धरासूनो, अशुभोऽपि शुभो भव ॥१०॥ इति श्रीभौमपूजा॥ विमलानन्तधर्माराः, शान्तिः कुन्थुर्नमिस्तथा। महावीरश्च तन्नाम्ना, शुभो भूयाः सदा बुधः ॥ ११ ॥ इति श्रीबुधपूजा॥ ऋषभाजितसुपार्श्वा,-श्चाभिनन्दनशीतलौ। सुमतिः संभवस्वामी, श्रेयांसश्च जिनोत्तमः ॥१२॥ एतत्तीर्थकृतां नाम्ना, पूज्योऽशुभः शुभो भव॥ शांतिं तुष्टिं च पुष्टिं च, कुरु देवगणार्चित

॥ १३ ॥ इति श्रीगुरुपूजा ॥ पुष्पदन्तजिनेन्द्रस्य, नाम्ना दैत्यगणार्चित । प्रसन्नो भव शान्तिं च, रक्षां कुरु कुरु श्रियम् ॥ १४ ॥ इति श्रीशुक्रपूजा ॥ श्रीसुव्रतजिनेन्द्रस्य, नाम्ना सूर्याङ्गसंभव । प्रसन्नो भव शान्तिं च, रक्षां कुरु कुरु श्रियम् ॥ १५ ॥ इति श्रीशनैश्चरपूजा ॥ श्रीनेमिनाथ-तीर्थेश,-नामतः सिंहिकासुत । प्रसन्नो भव शांतिं च, रक्षां कुरु कुरु श्रियम् ॥ १६ ॥ इति श्रीराहुपूजा ॥ राहो सप्तम-राशिस्थ, कारेण दृश्यसंवरे । श्रीमल्लिपार्श्वयोर्नाम्ना, केतो शांतिं जयश्रियम् ॥ १७ ॥ इति श्रीकेतुपूजा ॥ इति भणित्वा स्वस्ववर्णकुसुमाञ्जलिक्षेपजिनग्रह पूजा कार्या, तेन सर्वपीडायाः शान्तिर्भवति। अथ सर्वेषां वा ग्रहाणामेकदा पीडायामयं विधिः—

नवकोष्टकमालेख्यं, मण्डलं चतुरस्रकम्। ग्रहास्तत्र प्रतिष्ठाप्या, वक्ष्यमाणाः क्रमेण तु ॥१८॥ मध्ये हि भास्करः स्थाप्यः, पूर्व-दक्षिणतः शशी । दक्षिणस्यां धरासूनु-र्बुधः पूर्वोत्तरेण च ॥ १९ ॥ उत्तरस्यां सुराचार्यः, पूर्वस्यां भृगुनन्दनः । पश्चिमायां शनिः स्थाप्यो, राहुर्दक्षिणपश्चिमे ॥ २० ॥ पश्चिमोत्तरतः केतु,-रिति स्थाप्याः क्रमाद् ग्रहाः । पट्टे स्थालेऽथ वाग्नेय्यां, ईशान्यां तु सदा बुधैः ॥२१॥ आर्या—

आदित्यसोममङ्गल-बुधगुरुशुक्राः शनैश्चरो राहुः । केतुप्र-

मुखाः खेटा; जिनपतिपुरतोऽवतिष्ठन्तु ॥ २२ ॥ इति भणित्वा पंचवर्णकुसुमाञ्जलिक्षेपश्च जिनपूजा च कार्या। पुष्पगन्धादिभिर्धूपैः—नैवेद्यैः फलसंयुतैः। वर्णसदृशदानैश्च, वस्त्रैश्च दक्षिणान्वितैः ॥ २३ ॥ जिननामकृतोच्चारा, देशनक्षत्रवर्णकैः। पूजिताः संस्तुता भक्त्या, ग्रहाः सन्तु सुखावहाः ॥ २४ ॥ जिनानामग्रतः स्थित्वा, ग्रहाणां शान्तिहेतवे। नमस्कारशतं भक्त्या, जपेदष्टोत्तरं शतम् ॥ २५ ॥ एवं यथानामकृताभिषेकै—रालेपनैर्धूपनपूजनैश्च। फलैश्च नैवेद्यवरैर्जिनानां, नाम्ना ग्रहेन्द्रा वरदा भवन्तु ॥ २६ ॥ साधुभ्यो दीयते दानं, महोत्साहो जिनालये। चतुर्विधस्य सङ्घस्य बहुमानेन पूजनम् ॥ २७ ॥ भद्रबाहुरुवाचेदं, पञ्चमः श्रुतकेवली। विद्याप्रभावतः पूर्वात्, ग्रहशान्तिरुदीरिता ॥२८॥ इति भद्रबाहुस्वामिविरचिता बृहद्ग्रहशान्तिः समाप्ता।

कस्मिन् रिष्टग्रहे कस्य जिनस्य कया रीत्या पूजा कार्या तदाख्याति। रविपीडायाम्—रक्तपुष्पैः श्रीपद्मप्रभपूजा कार्या, ॐ ह्रीं नमो सिद्धाणं तस्य अष्टोत्तरशतजपः कार्यः। चन्द्रपीडायाम्—चन्दनसेवन्त्रपुष्पैः श्रीचन्द्रप्रभपूजा कार्या ॐ ह्रीं नमो आयरियाणं तस्य अष्टोत्तरशतजपः कार्यः। भौमपीडायाम्—कुंकुमेन च रक्तपुष्पैः श्रीवासुपूज्यपूजा विधेया

ॐ ह्रीं नमो सिद्धाणं तस्य अष्टोत्तरशतजपः कार्यः। बुध-पीडायाम्—दुग्धस्नाननैवेद्यफलादितः श्रीशान्तिनाथपूजा कर्त्तव्या, ॐ ह्रीं नमो आयरियाणं तस्य अष्टोत्तरशतजपः कार्यः। गुरुपीडायाम्—दधिभोजनजम्बीरादिफलेन च चन्दनादिविलेपनेन श्रीआदिनाथपूजा करणीया, ॐ ह्रीं नमो आयरियाणं तस्य अष्टोत्तरशतजपः कर्त्तव्यः। शुक्रपीडायाम्—श्वेतपुष्पैश्चन्दनादिना श्रीसुविधिनाथपूजा कार्या, चैत्ये घृतदानं कार्यं, ॐ ह्रीं नमो अरिहंताणं तस्य अष्टोत्तरशतजपः कार्यः। शनैश्चरपीडायाम्—नीलपुष्पैः श्रीमुनिसुव्रतपूजा कार्या तैलस्नानदाने कर्त्तव्ये, ॐ ह्रीं नमो लोए सव्वसाहूणं तस्य अष्टोत्तरशतजपः कार्यः। राहुपीडायाम्—नीलपुष्पैः श्रीनेमिनाथपूजा करणीया, ॐ ह्रीं नमो लोए सव्वसाहूणं तस्य अष्टोत्तरशतजपः कार्यः। केतुपीडायाम्—दाडिमादिपुष्पैः श्री पार्श्वनाथपूजा कार्या, ॐ ह्रीं नमो लोए सव्वसाहूणं तस्य अष्टोत्तरशतजपः कार्यः। इति नवग्रहपूजाविधिः। सर्वग्रह-पीडायाम्—श्रीसूर्यसोमाङ्गारबुधबृहस्पतिशुक्रशनैश्चरराहुकेतवः सर्वे ग्रहा मम सानुग्रहा भवन्तु स्वाहा। ॐ ह्रीं अ सि आ उ साय नमः स्वाहा। अस्य मंत्रस्य अष्टोत्तरशतजपः कार्यः येन नवग्रहपीडोपशान्तिः स्यात्। इति नवग्रहपूजाप्रकारः।

श्री मन्त्राधिराजस्तोत्रम्।

श्रीपार्श्वः पातु वो नित्यं, जिनः परमशङ्करः। नाथः परमशक्तिश्च, शरण्यः सर्वकामदः ॥ १ ॥ सर्वविघ्नहरः स्वामी, सर्वसिद्धिप्रदायकः। सर्वसत्वहितो योगी, श्रीकरः परमार्थदः ॥ २ ॥ देवदेवः स्वयंसिद्ध-श्चिदानन्दमयः शिवः। परमात्मा परब्रह्म, परमः परमेश्वरः ॥ ३ ॥ जगन्नाथः सुर-ज्येष्ठो, भूतेशः पुरुषोत्तमः। सूरेन्द्रो नित्यधर्मश्च, श्रीनिवासः शुभार्णवः ॥ ४ ॥ सर्वज्ञः सर्वदेवेशः, सर्वदः सर्वगोत्तमः। सर्वात्मा सर्वदर्शी च, सर्वव्यापी जगद्गुरुः ॥ ५ ॥ तत्व-मूर्तिः परादित्यः, परब्रह्म प्रकाशकः। परमेन्दुः परप्राणः, परमामृतसिद्धिदः ॥ ६ ॥ अजः सनातनः शंभु-रीश्वरश्च सदाशिवः। विश्वेश्वरः प्रमोदात्मा, क्षेत्राधीशः शुभप्रदः ॥ ७ ॥ साकारश्च निराकारः, सकलो निष्कलोऽव्ययः। निर्ममो निर्विकारश्च, निर्विकल्पो निरामयः ॥ ८ ॥ अमरश्चा-जरोऽनन्त, एकोऽनन्तः शिवात्मकः। अलक्ष्यश्चैव वामेयो, ध्यानलक्ष्यो निरञ्जनः ॥ ९ ॥ ॐ काराकृतिरव्यक्तो, व्यक्त-रूपस्त्रयीमयः। ब्रह्मद्वयप्रकाशात्मा, निर्भयः परमाक्षरः ॥ १० ॥ दिव्यतेजोमयः शान्तः, परामृतमयोऽच्युतः। आद्योऽनाद्यः परेशानः, परमेष्ठी परः पुमान् ॥ ११ ॥ शुद्ध-

स्फटिकसंकाशः, स्वयंभूः परमाच्युतः । व्योमाकारस्वरूपश्च, लोकालोकावभासकः ॥ १२ ॥ ज्ञानात्मा परमानन्दः, प्राणारूढो मनःस्थितिः । मनःसाध्यो मनोध्येयो, मनोदृश्यः परापरः ॥ १३ ॥ सर्वतीर्थमयो नित्यः, सर्वदेवमयः प्रभुः । भगवान् सर्वतत्वेशः, शिवश्रीसौख्यदायकः ॥ १४ ॥ इति श्रीपार्श्वनाथस्य, सर्वज्ञस्य जगद्गुरोः । दिव्यमष्टोत्तरं नामशतमत्र प्रकीर्तितम् ॥ १५ ॥ पवित्रं परमं ध्येयं, परमानन्ददायकम् । भुक्तिमुक्तिप्रदं नित्यं, पठते मङ्गलप्रदम् ॥ १६ ॥ श्रीमत्परमकल्याण-सिद्धिदः श्रेयसेऽस्तुवः । पार्श्वनाथजिनः श्रीमान्, भगवान् परमः शिवः ॥ १७ ॥ धरणेन्द्रफणच्छत्रालंकृतो वः श्रियं प्रभुः । दधात् पद्मावतीदेव्या, समधिष्ठितशासनः ॥१८॥ ध्यायेत् कमलमध्यस्थं, श्रीपार्श्वजगदीश्वरम् । ॐ ह्रीं क्लीं श्रीं समायुक्तं, केवलज्ञानभास्करम् ॥ १९ ॥ पद्मावत्यान्वितं वामे, धरणेन्द्रेण दक्षिणे। परितोऽष्टदलस्थेन, मंत्रराजेन संयुतम् ॥ २० ॥ अष्टपत्रस्थितैर्यस्य, नमस्कारैस्तथा त्रिभिः । ज्ञानाद्यैर्वेष्टितं नाथं धर्मार्थकाममोक्षदम् ॥ २१ ॥ शतषोडशदलारूढं, विद्यादेवीभिरन्वितम् । चतुर्विंशतिपत्रस्थं, जिनं मातृसमावृतम् ॥ २२ ॥ मायावेष्टयत्रयाग्रस्थं क्रौंकारसहितं प्रभुम् । नवग्रहावृतं देवं, दिक्पालैर्द-

शमिर्वृतम् ॥ २३ ॥ चतुष्कोणेषु मंत्राद्य-चतुर्बीजान्वितैर्जिनैः। चतुरष्टदशद्वीति-द्विधाङ्कसंज्ञकैर्युतम् ॥ २४ ॥ दिक्षु क्षकार-युक्तेन, विदिक्षु लांकितेन च । चतुरस्रेण वज्राङ्क-क्षितितत्त्वे प्रतिष्ठितम् ॥ २५ ॥ श्रीपार्श्वनाथमित्येवं, यः समाराधये-ज्जिनम् । तं सर्वपापनिर्मुक्तं, भजते श्रीः शुभप्रदा ॥ २६ ॥ जिनेशः पूजितो भक्त्या, संस्तुतः प्रस्तुतोऽथवा । ध्यातस्त्वं यैः क्षणं वापि, सिद्धिस्तेषां महोदयः ॥ २७ ॥ श्रीपार्श्वमं-त्रराजान्ते, चिन्तामणिगुणास्पदम् । शान्तिपुष्टिकरं नित्यं, क्षुद्रोपद्रवनाशनम् ॥ २८ ॥ ऋद्धिसिद्धिमहाबुद्धि-धृतिश्रीका-न्तिकीर्तिदम् । मृत्युञ्जयं शिवात्मानं, जपनान्नन्दितो जनः ॥ २९ ॥ सर्वकल्याणपूर्णः स्याद्, जरामृत्युविवर्जितः । अणिमादिमहासिद्धिं, लक्षजापेन चाप्नुयात् ॥ ३० ॥ प्राणा-याममनोमंत्र-योगादमृतमात्मनि । त्वमात्मानं शिवं ध्यात्वा, स्वामिन् सिध्यन्ति जन्तवः ॥ ३१ ॥ हर्षदः कामदश्चेति-रिपुघ्नः सर्वसौख्यदः । पातु वः परमानन्द-लक्षणः संस्मृतो जिनः ॥ ३२ ॥ तत्त्वरूपमिदं स्तोत्रं, सर्वमङ्गलसिद्धिदम् । त्रिसन्ध्यं यः पठेन्नित्यं, नित्यं प्राप्नोति स श्रियम् ॥३३॥इति॥

श्री जिनपञ्जरस्तोत्रम् ।

ॐ ह्रीं श्रीं अर्हं अर्हद्भ्यो नमोनमः । ॐ ह्रीं श्रीं अर्हं

सिद्धेभ्यो नमोनमः । ॐ ह्रीं श्रीं अर्हं आचार्येभ्यो नमोनमः । ॐ ह्रीं श्रीं अर्हं उपाध्यायेभ्यो नमोनमः । ॐ ह्रीं श्रीं अर्हं गौतमस्वामिप्रमुखसर्वसाधुभ्यो नमोनमः ॥ १ ॥ एष पञ्च-नमस्कारः, सर्वपापं क्षयङ्करः । मङ्गलानां च सर्वेषां, प्रथमं भवति मङ्गलम् ॥ २ ॥ ॐ ह्रीं श्रीं जये विजये, अर्हं पर-मात्मने नमः । कमलप्रभसूरीन्द्रो, भाषते जिनपञ्जरम् ॥३॥ एकभक्तोपवासेन, त्रिकालं यः पठेदिदम् । मनोऽभिलषितं सर्वं, फलं स लभते ध्रुवम् ॥४॥ भूशय्या ब्रह्मचर्येण, क्रोध-लोभविवर्जितः । देवताग्रे पवित्रात्मा, षण्मासैर्लभते फलम् ॥५॥ अर्हन्तं स्थापयेन्मूर्ध्नि, सिद्धं चक्षुर्ललाटके । आचार्यं श्रोत्र-योर्मध्ये, उपाध्यायं तु नासिके ॥ ६ ॥ साधुवृन्दं मुखस्याग्रे, मनःशुद्धिं विधाय च । सूर्यचन्द्रनिरोधेन, सुधीः सर्वार्थसि-द्धये ॥ ७ ॥ दक्षिणे मदनद्वेषी, वामपार्श्वे स्थितो जिनः । अङ्गसंधिषु सर्वज्ञः, परमेष्ठी शिवङ्करः ॥ ८ ॥ पूर्वाशां च जिनो रक्षेद् आग्नेयीं विजितेन्द्रियः । दक्षिणाशां परंब्रह्म, नैर्ऋतीं च त्रिकालवित् ॥ ९ ॥ पश्चिमाशां जगन्नाथो, वायव्यां परमेश्वरः । उत्तरां तीर्थकृत्सर्वा—मीशानेऽपि निरञ्जनः ॥ १० ॥ पाताले भगवानर्हन्नाकाशं पुरुषोत्तमः । रोहिणीप्रमुख्या देवयो, रक्षन्तु सकलं कुलम् ॥ ११ ॥

ऋषभो मस्तकं रक्षेद्–अजितोऽपि विलोचने। संभवः कर्ण-
युगलेऽभिनन्दनस्तु नासिके ॥ १२ ॥ ओष्ठं श्रीसुमती रक्षेद्
दन्तान् पद्मप्रभो विभुः। जिह्वां सुपार्श्वदेवोऽयं, तालु चन्द्र-
प्रभाभिधः ॥१३॥ कण्ठं सुविधी रक्षेद्, हृदयं श्रीसुशीतलः।
श्रेयांसो बाहुयुगलं, वासुपूज्यः करद्वयम् ॥१४॥ अंगुलीर्विमलो
रक्षेद्, अनन्तोऽसौ नखानपि। श्रीधर्मोऽप्युदरास्थीनि, श्रीशा-
न्तिर्नाभिमण्डलम् ॥ १५ ॥ श्रीकुन्थुर्गुह्यकं रक्षेद्, अरो
लोमकटीतटम्। मल्लिरूरूपृष्ठवंशं, जंघे च मुनिसुव्रतः ॥१६॥
पादांगुलीर्नमी रक्षेद् श्रीनेमिश्चरणद्वयम्। श्रीपार्श्वनाथः
सर्वांगं, वर्द्धमानश्चिदात्मकम् ॥ १७ ॥ पृथिवीजलतेजस्क-
वाय्वाकाशमयं जगत्। रक्षेदशेषपापेभ्यो, वीतरागो निरं-
जनः ॥ १८ ॥ राजद्वारे स्मशाने च, संग्रामे, शत्रुसंकटे।
व्याघ्रचौराग्निसर्पादि—भूतप्रेतभयाश्रिते ॥ १९ ॥ अकाले
मरणे प्राप्ते, दारिद्र्यापत्समाश्रिते। अपुत्रत्वे महादुःखे,
मूर्खत्वे रोगपीडिते ॥२०॥ डाकिनी शाकिनी ग्रस्ते, महाग्रह-
गणार्दिते। नद्युत्तारेऽध्ववैषम्ये, व्यसने चापदि स्मरेत् ॥२१॥
प्रातरेव समुत्थाय, यः स्मरेज्जिनपञ्जरम्। तस्य किञ्चिद्भयं
नास्ति, लभते सुखसम्पदः ॥ २२ ॥ जिनपञ्जरनामेदं, यः
स्मरेदनुवासरम्। कमलप्रभराजेन्द्रः श्रियं स लभते नरः

॥ २३ ॥ प्रातः समुत्थाय पठेत् कृतज्ञो, यः स्तोत्रमेतज्जिनपञ्जराख्यम् । असादयेत् श्रीकमलप्रभाख्यं, लक्ष्मी मनोवाञ्छितपूरणाय ॥ २४ ॥ श्रीरुद्रपल्लीयवरेण्यगच्छे, देवप्रभाचार्यपदाब्जहंसः । वादीन्द्रचूडामणिरेष जैनो, जीयाद् गुरुः श्रीकमलप्रभाख्यः ॥ २५ ॥ इति ।

अथ ऋषिमण्डलस्तोत्रम् ।

आद्यन्ताक्षरसंलक्ष्य-मक्षरं वाप्य यत् स्थितम् । अग्निज्वालासमं नाद-बिन्दुरेखासमन्वितम् ॥ १ ॥ अग्निज्वालासमाक्रान्तं मनोमलविशोधकम् । देदीप्यमानं हृत्पद्मे तत्पदं नौमि निर्मलम् ॥ २ ॥ अर्हमित्यक्षरं ब्रह्म-वाचकं परमेष्ठिनः । सिद्धचक्रस्य सद्बीजं सर्वतः प्रणिदध्महे ॥ ३ ॥ ॐ नमोऽर्हद्भ्य ईशेभ्य ॐ सिद्धेभ्यो नमोनमः । ॐ नमः सर्वसूरिभ्य उपाध्यायेभ्य ॐ नमः ॥ ४ ॥ ॐ नमः सर्वसाधुभ्य ॐ ज्ञानेभ्यो नमोनमः । ॐ नमस्तत्वदृष्टिभ्य-श्चारित्रेभ्यस्तु ॐ नमः ॥ ५ ॥ श्रेयसेऽस्तु श्रियेस्त्वेत-दर्हदाद्यष्टकं शुभम् । स्थानेष्वष्टसु विन्यस्तं पृथग् बीजसमन्वितम् ॥ ६ ॥ आद्यं पदं शिखां रक्षेत् परं रक्षेत् तु मस्तकम् । तृतीयं रक्षेन्नेत्रे द्वे तुर्यं रक्षेच्च नासिकाम् ॥ ७ ॥ पञ्चमं तु मुखं रक्षेत् षष्ठं रक्षेच्च घण्टिकाम् । नाभ्यन्तं सप्तमं रक्षेद् रक्षेत् पादान्तम-

ष्टमम् ॥ ८ ॥ पूर्वंप्रणवतः सान्तः सरेफो द्व्यब्धिपञ्चपान् ।
सप्ताष्टदशसूर्याङ्कान् श्रितो विन्दुस्वरान् पृथक् ॥ ९ ॥
पूज्यनामाक्षरा आद्याः पञ्चातो ज्ञानदर्शन- । चारित्रेभ्यो
नमो मध्ये ह्रीं सान्तसमलंकृतः ॥ १० ॥ ॐ ह्राँ ह्रीं ह्रुं ह्रूँ ह्रें
ह्रैं ह्रों ह्रौं ह्रः असिआउसाज्ञानदर्शनचारित्रेभ्यो नमः । जम्बू-
वृक्षधरो द्वीपः क्षारोदधिसमावृतः । अर्हदाद्यष्टकैरष्ट—काष्ठा-
धिष्ठैरलङ्कृतः ॥ ११ ॥ तन्मध्यसङ्गतो मेरुः कूटलक्षैर-
लङ्कृतः । उच्चैरुच्चैस्तरस्तार-तारामण्डलमण्डितः ॥ १२ ॥
तस्योपरिसकारान्तं वीजमध्यस्य सर्वगम् । नमामि विम्ब-
मार्हन्त्यं ललाटस्थं निरञ्जनम् ॥ १३ ॥ अक्षयं निर्मलं शान्तं
बहुलं जाड्यतोज्झितम् । निरीहं निरहङ्कारं सारं सारतरं
घनम् ॥ १४ ॥ अनुद्धतं शुभं स्फीतं सात्त्विकं राजसं मतम् ।
तामसं चिरसम्बुद्धं तैजसं शर्वरीसमम् ॥ १५ ॥ साकारं च
निराकारं सरसं विरसं परम् । परापरं परातीतं परम्परपरा-
परम् ॥ १६ ॥ एकवर्णं द्विवर्णं च त्रिवर्णं तुर्यवर्णकम् ।
पञ्चवर्णं महावर्णं सपरं च परापरम् ॥ १७ ॥
सकलं निष्कलं तुष्टं निवृतं भ्रान्तिवर्जितम् । निरञ्जनं निरा-
कारं निर्लेपं वीतसंश्रयम् ॥ १८ ॥ ईश्वरं ब्रह्मसम्बुद्धं बुद्धं
सिद्धं मतं गुरुम् । ज्योतिरूपं महादेवं लोकालोकप्रकाशकम्

॥ १९ ॥ अर्हदाख्यस्तु वर्णान्तः सरेफो विन्दुमण्डितः। तुर्यस्वरसमायुक्तो बहुधानादमालितः ॥ २० ॥ अस्मिन् बीजे स्थिताः सर्वे ऋषभाद्या जिनोत्तमाः। वर्णैर्निजैर्निजैर्युक्ता ध्यातव्यास्तत्र सङ्गताः ॥ २१ ॥ नादश्चन्द्रसमाकारो विन्दुर्नीलसमप्रभः। कलारुणसमासान्तः स्वर्णाभः सर्वतो मुखः ॥ २२ ॥ शिरः संलीन ईकारो विनीलो वर्णतः स्मृतः। वर्णानुसालसंलीनं तीर्थकृन्मण्डलं स्तुमः ॥ २३ ॥ चन्द्रप्रभपुष्पदन्तौ नादस्थितिसमाश्रितौ। विन्दुमध्यगतौ नेमिसुव्रतौ जिनसत्तमौ ॥ २४ ॥ पद्मप्रभवासुपूज्यौ कलापदमधिष्ठितौ। शिर ई स्थितिसंलीनौ पार्श्वमल्ली जिनोत्तमौ ॥ २५ ॥ शेषास्तीर्थकराः सर्वे हरस्थाने नियोजिताः। मायाबीजाक्षरं प्राप्ता-श्चतुर्विंशतिरर्हताम् ॥ २६ ॥ गतरागद्वेषमोहाः सर्वपापविवर्जिताः। सर्वदा सर्वलोकेषु ते भवन्तु जिनोत्तमाः ॥ २७ ॥ देवदेवस्य यच्चक्रं तस्य चक्रस्य या विभा। तयाच्छादितसर्वांगं मा मां हिनस्तु डाकिनी ॥२८॥ देवदेवस्य यच्चक्रं तस्य चक्रस्य या विभा। तयाच्छादितसर्वाङ्गं मा मां हिनस्तु राकिनी ॥ २९ ॥ देवदेवस्य यच्चक्रं तस्य चक्रस्य या विभा। तयाच्छादितसर्वांगं मा मां हिनस्तु लाकिनी ॥ ३० ॥ देवदेवस्य यच्चक्रं तस्य चक्रस्य या

विभा। तयाच्छादितसर्वांगं मा मां हिनस्तु काकिनी ॥३१॥ देवदेवस्य यच्चक्रं तस्य चक्रस्य या विभा। तयाच्छादितसर्वांगं मा मां हिनस्तु शाकिनी ॥ ३२ ॥ देवदेवस्य यच्चक्रं तस्य चक्रस्य या विभा। तयाच्छादितसर्वांगं मा मां हिनस्तु हाकिनी ॥ ३३ ॥ देवदेवस्य यच्चक्रं तस्य चक्रस्य या विभा। तयाच्छादितसर्वांगं मा मां हिनस्तु याकिनी ॥३४॥ देवदेवस्य यच्चक्रं तस्य चक्रस्य या विभा। तयाच्छादितसर्वांगं मा मां हिनस्तु पन्नगाः ॥ ३५ ॥ देवदेवस्य यच्चक्रं तस्य चक्रस्य या विभा। तयाच्छादितसर्वाङ्गं मा मां हिनस्तु हस्तिनः ॥ ३६ ॥ देवदेवस्य यच्चक्रं तस्य चक्रस्य या विभा। तयाच्छादितसर्वाङ्गं मा मां हिनस्तु राक्षसाः ॥ ३७ ॥ देवदेवस्य यच्चक्रं तस्य चक्रस्य या विभा। तयाच्छादितसर्वाङ्गं मा मां हिनस्तु वह्नयः ॥ ३८ ॥ देवदेवस्य यच्चक्रं तस्य चक्रस्य या विभा। तयाच्छादितसर्वांगं मा मां हिनस्तु सिंहकाः ॥ ३९ ॥ देवदेवस्य यच्चक्रं तस्य चक्रस्य या विभा। तयाच्छादितसर्वाङ्गं मा मां हिनस्तु दुर्जनाः ॥ ४० ॥ देवदेवस्य यच्चक्रं तस्य चक्रस्य या विभा। तयाच्छादितसर्वांगं मा मां हिनस्तु भूमिपाः ॥ ४१ ॥ श्रीगौतमस्य या मुद्रा तस्या या भुवि लब्धयः। ताभिरभ्युद्यतज्योतिरर्हं

सर्वेनिधीश्वराः ॥ ४२ ॥ पातालवासिनो देवा देवा भूपीठवासिनः । स्वर्वासिनोऽपि ये देवाः सर्वे रक्षन्तु मामितः ॥ ४३ ॥ येऽवधिलब्धयो ये तु परमावधिलब्धयः । ते सर्वे मुनयो देवाः मां संरक्षन्तु सर्वतः ॥ ४४ ॥ दुर्जना भूतवेतालाः पिशाचा मुद्गलास्तथा । ते सर्वेऽप्युपशाम्यन्तु देवदेवप्रभावतः ॥ ४५ ॥ ॐ ह्रीं श्रीश्च धृतिर्लक्ष्मी-गौरी चण्डी सरस्वती । जयाम्बा विजया नित्या क्लिन्नाऽजिता मदद्रवा ॥ ४६ ॥ कामाङ्गा कामबाणा च सानन्दा नन्दमालिनी । माया मायाविनी रौद्री कला काली कलिप्रिया ॥ ४७ ॥ एताः सर्वा महादेव्यो वर्तन्ते या जगत्त्रये। मह्यं सर्वाः प्रयच्छन्तु कान्ति कीर्तिं धृतिं मतिम् ॥ ४८ ॥ दिव्यो गोप्य सुदुष्प्राप्य श्रीऋषिमण्डलस्तवः । भाषितस्तीर्थनाथेन जगत्त्राणकृतोऽनघः ॥४९॥ रणे राजकुले वह्नौ जले दुर्गे गजे हरौ । श्मशाने विपीने घोरे स्मृतो रक्षति मानवम् ॥ ५० ॥ राज्यभ्रष्टा निजं राज्यं पदभ्रष्टा निजं पदम् । लक्ष्मीभ्रष्टा निजां लक्ष्मीं प्राप्नुवन्ति न संशयः ॥ ५१ ॥ भार्यार्थी लभते भार्यां पुत्रार्थी लभते सुतम् । वित्तार्थी लभते वित्तं नरः स्मरणमात्रतः ॥ ५२ ॥ स्वर्णे रूप्ये पटे कांस्ये लिखित्वा यस्तु पूजयेत् । तस्यैवाष्टमहासिद्धि-र्गृहे वसति शाश्वती ॥५३॥

भूर्जपत्रे लिखित्वेदं गलके मूर्ध्नि वा भुजे । धारितं सर्वदा दिव्यं सर्वभीतिविनाशकम् ॥ ५४ ॥ भूतैः प्रेतै-र्ग्रहैर्यक्षैः पिशाचैर्मुद्गलैर्मलैः । वातपित्तकफोद्रेकै—र्मुच्यते नात्र संशयः ॥ ५५ ॥ भूर्भुवः स्वस्त्रयीपीठ—वर्त्तिनः शाश्वता जिनाः । तैः स्तुतैर्वन्दितैर्दृष्टै—र्यत्फलं तत्फलं स्मृतेः ॥ ५६ ॥ एतद्गोप्यं महास्तोत्रं न देयं यस्य कस्यचित् । मिथ्यात्ववासिने दत्ते बालहत्या पदे पदे ॥ ५७ ॥ आचाम्लादि तपः कृत्वा पूजयित्वा जिनावलीम् । अष्टसाहस्रिको जापः, कार्यस्तत्सिद्धिहेतवे ॥ ५८ ॥ शतमष्टोत्तरं प्रातर्ये पठन्ति दिने दिने । तेषां न व्याधयो देहे प्रभवन्ति न चापदः ॥ ५९ ॥ अष्टमासावधिं यावत् प्रातः प्रातस्तु यः पठेत् । स्तोत्रमेतद् महातेजो जिनबिम्बं स पश्यति ॥ ६० ॥ दृष्टे सत्यर्हतो बिम्बे, भवे सप्तमके ध्रुवम् । पदं प्राप्नोति शुद्धात्मा परमानन्दनन्दितः ॥ ६१ ॥ विश्ववन्द्यो भवेद् ध्याता, कल्याणानि च सोऽश्नुते । गत्वा स्थानं परं सोऽपि, भूयस्तु न निवर्त्तते ॥ ६२ ॥ इदं स्तोत्रं महास्तोत्रं, स्तुतीनामुत्तमं परम् । पठनात् स्मरणाज्जापाल्लभ्यते पदमुत्तमम् ॥ ६३ ॥ इति श्रीऋषिमंडलस्तोत्रं समाप्तम् ॥

अथ तिजयपहुत्तस्तोत्रं ।

तिजय-पहुत्त-पयासय, अट्ठ-महापाडिहेरजुत्ताणं, समय क्खित्त-ठिआणं । सरेमि चक्कं जिणंदाणं ॥ १ ॥ पणवीसा य असीआ, पनरस पन्नास जिणवरसमूहो । नासेउ सयल-दुरिअं, भविआणं भत्ति-जुत्ताणं ॥ २ ॥ वीसा पणयाला वि य, तीसा पन्नत्तरी जिणवरिंदा । गह-भूअ-रक्ख-साइणि,-घोरुव-सग्गं पणासंतु ॥ ३ ॥ सित्तिरि पणतीसा वि य, सट्ठी पंचेव जिणगणो एसो । वाहिजलजलणहरिकरि,-चोरारिमहा-भयं हरउ ॥ ४ ॥ पणपन्ना य दसेव य, पन्नट्ठी तहय चेव चालीसा । रक्खंतु मे सरीरं, देवासुरपणमिआ सिद्धा ॥ ५ ॥ ॐ हरहुंहः सरसुंसः, हरहुंहः तह चेव सरसुंसः । आलिहिय नाम गब्भं, चक्कं किर सव्वओभद्दं ॥ ६ ॥ ॐ रोहिणी पन्नत्ती, वज्जसिंखला तहय वज्जअंकुसिआ । चक्केसरि नरदत्ता, कालि महाकालि तह गोरी ॥ ७ ॥ गन्धारी महजाला, माणवी वइरुट्ट तहय अच्छुता । माणसि महामाणसिआ, विज्जादेवीओ रक्खंतु ॥ ८ ॥ पंचदस-कम्मभूमिसु, उप्पन्नं सत्तरिं जिणाणसयं । विविहरयणाइवन्नो, वसोहिअं हरउ दुरिआई ॥ ९ ॥ चउतीसअइसय-जुआ, अट्ठ-महापा-डिहेरकयसोहा । तित्थयरा गयमोहा, झाएअव्वा पयत्तेणं

॥१०॥ ॐ वरकणयसंखविद्दुम, मरगयघणसन्निहं विगयमोहं। सत्तरिसयं जिणाणं सव्वामरपूइअं वंदे, स्वाहा ॥ ११ ॥ ॐ भवणवइ वाणवंतर, जोइसवासी विमाणवासी अ। जे केवि दुट्ठ देवा, ते सव्वे उवसमंतु मम, स्वाहा ॥ १२ ॥ चंदण-कप्पूरेणं, फलए लिहिऊण खालिअं पीअं। एगंतराइ गहभूअ, साइणि मुग्गं पणासेई ॥ १३ ॥ इअ सत्तरिसयं जंतं, सम्मं मंतं दुवारि पडिलिहिअं। दुरिआरि विजयवंतं, निब्भंतं निच्चमच्चेह ॥ १४ ॥ इति ॥

द्वितीया की स्तुति।

मन शुद्ध वंदो भावे भवियण श्रीसीमंधर रायाजी, पांचसे धनुष प्रमाण विराजित कंचन वरणी कायाजी, श्रेयांस नरपति सत्यकि नन्दन वृषभ लंछन सुखदायाजी, विजय भली पुखलावइ विचरे सेवे सुरनर पायाजी ॥ १ ॥ काल अतित जे जिनवर हुवा होस्ये जेह अनन्ताजी, संप्रतिकाले पंचविदेहे वरते वीस विख्याताजी। अतिशयवंत अनन्त गुणाकर जग बंधव जगत्राताजी, ध्यायक ध्येय स्वरूप जे ध्यावे पावे शिव सुख शाताजी ॥ २ ॥ अरथे श्रीअरिहंत प्रकाशी सूत्रे गणधर आणीजी, मोह मिथ्यात्व तिमिर भरना-शन अभिनव सूर समाणीजी। भवोदधि तरणी मोक्ष नीसरणी

नयनिक्षेप सोहाणीजी, ए जिनवाणी अमिय समाणी आराधो भवि प्राणीजी ॥ ३ ॥ शासनदेवी सुरनर सेवि श्रीपंचांगुली माईजी, विघन विडारिणी संपत्ति कारिणी सेवक जन सुखदाईजी । त्रिभुवनमोहिनी अंतरयामिनी जग जस ज्योति सवाईजी, सानिध्यकारी संघने होज्यो श्रीजिनहर्ष सुहाईजी ॥ ४ ॥ इति ॥

पंचमी की स्तुति ।

पंच अनंत महंत गुणाकर पंचमी गति दातार, उत्तम पंचमी तपविधि दायक ज्ञायक भाव अपार । श्रीपंचानन लांछन लांछित वांछित दान सुदक्ष, श्रीवर्द्धमान जिणंदसु वंदो आणंदो भवि पक्ष ॥ १ ॥ पूरण पंच महाश्रव रोधक बोधक भव्य उदार, पंच अणुव्रत पंच महाव्रत विधि विस्तारक सार । जे पंचेंद्रिय दमी शिव पुहता ते सगला जिनराय, पंचमी तप धर भवियण ऊपर सुथिर करो सुपसाय ॥ २ ॥ पंचाचार धुरंधर युगवर पंचम गणधर वाण, पंच ज्ञान विचार विराजित भाजित मद पंच बाण । पंचम काल तिमिर भर मांहे दीपक सम शोभंत, पंचम तप फल मूल प्रकाशक ध्यावो जिनसिद्धान्त ॥ ३ ॥ पंच परम पुरुषोत्तम सेवा कारक जे नरनार, वलि निरमल पंचमी तप धारक तेह भणी सुविचार । श्रीसिद्धदायिका देवी अहनिस आपो सुख

अमंद, श्रीजिनलाभसूरिंद पसाये कहे जिनचंद मुणिंद ॥ ४ ॥ इति ॥

अष्टमी की स्तुति।

चउवीशे जिनवर प्रणमुं हुं नितमेव, आठम दिन करिये चंद्रप्रभुजीनी सेव। मूरति मन मोहे जाणे पूनमचंद, दीठां दुःख जावे पामे परमानंद ॥ १ ॥ मिल चोसठ इंद्र पूजे प्रभुजीना पाय, इंद्राणी अपच्छरा कर जोड़ी गुण गाय। नंदीसर द्वीपे मिल सुरवरनी कोड, अट्ठाई महोच्छव करतां होडा होड ॥ २ ॥ शत्रुञ्जय शिखरे जाणी लाभ अपार, चौमासे रहिया गणधर मुनि परिवार। भवियणने तारे देइ धरम उपदेश, दूध साकरथी पिण वाणी अधिक विशेष ॥ ३ ॥ पोसह पडिकमणो करिये व्रत पच्चक्खाण, आठम तप करतां आठ करमनी हाण। आठ मंगल थाये दिन दिन कोड कल्याण, जिनसुखसूरि कहे शासनदेवी सुजाण ॥ ४ ॥ इति ॥

एकादशी की स्तुति।

अरनाथ जिनेसर दीक्षा नमिजिन ज्ञान, श्रीमल्लि जन्म-व्रत केवल ज्ञान प्रधान। इग्यारस मिगसर सुदी उत्तम अव-धार, ए पंच कल्याणक समरीजें जयकार ॥ १ ॥ इग्यारे अनुपम एक अधिक गुणधार, इग्यारे बारे प्रतिमा देशक-

धार। इग्यारे दूगुणा दोय अधिक जिनराय, मनशुद्ध सेव्यां सब संकट मिट जाय ॥ २ ॥ जियां वरस इग्यारे कीजे व्रत उपवास, वलि गुणनो गुणिये विधिसेती सुविलास । जिनआगम वाणी जाणी जगत प्रधान, एक चित्त आराधो साधो सिद्ध विधान ॥ ३ ॥ सुर असुर भुवणवण सम्यगद्‍दरशनवंत, जिनचंद्र सुसेवक वैयावच्च करंत। श्रीसंघ सकलमें आराधक बहुजाण, जिनशासन देवी देव करो कल्याण ॥ ४ ॥ इति ॥

चतुर्दशी की स्तुति ।

प्रथम तीर्थंकर आदि जिनेश्वर जाकी कीजे सेव, गच्छ चौरासी जेहने थाप्या जाकी करणी एह । तेहने पाखी चौदश कीजे बीजे अंग कहाय, पाखी सूत्र प्रथम तुम देखो जिम जिम संशय जाय ॥ १ ॥ चउवीसे जिन पूजा कीजे मानो जिनकी आण, कल्पसूत्रनी पाखी चौदश जोवो चतुर सुजाण । इण पर ठाम ठाम तुम देखो चौदश पाखी होय, भूला कांई भमो तुम प्राणी साचो जिनधर्म जोय ॥ २ ॥ चउदशके दिन पाखी किजे सूत्रे केरी साख, भविक जीव इक आराधो टीका चूर्णी भाष्य । आवश्यकसूत्र इणपर बोले चउदशके दिन पाखी, चउद-पूरवधर इणपर बोले ते निश्चय मन राखी ॥ ३ ॥ श्रुतदेवी इक मन आराधो मन वांछित फल होय, जे जे आज्ञा सुधी पाले ज्यानो विघन

हरेय । सेवक इण पर करे विनति सुधो समकित पाय, खरतर गच्छ मंडण कुमति विहंडण माणिक्यसूरि गुरुराय ॥ ४ ॥ इति ॥

पर्युषण की स्तुति ।

वलि वलि हुं ध्यावुं गाउं जिनवर वीर, जिनपर्व पजूसण दाख्या धर्मनी सीर । आपाढ़ चौमासे हुंती दिन पचास, पडिक्कमणुं संवच्छरी करिये त्रण उपवास ॥ १ ॥ चउवीसे जिणवर पूजा सत्तर प्रकार, करिये भले भावे भरिये पुण्य भंडार । वलि चैत्य प्रवाडे फिरतां लाभ अनंत, इम परव पजूसण सहु में महिमावंत ॥ २ ॥ पुस्तक पूजावी नव वांचनायें वंचाय, श्रीकल्पसूत्र जिहां सुणतां पाप पुलाय । प्रतिदिन परभावना धूप अगर उखेव, इम भवियण प्राणी परव पजूसण सेव ॥ ३ ॥ वलि साहम्मी वच्छल करिये वारंवार, केई भावना भावे केइ तपसी शिलधार । अड दीह पजूसण एम सेवत आणंद, सुयदेवी सानिध्य कहे जिनलाभसूरिंद ॥ ४ ॥ इति ॥

नवपद चैत्यवंदन ।

श्रीअरिहंत उदार कान्ति, अति सुंदर रूप । सेवो सिद्ध अनन्त शान्त, आतम गुण भूप ॥ १ ॥ आचारज उवज्झाय साधु, शमतारस धाम । जिनभाषित सिद्धान्त शुद्ध, अनुभव

अभिराम ॥ २ ॥ बोधबीज गुण सम्पदाए, नाण चरण तव शुद्ध । ध्यावो परमानन्द पद, ए नवपद अविरुद्ध ॥ ३ ॥ इह परभव आनंद कंद, जगमांहि प्रसिद्धो । चिन्तामणि सम जास जोग, नहु पुण्ये लद्धो ॥ ४ ॥ तिहुअण सार अपार एह, महिमा मन धारो । परिहर परजंजाल जाल, नित एह संभारो ॥ ५ ॥ सिद्धचक्र पद सेवतां, सहजानंद स्वरूप । अमृतमय कल्याणनिधि, प्रकटे चेतन भूप ॥ ६ ॥
॥ इति ॥

नवपदजी का स्तवन ।

धरलो निर्मल ध्यान भविकजन, धरलो निर्मल ध्यान । शिवसुखके सनेही भविकजन, धरलो निर्मल ध्यान ॥ टेर ॥ चार कर्मको क्षय करीने, होते अरिहंत रूप । बारे गुणके धारक जिनवर, सेवो शुद्ध स्वरूप ॥ सेवो शुद्ध स्वरूप, भविक० ॥ १ ॥ अगम अगोचर अलख निरंजन, बीजे पदमें सिद्ध, अष्ट कर्मके वारक धारक, गुणके आठ प्रसिद्ध ॥ गुणके आठ प्रसिद्ध, भविक० ॥ २ ॥ गुण छत्तीससे गाजे गणधर, त्याजे विषय कषाय । पंचाचारको पाले पलावे, अतिशय चार सुहाय ॥ अतिशय चार सुहाय, भविक० ॥ ३ ॥ पाठक शिक्षा नित प्रति देते, गुण पचवीस लो मान । ज्ञान कुठारको हाथमें लेके, छेदे मोह अज्ञान ॥ छेदे मोह अज्ञान, भविक० ॥ ४ ॥ निर्ग्रंथी अणगार अनु-

पम, गुण है सत्तावीस । सम परिणामे निहारे जगको, तारे विश्वावीस ॥ तारे विश्वावीस, भविक० ॥ ५ ॥ भव संतापके दूर करणको, मानो औषधि एक । मूल पांच गुण है अति सुंदर, समकित शुद्ध विवेक ॥ समकित शुद्ध विवेक, भविक० ॥ ६ ॥ ज्ञान विज्ञान महान मनोहर, पांच प्रकार प्रमाण । लोकालोक विलोकन कारण, दीपक मान सुजाण ॥ दीपक मान सुजाण, भविक० ॥ ७ ॥ दश प्रकार गुणोंका आकर, चारित्र गुण मणिमाल, आश्रव अवगुण रोध करीने, संवर गुणको संभाल ॥ संवर गुणको संभाल, भविक० ॥ ८ ॥ तप दोय भेद जिनेश प्ररूपे, कठिन कर्म दे बाल । ध्यान पवनके जोग करीने, शुद्ध करे तत्काल ॥ शुद्ध करे तत्काल, भविक० ॥ ९ ॥ ये नवपदके ध्यान करणसे, पावो सुख भरपूर । रोग शोक संताप विपत्ति सब, कष्ट वियोग हो दूर ॥ कष्ट वियोग हो दूर, भविक० ॥ १० ॥ विधि संयुत गुरु मुखसे पढ़के, आराधो शुभ भाव । आसोज चैत्री दोय वर्षमें, करिये हर्ष उच्छाव ॥ करिये हर्ष उच्छाव, भविक० ॥ ११ ॥ साढ़ा चार वर्षमें होवे, इक्यासी आंबिल सार । व्रत उजमणो करिये भविजन, तरिये भवजल पार ॥ तरिये भवजल पार, भविक० ॥ १२ ॥ संवत् उन्नीसे इक्यासी वर्षे, जोधनगरके मांय । चैत सुदि नवमी रवि पुष्ये, हरि गावे हरपाय ॥ हरि गावे हरपाय, भविक० ॥१३॥ इति ॥

नवपद की स्तुति ।

निरूपम सुखदायक जगनायक, लायक शिवगति गामीजी । करुणा सागर निज गुण आगर, शुभ समतारस धामीजी ॥ श्रीसिद्धचक्र शिरोमणि जिनवर, ध्यावे जे मनरंगेजी । ते मानव श्रीपाल तणी परे, पामे सुख सुरसंगेजी ॥ १ ॥ अरिहंत सिद्ध आचारिज पाठक, साधु महा गुणवंताजी । दरिसण नाण चरण तप उत्तम, नवपद जग जयवंताजी ॥ एहनुं ध्यान धरंता लहिये, अविचलपद अविनाशीजी । ते सघला जिन नायक नमिये, जिण ए नीति प्रकाशीजी ॥ २ ॥ आमू मास मनोहर तिम वलि, चैत्रक मास जगीशेजी । उजवाली सातमथी करिये, नव आंबिल नव दिवसेजी ॥ तेर सहस वलि गुणिये गुणणुं, नवपद केरो सारोजी । इणि परे निर्मल तप आदरिये, आगम साख उदारोजी ॥३॥ विमल कमल दल लोयण सुंदर, श्रीचक्केसरी देवीजी। नवपद सेवक भविजन केरां, विघ्न हरो सुरसेवीजी॥ श्रीखरतरगच्छ नायक सद्गुरु, श्रीजिनभक्ति मुणिंदाजी । तासु पसाये इण परि पभणे श्रीजिनलाभ सूरिंदाजी ॥ ४ ॥ ॥ इति ॥

श्रीसीमंधरस्वामी विनतिरूप-द्वितीया का स्तवन ।

सफल संसार अवतार ए हुं गणुं, स्वामी सीमंधरा तुम्ह भगते भणुं । भेटवां पायकमल भाव हियडे घणो,

करिय सुपसाय जे विनवुं ते सुणो ॥ १ ॥ तुम्हसुं कूड अरिहंत शुं राखिये, जिस्यो अच्छे तिस्यो कर जोड़ी करी भांखिये। अति सबल मुझ हिये मोह माया घणी, एकमन भगति किम करूं त्रिभुवन धणी ॥ २ ॥ जीव आरति करें नव नवी परिगडे, रीश चटको चढे लोभ वयरी नडे। नयण-रस वयण-रस काम-रस रसीयो, तेम अरिहंत तुं हियडे नवि वसीयो ॥ ३ ॥ दिवसने रात हियडे अनेरो धरूं, मूढ़ मन रींझवा वलिय माया करूं। तुंहि अरिहंत जाणे जिस्यो आचरूं, तेम कर जेम संसार-सागर तरूं ॥ ४ ॥ कम्म-वसि सुखने दुःख जे हुं सहुं, मनतणी वात अरिहंत किणने कहूं। करी दया करी मया देव करुणा परा, दुःख हरि सुखकरी स्वामी सीमंधरा ॥ ५ ॥ जाण संयोग आगम वयण पिण सुणुं, धर्म न कराय प्रभु पाप पोते घणुं। एक अरिहंत तूं देव बीजो नहीं, एह आधार जग जाणजो अम्ह-सही ॥ ६ ॥ धण कणय माय पियपुत्त परिजन सहू, हस्यो बोल्यो रम्यो रंगरातो बहू। जयो जयो जगगुरु जीव जीवन धरा, तुम्ह समोवड़ नहीं अवर वाल्हेसरा ॥ ७ ॥ अमिय-रस वाणी जाणुं सदा सांभलुं, वार वार परपदा मांहि आवी मिलुं। चित्त जाणुं सदा स्वामी पाय ओलगुं, किम करूं ठाम पुंडरगिरि वेगलुं ॥ ८ ॥ मोलिडा भगति तूं चित्त हारे किस्ये, पुण्य संयोग प्रभु दृष्टिगोचर हुस्ये। जेहने नामे मन वयण तन उल्लसे, दूरथी दूकडा

जेम हियडे वसे ॥ ९ ॥ भलभलो एणी संसार सहु ए अच्छे, स्वामी सीमंधरा ते सहू तुम पछे। ध्यान करतां सुपनमांहि आवी मिले, देखिये नयण तो चित्त आरति टले ॥ १० ॥ साम सोहामणा नाम मन गहगहे, तेहशुं नेह जे वात तुम्ह जो कहे। तुम्ह पाय भेटवा अतिघणो टल-वलुं, पंख जो होय तो सहिय आवी मिलुं ॥ ११ ॥ मेरु गिरि लेखिणी आम कागल करूं, क्षीरसागर तणां दूध खडीया भरूं। तुम्ह मिलवा तणा स्वामी संदेशडा, इन्द्र पिण लिखिय न सके अछे एवडा ॥ १२ ॥ आपणे रंग भरी बात सुख जेटली, ऊपजे स्वामी न कहाय सुख तेटली। सुणो सीमंधरा राज राजेसरा, लाडने कोड प्रभु पूर सवि माहरा ॥ १३ ॥ पुव्व भवि मोह वसि नेह हुवे जेहने, समरिये एणी संसार नित तेहने। मेहने मोर जिम कमल भमरो रमे, तेम अरिहंत तूं चित्त मोरे गमे ॥ १४ ॥ खरूं अरिहंतनुं ध्यान हियडे वस्युं, वापडुं पाप हिव रहिय करशे किस्युं। ठाम जिम गरुडवर पंखी आवे वही, तत-खिण सर्पनी जाति न शके रही ॥ १५ ॥ पाप मैं कज्ज सावज्ज सहु परिहरि, स्वामी सीमंधरा तुम्ह पय अणुसरीं। शुद्ध चारित्र कहिये प्रभु पालशुं, दुःख भंडार संसारभयं टालशुं ॥ १६ ॥ तुम्ह हूं दास हुं तुम्ह सेवक सही, एह मैं वात अरिहंत आगल कही। एवडी माहरी भगति जाणी करी, आपजो बापजी सार केवल सही ॥ १७ ॥ कलश—

एम ऋद्धि वृद्धि समृद्धि कारण दुरित वारण सुख करो, उव-
झाय वर श्रीभक्तिलाभे थुण्यो श्रीसीमंधरो । जय जयो
जगगुरु जीव जीवन करी स्वामी मया घणी, कर जोडी
वलि वलि विनवुं प्रभु पूर आशा मन तणी ॥ १८ ॥ इति ॥

ज्ञान-पञ्चमोका बड़ा स्तवन ।

प्रणमुं श्रीगुरु पाय, निर्मल ज्ञान उपाय । पंचमी तप भणुंए, जन्म सफल गिणुं ए ॥ १ ॥ चउवीसमो जिनचन्द, केवलज्ञान दिणंद । त्रिगडे गहगह्योए, भवियणने कह्योए ॥ २ ॥ ज्ञानवडूं संसार, ज्ञान मुगति दातार । ज्ञान दीवो कह्योए, साचो सद्ह्योए ॥ ३ ॥ ज्ञान लोचन सुविलास, लोकालोक प्रकाश । ज्ञान विना पशुए, नर जाणे किस्युंए ॥ ४ ॥ अधिक आराधक जाण, भगवती सूत्र प्रमाण । ज्ञानी सर्वतुए, किरिया देशतु ए॥ ५ ॥ ज्ञानी श्वासोश्वास, करम करे जे नास। नारकीने सहीए, कोड वरस कहीए, ॥ ६ ॥ ज्ञान तणो अधिकार, बोल्या सूत्र मझार । किरिया छ सहीए, पण पाछे कहीए ॥ ७ ॥ किरिया सहित जो ज्ञान, हुवे तो अति परधान । सोनाने सूरोए, शंख दूधें भर्योए ॥ ८ ॥ महानिशीथ मझार, पंचमी अक्षर सार । भगवंतं भाखियोए, गणधर साखियोएं ॥ ९ ॥

ज्ञान पञ्चमी का लघु स्तवन।

पंचमी तप तुमे करोरे प्राणी, निर्मल पामो ज्ञानरे। पहिलूं ज्ञानने पीछे किरिया, नहीं कोई ज्ञान समानरे ॥ पं० ॥ १ ॥ नंदीसूत्र में ज्ञान वखाण्युं, ज्ञानना पंच प्रकाररे। मति श्रुति अवधि अने मनःपर्यव, केवल ज्ञान श्रीकाररे ॥ पं० ॥ २ ॥ मति अट्ठावीस श्रुत चउदे वीश, अवधि छे असंख्या प्रकाररे। दोय भेदे मनःपर्यव दाख्युं, केवल एक प्रकाररे ॥ पं० ॥ ३ ॥ चंद्र सूरज ग्रह नक्षत्र तारा, तेस्युं तेज आकाशरे। केवल ज्ञान समो नहीं कोई, लोकालोक प्रकाशरे ॥ पं० ॥ ४ ॥ पारसनाथ प्रसाद करीने, महारी पूरो उमेदरे। समय सुंदर कहे हुं पण पामुं, ज्ञाननो पांचमो भेदरे ॥ पं० ॥ ५ ॥ इति ॥

मौन एकादशी का बड़ा स्तवन।

समवसरण बेठा भगवंत, धरम प्रकाशे श्रीअरिहंत। बारे परषदा बैठी जूडी, मिगसिर शुदि इग्यारस बड़ी ॥ १ ॥ मल्लिनाथना तीन कल्याण, जन्म दीक्षाने केवल-ज्ञान। अर दीक्षा लीधी रूवडी ॥ मि० ॥ २ ॥ नमिने उपनुं केवल ज्ञान, पांच कल्याणक अति परधान। ए तिथिनी महिमा एवडी ॥ मि० ॥ ३ ॥ पांच भरत ऐरवत इमहीज, पांच कल्याणक हुवे तिमहीज। पंचासनी संख्या परगडी ॥ मि० ॥ ४ ॥ अतीत अनागत गणतां एम,

दोढसौ कल्याणक थायें तेम । कुण तिथिछे ए तिथि जेवडी ॥ मि० ॥ ५ ॥ अनन्त चोवीसी इणपरें गिणो, लाभ अनन्त उपवासा तणो । ए तिथि सहु तिथि शिर राखडी॥ मि० ॥ ६ ॥ मौन पणे रह्यां श्रीमल्लिनाथ, एक दिवस संयम व्रत साथ। मौन तणी प्रवृत्ति इम पडी॥ मि० ॥ ७ ॥ अढ पुहरी पोसह लीजिये, चौविहार त्रिधिसुं कीजिये। पण परमाद न कीजे घडी ॥ मि० ॥ ८ ॥ वरस इग्यार कीजे उपवास, जावज्जीव पण अधिक उल्हास । ए तिथि मोक्ष तणी पावडी ॥ मि० ॥ ९ ॥ उजमणुं कीजे श्रीकार, ज्ञाननां उपगरण इग्यारे इग्यार । करो काउस्सग गुरु पाये पडी ॥ मि० ॥ १० ॥ देहरे स्नात्र करीये वली, पोथी पूजीये मनरली । शुगतिपुरी कीजे ढूकडी ॥ मि० ॥ ११ ॥ मौन इग्यारस महोटुं पर्व, आराध्यां सुख लहिये सर्व । व्रत पचक्खाण करो आखडी ॥ मि० ॥ १२ ॥ जेसल सोल इक्यासी समे, कीधुं स्तवन सहु मन गमे । समयसुंदर कहे करो ध्यावडी ॥ मि० ॥ १३ ॥ इति ॥

श्रीवीरजिन विनतिरूप—अमावस का स्तवन।

वीर सुणो मोरी विनती, कर जोडी हो कहुं मननीं वात । बालकनी परे वीनवुं, मोरा स्वामी हो तुमें त्रिभुवन तात ॥ वीर० ॥ १ ॥ तुम दरशण विण हुं भम्यो, भव मांहे

हो स्वामी समुद्र मझार । दुःख अनंता मैं सह्यां, ते कहेतां हो किम आवे पार । वी० ॥ २ ॥ पर उपकारी तूं प्रभु, दुःख भाजे हो जग दीनदयाल । तिण तोरे चरणे हुं आवीयो, स्वामी मुझने हो निज नयण निहाल॥ वी० ॥ ३ ॥ अपराधी पिण उद्धर्या, ते कीधी हो करुणा मोरा स्वाम । परम भगत हुं ताहरो, तेने तारो हो नहीं ढीलनो काम ॥ वी० ॥ ४ ॥ शूलपाणी प्रति बूझव्या, जिण कीधा हो तुझने उपसर्ग । डंख दीयो चण्डकोसीये, तें दीधो हो तसु आठमो स्वर्ग ॥ वी० ॥ ५ ॥ गोशालो गुण हीनडो, जिणे बोल्या हो तोरा अवरणवाद । ते बलतो तें राखियो, शीत लेश्या हो मूंकी सुप्रसाद ॥ वी० ॥ ६ ॥ ए कुण छे इन्द्रजालीयो, इम कहितां हो आयो तुम तीर । ते गौतमने तें कीयो, पोतानो हो प्रभुतानो वजीर ॥ वी० ॥ ७ ॥ वचन उथाप्या ताहरा, जे झगड्यो हो तुझ साथ जमाल । तेहने पिण पनरे भवे, शिवगामी हो कीधो तें कृपाल ॥ वी० ॥ ८ ॥ ऐवन्तो ऋषि जे रम्यो, जल मांहे हो बांधी माटीनी पाल । तीरती मूकी काचली, तें तार्यो हो तेहने ततकाल ॥ वी० ॥ ९ ॥ मेघकुमर ऋषि दुहव्यो, चित्त चूको हो चारित्रथी अपार । एकावतारी तेहने, तें कीधो हो करुणा-भंडार ॥ वी० ॥१०॥ बार वरस वेश्या घरे, रह्यो मूकी हो संयमनो भार । नंदिषेण पिण उद्धर्यो, सुरपदवी हो दीधी अतिसार ॥ वी० ॥ ११ ॥ पंच महाव्रत परिहरी, गृहवासे हो वसियो वरस

चौवीस । ते पिण आर्द्रकुमारने, तें तार्यो हो तोरी एह जगीस ॥ वी० ॥ १२ ॥ राय श्रेणिक राणीचेलणा, रूप देखी हो चित्त चूका जेह । समवसरण साधु साधवी, तें कीधा हो आराधिक तेह ॥ वी० ॥ १३ ॥ व्रत नहीं नहीं आखडी, नहीं पोसह हो नहीं आदर दीख । ते पिण श्रेणिक रायने, तें कीधो हो स्वामी, आप सरीख ॥ वी० ॥ १४ ॥ इम अनेक तें उद्धर्या, कहुं तोरा हो केता अवदात । सार करो हवे माहरी, मनमांहे हो आणो मोरडी वात ॥ वी० ॥ १५ ॥ सूधो संजम नवि पले, नहीं तो हुवो हो मुझ दरसण नाण । पिण आधार छे एटलो, एक तोरो हो धरूं निश्चल ध्यान ॥ वी० ॥ १६ ॥ मेह महीतल वरसतो, नवि जोवे हो सम विषमी ठाम । गिरुआ सहिजे गुणकरे, स्वामी सारो हो मोरा वांछित काम ॥ वी० ॥ १७ ॥ तुम नामें सुख संपदा, तुम नामें हो दुःख जावे दूर । तुम नामें वांछित फले, तुम नामें हो मुझ आणंदपूर ॥ वी० ॥ १८ ॥ (कलश)—इम नगर जेसलमेर मंडण तीर्थंकर चौवीसमो, शासनाधीश्वर सिंह लंछन सेवतां सुरतरु समो । जिणचन्द त्रिशला मात नन्दन सकलचन्द कलानिलो, वाचनाचारिज समयसुन्दर संथुण्यो त्रिभुवन तिलो ॥ वी० ॥ १९ ॥ इति ।

पूर्णिमा का स्तवन । (गरबा की देशी)

श्रीसिद्धाचल मंडण स्वामीरे, जग जीवन अंतरजामीरे। एतो प्रणमुं हुं शिरनामी, जात्रीडा जात्रा नवाणुं करियेरे— करिये तो भवजल तरिये ॥ जा० ॥ १ ॥ श्रीऋषभ जिनेश्वर रायारे, जिहां पूर्व नवाणुं आयारे। प्रभु समवसर्या सुखदाया ॥ जा० ॥ २ ॥ चैत्री पूनम दिन वखाणुंरे, पांच कोडीसुं पुंडरीक जाणुंरे। जे पाम्या पद निरवाणुं ॥ जा० ॥ ३ ॥ नमि विनमि राजा सुख साते रे, बे बे कोडी साधु संघातेरे। एतो पहोता पद लोकांते ॥ जा० ॥ ४ ॥ काति पूनमें कर्मने तोडीरे, जिहां सिद्धा मुनि दश कोडीरे। ते तो वंदो बेकर जोडी। जा० ॥ ५ ॥ इम भरतेसरने पाटेरे, असंख्याता मुनि थीर थाटेरे। पाम्या मुगति रमणी ए वाटे ॥ जा० ॥ ६ ॥ दोय सहस मुनि परिवाररे, थावच्चासुत सुखकाररे। सयपंच सैलग अणगार ॥ जा० ॥ ७ ॥ वली देवकी सुत सुजगीसरे, सिद्धा बहु जादव वंशरे। ते प्रणमुं रे मन हंस ॥ जा० ॥ ८ ॥ पांचे पांडव एणे गिरि आयारे, सिद्धा नव नारद ऋषि रायारे। वली सांब प्रद्युम्न कहाया ॥ जा० ॥ ९ ॥ ए तीरथ महिमावंतरे, जिहां साधु सिद्धा अनन्तरे। इम भाषे श्रीभगवंत ॥ जा० ॥ १० ॥ उज्ज्वल गिरि समो नहीं कोयरे तीरथ सघला मैं जोयरे। जे फरस्यां पावन होय ॥ जा० ॥ ११ ॥ एकल आहारी सचित्त परिहारीरे, पद चारीने भूमि संथारीरे। शुद्ध समकितने ब्रह्मचारी ॥

जा० ॥ १२ ॥ एम छहरी जे नर पालेरे, बहु दान सुपात्र आलेरे। ते जनम मरण भय टाले ॥ जा० ॥ १३ ॥ धन धन ते नरने नारीरे, भेटे विमलाचल एक तारीरे। जाउं तेहनी हूं बलिहारी ॥ जा० ॥ १४ ॥ श्रीजिनचन्द्रसूरि सुपसायेरे, जिनहर्ष हिए हुलसायेरे। इम विमलाचल गुण गाये। जा० ॥ १५ ॥ इति ॥

दादा श्रीजिनदत्तसूरिजी का स्तवन।

सिरि सुयदेव पसाय करी, गुरु श्रीजिनदत्तसूरि। वंदि सुखरतर गच्छरयण, सूरि जेम गुणपूरि ॥ १ ॥ संवत इग्यारइ वरसइ, बत्तीसइ जसु जम्म। वाछिग मंत्रि पिता जणणी, बाहड देव सुरम्म ॥ २ ॥ इकतालइ जिणवइ गहिय, गुणहत्तरइ जसु पाटि। वइसाखा वदि छट्ठि दिणि, पय पणमी सुरथाटि ॥ ३ ॥ अंबड सावइ कर लिहिय, सोवन अक्षर अंब। जुगप्पहाण जगि पयदीयउए, सिरि सोहमपडिबिंब ॥ ४ ॥ जिणि चउसट्ठि जोगिण जणिय, खित्तपाल बावन्न। साइणि डाइणि विज्जुलिय, पुहवइ नामि न अन्न ॥ ५ ॥ सूरिमन्त बल करि सहिय, साहिय जिण धरणिंद। सावय साविय लक्ख इग, पडिबोहिय जिणचिंद ॥ ६ ॥ अरि करि केसरि दुट्ठदल, चउविह देव निकाय। आण न लोपइ कोई जगह, जसु पणमइ नर राय

॥ ७ ॥ संवत बार इग्यार समइ, अजयमेर पुरि ठाणि। इग्यारिसि आसाढ़ सुदि, सग्गिपति सुह झाणि ॥ ८ ॥ श्रीजिनवल्लहसूरि पए, श्रीजिणदत्त मुणिंद। विग्घहरण मङ्गल करण, करउ पुण्य आणंद ॥ ९ ॥ इति ॥

दादा श्रीजिनकुशलसूरिजी का स्तवन।

रिसह जिणेसर सो जयो, मंगलकेलि निवास। वासव वंदिय पय कमल, जग सहु पूरइ आस ॥ १ ॥ (चउपइ)- चंदकुलं वर पूनिम चंद, वंदउ श्रीजिनकुशल मुणिंद। नाम मंत्र जसु महिम निवास, जो समरइ तसु पूरे आस ॥ २ ॥ मरुमंडल समियाणो गांम, धण कण कंचण अति अभिराम। जिहां वसइ जिल्हागर मंत्रि, जइतसिरी तसु धरणी कलत्रि ॥ ३ ॥ जसु तेरेसइ तीसइ जम्म, सइतालइ सिर संयम रम्म। पाटण सतहत्तरइ जसु पाट, निव्यासिईं तसु सुरगइ वाट ॥ ४ ॥ भूमंडल सुरगइ पायाल, अचिराचिर जुग इण कलिकाल। प्रभु प्रताप नवि मानइ सोय, मइ नवि नयणे दीठो जोय ॥ ५ ॥ निरधन लहइ धन धन्न सुवन्न, पुन्नहीण पामइ बहु पुन्न। असुखी पामइ सुख संतान, एकमनइ करतां गुरु ध्यान ॥ ६ ॥ प्रभु समरण आपद सहु टलइ, सयल शांति सुख संपत्ति मिलइ। आधि व्याधि चिंता संताप, ते छेडी नवि मंडइ व्याप ॥ ७ ॥ पाप दोष नवि लागे तिहां, प्रभु दरसण उत्कंठा जिहां। सेवतां सुरतरुनी छांहि, निश्चय

दालिद्र मेटइ वांहि ॥ ८ ॥ विसहर विसनर विसनरनाह, भूत प्रेत ग्रह व्यन्तर राह। प्रभु नामइ जे न करइ पीड, भाजइ भावढ भव भय भीड ॥ ९ ॥ रोग सोग सवि नासइ दूर, अंधकार जिम उगइ सूर। मूरख फीटी पंडित थाय, प्रभु पसाय दुख दुरिय पुलाय ॥ १० ॥ दिन दिन जिनशासन उद्योत, तिहां अच्छइ भव सायर पोत। सो सदगुरु मइ भेटउ आज, रलीय रंग सीधा सवि काज ॥ ११ ॥ (ढाल)—आज घर अंगण सुरतरु फलियो, चिंतामणि कर कमले मिलियो। उदयो परमाणंद घरे ॥ १२ ॥ आज दिह मइ धन्ने गिणियो, जुगपवरागम जो मइ थुणियो। चंद्रगच्छ महिमा निलोए ॥ १३ ॥ कांइ करो पृथिवीपति सेवा, कांई मनावो देवी देवा। चिंता आणो कांई मने ॥ १४ ॥ वार वार ए कवित भणीजइ, श्रीजिनकुशलसूरि समरिजइ। सरइ काज आयास विणे ॥ १५ ॥ संवत चवद इक्यासी वरसइ, मुलक वाहणपुरमें मन हरसइ। अजिय जिणेसर वरभवइ ॥ १६ ॥ कीयो कवित ए मंगल कारण, विघन हरण सहु पाप निवारण, कोई मत संसो धरो मनइ ॥ १७ ॥ जिम जिम सेवइ सुर नर राया, श्रीजिनकुशल मुनीसर पाया। जयसागर उवज्झाय थुणे ॥ १८ ॥ इम जो सदगुरु गुण अभिनंदइ, ऋद्धि समृद्धि सो चिरनंदइ। मनवंछित फल मुझ हुवो ए ॥ १९ ॥ इति ॥

गुरुदेव श्रीजिनदत्तसूरिजी का स्तवन ।

श्रीजिनदत्त सूरिंदा, परम गुरु श्रीजिनदत्त सूरिंदा । परम दयाल दया कर दीजे, दरिसन परम आणंदा ॥ प० श्री० ॥ १ ॥ जंगम सुरतरु वंछित दायक, सेवक जन सुख-कंदा । सद्गुरु ध्यान नाम नित समरण, दूर हरण दुःख दंदा ॥ प० श्री० ॥ २ ॥ निजपद सेवक सांनिध्यकारी, राखीये गुरु रोजिंदा । कर जोडी विनय युत विनवे, श्रीजिनहरखसूरिंदा ॥ प० श्री० ॥ ३ ॥ इति ॥

गुरुदेव श्रीजिनकुशलसूरिजी का स्तवन ।

कुशल गुरु अब मोहि दरिसण दीजे । अ० ॥ ऐसी भांति करो मेरे सद्गुरु, ज्युं मन मूढ पतीजे ॥ कु० ॥ १ ॥ ज़लदातार विरुद अमृतरस, श्रवण अंजलि भर पीजें । सुरतरु सम दरिसण विन देख्यां, कहो नयण किम रीझें ॥ कु० ॥ २ ॥ परम दयाल कृपाल कृपानिधि, इतनी अरज सुणीजे । परम भगत जिनराज तुम्हारो, अपनो कर जाणीजे ॥ कु० ॥ ३ ॥ इति ॥

दादा गुरु का सवइया ।

बावन वीर किये अपणे बस, चौसठ जोगण पाय लगाई, डाइण साइण व्यंतर खेचर, भूतरु प्रेत पिशाच पुलाई ॥ वीज तडक्क, कडक्क, भटक्क, अटक्क रहे जु खटक्क

न काई। कहे धर्मसिंह लंघे कुण लीह, दीये जिनदत्त की एह दुहाई ॥ १ ॥

राजे थुंभ ठोर ठोर ऐसो देव नहीं ओर, दादो दादो नामतें जगत्र जस्स गायो है। आपणेही भाय आय पूजे लख लोक पाय, प्यासनकूं रान मांझ पानी आन पायो है ॥ वाट घाट शत्रु थाट हाट पुरपाटणमें, देह गहे नेहसुं कुशल वरतायो है। धर्मसिंह ध्यान धरे सेवकां कुशल करे, साचो श्रीजिनकुशल गुरु नाम युं कहायो है ॥ २ ॥

श्रीगोडीपार्श्वजिन-वृद्धस्तवनम् ॥

(दूहा)—वाणी ब्रह्मावादिनी, जागै जग विख्यात। पास तणा गुण गावतां, मुज मुख वसज्यो मात ॥ १ ॥ नारंगै अणहिलपुरै अहमदावादै पास। गौडीनो धणी जागतो, सहुनी पूरे आस ॥ २ ॥ शुभ वेला शुभ दिन घडी, मुहुरत एक मंडाण। प्रतिमा ते इह पासनी, थई प्रतिष्ठा जाण. ॥ ३ ॥ (ढाल)—गुणहि विशाला मंगलीक माला, वामनो सुत साचोजी। धण कण कंचण मणि माणक दे, गौडीनो धणी जाचोजी (गु०) ॥ ४ ॥ अणहिलपुर पाटण मांहे प्रतिमा, तुरक तणें घर हुंती जी। अश्वनी भूमि अश्वनी पीडा, अश्वनी वालि विगूती जी (गु०) ॥५॥ जागतो जक्ष जेहने कहियें, सुहणो तुरकनें आपे जी। पास जिनेसर केरी प्रतिमा, सेवक तुझ संतापे जी (गु०) ॥ ६ ॥ प्रह उठीने परगट करजे,

सेवा गोठीने देजे जी। अधिक म लेजे ओछो म लेजे, टका पांचसै लेजे जी (गु०) ॥ ७ ॥ नहिं आपिस तो मारीस मुरडीस, मोर बंध बंधास्ये जी। पुत्र कलत्र धन हय हाथी तुझ, लाछि धणी घर जास्यै जी (गु०) ॥ ८ ॥ मारग पहिलो तुझनें मिलस्यै, सारथवाह जे गोठीजी । निलवट टीलो चोखा चेढ्या, वस्तु वहै तसु पोठी जी (गु०) ॥ ९ ॥ (दूहा)- मनसुं बीहनो तुरकडो, मानें वचन प्रमाण । बीबी नें सुहणा तणो, संभलावै सहिनाण ॥ १० ॥ बीबी बोले तुरकने, वडा देव है कोय । अवसताव परगट करो, नहीतर मारै सोय ॥११॥ पाछली रात परोडीयै, पहेली बांधै पाज। सुहणा माहें सेठने, संभलावै जक्ष-राज ॥१२॥ (ढाल)—एम कहीं जक्ष आयो राते, सारथवाहने सुहणें जी । पास तणी प्रतिमा तुं लेजे, लेतो सिर मत धूणे जी (एम०)॥ १३ ॥ पांचसै टका तेहने आपे, अधिको म आपिस वारू जी । जतन करी पहुंचाडे थानिक, प्रतिमा गुण संभारैजी (एम०) ॥ १४ ॥ तुझने होसी वहु फल दायक, भाई गोठीने सुणजे जी । पूजीस प्रणमीश तेहना पाया, प्रह उठीने थुणजे जी (ए०) ॥ १५ ॥ सुहणो देईने सुर चाल्यो, आपणे थांनक पहुंतो जी। पाटण मांहें सारथवाहु, हींडै तुरकने जोतो जी (ए०) ॥ १६ ॥ तुरकै जातां दीठो गोठी, चोखा तिलक लिलाडै जी । संकेत पहुतो साचो जाणि, बौलावै बहु लाडै जी (ए०) ॥ १७ ॥ मुझ घरि प्रतिमा तुझनें आपुं, पास

जिणेसर केरी जी। पांचसै टका जो मुझ आपै, मोल न मांगु फेरी जी (ए०)॥ १८॥ नाणो देई प्रतिमा लेई, थानक पहुंतो रंगै जी। केसर चंदन मृगमद घोली, विधिसुं पूजा रंगे जी (ए०)॥ १९॥ गादी रुडी रुनी कीधी, ते मांहि प्रतिमा राखै जी। अनुक्रम आव्या परिकर माहैं, श्रीसंघ ने सुर साखै जी (ए०)॥ २०॥ उच्छव दिन २ अधिका थाये, सत्तर भेद सनात्रो जी। ठाम ठाम ना दरसण करवा, आवै लोक प्रभातो जी (ए०)॥ २१॥ (दूहा)—इक दिन देखै अवधिसुं, परिकर पुरनो भङ्ग। जतन करूं प्रतिमा तणो, तीरथ अछै अभङ्ग॥२२॥ सुहणो आपै सेठने, थल अटवी उज्जाड। महिमा थास्यै अति घणी, प्रतिमा तिहां पहुंचाड॥ २३॥ कुशल खेम तिहां अछे, तुझनें मुझने जाणि। संका छोडी काम करि, करतो मकरि संकाणि॥ २४॥ (ढाल)—पास मनोरथ पुरा करैं, वाहणं एक वृषभ जोतरैं। परिकरथी परियाणो करै, एक थल चढ़ि बीजो उतरै॥ २५॥ बारैं कोस आव्या जेतलै, प्रतिमा नवि चाले तेतलै। गोठी मनह विमासण थई, पास भुवन मंड़ावुं सही॥ २६॥ आ अवटी किम करूं प्रयाण, कटको कोइ न दीसै पाहाण। देवल पास जिनेसर तणो, मंडावुं किम गरथें विणो॥ २७॥ जल विन श्रीसंघ रहस्यै किहां, सिलावटो किम आवे इहां। चिन्तातुर थयो निद्रा लहै, यक्षराज आवीनें कहै॥ २८॥ गुंहली ऊपर नाणो जिहां,

गरथ घणो जाणीजे तिहां। स्वस्तिक सोपारीने ठाणि, धाहण तणी उल्लटस्यै खाणि ॥ २९ ॥ श्रीफल सजल तिहां किल जूओ, अमृत जल नीसरसी कूओ। खारा कुवा तणो इह सैनाण, भूमि पड्यो छैं नीलो छाण ॥ ३० ॥ सिलावटो सीरोही वसै, कोढ पराभवियो किसमिसे। तिहां थकी तुं इहां आणजे, सत्य वचन माहरो मानजे ॥ ३१ ॥ गोठीनो मन थिर थापियो, सिलावटने सुहणो दियो। रोग गमीने परूं आस, पास तणो मंडे आवास ॥ ३२ ॥ सुपन मांहे मान्यो ते वैण, हेम वरण देखाड्यो नैंण। गोठी मनह मनो-रथ हुवा, सिलावटने गया तेडवा ॥ ३३ ॥ सिलावटो आवै सूरमो, जिमें खीर खांड घृत चूरमो। घडैं घाट करैं कोरणी, लगन भलै पाया रोपणी ॥ ३४ ॥ थंम थंम कीधी पूतली, नाटक कौतुक करती रली। रङ्ग मंडप रलियामणों रसै, जोतां मानवनो मन वसै ॥ ३५ ॥ नीपायो पूरो प्रासाद, स्वर्ग समो मंडे आवास। दिवस विचारी इंडो घड्यो, ततखिण देवल ऊपर चढ्यो ॥ ३६ ॥ शुभ लगन शुभ वेला वास, पव्वासण वेठा श्रीपास। महिमा मोटी मेरु समान, एकलमिल वगडे रहैवान ॥ ३७ ॥ वात पुराणी मैं सांभली, स्तवन मांहि सूधी सांकली। गोठी तणा गोतरिया अछै, यात्रा करीने परणे पछै ॥ ३८ ॥ (दोहा)—विघन विडारन यक्ष जगि, तेहनो अकल सरूप। प्रीत करे श्री संघने, देखाडै निज रूप ॥ ३९ ॥ गिरुओ गौडी पास

जिन, आपे अरथ भंडार। सांनिध करै श्री संघने, आसा पूरणहार ॥ ४० ॥ नील पलांणे नील हय, नीलो थई असवार।-मारग चूका मानवी, वाट दिखावण हार ॥४१॥ (ढाल)—चरण अढार तणो लहै भोग, विघन निवारे टालै रोग। पवित्र थई समरै जे जाप, टालै सगला पाप संताप ॥ ४२ ॥ निरधनने घरि धननो सुत, आपै अपुत्रीयाने पुत्र। कायरने सूरापण धरै, पार उतारै लच्छी वरै ॥ ४३ ॥ दोभागीने दे सोभाग, पग विहूणाने आपे पग। ठाम नहीं तेहने द्यै ठाम, मनवंछित पूरै अभिराम ॥ ४४ ॥ निराधार ने द्ये आधार, भवसायर उतारे पार। आरतियानी आरत भंग, धरै ध्यान ते लहै सुरंग ॥ ४५ ॥ समर्यां सहाय दीयै यक्षराज तेहना मोटा अछै दिवाज। बुद्धि हीण ने बुद्धि प्रकाश, गूंगाने दे वचन विलास ॥ ४६ ॥ दुखियाने सुखनो दातार, भय भंजण रंजण अवतार। बंधन तूटे बेडी तणा, श्रीपार्श्व नाम अक्षर स्मरणा ॥ ४७ ॥ (दूहा)—श्री पार्श्वनाम अक्षर जपे, विश्वानर विकराल। हस्ति जूथ रे टलै, दुद्धर सिंह सियाल ॥ ४८ ॥ चोर तणा भय चूकवे, विष अमृत उडकार। विषधरनो विष ऊतरे, संग्राममें जय जय कार ॥ ४९ ॥ रोग सोग दालिद्र दुख, दोहग दूर पलाय। परमेसर श्री पासनो, महिमा मन्त्र जपाय ॥ ५० ॥ (कड़खानी चाल)—उंजितु उंजितु उंज उपसम धरी; ॐ ह्रीं श्रीं श्री पार्श्व अक्षर जपंते। भूत ने प्रेत झोटिंग व्यंतर सुरा,

उपसमे वार इकवीस गुणंते (उं०) ॥ ५१ ॥ दुद्धरा रोग सोगा जरा जंतने, ताव एकान्तरा दुत्तपंते । गर्भबन्धन व्रणां सर्प विच्छू विषं, चालिका बालमेवा झखंतै (उं०) ॥५२॥ साइणीं डाइणी रोहिणी रंकिणी, फोटका मोटका दोष हूंतेः ॥ दाढ उंदरतणी कोल नोला तणी, स्वान सीयाल विकराल दंतें (उं०) ॥ ५३ ॥ धरणेंद्र पद्मावती समर शोभावतीं, वाट आघाट अटवी अटंतै । लखमी लीला मिलैं सुजस वेला उलै, सयल आस्या फलै मन हसंतै (उं०) ॥ ५४ ॥ अष्ट महाभय हरें कानपीड़ा टलै, ऊतरै सूल सीसग भणंते । वदन वर प्रीतसुं प्रीतिविमल प्रभू, श्री पास जिण नाम अभिराम मन्तै (उंजितु) ॥ ५५ ॥ इति श्रीगोडी पार्श्वनाथजी वृद्ध स्तवनं समाप्तम् ।

श्री गौतम स्वामिजी का रास ।

वीर जिणेसर चरण कमल, कमला कय वासो, पणमिवि पमणिसुं सामीसाल, गोयम गुरु रासो । मण तणु वयण एकंत करिवि, निसुणहु भो भविया, जिम निवसे तुम देह गेह गुण गण गहगहिया ॥ १ ॥ जंबूदीव सिरि भरह खित्त, खोणी तल मंडण, मगह देस सेणिय नरेस, रिऊ दल बल खंडण । धणवर गुव्वर गाम नाम, जिहां गुण गण सज्जा, विप्प बसे वसुभूइ तत्थ, तसु पुहवी भज्जा ॥ २ ॥ ताण पुत्त सिरि इन्दभूइ, भूवलय पसिद्धो, चउदह

विज्जा विविह रूव, नारी रस लुद्धो। विनय विवेक विचार सार, गुण गणह मनोहर; सात हाथ सुप्रमाण देह, रूवहि रंभावर ॥ ३ ॥ नयण वयण कर चरण जणवि, पंकज जल पाडिय; तेजहिं तारा चन्द सूरि, आकास भमाडिय। रूवहि मयण अनंग करवि, मेल्यो निरधाडिय, धीरमें मेरु गंभीर सिंधु, चंगम चय चाडिय ॥ ४ ॥ पेक्खवि निरुवम रूव जास, जण जंपे किंचिय; एकाकी किल भीत्त इत्थ, गुण मेल्या संचिय। अहवा निच्चय पुव्व जम्म, जिणवर इण अंचिय, रंभा पउमा गउरी गङ्ग, तिहां विधि वंचिय ॥ ५ ॥ नय बुध नय गुरु कविण कोय, जसु आगल रहियो; पंच सयां गुण पात्र छात्र, हींडे परवरियो। करय निरंतर यज्ञ करम, मिथ्यामति मोहिय; अणचल होसे चरम नाण, दंसणह विसोहिय ॥ ६ ॥ वस्तु ॥ जंबूदीव जंबूदीव भरह वासंमि, खोणीतल मंडण, मगह देस सेणिय नरेसर, वर गुव्वर गाम तिहां, विप्प वसे वसुभूइ सुन्दर, तसु पुहवि भज्जा, सयल गुण गण रूव निहाण, ताण पुत्त विज्जानिलो, गोयम अतिहि सुजाण ॥ ७ ॥ भास ॥ चरम जिणेसर केवलनाणी, चोविह संघ पइट्ठा जाणी। पावापुर सामी संपत्तो, चउविह देव निकायहिं जुत्तो ॥ ८ ॥ देवहि समवसरण तिहां कीजे, जिण दीठे मिथ्यामत छीजे। त्रिभुवन गुरु सिंहासन वेठा, ततखिण मोह दिगंत पइट्ठा ॥ ९ ॥ क्रोध मान माया मद पूरा, जाये नाठा जिम दिन चोरा।

देव दुंदुभि आगासें वाजी, धरम नरेसर आव्यो गाजी ॥ १० ॥ कुसुम वृष्टि अरचे तिहां देवा, चउसठ इन्द्रज मांगे सेवा । चामर छत्र सिरोवरि सोहे, रूवहि जिनवर जग सहु मोहे ॥ ११ ॥ उपसम रसभर वर वरसंता; जोजन वाणि वखाण करंता । जाणवि वर्द्धमान जिण पाया, सुर नर किन्नर आवइ राया ॥ १२ ॥ कंत समोहिय जलहलकंता, गयण विसाणहि रणरणकंता । पेक्खवि इन्द-भूइ मन चिंते, सुर आवे अम यज्ञ हुवंते ॥१३॥ तीर तरंडक जिम ते वहिता, समवसरण पुहता गहगहिता । तो अभिमानें गोयम जंपे, इण अवसर कोपें तणु कंपे ॥ १४ ॥ मूढा लोक अजाण्युं बोले, सुर जाणंता इम कांइ डोले । मो आगल कोइ जाण भणीजें, मेरु अवर किम उपमा दीजें ॥ १५ ॥ वस्तु ॥ वीर जिणवर वीर जिणवर नाण संपन्न, पावापुर सुरम-हिय, पत्त नाह संसारतारण, तिहिं देवइ निम्महिय, समवसरण बहु सुक्ख कारण, जिणवर जग उज्जोय करै, तेजहि कर दिनकार सिंहासण सामी ठव्यो, हुओ तो जय जयकार ॥ १६ ॥ भास ॥ तो चढियो घणमाण गजे, इन्द-भूइ भूयदेव तो; हुंकारो कर संचरिय, कवणसु जिणवर देव तो । जोजन भूमि समोसरण, पेक्खवि प्रथमारंभ तो; दह दिस देखे विबुध वधू, आवंती सुररंभ तो ॥ १७ ॥ मणिमय तोरण दंभ ध्वज, कोसीसे नववाट तो; वइर विवर्जित जंतुगण, प्रातीहारिज आठ तो । सुर नर किन्नर

असुरवर; इंद्र इंद्राणी राय तो; चित्त चमक्किय चिंतवए, सेवंतां प्रभु पाय तो ॥ १८ ॥ सहसकिरण सामी वीरजिण, पेखिअ रूप विसाल तो; एह असंभव संभव ए, साचो ए इंद्रजाल तो। तो बोलावइ त्रिजग गुरु, इंद्रभूइ नामेण तो; श्रीमुख संसय सामी सवे, फेडे वेद पएण तो ॥ १९ ॥ मान मेलि मद ठेलि करी, भगतिहिं नाम्यो सीस तो, पंचसयांसु व्रत लियो ए, गोयम पहिलो सीस तो। बंधव संजम सुणिवि करी, अगनिभूइ आवेय तो; नाम लेई आभास करे, ते पण प्रतिबोधेय तो ॥ २० ॥ इण अनुक्रम गणहर रयण, थाप्या वीर इग्यार तो, तो उपदेसे भुवन गुरु संयमशुं व्रत बार तो। विहुं उपवासें पारणो ए, आपणपें विहरंत तो; गोयम संयम जग सयल, जय जयकार करंत तो ॥ २१ ॥ वस्तु ॥ इंद्रभूइ इंद्रभूइ चढियो बहुमान, हुंकारो करि कंपतो, समवसरण पहुतो तुरंतो; जे संसा सामि सवे, चरमनाह फेडे फुरंत तो; बोधिबीज संजाय मनें, गोयम भवहि विरत्त; दिक्खा लेई सिक्खा सही, गणहर पय संपत्त ॥ २२ ॥ भास ॥ आज हुओ सुविहाण, आज पचेलिमा पुण्य भरो; दीठा गोयम सामि, जो निय नयणें अमिय सरो। समवसरण मझार, जे जे संसय ऊपजे ए; ते ते पर उपगार, कारण पूछे मुनि पवरो ॥२३॥ जीहां २ दीजे दीख, तीहां २ केवल ऊपजे ए; आप कनें अणहुंत, गोयम दीजे दान इम।

गुरु ऊपर गुरु भक्ति, सामी गोयम ऊपनिय; एणिछल केवल नाण, रागज राखे रंग भरे ॥ २४ ॥ जो अष्टापद सेल, वंदे चढि चउवीस जिण; आतम लब्धि वसेण, चरम सरीरी सो ज मुनि । इय देसणा निसुणेह, गोयम गणहर संचरिय; तापस पन्नरसएण, तो मुनि दीठो आवतो ए ॥ २५ ॥ तप सोसिय निय अंग, अम्हां सगति न ऊपजे ए; किम चढसे दृढ काय, गज जिम दीसे गाजतो ए । गिरुओ ए अभिमान, तापस जो मन चिंतवे ए; तो मुनि चढियो वेग, आलंबवि दिनकर किरण ॥ २६ ॥ कंचण मणि निप्फन्न, दंडकलस ध्वजवड सहिय; पेखवि परमाणन्द, जिणहर भरतेसर महिय । निय निय काय प्रमाण, चिहुं दिसि संठिय जिणह बिंब; पणमवि मन उल्लास, गोयम गणहर तिहां वसिय ॥ २७ ॥ वयर-सामीनो जीव, तिर्यक् जृंभक देव तिहां, प्रतिबोध्या पुंडरीक, कंडरिक अध्ययन भणी । वलता गोयम सामि, सवि तापस प्रतिबोध करे, लेई आपण साथ, चाले जिम जूथाधिपति ॥ २८ ॥ खीर खांड घृत आण, अमिय वूठ अंगूठ ठवे; गोयम एकण पात्र, करावे पारणो सवे । पंच सयां शुभ भाव, उज्जल भरियो खीर मिसे; साचा गुरु संयोग, कवल ते केवल रूप हुआ ॥ २९ ॥ पञ्चसयां जिणनाह, समवसरण प्राकारत्रय; पेखवि केवल नाण, उप्पन्नो उज्जोय करे । जाणे जणवि पीयूष, गाजंती घन मेघ जिम; जिनवाणी निसुणेवि, नाणी हुआ

पंचसया ॥ ३० ॥ वस्तु ॥ इण अनुक्रम इण अनुक्रम नाण पन्नरेसें, उप्पन्न परिवरिय, हरिदुरिय जिणनाह वंदइ; जाणेवि जगगुरु वयण, तिहि नाण अप्पाण निंदइ। चरम जिनेसर इम भणे, गोयम म करिस खेव; छेह जाय आपण सही, होस्यां तुल्ला वेव ॥ ३१ ॥ भास ॥ सामियो ए वीर जिणन्द, पूनमचन्द जिम उल्लसिय; विहरियो ए भरहवासम्मि, वरस वहुत्तर संवसिय। ठवतो ए कणय पउमेण, पाय कमल संघैं सहिय; आवियो ए नयणानन्द, नयर पावापुर सुरमहिय ॥ ३२ ॥ पेसियो ए गोयम सामि, देवसमा प्रतिबोध करे; आपणो ए तिसला देवि, नंदन पुहुतो परमपए। वलतो ए देव आकाश, पेखवि जाण्यो जिण समे ए; तो मुनि ए मन विखवाद, नाद भेद जिम ऊपनो ए ॥ ३३ ॥ इण समे ए सामिय देखि, आप कनासुं टालियो ए; जाणतो ए तिहुअण नाह, लोक विवहार न पालियो ए। अतिभलुं ए कीधलुं सामि, जाण्युं केवल मांगसे ए, चिन्तव्युं ए बालक जेम, अहवा केडे लागसे ए ॥ ३४ ॥ हूं किम ए वीर जिणंद, भगतिहि भोले भोलव्यो ए; आपणो ए उंचलो नेह, नाह न संपे साचव्यो ए। साचो ए वीतराग, नेह न हेजें लालियो ए, तिण समे ए गोयम चित्त, राग वैरागे वालियो ए ॥३५॥ आवतुं ए जो उल्लट्ट, रहितुं रागे साहियुं ए; केवल ए नाण उप्पन्न, गोयम सहिज उम्माहियुं ए। तिहुअण ए जय जयकार, केवल महिमा सुर करे ए; ए

वखाण, भविया भव जिम निस्तरे ए ॥ ३६ ॥ वस्तु ॥ पढम गणहर पढम गणहर वरस पच्चास, गिहवासें संवसिय, तीस वरस संजम विभूसिय, सिरि केवल नाण पुण, बार वरस तिहुअण नमंसिय, राजगृही नयरी ठव्यो, बाणवइ, वरसाउ, सामी गोयम गुणनिलो, होसे सिवपुर ठाउ ॥३७॥ भास ॥ जिम सहकारे कोयल टहुके, जिम कुसुमावन परिमल महके, जिम चन्दन सोगंध निधि। जिम गंगाजल लहियाँ लहके, जिम कणयाचल तेजे झलके, तिम गोयम सोभाग निधि ॥ ३८ ॥ जिम मान सरोवर निवसे हंसा, जिम सुरतरू वर कणय वतंसा, जिम महुयर राजीव वनें। जिम रयणायर रयणें विलसे, जिम अंबर तारागण विकसे, तिम गोयम गुरु केवल घनें ॥ ३९ ॥ पूनम निसि जिम ससियर सोहे, सुर तरु महिमा जिम जग मोहे, पूरब दिसि जिम सहसकरो। पञ्चानने जिम गिरिवर राजे, नरवइ घर जिम मयगल गाजे, तिम जिन सासन मुनि पवरो ॥ ४० ॥ जिम गुरु तरुवर सोहे साखा, जिम उत्तम मुख मधुरी भाषा, जिम वन केतकि महमहे ए। जिम भूमीपति भुयबल चमके, जिम जिन मन्दिर घण्टा रणके, गोयम लब्धे गहगह्यो ए ॥४१॥ चिन्तामणि कर चढीयो आज, सुर तरु सारे वंछिय काज, कामकुम्भ सहु वशि हुआ ए। कामगवी पूरे मन कामी, अष्ट महासिद्धि आवे धामी, सामी गोयम अणुसरि ए ॥ ४२ ॥ पणवक्खर पहिलो पभणीजें, माया बीजो श्रवण

सुणीजे, श्रीमती सोभा संभवे ए। देवह धुरि अरिहंत नमीजे, विनय पहु उवझाय थुणीजे, इण मन्त्रे गोयम नमो ए ॥ ४३ ॥ परघर वसतां कांई करीजे, देस देसांतर कांई भमीजे, कवण काज आयास करो। प्रह उठी गोयम समरीजे, काज समग्गल ततखिण सीजे; नव निधि विलसे तिहां सुघरे ॥ ४४ ॥ चवदय सय बारोत्तर वरसे, गोयम गणहर केवल दिवसे, कियो कवित्त उपगार परो। आदिहिं मंगल ए पभणीजे, परव महोच्छव पहिलो दीजे, रिद्धि वृद्धि कल्याण करो ॥ ४५ ॥ धन माता जिण उयरे धरियो, धन्य पिता जिण कुल अवतरियो, धन्य सुगुरु जिण दीखियो ए। विनयवंत विद्या भण्डार, तसु गुण पुहवी न लब्भइ पार, वड जिमं साखा विस्तरो ए। गोयम सामी नो रास भणीजे, चउविह संघ रलियायत कीजें, रिद्धि वृद्धि कल्याण करो ॥ ४६ ॥ कुंकुम चंदन छडा दिवरावो, माणक मोतीना चौक पुरावो, रयण सिंहासण वेसणो ए। तिहां वेसी गुरु देसना देसी, भविक जीवना काज सरेसी, नित नित मङ्गल उदय करो ॥ ४७ ॥

इति श्री गौतमस्वामि रास सम्पूर्ण।

श्री शत्रुञ्जय गिरि—रास ।

दोहा—श्री ऋषहेसर पाय नमी, आणी मन आनंद । रास भणुं रलियामणो, शत्रुंजय नो सुखकंद ॥ १ ॥ संवत चार सत्तोतरे, हुवा धनेसर सूर । तिण शत्रुंजय महातम कियो, शिलादित्य हजूर ॥ २ ॥ वीरजिणन्द समोसर्या, शत्रुंजय उपर जेम । इंद्रादिक आगल कह्यो, शत्रुंजय महातम एम ॥ ३ ॥ शत्रुंजय तीरथ सारिखो, नहां छे तीरथ कोय । स्वर्ग मृत्यु पातालमें, तीरथ सघला जोय ॥ ४ ॥ नामे नवनिधि संपजे, दीठां दुरित पुलाय । भेटंतां भवभय टले, सेवंतां सुख थाय ॥ ५ ॥ जंबू नामे द्वीप ए, दक्षिण भरत मझार । सोरठ देश सुहामणो, तिहां छे तीरथ सार ॥ ६ ॥

ढाल पहिली—(राग रामगिरि)—शत्रुंजयने श्री पुंडरीक, सिद्धक्षेत्र कहुं तहतीक । विमलाचलने करूं परणाम, ए शत्रुंजयना इक्वीस नाम ॥ १ ॥ सुरगिरिने महागिरि पुन्यरास, श्रीपद पर्वत इन्द्रप्रकास । महातीरथ पूरवे सुखकाम ॥ ए० ॥ २ ॥ शासतो पर्वतने दृढ़ शक्ति, मुक्तिनिलो तिण कीजे भक्ति । पुष्पदन्त महापदम सुठाम ॥ ए० ॥ ३ ॥ पृथ्वीपीठ सुभद्र कैलाश, पातालमूल अकर्मक तास । सर्व काम कीजे गुणगाम ॥ ए० ॥४॥ श्री शत्रुंजयना इक्वीस नाम, जयेज बैठा अपने ठाम । शत्रुंजय जात्रा नो फल लहे, महावीर भगवंत इम कहे ॥ ५ ॥

दोहा—शेत्रुंजो पहिले आरे, असी जोयण परमाण । पिहुलो मूल ऊंच पण, छव्वीस जोयण जाण ॥ १ ॥ सित्तर जोयण जाणवो, बीजे आरे विशाल । वीस जोयण ऊंचो कह्यो, मुझ वंदन त्रिकाल ॥ २ ॥ साठ जोयण तीजे आरे, पिहुलो तीरथराय । सोल जोयण ऊंचो सही, ध्यान धरूं चित्तलाय ॥ ३ ॥ पचास जोयण पिहुल पण, चौथे आरे मझार । ऊंचो दश जोयण अचल, नित प्रणमे नरनार ॥ ४ ॥ बार जोयण पंचम आरे, मूल तणे विसतार । दो जोयण ऊंचो अछे, सेत्रुञ्जो तीरथ सार ॥ ५ ॥ सात हाथ छट्टे आरे, पिहुलो परवत एह । ऊंचो होस्ये सो धनुष्य, सासतो तीरथ एह ॥ ६ ॥

ढाल दूसरी—(जिनवरसुं मेरो मन लीनो, ए राग)— केवलज्ञानी प्रमुख तीर्थंकर, अनन्त सिद्धा इण ठामरे । अनन्त वली सीझसे इण ठामे, तिण करूं नित प्रणामरे ॥ १ ॥ सेत्रुञ्जे साधु अनंता सिद्धा, सीझसी वलीय अनंतरे । जिण सेत्रुञ्ज तीरथ नहीं भेट्यो, ते गरभावास कहंतरे ॥ से० ॥ २ ॥ फागुण सुदि आठमने दिवसे, ऋषभदेव सुखकाररे । रायण रूंख समोसर्या स्वामी, पूरव निनाणूं वाररे ॥से०॥३॥ भरतपुत्र चैत्री पूनम दिन, इण शत्रुञ्जय-गिरि आयरे । पांच कोडीसुं पुंडरीक सिद्धा, तिण पुंड-रीक कहायरे ॥ से० ॥ ४ ॥ नमि विनमि राजा विद्याधर, वे वे कोडी संघातरे । फागुण सुदि दसमी दिन सिद्धा,

तिण प्रणमुं प्रभातरे ॥ से० ॥ ५ ॥ चैत्रमास वदि चउदशने दिन, नमि पुत्री चौसट्ठीरे। अणसण करी सेत्रुञ्जे गिरि ऊपर, ए सहु सिद्धा एकट्टरे ॥ से० ॥ ६ ॥ पोतरा प्रथम तीर्थंकर केरा, द्राविडने वारिखिल्लरे। काती सुदि पूनम दिन सिद्धा, दश कोडीसुं मुनि शिल्लरे ॥ से० ॥ ७ ॥ पांचे पांडव इण गिरि सिद्धा, नव नारद ऋषिरायरे। शांब प्रद्युम्न गया इहां मुगते, आठे करम खपायरे ॥ से० ॥ ८ ॥ नेमि विना तेवीस तीर्थंकर, समोसर्या गिरिशृंगरे। अजित शान्ति तीर्थंकर बेउं, रह्या चोमासो रंगरे ॥ से० ॥ ९ ॥ सहस साधु परिवार संघाते, थावच्चा सुख साधरे। पांचसें साधुसुं सेलग मुनिवर, सेत्रुञ्जे शिवसुख लाधरे ॥ से० ॥ १० ॥ असंख्याता मुनि सेत्रुञ्जे सिद्धा, भरतेश्वरने पाटरे। राम अने भरतादिक सिद्धा, मुक्ति तणी ए वाटरे ॥ से० ॥ ११ ॥ जाली मयालीने उवयाली, प्रमुख साधुनी कोडीरे। साधु अनंता सेत्रुञ्जे सिद्धा, प्रणमुं बे कर जोड़ीरे ॥से०॥१२॥

ढाल तीसरी-(राग चौपाई)—सेत्रुञ्जेना कहुं सोलहि उद्धार, ते सुणज्यो सहु को सुविचार। सुणतां आनंद अंग न माय, जनम जनमनां पातिक जाय ॥ १ ॥ ऋषभदेव अयोध्यापुरी, समवसर्या स्वामी हितकरी। भरत गयो वंदणने काज, ए उपदेश दियो जिनराज ॥ २ ॥ जग मांहे मोटा अरिहंतदेव, चौसठ इंद्र करे जसु सेव। तेहथी मोटो संघ कहाय, जेहने प्रणमे जिनवर राय ॥ ३ ॥ तेहथी मोटो

संघवी कह्यो, भरत सुणीने मन गहगह्यो। भरत कहे ते किम पामिये, प्रभु कहे सेत्रुंजे जात्रा किये॥ ४॥ भरत कहे संघवी पद मुझ, थे आयो हुं अंगज तुझ। इंद्रे आण्या अक्षतवास, प्रभु आपे संघवी पद तास॥ ५॥ इंद्रे तिण वेला ततकाल, भरत सुभद्रा बिहुंने माल। पहिरावी घर संप्रेरिया, सखर सोनाना रथ आपिया॥ ६॥ ऋषभदेवनी प्रतिमावली, रत्न तणी दीधी मनरली। भरते गणधर घर तेडिया, शांतिक पौष्टिक सहु तिहां किया॥ ७॥ कंकोत्री मूंकी सहु देश, भरत तेडायो संघ अशेष। आयो संघ अयोध्यापुरी, प्रथम थकी रथ जात्रा करी॥ ८॥ संघ भगति कीधी अतिघणी, संघ चलायो सेत्रुंजा भणी, गणधर बाहुबली केवली, मुनिवर कोड़ी साथे वली॥ ९॥ चक्रवर्त्तिनी सघली रिद्धि, भरते साधे लीधी सिद्धि। हय गय रथ पायक परिवार, तेतो कहेतां नावे पार॥ १०॥ भरतेसर संघवी कहवाय, मारग चैत्य उधरतो जाय। संघ आयो सेत्रुञ्जे पास, सहुनी पूगी मननी आस॥ ११॥ नयणे निरख्यो शत्रुञ्जयराय, मणि माणक मोत्यांसु वधाय। तिण ठामे रही महोच्छव कियो, भरतें आणंदपुर वासियो॥ १२॥ संघ सेत्रुंजे ऊपर चढयो, फरसंता पातिक झडपड्यो। केवल ज्ञानी पगला तिहां, प्रणम्या रायण रूंख छे तिहां॥ १३॥ केवल ज्ञानी स्नात्र निमित्त, ईशानें आणी सुपवित्त। नदी शत्रुंजय सोहामणी, भरते दीठी कौतुक भणी॥ १४॥ गणधर देव

तणे उपदेश, इंद्रे वली दीधो आदेश। श्री आदिनाथ तणो देहरो, भरते करायो गिरि सेहरो ॥ १५ ॥ सोनानो प्रासाद उत्तंग, रतन तणी प्रतिमा मनरंग। भरते श्री आदीसर तणी, प्रतिमा थापी सोहामणी ॥ १६ ॥ मरुदेवीनी प्रतिमा भली, माही पूनम थापी रली। ब्राह्मी सुंदरी प्रमुख प्रासाद, भरते थाप्या नवले नाद ॥ १७ ॥ इम अनेक प्रतिमा प्रासाद, भरत कराया गुरु सुप्रसाद। भरत तणो पहिलो उद्धार, सगलो ही जाणे संसार ॥ १८ ॥

ढाल चौथी-(राग-सिंधुडो-आशाउरी)—भरत तणे पाटे आठमे, दंडवीरज थयो रायोजी। भरत तणी परे संघ कियो, सेत्रुंज संघवी कहायोजी ॥ १ ॥ सेत्रुंजे उद्धार सांभलो, सोल मोटा श्रीकारोजी। असंख्यात बीजा वली, तेहनो कहुं अधिकारोजी ॥ से० ॥ २ ॥ चैत्य करायो रूपा तणो, सोनानो बिंब सारोजी। मूलगो बिंब भंडारियो, पच्छिम दिशि तिण वारोजी ॥ से० ॥ ३ ॥ सेत्रुञ्जेनी जात्रा करी, सफल कियो अवतारोजी। दंडवीरज राजा तणो, ए बीजो उद्धारोजी ॥ से० ॥ ४ ॥ सो सागरोपम व्यतिक्रम्या, दंडवीरजथी जिवारोजी। ईशानेन्द्र करावीयो, ए त्रीजो उद्धरोजी ॥ से० ॥ ५ ॥ चोथा देवलोकनो धणी, माहेंद्र नाम उदारोजी। तिण सेत्रुञ्जेनो करावीयो, ए चोथो उद्धारोजी ॥ से० ॥ ६ ॥ पांचमा देवलोकनो धणी, ब्रह्मेन्द्र समकित धारोजी। तिण सेत्रुञ्जेनो करावियो, ए पांचमो

उद्धारोजी ॥ से० ॥ ७ ॥ भुवनपति इंद्रने किया, ए छट्ठो उद्धारोजी । चक्रवर्त्ति सगर तणो कियो, ए सातमो उद्धारोजी ॥ से० ॥ ८ ॥ अभिनंदन पासे सुण्यो, सेत्रुञ्जेनो अधिकारोजी । व्यंतर इंद्र करावियो, ए आठमो उद्धारोजी ॥ से० ॥ ९ ॥ चंद्रप्रभु स्वामीनो पोतरो, चंद्रशेखर नाम मल्हारोजी । चंद्रजस राय करावियो, ए नवमो उद्धारोजी ॥ से० ॥ १० ॥ शान्तिनाथनी सुणी देशना, शांतिनाथ सुत सुविचारोजी। चक्रधर राय करावियो, ए दशमो उद्धारोजी ॥ से० ॥ ११ ॥ दशरथ सुत जगदीपतो, मुनिसुव्रत स्वामी वारोजी । श्रीरामचन्द्र करावियो, ए इग्यारमो उद्धारोजी ॥ से० ॥ १२ ॥ पांडव कहे अम्हे पापीया, किम छूटां मोरी मायोजी । कहे कुंती सेत्रुञ्जा तणी, यात्रा किया पाप जायोजी ॥ से० ॥ १३ ॥ पांचे पांडव संघ करी, सेत्रुञ्ज भेट्यो अपारोजी । काष्ट चैत्य बिंब लेपना, ए बारमो उद्धारोजी ॥ से० ॥ १४ ॥ मम्माणी पाषाणनी, प्रतिमा सुंदर सरूपोजी। श्री सेत्रुञ्जेनो संघ करी, थापी सकल स्वरूपोजी ॥ से० ॥ १५ ॥ अट्ठोत्तर सो वरसां गयां, विक्रम नृपथी जिवारोजी। पोरवाड जावड करावियो, ए तेरमो उद्धारोजी ॥ से० ॥ १६ ॥ संवत बार तिडोत्तरे, श्रीमाली सुविचारोजी। वाहडदे मुहते करावियो, ए चौदमो उद्धारोजी ॥से०॥१७॥ संवत तेरे इकोत्तरे, देसल हर अधिकारोजी । समरेशाह करावियो, ए पनरमो उद्धारोजी ॥ से० ॥ १८ ॥ संवत

पन्नर सत्यासीये, वैशाख वदि शुभवारोजी । करमे डोसी करावियो, ए सोलमो उद्धारोजी ॥ से० ॥ १९ ॥ संप्रति काले सोलमो, ए वरते छे उद्धारोजी । नित नित कीजे वंदना, पामीजे भव पारोजी ॥ से० ॥ २० ॥

दोहा—वली सेत्रुञ्ज महातम कहु, सांभलो जिम छे तेम । सूरि धनेसर इम कहे, महावीर कह्यो एम ॥ १ ॥ जेहवो तेहवो दर सणी, सेत्रुञ्जे पूजनीक । भगवंतनो वेश वांदतां, लाभ हुवे तहतीक ॥ २ ॥ श्री सेत्रुञ्जा उपरे, चैत्य करावे जेह । दल परमाण समो लहे, पल्योपम सुख तेह ॥ ३ ॥ सेत्रुञ्जा ऊपर देहरो, नवो नीपावे कोय । जीर्णोद्धार करावतां, आठ गुणो फल होय ॥ ४ ॥ सिर ऊपर गागर धरी, स्नात्र करावे नार । चक्रवर्त्तिनी स्त्री थई, शिव सुख पामे सार ॥ ५ ॥ काती पूनम सेत्रुञ्जे, चढीने करे उपवास । नारकी सो सागर समो, करे करमनो नाश ॥ ६ ॥ काती परव मोटो कह्यो, जिहां सिद्धा दश क्रोड । ब्रह्म स्त्री बालक हत्या, पापथी नांखे छोड ॥ ७ ॥ सहस लाख श्रावक भणी, भोजन पुन्य विशेष । सेत्रुञ्जे साधु पडिलाभतां, अधिको तेहथी देख ॥ ८ ॥

ढाल पांचमी-(धन २ अयवंती सुकुमालने, एदेशी)— सेत्रुञ्जे गया पाप छूटीये, लीजे आलोयण एमोजी । तप जप कीजे तिहां रही, तीर्थंकर कह्यो तेमोजी ॥ से० ॥ १ ॥ जिण सोनानी चोरी करी, ए आलोयण तासोजी । चैत्री

दिन सेत्रुञ्जे चढी, एक करे उपवासोजी ॥ से० ॥ २ ॥ वस्तु तणी चोरी करी, सात आंबिल शुद्ध थायोजी। कार्ती सात दिन तप कियां, रतन हरण पाप जायोजी॥ से० ॥ ३ ॥ कांसी पीत्तल तांबा रतननी, चोरी कीधी जेणोजी। सात दिवस पुरिमढ करे, तो छूटे गिरि एणोजी ॥ से० ॥ ४ ॥ मोती प्रवाला मूंगीया, जिण चोर्या नर नारोजी। आंबिल करी पूजा करे, त्रण टंक शुद्ध आचारोजी ॥ से० ॥ ५ ॥ धान पाणी रस चोरीया, जे भेटे सिद्धक्षेत्रोजी। सेत्रुञ्ज तलहटी साधुने, पडिलाभे शुद्ध चित्तोजी ॥ से० ॥ ६ ॥ वस्त्राभरण जिणे हर्या, ते छूटे इण मेलोजी। आदिनाथनी पूजा करे, प्रह ऊठी बहु वेलोजी ॥ से० ॥ ७ ॥ देव गुरुनो धन जे हरे, ते शुद्ध थाये एमोजी। अधिको द्रव्य खरचे तिहां, पात्र पोषे बहु प्रेमोजी ॥ से० ॥ ८ ॥ गाय भेंस घोड़ा मही, गजनो चोरणहारोजी। दीये ते वस्तु तीरथे, अरिहंत ध्यान प्रकारोजी ॥ से० ॥ ९ ॥ पुस्तक देहरा पारकां, तिहां लिखे आपणो नामोजी। छूटे छम्मासी तप कियां, सामायिक तिण ठामोजी ॥ से० ॥ १० ॥ कुंवारी परिव्राजिका, सधव अधव गुरु नारोजी। व्रत भांजे तिणने कह्यो, छम्मासी तप सारोजी ॥ से० ॥ ११ ॥ गो विप्र स्त्री बालक ऋषि, एहनो घातक जेहोजी। प्रतिमा आगे आलोवतां, छूटे तप करी नेहोजी ॥ से० ॥ १२ ॥

ढाल छट्ठी—(कुंमर भले आवीयो, एदेशी.)—संप्रति

काले सोलमो ए, ए वरते छे उद्धार । सेत्रुञ्ज यात्रा करूं ए, सफल करूं अवतार ॥ से० ॥ १ ॥ छहरी पालतां चालीये ए, सेत्रुञ्ज केरी वाट ॥ से० ॥ पालीताणे पहुंचीये ए, संघ मील्या बहु थाट ॥ से० ॥ २ ॥ ललित सरोवर पेखीये ए, वलि सतानी वाव ॥ से० ॥ तिहां विसरामो लीजिये ए, वडने चोतरे आवि ॥ से० ॥ ३ ॥ पालीताणे पाजडी ए, चढीए ऊठी परभात ॥ से० ॥ सेत्रुञ्ज नदीय सोहामणी ए, दूर थकी देखंत ॥ से० ॥ ४ ॥ चढ़िये हिंगुलाजने हडे ए, कलिकुंड नमीये पास ॥ से० ॥ वारी मांहे पेसीये ए, आणी अंग उल्लास ॥ से० ॥ ५ ॥ मरुदेवी टूंक मनोहरू ए, गज चढ़ी मरुदेवी माय ॥ से० ॥ शांतिनाथ जिन सोलमा ए, प्रणमीजे तसु पाय ॥ से० ॥ ६ ॥ वंश पोरवाड़े परगडो ए, सोमजी शाह मल्हार ॥ से० ॥ रूपजी संघवी करावीयो ए, चौमुख मूल उद्धार ॥ से० ॥ ७ ॥ चौमुख प्रतिमा चरचिये ए, भमती मांहि भला बिंब ॥ से० ॥ पांचे पांडव पूजिये ए, अद्‌भूत आदि प्रलंब ॥ से० ॥ ८ ॥ खरतर वसही खांतिसु ए, बिंब जुहारुं अनेक ॥ से० ॥ नेमिनाथ चवरी नमुं ए, टालूं अलग उद्वेग ॥ से० ॥ ९ ॥ धरम दुवार मांहि नीसरूंए, कुगति करूं अतिदूर ॥ से० ॥ आवुं आदिनाथ देहरे ए, करम करूं चकचूर ॥ से० ॥ १० ॥ मूलनायक प्रणमुं मुदा ए, आदिनाथ भगवंत ॥ से० ॥ देव जुहारुं देहरे ए, भमती मांहि भमंत ॥ से० ॥ ११ ॥ सेत्रुञ्जे उपर कीजिये

ए, पांचे ठाम सनात्र ॥ से० ॥ कलश अट्ठोत्तर सो करी ए, निरमल नीरसुं गात्र ॥ से० ॥ १२ ॥ प्रथम आदिसर आगले ए, पुंडरीक गणधार ॥ से० ॥ रायण तल पगला नमुं ए, शांतिनाथ सुखकार ॥ से० ॥ १३ ॥ रायण तल पगला नमुं ए, चौमुख प्रतिमा चार ॥ से० ॥ वीज भूमि विंबावलि ए, पुंडरीक गणधार॥ से० ॥ १४ ॥ सूरज कुंड निहालिये ए, अति भली उलका झील ॥ से० ॥ चेलणा तलाई सिद्धशिला ए, अंग फरसुं उल्लोल॥ से० ॥ १५ ॥ आदिपुर पाजे उतरुं ए, सिद्ध वडलुं त्रिसराम ॥ से० ॥ चैत्यप्रवाड इणपरि करी ए, सीधां वंछित काम॥ से० ॥ १६ ॥ जात्रा करी सेत्रुञ्जा तणी ए, सफल कियो अवतार ॥ से० ॥ कुसल खेमसुं आवियो ए, संघ सहु परिवार ॥ से० ॥ १७ ॥ सेत्रुञ्जरास सोहामणो ए, सांभलज्यो सहु कोई ॥ से० ॥ घर बेठां भणे भावसुं ए, तसु जात्रा फल होई ॥ से० ॥ १८ ॥ संवत सोल बयासीये ए, सावण वदि सुखकार ॥ से० ॥ रास भण्यो सेत्रुञ्जा तणो ए, नगर नागोर मझार ॥ से० ॥ ॥ १९ ॥ गिरुवो गच्छ खरतर तणो ए, श्री जिनचन्दसूरीस ॥ से० ॥ प्रथम शिष्य श्री पूजना ए, सकलचन्द सुजगीस ॥ से० ॥ २० ॥ तास शिष्य जग जाणीये ए, समयसुन्दर उवज्झाय ॥ से० ॥ रास रच्यो तिण रूवडो ए, सुणतां आणंद थाय ॥ से० ॥ २१ ॥ इति ॥

सब पापादिक आलोयण स्तवन ।

बेकर जोड़ी विनवुंजी, सुण स्वामी सुविदित । कूड़ कपट मूंकी करीजी, बात कहुं आप वीत ॥ १ ॥ कृपानाथ मुझ विनती अवधार । तुं समरथ त्रिभुवन धणीजी, मुझने दुत्तर तार ॥ कृ० ॥ २ ॥ भवसायर भमतां थकांजी, दीठा दुःख अनंत । भाग्य संयोगे भेटीयोजी, भय भंजण भगवंत ॥ कृ० ३ ॥ जे दुःख भांजे आपणोजी, तेहने कहीये दुःख । परदुःख भंजण तूं सुण्योजी, सेवकने द्यो सुख ॥ कृ० ॥४॥ आलोयण लीधां विनाजी, जीव रुलै संसार । रूपी लक्ष्मणा महासतीजी, एह सुणो अधिकार ॥ कृ० ॥ ५ ॥ दूषम काले दोहिलोजी, सूधो गुरु संयोग । परमारथ पीछै नहींजी, गडर प्रवाही लोग ॥ कृ० ॥ ६ ॥ तिण तुझ आगल आपणाजी, पाप आलोऊं आज । माय बाप आगल बोलतांजी, बालक केही लाज ॥ कृ० ॥ ७ ॥ जिनधर्म २ सहु कहेजी, थापे आपणी बात । सामाचारी जूई जूईजी, संसय पडुं मिथ्यात ॥ कृ० ॥ ८ ॥ जाण अजाण पणें करीजी, बोल्या उत्सूत्र बोल । रतने काग उड़ावतांजी, हार्यो जनम निटोल ॥ कृ० ॥ ९ ॥ भगवंत भाख्यो ते किहांजी, किहां मुझ करणी एह । गज पाखर खर किम सहेजी । सबल विमासण तेह ॥ कृ० ॥ १० ॥ आप परूपुं आकरोजी, जाणे लोक महंत । पिण न करूं परमादीयोजी, मासाहस दृष्टांत ॥ कृ० ॥ ११ ॥ काल अनंते मैं लह्यांजी, तीन रतन

श्रीकार। पिण परमादे पाडियाजी, किहां जई करूं पुकार ॥ कृ० ॥ १२ ॥ जाणुं उत्कृष्टी करूंजी, उद्यत करूं अ विहार । धीरज जीव धरे नहींजी, पोते बहु संसार ॥ कृ० ॥ १३ ॥ सहज पड्यो मुझ आकरोजी, न गमे रूडी बात । परनिंदा करतां थकांजी, जाये दिनने रात ॥ कृ० ॥ १४ ॥ किरिया करतां दोहिलीजी, आलस आणे जीव । धरमपखे धंधे पड्योजी, नरके करस्ये रीव ॥ कृ० ॥१५॥ अणहुंता गुणको कहेजी, तो हरखुं निशि दिश । कोई हितशिख भली कहेजी, तो मन आणुं रीश ॥ कृ० ॥ १६ ॥ वाद भणी विद्या भणीजी, परंरंजण उपदेश । मन संवेग धर्यो नहींजी, किम संसार तरेश ॥ कृ० ॥ १७ ॥ सूत्र सिद्धांत वखाणतांजी, सुणतां कर्म विपाक । खिण एक मनमांहि ऊपजेजी, मुझ मरकट वैराग ॥ कृ० ॥ १८ ॥ त्रिविध २ करी ऊचरूंजी, भगवंत तुम्ह हजूर । वार वार भांजुं वलीजी, छूटक वारो दूर ॥ कृ० ॥ १९ ॥ आप काज सुख राचितांजी, कीधां आरंभ कोड । जयणा न करी जीवनीजी, देव दया पर छोड ॥ कृ० ॥ २० ॥ वचन दोष व्यापक कह्यांजी, दाख्या अनरथ दंड । कूड कपट बहु केलवीजी, व्रत कीधां शत खंड ॥ कृ० ॥ २१ ॥ अणदीधो लीजे तृणोजी, तोही अदत्ता दान । ते दूषण लागा घणाजी, गिणतां नावे ज्ञान ॥ कृ० ॥ २२ ॥ चंचल जीव रहे नहींजी, राचे रमणी रूप । काम विटंबण सी कहुंजी, ते तूं

जाणे स्वरूप ॥ कृ० ॥ २३ ॥ माया ममता में पड्योजी, कीधो अधिको लोभ । परिग्रह मेल्यो कारमोजी, न चढी संयम शोभ ॥ कृ० ॥ २४ ॥ लागा मुझने लालचेजी, रात्री भोजन दोष । मैं मन मूंक्यो माहरोजी, न धर्यो धरमें संतोष ॥ कृ० ॥ २५ ॥ इण भव परभव दूहव्याजी, जीव चौराशि लाख । ते मुझ मिच्छामि दुक्कडंजी, भगवंत तोरी साख ॥ कृ० ॥ २६ ॥ करमादान पन्नरे कह्यांजी, प्रगट अठारे पाप । जे मैं किधां ते सहुजी, बगश २ माई बाप ॥ कृ० ॥ २७ ॥ मुझ आधार छे एटलोजी, सरदहणा छै शुद्ध । जिनधर्म मीठो जगतमेंजी, जिम साकर ने दूध ॥ कृ० ॥ २८ ॥ ऋषभदेव तूं राजीयोजी, सेत्रुंजगिरि सिणगार । पाप आलोया आपणांजी, कर प्रभु मोरी सार ॥ कृ० ॥ २९ ॥ मर्म एह जिनधर्मनोजी, पाप आलोयां जाय । मनसुं मिच्छामि दुक्कडंजी, देतां दूर पूलाय ॥कृ०॥३०॥ तूं गति तूं मति तूं धणीजी, तूं साहिब तूं देव । आण धरूं शिर ताहरीजी, भव भव ताहरी सेव ॥ कृ० ॥ ३१ ॥ कलश—इम चढीय सेत्रुंज चरण भेट्या नाभिनंदन जिन तणा, कर जोडी आदि जिणंद आगे पाप आलोया आपणा । श्रीपूज्य जिनचन्दसूरि सद्गुरु प्रथम शिष्य सुजस घणो, गणि सकलचन्द सुशिष्य वाचक समयसुंदर गणि भणे ॥ ३२ ॥ इति ॥

पद्मावती-आलोयण सज्झाय ।

हिवे राणी पदमावती, जीवराशि खमावे । जाणपणुं जुग ते भलुं, इण वेला आवे ॥ १ ॥ ते मुझ मिच्छामि दुक्कडं, अरिहंतनी साख । जे मैं जीव विराधिया, चउरासी लाख ॥ ते० ॥ २ ॥ सात लाख पृथिवी तणां, साते अपकाय । सात लाख तेऊकायना, साते वली वाय ॥ ते० ॥ ३ ॥ दश प्रत्येक वनस्पति, चउदह साधारण । बी ती चउरिंद्रिय जीवना, वे वे लाख विचार ॥ ते० ॥ ४ ॥ देवता तिर्यंच नारकी, चार चार प्रकाशी । चउदह लाख मनुष्यना, ए लाख चउरासी ॥ ते० ॥ ५ ॥ इण भव परभव सेवियां, जे पाप अढार । त्रिविध २ करी परिहरूं, दुरगति दातार ॥ ते० ॥ ६ ॥ हिंसा कीधी जीवनी, बोल्या मृपावाद । दोप अदत्ता दानना, मैथुन उन्माद ॥ ते० ॥ ७ ॥ परिग्रह मेल्यो कारिमो, कीधो क्रोध विशेप । मान माया लोभ मैं किया, वली रागने द्वेप ॥ ते० ॥ ८ ॥ कलह करी जीव दूहव्यां, दीना कूडा कलंक । निंदा कीधी पारकी, रति अरति निःशंक ॥ ते० ॥ ९ ॥ चाडी खाधी चौंतरे, कीधो थापण मोसो । कुगुरु कुदेव कुधर्मनो, भलो आप्यो भरोसो ॥ ते० ॥ १० ॥ खाटकीने भवे मैं किया, जीवना वधघात । चिडीमार भवे चिडकलां, मार्या दिन रात ॥ ते० ॥ ११ ॥ माछीगर भवे माछलां, झाल्या जलवास । धीवर भील कोली भवे, मृग मार्या पास ॥ ते० ॥ १२ ॥

काजी मुल्लाने भवे, पढी मंत्र कठोर । जीव अनेक जबै किया, किधा पाप अघोर ॥ ते० ॥ १३ ॥ कोटवालने भवे मैं किया, आकरा कर दंड । वंदीवान मराविया, कोरडा छड़ी दंड ॥ ते० ॥ १४ ॥ परमाधामीने भवे, दीधां नारकी दुक्ख । छेदन भेदन वेदना, ताड़ना अति तिक्ख ॥ ते० ॥ १५ ॥ कुंभारने भवे मैं किया, निम्माह पचाव्या । तेली भव तिल पीलीया, पापे पेट भराव्या ॥ ते० ॥ १६ ॥ हालीने भव हल खेडिया, फाड्यां पृथिवीना पेट । सूड निदान घणां कियां, दीधां बलध चपेट ॥ ते० ॥ १७ ॥ मालीने भवे रोपियां, नानाविध वृक्ष । मूल पत्र फल फूलनां, लाग्या पाप ते लक्ष ॥ ते० ॥ १८ ॥ अधोवाइयाने भवे, भर्या अधिका भार । पोठी ऊँट कीडा पड्या, दया नावी लगार ॥ ते० ॥ १९ ॥ छीपाने भवे छेतर्यो, कीधां रंगणि पास । अगनि आरंभ किया घणा, धातुवाद अभ्यास ॥ ते० ॥ २० ॥ सूर पणे रण झूझता, मार्या माणस वृंद । मदिरा मांस मक्ष्या घणां, खाधा मूलने कंद ॥ ते० ॥ २१ ॥ खाण खणावी धातुनी, पाणी उलंच्या । आरंभ कीधा अतिघणां, पोते पापज संच्या ॥ ते० ॥ २२ ॥ अगार कर्म किया वली, धरमें दव दीधां । सुंस लेई वीतरागना, कूडा कोशज पीधा ॥ ते० ॥ २३ ॥ बिल्ली भव उंदर लिया, गीलोई हत्यारी । मूढ गमार तणे भवे, मैं जूं लीख मारी ॥ ते० ॥ २४ ॥ भाड़भूंजा तणे भवे, एकेन्द्रिय जीव ।

ज्वारी चिणा गहुं सेकिया, पाडंता रीव ॥ ते० ॥ २५ ॥ खांडण पीसण गारना, आरंभ अनेक। रांधण इंधण आगिना, किया पाप उद्वेग ॥ ते० ॥ २६ ॥ विकथा चार कीधी वली, सेव्यां पंच प्रमाद । इष्ट वियोग पाड्या किया, रोदन विषवाद ॥ ते० ॥ २७ ॥ साधु अने श्रावक तणां, व्रत लेई भांग्यां, मूल अने उत्तर तणा, दूषण मुझ लाग्यां ॥ ते० ॥ २८ ॥ साप विच्छु सिंह चीतरा, शिकराने शमली । हिंसक जीव तणे भवे, हिंसा किधी सबली ॥ ते० ॥ २९ ॥ सूआवडी दूषण घणां, वली गरभ गलाव्यां । जीवाणी ढोल्यां घणां, शीलव्रत भंजाव्यां ॥ ते० ॥ ३० ॥ भव अनंत भमतां थकां, कीया कुटुंब संबंध । त्रिविध त्रिविध करी वोसरूं, तिणसुं प्रतिबंध ॥ ते० ॥ ३१ ॥ भव अनंत भमतां थकां, कीधां परिग्रह संबंध । त्रिविध त्रिविध करी वोसिरूं, तिणसुं प्रतिबंध ॥ ३२ ॥ इणभव परभव इण परे, कीधां पाप अखत्र । त्रिविध त्रिविध करी वोसिरूं, करूं जन्म पवित्र ॥ ते० ॥ ३३ ॥ राग वैराडी जे सुणें, ए त्रीजी ढाल । समयसुंदर कहे पापथी, छूटे ततकाल ॥ते०॥३४॥ इति ॥

आवश्यकीय चौदह नियम।

गाथा-सच्चित्त[1] दव्व[2] विगई[3] वाणह[4] तंबोल[5] वत्थ[6] कुसुमेसु[7]।
वाहण[8] सयन[9] विलेवण[10] बंभ[11] दिसि[12] ण्हाण[13] भत्तेसु[14] ॥१॥

१-सचित्त—जिसमें जीवसत्ता हो ऐसे हरा शाक, फल, फूल, कच्चा पानी आदि।

२-द्रव्य—जितनी चीज मुंहमें जावे ऐसी दाल, चावल, रोटी. मिठाई आदि वस्तुएँ।

३-विगय—सब विगय १० हैं, इसमें से मधु १, मांस २, मक्खन ३, और मदिरा ४ इनका तो सर्वथा त्याग करना चाहिये और षडरस—घी, तेल, दूध, दही, गुड़, और खांड़ इनका तथा घीसे बनाया हुआ पकवान वगैरह का प्रमाण रखना।

४-उपानह—जूता, मोजा आदि जो चीज पांव में पहरी जायँ।

५-तंबोल—पान, सुपारी, इलायची आदि।

६-वस्त्र—जो पहिरने ओढने में आवे ऐसे वस्त्र और आभूषण आदि।

७-कुसुम—जो सुंघने में आवे ऐसी फूल अत्तर आदि वस्तुएँ।

८–वाहन—हाथी, घोड़ा, बैल, गाड़ी, मोटर, जहाज आदि किसी भी प्रकार की सवारी।

९–शयन—शय्या, बिछौना, पलंग, कुरसी आदि।

१०–विलेपन—केशर, चन्दन, सुगंध, तेल आदि जो चीजें शरीर पर लगाई जावे।

११–ब्रह्मचर्य—परस्त्रीका सर्वथा त्याग और अपनी स्त्रीसे भी सूई डोरे के न्याय से तथा बाह्य विनोद का प्रमाण करना।

१२–दिशा—दिशा और विदिशा में लम्बा, चौड़ा, ऊंचा, नीचा जाने आने का माप रखना।

१३–स्नान—नहाने और हाथ पैर धोने का प्रमाण रखना।

१४–भत्त—अन्न पानी आदि चारों आहारों में से अपने लिये जितना चाहिये उसका तोल रखना।

छह काय।

१–पृथ्वीकाय—मट्टी, नमक आदि जो खाने व उपभोग में आवे उसका प्रमाण रखना।

२–अप्काय—जो पानी नहाने धोने व पीने के काम में आवे उसका वजन रखना।

३–तेउकाय—चूल्हा, भट्टी, चिराग, अंगीठी आदि का प्रमाण करना।

४-वायुकाय—अपने हाथ से व अपने हुकुम से जितने पंखे चलाने में आवे उनकी गिनती रखना।

५-वनस्पतिकाय—हरा शाक फल आदि का वजन और इतनी जाति के खाने का प्रमाण करना।

६-त्रसकाय—त्रसजीवों को मन वचन काया से जानकर कभी नहीं मारना, अजाण की मिच्छामि दुक्कडं देना।

तीन कर्म।

१-असि—तलवार, बंदूक, चाकू, कैंची आदि शस्त्र रखनें की संख्या रखनी।

२-मसि—कागज, कलम, दवात आदि का प्रमाण रखना।

३-कृषि—खेती, बगीचा आदि का प्रमाण करना।

इन नियमों को धारण करने से जीव पापों के बोझ से हलका रहता है। यह विना कष्ट पापों से बचने का एक सरल उपाय है। इन नियमों को प्रतिदिन अवश्य धारण करने से आत्मा परम शांति पद प्राप्त करेगा।

॥ इति शुभमस्तु ॥
